धन्य स्मृति
माउंट अथोस के एल्डर पैसियोस
शब्द

खंड I
दुख और प्रेम के साथ आधुनिक मनुष्य पर

ग्रीक से अनुवादित

वषिय-सूची :

जीवनीपरक परचिय **4**

पूर्वोक्ति **5**

परचिय (वरषि्ठ के शब्दों से) 9
लोग कैसे पीड़ति होते हैं 10
सुरक्षा और भेद्यता 11
लोगों की खोजें 12
हमारे युग में जीवति उदाहरणों की कमी है 13
एक 'फसिलन भरी ढलान' खोजना और उस पर फसिल जाना आसान है 14
ईश्वर हमें हमारी नयिति के भरोसे नहीं छोड़ता 15
आगे कठनि समय आने वाला है 17

भाग 1. पाप और शैतान पर **18**

अध्याय 1. पाप कैसे फैशनेबल हो गया 18
लोगों की अंतरात्मा उन्हें दोषी ठहराती है 19
जब कोई व्यक्ति ईश्वर से मुंह मोड़ता है , तो उसे नरकीय यातनाओं का अनुभव होता है 20
एक व्यक्ति का न्याय उस मालकि द्वारा कयिा जाएगा जसिके लिए वह काम करता है 21
अध्याय 2. इस बात पर क शैतान ने हमारे समय में वास्तव में कैसे उत्पात मचा रखा है 22
हमारे पाप के माध्यम से , हम शैतान को हम पर शक्ति देते हैं 22
स्वीकार शैतान को उस व्यक्ति पर अपनी शक्ति से वंचति कर देता है 23
शैतान ईश्वर की शुद्ध सृष्टि के पास नहीं आता 24
आइए शैतान से बातचीत न करें 25
शैतान शक्तहिीन है 26
शैतान मूर्ख है 28
ईश्वर शैतान को हमें प्रलोभति करने की अनुमति क्यों देता है ? 29
शैतान पश्चाताप नहीं करना चाहता 31
वनिम्रता शैतान को धूल में मलिा देती है 32
अध्याय 3. सांसारकि आत्मा पर 33
शैतान घमंड पर शासन करता है 33
आत्मा की सुंदरता को प्राथमकिता दी जानी चाहिए 34
दुनयिावी इच्छाएँ 35

दुनियावी सुख भौतिक सुख हैं 37
आध्यात्मिक जीवन में सांसारिक भावना 38
संन्यास जीवन में सांसारिक भावना 39
दुनियावी भावना एक रोग है 42
अध्याय 4. अन्याय के महान पाप पर 43
अन्याय पर ईश्वर का क्रोध उतरता है 43
अन्यायी व्यक्ति दुखी रहता है 43
अन्याय अपने वंशजों को भी दुख पहुँचाता है 46
जो हमारे साथ अन्याय करता है , वह हमारे लिए उपकार करता है 47
"उसे उसका हक़ चुका दो" 48
दुनिया कैसे भटक गई है 49
यदि कोई व्यक्ति धार्मिक है , तो ईश्वर उसकी ओर है 50
धर्मी व्यक्ति को इस जीवन में भी अपना पुरस्कार मिलता है 52
अध्याय 5. "आशीर्वाद दो, शाप मत दो..." 53
शाप के परिणामस्वरूप होने वाली बीमारियाँ और दुर्घटनाएँ 55
माता-पिता का शाप अत्यंत शक्तिशाली होता है 56
'एक कुलीन शाप' 57
बुरी नज़र 58
दिल से निकली आशीर्वाद एक दिव्य आशीर्वाद है 59
अध्याय 6. पाप कैसे दुर्भाग्य लाता है 60
ईश्वर जो कुछ भी अनुमति देता है , वह मानवता के भले के लिए होता है 62
आज ईश्वर को अंतिम स्थान पर धकेला जा रहा है 63
ईश्वर दुनिया पर दया करें और हमें बारिश भेजें 66
आओ हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह संसार को पश्चाताप की कृपा दे 67

भाग 2. आधुनिक संस्कृति पर 69
अध्याय 1. ईश्वर की बुद्धिमत्ता और पर्यावरण 69
"सभी बुद्धिमत्ता के साथ तूने सृजित किया..." 69
आज लोगों ने क्या हासिल कर लिया है ? 71
लोगों ने अपना धैर्य खो दिया है 72
उन्होंने पूरे वातावरण को प्रदूषित कर दिया है – यह एक बात है , लेकिन उनकी हड्डियाँ रास्ते में आ गई हैं 74
प्रदूषण और पर्यावरण का विनाश 75
अध्याय 2. कैसे कई सुविधाओं का युग कई समस्याओं के युग के बराबर है 78
लोगों के दिल भी लोहे के हो गए हैं 78
लोग कारों के कारण पागल हो गए हैं 79
टेलीविजन ने लोगों को बहुत नुकसान पहुँचाया है 80
एक भिक्षु और आधुनिक तकनीकी प्रगति 81
वंचना लोगों के लिए बहुत सहायक है 83
सुविधाओं की प्रचुरता व्यक्ति को बेकार बना देती है 85
अध्याय 3. मानसिक चिंता से मुक्ति के लिए जीवन को सरल बनाने की आवश्यकता पर 87
दुनियावी सफलता आत्मा में दुनियावी चिंताएँ लाती है 87
आधुनिक जीवन, अपनी निरंतर चूहे की दौड़ के साथ, एक नरकीय यातना है 88
चिंता शैतान से उत्पन्न होती है 89
साधु जीवन में सादगी बहुत सहायक होती है 91
विलासी सांसारिकता भिक्षुओं को भ्रष्ट कर देती है 94
अपने जीवन को सरल बनाएं 96
अध्याय 4. बाहरी शोर और आंतरिक मौन पर 99
लोगों ने दुनिया की शांतिपूर्ण प्रकृति को बदल दिया है 100
लोगों ने तो निर्जन स्थानों के पवित्र स्थलों को भी नष्ट कर दिया है 100
मौन एक रहस्यमयी प्रार्थना है 102
कोई शोर सुनता है या नहीं , यह व्यक्ति पर निर्भर करता है 103
आइए हम दूसरों की खामोशी का सम्मान करें 104

शोर का इलाज दयालु वचिार हैं 105
हमें आंतरकि मौन का वकिास करना चाहएि..... 107
अध्याय 5. अत्यधकि चति कैसे व्यक्त ि को ईश्वर से दूर करती है 108
हम बहुत सारी चीज़ों से चपिके न रहें 108
हमें अपने दलिों को भौतकि चीजों को नहीं सौंपना चाहएि..... 109
मन की शांत ि और प्रार्थना के साथ कयि गया कार्य पवत्रि हो जाता है 110
अत्यधकि चति व्यक्त ि को ईश्वर को भूलने का कारण बनती है 111
एक संन्यासी के लएि सांसारकि काम और चति बहुत अधकि..... 112
जहाँ बहुत हलचल होती है , वहाँ बहुत आध्यात्मकि हस्तक्षेप होता है 113
हमें प्रेमपूर्ण देखभाल की भावना वकिसति करनी चाहएि..... 115

भाग 3. ईश्वर की आत्मा और इस संसार की आत्मा पर..... 116

अध्याय 1. सांसारकि शक्षिा और ज्ञान पर..... 116
एक बुद्धमिान व्यक्त ि वह है जसिने स्वयं को शुद्ध कयि है 116
दव्यि प्रबोधन के बनि ज्ञान एक आपदा है। 118
वज्ञिान को आध्यात्मकि जीवन में लागू कयि जाना चाहएि..... 120
पवत्रि आत्मा प्रौद्योगकिी के माध्यम से नहीं उतरती..... 121
हमें ज्ञान को पवत्रि करना चाहएि..... 121
"मन घमंड करता है "..... 124
आइए हम अपने मन का सही उपयोग करें 125
अध्याय 2. हमारे समय के तर्कवाद पर..... 128
आध्यात्मकि जीवन में सामान्य ज्ञान 128
दुनयिावी तर्कशीलता मनुष्य को पीड़ति करती है 131
दुनयिावी सामान्य ज्ञान आध्यात्मकि अनुभूत ि की क्षमता को वकिृत कर देता है 132
"बाहरी दखिावट से नर्णिय न करें "..... 134
अध्याय 3. एक नई पीढ़ी 136
त्याग की भावना का क्षय 136
अववेिकी [माता-पति का] प्रेम बच्चों को बेकार बना देता है 141
अंधकारमय शक्तयिाँ युवाओं को बुराई की ओर ले जाती हैं 142
"बच्चों पर हाथ उठाने की हम्मित मत करना!"..... 144
युवाओं को ब्रह्मचर्य की परीक्षाओं से गुजरना चाहएि..... 146
सच्चा प्यार युवाओं के सामने प्रकट होता है 149
अध्याय 4. नर्मिलता और अनादर पर..... 150
लापरवाह व्यवहार श्रद्धा को दूर भगा देता है 151
वरष्ठिों का सम्मान 152
लोग अब उस बदिु पर पहुँच गए हैं जहाँ वे ईश्वर का न्याय करते हैं 156
नष्शिर्मता दव्यि कृपा को दूर भगा देती है 158
"अपने पति और अपनी माता का सम्मान करो"..... 159
पीढ़ी का अंतर 160
अध्याय 5. लोगों की आंतरकि अव्यवस्था और उनका बाहरी स्वरूप 160
दुर्भाग्यपूर्ण सांसारकि लोग अपनी आंतरकि अवस्था के अनुसार ही वस्त्र पहनते हैं 160
आजकल कसिी पुरुष और महलिा में अंतर करना असंभव हो गया है 163
लोग सादगी की लालसा करते हैं 164
"एक पुरुष स्त्रयिों का वस्त्र न पहने , और न ही कोई स्त्री पुरुष का वस्त्र पहने। "..... 166
सौंदर्य प्रसाधन – ईश्वर की छवि पर दाग..... 167

भाग चार। हमारे युग में चर्च पर..... 169

अध्याय 1. शक्षिा पर..... 169
ग्रीक भाषा..... 169
शक्षिा में मुद्दे 170
वकिास का सद्धिांत 172
बच्चों को चर्च से दूर ले जाया जा रहा है 173
बच्चों पर अत्यधकि बोझ डाला जा रहा है 174

एक शिक्षक का आह्वान पवित्र है 176
अध्याय 2. पुरोहित वर्ग और चर्च पर..... 178
एक पुरोहित पर बड़ी जिम्मेदारी होती है 180
पुरोहित वर्ग का धर्मनिरपेक्षीकरण 182
"मुझ पर अपमान का आरोप कौन लगाता है ?"..... 183
चर्च की समस्याओं के लिए सही दृष्टिकोण 187
उच्च पद और मानवीय महिमा..... 188
चर्च का शासन कैसे होता है 191
दिव्य लिटिर्जी 192
अध्याय 3. उत्सवों और सार्वजनिक अवकाशों पर..... 194
"आओ, हम विश्वासी , आध्यात्मिक उत्सव मनाएँ "..... 194
"धर्मनिष्ठों के लिए थोड़ा ही बेहतर है ..."..... 196
लोग रविवार और पर्व के दिनों में काम करते हैं , और उन पर विपत्तियाँ आती हैं 199
अध्याय 4. ऑर्थोडॉक्स परंपरा पर..... 200
"यीशु मसीह कल, आज और हमेशा एक समान हैं "..... 200
परंपरा का सम्मान 201
आओ हम मठवासी जीवन में उस चीज़ को संरक्षित करें जिसे अनुभव द्वारा परखा गया है 203
लोग पुराने तरीकों पर लौट आएँगे 205
विश्वास के बिना, संसार टिक नहीं सकता..... 207
हमें एक सुदृढ़ परंपरा पीछे छोड़नी चाहिए..... 208

जीवनी संबंधी टिप्पणी

धन्य एल्डर पैसियोस (जन्म आर्सेनियोस एज़नपिडिस) का जन्म 25 जुलाई 1924 (पुराने तरीके के अनुसार) कैपाडोसिया (एशिया माइनर) के फरासी गाँव में हुआ था। जनसंख्या विनिमय के दौरान[1] , उन्हें एक शिशु के रूप में ग्रीस लाया गया था। उनके माता-पिता छोटे से शहर कोनट्सिा में बस गए, जहाँ भविष्य के एल्डर बड़े हुए और उन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की।

अपने शुरुआती बचपन से ही, आर्सेनियस ने एक तपस्वी का जीवन जिया। उन्हें संतों के जीवन-चरित्र पढ़ने में आनंद आता था, और वे उनके कार्यों का अनुकरण करने के लिए बड़ी लगन, असाधारण उत्साह और उल्लेखनीय अडिग समर्पण के साथ प्रयास करते थे। उन्होंने स्वयं को निरंतर प्रार्थना में समर्पित कर दिया और, साथ ही, अपने भीतर प्रेम और विनम्रता को विकसित करने का प्रयास किया। एक युवा व्यक्ति के रूप में , भावी एल्डर ने बढ़ई का काम सीखा, इस क्षेत्र में भी मसीह जैसा बनना चाहकर। जब ग्रीस में गृहयुद्ध छिड़ गया (1944-1948), तो '[2] ' आर्सेनियोस एज़नेपडिसि को सक्रिय सेना में भर्ती किया गया, एक रेडियो ऑपरेटर के रूप में प्रशिक्षित किया गया और उन्होंने ढाई साल तक अपने देश की सेवा की। सेना में , उन्होंने अपने तपस्वी जीवन को जारी रखा, और अपने साहस, आत्म -बलिदान, उच्च ईसाई नैतिकता और अनेक प्रतिभाओं के माध्यम से खुद को विशिष्ट साबित किया।

---

[1] 1924 की जनसंख्या अदला-बदली, जिसके दौरान एशिया माइनर के ग्रीक ग्रीस में बसाए गए, जबकि ग्रीस में रहने वाले तुर्क तुर्की में बसाए गए। – अनुवादक की टिप्पणी

[2] 1944–1948 के बीच सरकार की सेना और साम्यवादी विद्रोहियों के बीच हुई ग्रीक गृहयुद्ध। – अनुवादक की टिप्पणी।

अपने देश के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करने के बाद, आर्सेनियस ने संन्यासी जीवन का मार्ग अपनाया—वह जीवन जिसके लिए वह बचपन से ही आकांक्षा करता था। एक सामान्य व्यक्ति रहते हुए भी, उसने कई बार मसीह में दिव्य साक्षात्कार का अनुभव किया था। लेकिन जब वह एक भिक्षु बना, तो संतों, परमेश्वर की अति पवित्र माता और स्वयं प्रभु द्वारा उस पर दिखाया गया विशेष अनुग्रह और भी अधिक स्पष्ट हो गया। फादर पैसियोस ने अथोस के पवित्र पर्वत पर, कोनट्सा में स्टोमियन मठ में, और सिनाई के पवित्र पर्वत पर सेवा की। उन्होंने अपना जीवन गुमनामी में बिताया, स्वयं को पूरी तरह से ईश्वर को सौंप दिया, जिन्होंने बदले में उन्हें लोगों के सामने प्रकट किया और उन्हें लोगों को प्रदान किया। अनगिनत लोग एल्डर के पास आए और उन्हें मार्गदर्शन और सांत्वना, अपने पीड़ित आत्माओं के लिए चंगाई और शांति मिली। एल्डर की पवित्र आत्मा से दिव्य प्रेम उमड़ता था, और उनके साधु स्वरूप से दिव्य अनुग्रह का तेज बिखरता था। दिन-प्रतिदिन, बिना थके, माउंट अथोस के एल्डर पैसियोस लोगों का दर्द दूर करते रहे, और अपने चारों ओर दिव्य सांत्वना फैलाते रहे।

12 जुलाई 1994 को, सन्त पादरी पैसियोस ([3]) ने, वास्तव में शहीद-सदृश कष्टों के बाद, जो वरिष्ठ के अपने शब्दों में, उन्हें उनके पूरे पिछले जीवन के तपस्वी श्रमों से भी अधिक लाभ पहुँचाने वाले थे, प्रभु में निद्रावस्था प्राप्त की। उनके परमधाम गमन का स्थान सेंट जॉन द थियोलोजियन का मठ था, जो थ्रेसैलॉनीकी से बहुत दूर नहीं, सुरोती गाँव के पास स्थित है। वहाँ, कैपाडोसिया के सेंट आर्सेनियस को समर्पित मठ की चर्च में वेदी के बाईं ओर, स्व्यातोगोर् के एल्डर पैसियोस को अंतिम संस्कार के लिए सुलाया गया।

उनका आशीर्वाद और प्रार्थनाएँ हम पर बनी रहें।

आमेन।

भूमिका

जुलाई 1994 में उनके निधन के बाद, माउंट अथोस के धन्य एल्डर पैसियोस ने दुनिया को एक आध्यात्मिक विरासत—अपनी शिक्षाएँ—छोड़ीं। एक साधारण भिक्षु, जिसने प्राथमिक विद्यालय में केवल बुनियादी शिक्षा प्राप्त की थी, फिर भी ईश्वर-प्रदत्त ज्ञान से भरपूर, उसने वास्तव में खुद को पूरी तरह से अपने पड़ोसी के प्रति समर्पित कर दिया। उसका शिक्षण उपदेश या धर्मोपदेश नहीं था। वे स्वयं सुसमाचार के अनुसार जीते थे, और उनकी शिक्षाएँ उनके अपने जीवन से उपजी थीं, जिसकी परिभाषित विशेषता प्रेम थी। उन्होंने सुसमाचार के अनुसार 'स्वयं को शिक्षित किया' और इसलिए उन्होंने हमें सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से अपने ही आचरण से सिखाया, और उसके बाद ही अपने सुसमाचार-प्रेरित प्रेम और ईश्वर-प्रकाशित शब्दों के माध्यम से सिखाया। जब लोग उनसे मिलते—जो सभी एक-दूसरे से बहुत अलग थे—तो एल्डर केवल धैर्यपूर्वक यह नहीं सुनते थे कि वे उन्हें क्या बताते थे। अपनी विशिष्ट पवित्र सादगी और विवेक के साथ, वे उनके दिलों की गहराइयों तक पहुँच जाते थे। एल्डर उनके दर्द, उनकी चिंता और उनकी कठिनाइयों को अपना बना लेते थे। और फिर, एक सहज तरीके से, एक चमत्कार होता था—व्यक्ति का रूपांतरण। एल्डर कहते थे, "ईश्वर तब चमत्कार करता है जब हम पूरे दिल से किसी दूसरे व्यक्ति के दर्द में भागीदार होते हैं।"

यह देखकर हमें बहुत प्रसन्नता हुई कि एल्डर पैसियोस के जीवन और शिक्षाओं को समर्पित पहली किताबें कितनी गहरी रुचि के साथ पढ़ी गईं। कई लोगों ने आश्चर्य व्यक्त किया कि कैसे, इन किताबों में, उन्हें उन सवालों के जवाब मिले जो उन्हें सता रहे थे, उनकी समस्याओं का समाधान मिला, और उनके दुखों में सांत्वना मिली। हमें यह देखकर विशेष रूप से प्रसन्नता हुई कि कैसे चर्च से दूर रहे लोग, एल्डर के बारे में पढ़ने के बाद, वास्तव

[3] नागरिक कैलेंडर के अनुसार। – अनुवादक की टिप्पणी।

में चतिति हो गए और उन्होंने अपने जीवन को बदल लिया। इस संबंध में , हमें अक्सर संत बेसलि द ग्रेट को समर्पति एक चर्च के भजनकार के शब्दों की याद आती थी: 'वह प्रभु में जीवति हैं और परलोक सधिार गए हैं ; वह जीवति हैं और हमारे साथ हैं , क्योंकि वह कतिाबों से हमसे बात करते हैं। '[4] साथ ही, मसीह में हमारे भाइयों के लगातार अनुरोधों का जवाब देते हुए , हमने उन्हें एल्डर के शब्दों से परचिति कराने की आवश्यकता महसूस की—वे शब्द जन्हिें हमने अपने मठ के अस्तत्वि के शुरुआती दनिों से ही श्रद्धापूर्वक दर्ज किया था और जन्हिोंने हमें स्वयं भी काफी लाभ पहुँचाया था।

सदैव -कल्याणकारी ईश्वर की कृपा से , हमारा मठवासी समुदाय अपनी अस्तत्वि की ऋणी है स्व्यातोगोर्स्क के एल्डर पैइसयिस की। यही फादर पैइसयिस थे जन्हिोंने मठ की स्थापना के लिए बशिप का आशीर्वाद प्राप्त किया, और जन्हिोंने इसके नर्मिाण के लिए एक उपयुक्त स्थल खोजने में परश्रिम किया। 1966 में , फेफड़ों के ऑपरेशन के बाद अस्पताल में फादर पैइसयिस से मलिने के बाद, हम उनकी सहायता के लिए आए। उस समय से , अपने पूरे कुलीन और दयालु हृदय से हमारे प्रति कृतज्ञ होकर, उन्होंने स्वयं को हमारा बड़ा भाई माना और कहा कि 'अपनी बहनों के लिए एक घर खोजना' उनका कर्तव्य था—जसिका अर्थ मठ की स्थापना करना था।

अक्टूबर 1967 में , जब पहली बहनों ने मठ में नविास करना शुरू किया, तो एल्डर पैसयिस हमसे मलिने आए और दो महीने तक समुदाय में रहे , तथा मठ के सामुदायकि जीवन को व्यवस्थति करने में मदद की। अगले कुछ वर्षों में , अथोस के पवत्रि पर्वत पर रहते हुए , एल्डर आमतौर पर साल में दो बार हमसे मलिने आते थे , अपना ईश्वर -प्रेरति परामर्श देते थे और पूरे मठ तथा प्रत्येक बहन के व्यक्तगित आध्यात्मकि वकिास में सहायता के लिए एक व्यक्तगित उदाहरण प्रस्तुत करते थे। इसके अलावा, माउंट एथोस से —जसिे वह 'आध्यात्मकि अमेरकिा ' कहते थे —एल्डर ने अपनी प्रार्थनाओं और पत्रों के माध्यम से हमारा समर्थन किया, जो उन्होंने व्यक्तगित रूप से अलग-अलग बहनों को या पूरे समुदाय को भेजे थे।

इस प्रकार , 1967 में , एल्डर पैसयिस ने हमारे मठ के सामुदायकि जीवन की नींव रखना शुरू किया। उन्होंने मठवासी जीवन के हर पहलू में गहराई से उतरकर काम किया — सबसे सरल, रोजमर्रा के मामलों से लेकर सबसे गंभीर और आध्यात्मकि मुद्दों तक। उस समय उनकी उम्र 43 वर्ष थी, लेकनि वह पहले से ही 'मसीह की पूर्णता के माप तक' (इफसियिों 4:13) एक परपिूर्ण व्यक्ति थे। तब भी, फादर पैसयिस में एक सच्चे एल्डर (वरष्ठि) की बुद्धमित्ता थी। मठ के अस्तत्वि के बलि्कुल पहले दनिों से ही, हम , उनके शब्दों को 'जीवन के अनन्त वचन' (यूहन्ना 6:68) मानते थे और हमें एहसास हुआ कि वे वे मौलकि और अटूट सत्य थे जनि पर हमारे दैनकि जीवन का नर्मिाण होना चाहिए। इसलिए, यह डरते हुए कि हम भले -भाई के कहे हुए शब्दों को भूल न जाएँ , हमने उनके शब्दों को तुरंत लखिने की जल्दी की, ताकि भवष्यि में हम उन्हें अपने मठवासी जीवन के लिए एक वश्विसनीय मार्गदर्शक के रूप में उपयोग कर सकें।

जब हमारी पहली व्यायाम पुस्तकिाएँ हमारे नोट्स से भर गईं , तो हम बहुत हचिकचिाते हुए उन्हें उनके नर्णिय के लिए एल्डर के पास ले गए। हचिकचिाते हुए क्यों ? क्योंकि एल्डर हमेशा शकि्षाओं को व्यवहार में लाने के महत्व पर जोर देते थे ; क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि हम जो सुना था, उसे व्यवहार में लागू किए बनिा केवल 'कच्चा माल' या 'गोला-बारूद ' जमा करें। उन्होंने यह ज़दि की कि हम जो कुछ भी सुनते या पढ़ते हैं , उस पर आध्यात्मकि रूप से काम करें। एल्डर ने कहा कि अन्यथा , ढेरों नोट्स और टप्पिणयिाँ हमारे कसिी काम की नहीं होंगी , ठीक वैसे ही जैसे एक ऐसे राज्य के लिए ढेरों हथयिार और गोला-बारूद बेकार होते हैं , जसिकी सेना प्रशकि्षति नहीं है और इस शस्त्रागार का उपयोग करने में असमर्थ है।

हमारी लगातार वनितयिों को मानते हुए , फादर पैसयिस ने हमारे नोट्स की समीक्षा करने और, जहाँ आवश्यक हो (यदि हमने उनके कसिी भी शब्द को गलत समझा हो), सुधार और जोड़ करने के लिए सहमति दी।

वरष्ठि ने अठ्ठाइस वर्षों तक हमारे मठ को आध्यात्मकि मार्गदर्शन प्रदान किया। उन वर्षों के दौरान, हमने उनके शब्दों को रकिॉर्ड किया: पूरे मठवासी समुदाय के समारोहों के दौरान, साथ ही मठ की आध्यात्मकि परषिद की बैठकों के दौरान, जनिमें वे उपस्थति थे। शुरुआत में , बहनों ने हाथ से नोट्स लिए, लेकनि हाल के वर्षों में उन्होंने एक टेप रकिॉर्डर का इस्तेमाल किया। इसके अलावा, प्रत्येक भकि्षुणी अपने व्यक्तगित वार्तालापों की सामग्री तुरंत बाद लखि लेती थी। यह सब जानकर, फादर पैइसयिस ने हमें थोड़ा डांटा भी: "आप यह सब क्यों लखि रही हैं ? क्या आप इसे कसिी मुश्कलि समय के लिए बचा रही हैं , या क्या ? बात यह है कि आपको काम करना है और जो आपने सुना है उसे व्यवहार में लाना है। और कौन जाने तुमने वहाँ क्या -क्या लखि रखा है ! चलो, मुझे दखिाओ ताकि मैं देख सकूँ !" लेकनि जब हमने उन्हें बहनों में से एक का नोट दखिाया, तो उनका चेहरा बदल गया; वे शांत हो गए और संतुष्टि से बोले : "यही तरीका है , मेरे भाई! यह बहन तो एक टेप रकिॉर्डर की तरह है ! उसने बलि्कुल वही लखिा है जो मैंने कहा था!.."

---

[4] 1 जनवरी को, मातन्सि में कैनन की छठी ओड के लिए सनिाक्सारयिन से पहले के स्टचिैरा से। – अनुवादक की टप्पिणी।

हमारी बातचीत आमतौर पर इस रूप में होती थी कि वह हमारे सवालों का जवाब देते थे। बहनों के साथ हमारी निजी बातचीत का मुख्य विषय हमेशा व्यक्तिगत आध्यात्मिक प्रयास होता था। आध्यात्मिक परिषद की बैठकों के विषय पहले से ही तैयार किए जाते थे। हम फादर पैसियोस के विचारार्थ उनकी अनुपस्थिति के दौरान संचित हुए प्रश्नों को प्रस्तुत करते थे — प्रशासनिक और दैनिक मामले, आध्यात्मिक और सामाजिक मुद्दे, चर्च और राष्ट्रीय मामले, साथ ही कई अन्य बातें। अंत में, मठ की आम सभाओं के दौरान, बहनों द्वारा पूछे गए सवालों के अलावा, कोई भी चीज़ बड़ों के लिए किसी विशेष विषय पर बोलना शुरू करने के लिए एक संकेत का काम कर सकती थी: गुज़रते हुए विमान की गड़गड़ाहट, एक इंजन का शोर, एक पक्षी का गीत, दरवाजे की खड़खराहट, किसी द्वारा आकस्मिक रूप से कहा गया कोई शब्द — वरिष्ठ जानते थे कि हर चीज़ से आध्यात्मिक लाभ कैसे प्राप्त किया जाए। कोई भी तुच्छ या मामूली बात गंभीर विषय पर बातचीत का बहाना बन सकती थी। वे कहते थे : "मैं स्वर्गीय क्षेत्र, स्वर्ग से जुड़ने के लिए हर चीज़ का उपयोग करता हूँ। क्या आप जानते हैं कि एक व्यक्ति को क्या आध्यात्मिक लाभ और आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त होता है यदि वह [अपने रास्ते में आने वाली हर चीज़ पर] आध्यात्मिक रूप से काम करता है ?"

'सद् -ईश्वर सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से हमारे भविष्य के जीवन की परवाह करते हैं और [फिर] हमारे सांसारिक जीवन की,' वृद्ध पादरी कहते थे। लोगों के साथ अपने व्यवहार में, उनका भी यही उद्देश्य था: किसी व्यक्ति को ईश्वर की इच्छा को पहचानने और अपने स्रष्टा के साथ एक होने में मदद करके, फादर पैइसियस उसे स्वर्ग के राज्य के लिए तैयार कर रहे थे। प्रकृति या विज्ञान, कला या दैनिक मानवीय अस्तित्व के क्षेत्रों से उदाहरण देते हुए, एल्डर उन्हें आध्यात्मिक वास्तविकता से अलग, अमूर्त रूप में नहीं मानते थे। उन्होंने अपने संवाददाताओं की आत्माओं को उनकी नींद से जगाने का प्रयास किया; दृष्टान्तों के माध्यम से, उन्होंने उन्हें जीवन के गहरे अर्थ को समझने और 'ईश्वर से चिपके रहने ' में मदद की।

वरिष्ठ पैसियोस की वाणी की विशेषता सरलता, हाज़िरजवाबी और एक जीवंत, सच्चा हास्यबोध था। वह महान सच्चाइयों को सरल और आनंदपूर्वक व्यक्त करने में सक्षम थे। 'मैं आपको सूरज की तरह गर्माहट देता हूँ,' एल्डर कहते थे, जिसका अर्थ है कि जैसे फूलों की कली को खिलने के लिए सूरज की गर्माहट आवश्यक होती है, वैसे ही आत्मा पर एक कोमल पादरिया स्पर्श उसे खुलने और उसके कष्ट से चंगा होने में मदद करता है। यह वास्तव में ईश्वर -प्रेरित सेवा थी। यह अक्सर आत्मा की मिट्टी को सुसमाचार की सच्चाई के कठोर वचन को ग्रहण करने के लिए तैयार करता था, जिसमें कोई समझौता नहीं होता। इसलिए, एल्डर पैसियोस के सबसे कठोर शब्दों को भी हृदय द्वारा जीवन-दायक ओस के रूप में ग्रहण किया गया। और बाद में, एल्डर की शिक्षाओं द्वारा संवारा गया हृदय आध्यात्मिक फल से भर गया।

अठारह वर्षों से अधिक समय में संचित हुए नोट्स, साथ ही पवित्र पर्वत से बुज़ुर्ग के पत्र, उनके निधन के बाद व्यवस्थित किए गए। हमने सामग्री को हमारे दैनिक जीवन में लागू करना आसान बनाने के लिए विषय के अनुसार वर्गीकृत किया है। साथ ही, हमने बूढ़े के जीवन के बारे में दर्ज किए गए वृत्तांतों को, साथ ही उन चमत्कारिक घटनाओं को भी व्यवस्थित किया है जिनका उन्होंने अनुभव किया। फादर पैसियोस ने यह सब आत्म -प्रशंसा के लिए नहीं, बल्कि हमारे लिए प्रकट किया। अपने बारे में अपनी कहानियों के माध्यम से, उन्होंने वास्तव में हमें आध्यात्मिक दान दिया। "मैं आप सबको यह सब इसलिए बता रहा हूँ," वे कहते थे, "ताकि आप मुझे पदक पहनाएँ और मुझे एक अच्छा इंसान कहें। जब मैं युद्ध, सेना या किसी और चीज़ के बारे में —यहाँ तक कि किसी मज़ेदार बात के बारे में भी—बात करता हूँ, तो मैं ऐसा बिना कारण के नहीं करता। मैं आपका ध्यान किसी बात की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ ; मैं चाहता हूँ कि आप उसके सार को समझें। मैं कभी भी कोई खाली या बेकार बात नहीं कहता।" इस तरह, एल्डर एक 'आध्यात्मिक दाता' बन गए। उन्होंने हमारे कमजोर, दुर्बल विश्वास को मजबूत करने के लिए अपना ही खून दिया। वास्तव में एक राजसी व्यक्ति —ईश्वर का पुत्र —होने के नाते, एल्डर ने हमारे ईश्वर के प्रति प्रेम को 'जगाने ' और हमारे भीतर आध्यात्मिक कुलीनता को विकसित करने का प्रयास किया, ताकि हम 'ईश्वर के साथ एक हो सकें। ' 'मैं स्वयं को बहा देता हूँ, मैं स्वयं को बहा देता हूँ,' वे कहते थे, 'लेकिन इसका परिणाम क्या है ? आखिरकार, आपकी मदद करने के लिए, मुझे बहुत ही व्यक्तिगत मामलों पर बात करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। मैं सबसे बड़ी फिजूलखर्ची कर रहा हूँ —अपने आध्यात्मिक भंडार को बर्बाद कर रहा हूँ ! क्या इससे कोई फायदा हो रहा है ? मेरा मतलब यह है कि आपको मदद करने के लिए मैं हर उस घटना को खो देता हूँ जिसका मैं वर्णन करता हूँ —चाहे मैं अपने जीवन में ईश्वर की व्यवस्था की किसी अभिव्यक्ति की बात कर रहा हो या किसी चमत्कारिक घटना की। क्या इससे कम से कम कुछ लाभ तो मिलता है ?"

यह ध्यान में रखते हुए कि हम जिन वर्षों से गुज़र रहे हैं वे बहुत कठिन हैं, हमने अपने पास उपलब्ध सभी सामग्री को विषय के अनुसार अलग-अलग खंडों में विभाजित करने और उन विषयों से प्रकाशन शुरू करने का निर्णय लिया है जो व्यापक रुचि के हैं। इनमें से कई प्रश्न सरल और सांसारिक हैं ; हालाँकि, यदि हम उन पर वैसे ही नहीं पहुँचते जैसे सुसमाचार में बताया गया है, तो इसके परिणाम इस जीवन और आने वाले जीवन दोनों के लिए दुखद (यदि विनाशकारी नहीं) होंगे। विषय के अनुसार सामग्री का चयन करने और उसे प्रकाशन के लिए तैयार करने में, हम एल्डर पैसियोस की उस

आजीवन इच्छा से प्रेरित हुए कवि एक ऐसी किताब लिखें जो 'सभी के लिए हो: सामान्य लोग, भिक्षु और पादरी।' एल्डर अपनी योजना को साकार नहीं कर सके, क्योंकि उन्होंने अपना सारा समय उन लोगों को समर्पित कर दिया जो उनके कालीवा में आते थे। अपनी क्षीण होती शारीरिक शक्ति के बावजूद, उन्होंने खुद को पूरी तरह से दूसरों के लिए समर्पित कर दिया। पवित्र पर्वत से लिखे अपने एक पत्र में, हम पढ़ते हैं: 'और यह मेरी खबर है: बहुत से लोग हैं, जबकि मैं खुद थका और हारा हुआ हूँ। अपनी-अपनी समस्याओं के साथ लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है, और जहाँ तक मेरी शारीरिक शक्ति की बात है —खैर, यह प्रार्थना करना ही बेहतर है कि यह कम न हो। मुझे भी अपना थोड़ा ध्यान रखना पड़ता है — आखिरकार, मुझे कभी यह कहने का अधिकार नहीं है कि 'मैं नहीं कर सकता'। चाहे आप कर सकें या न कर सकें —आपको करने में सक्षम होना ही चाहिए।"

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, एल्डर पैसियोस आमतौर पर हमारे सवालों का जवाब देते थे। इसलिए, इस पुस्तक के संकलन में संवाद प्रारूप को बरकरार रखा गया है। एल्डर के उत्तरों को मठ और विभिन्न व्यक्तियों को लिखे उनके पत्रों, उनके द्वारा लिखी गई पुस्तकों, और बहनों व अन्य लोगों के व्यक्तिगत नोट्स से प्रासंगिक अंशों के साथ समृद्ध किया गया है, जो उनके साथ बातचीत के दौरान या बाद में बनाए गए थे। विशेष प्रश्नों के उत्तरों में ये अतिरिक्त अंश विषयों का यथासंभव पूर्ण अन्वेषण करने के उद्देश्य से जोड़े गए हैं। यह सुनिश्चित करने का भी हर संभव प्रयास किया गया है कि कागज़ पर लिखते समय एल्डर के बोले गए शब्दों की जीवंतता और आनंदमय लहजा बरकरार रहे। हमने कुछ पुनरावृत्तियों को छोटा नहीं किया है, जिनके माध्यम से वरिष्ठ ने किसी विशेष बिंदु पर जोर दिया था। हमने कुछ विस्मयादिबोधक शब्दों को भी बरकरार रखा है जो वरिष्ठ के बोले गए शब्दों में अक्सर आते हैं और जो उसी तरह ईश्वर और मानवता के प्रति उनके महान प्रेम को व्यक्त करते हैं।

एल्डर पैसियोस अक्सर मठवासी जीवन के बारे में बात करते हैं। इसका कारण केवल यह नहीं है कि उनका संबोधन ननसों के लिए था। एल्डर चाहते थे कि हर व्यक्ति — चाहे वह एक भिक्षु हो या एक गृहस्थ — इस 'मोनैस्टिक आनंद' को खोजे, जो किसी व्यक्ति के ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण से उत्पन्न होता है। इस तरह, एक व्यक्ति अपने 'स्व' में विश्वास से उत्पन्न असुरक्षा की भावना से मुक्त हो जाता है, और इसी जीवन में भी स्वर्ग के आनंद का स्वाद चखता है।

पुस्तक *विद पेन एंड लव: ऑन मॉडर्न मैन * माउंट अथोस के एल्डर पैसियोस की *द वर्ड्स * शृंखला का पहला खंड है। पाठक की सुविधा के लिए, इस खंड को चार विषयगत भागों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक खंड, बारी-बारी से, अध्यायों में विभाजित है, और प्रत्येक अध्याय को संबंधित उपशीर्षकों के साथ छोटे खंडों में विभाजित किया गया है। पादटिप्पणियाँ मुख्य रूप से उन लोगों के लिए प्रदान की गई हैं जो चर्च और धर्मपिता संबंधी शब्दावली से अपरिचित हैं।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, एल्डर अक्सर विज्ञान, कला और अन्य विशेषज्ञ क्षेत्रों से उदाहरणों का सहारा लेते थे। विशेषज्ञ शब्दों और अभिव्यक्तियों में त्रुटियों से बचने की इच्छा से, हमने संबंधित क्षेत्रों में विशेषज्ञता रखने वाले मसीह में अपने भाइयों से परामर्श किया। हम बूढ़े पैसियोस के प्रति उनके विशेष सम्मान से प्रेरित होकर, उनके द्वारा की गई सुधारों के लिए उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हैं। हम अपने पाठकों से भी किसी भी सलाह या प्रतिक्रिया के लिए आभारी रहेंगे।

हम हार्दिक प्रार्थना करते हैं कि एल्डर पैसियोस ने अपने महान प्रेम से जो 'आध्यात्मिक व्यय' किया, वह हमारे पाठकों की सरल और भोली आत्माओं के लिए लाभदायक हो, और वे दिव्य ज्ञान से समृद्ध हों, 'जो बुद्धिमानों और समझदारों से छिपा हुआ है, पर छोटे बच्चों के लिए प्रकट किया गया है' (देखें लूका 10:21)। आमीन।

14 जून 1998

सभी संतों का सप्ताह

संत जॉन द एपोस्टल एंड इवैंजेलिस्ट के मठ की मठाधीश, धर्मशास्त्री, सिस्टर फिलोथेआ, मसीह में अपनी बहनों के साथ।

— हमें कुछ बताइए, गेरोना।

— मैं आपको क्या बताऊँ?

— जो कुछ भी तुम्हारा हृदय तुम्हें बताता है।

— मेरा हृदय मुझे यह कहता है: 'एक चाकू लो, मुझे टुकड़ों में काट दो, उन्हें लोगों को दे दो, और फिर मर जाओ।'

परचिय
(वरषि्ठ के शब्दों से)

"हम जनि वर्षों से गुज़र रहे हैं , वे बहुत कठनि और बहुत खतरनाक हैं , लेकनि अंत में मसीह की वजिय होगी।"

— हमारे युग में , अधकिांश लोग सांसारकि रूप से शकि्षति हैं और सांसारकि गतकिी तेज़ रफ्तार से दौड़ रहे हैं। लेकनि चूँकि उन्हें परमेश्वर का कोई भय नहीं है (और 'प्रभु का भय ज्ञान की शुरुआत है '[5]), इसलिए उनके पास ब्रेक भी नहीं हैं ; और इतनी तेज़ रफ्तार से , बनिा ब्रेक के , वे अपनी दौड़ खाई में समाप्त करते हैं। लोग अपनी कठनिाइयों में गहराई से उलझे हुए हैं और, अधकिांशतः , हैरानी की हद तक पहुँच गए हैं। उन्होंने अपना दशिा-बोध खो दयिा है और धीरे -धीरे एक ऐसी स्थति में पहुँच रहे हैं जहाँ वे खुद पर काबू नहीं रख सकते। यदपिवत्रि पर्वत पर आने वाले भी इतने गहराई से परेशान और भ्रमति , इतने चतिति हैं , तो बस कल्पना कीजिए कि बाकी लोग कैसे होंगे —जो ईश्वर और चर्च से बहुत दूर हैं !

हर देश में आप एक तूफ़ान , एक बड़ी उथल-पुथल देखते हैं ! यह दुखी दुनयिा — ईश्वर अपना हाथ बढ़ाए ! — एक प्रेशर कुकर की तरह उबल रही है। और देखिए कि सत्ता में बैठे लोग क्या कर रहे हैं ! वे बार-बार हलिा रहे हैं , सब कुछ प्रेशर कुकर में डाल रहे हैं , और उसमें पहले से ही सीटी बज रही है ! इसका वाल्व कसिी भी पल उड़ जाएगा! मैंने एक उच्च पदस्थ व्यक्ति से कहा: 'आप कुछ बातों पर ध्यान क्यों नहीं देते ? यह कहाँ जाकर रुकेगा ?' उसने जवाब दयिा: 'फादर, शुरुआत में बुराई हल्की बर्फबारी की तरह थी, लेकनि अब यह एक हमिस्खलन बन गई है। अब केवल एक चमत्कार ही मदद कर सकता है। ' लेकनि कुछ लोग, स्थति को सुधारने की चाहत में , बुराई के इस हमिस्खलन को और भी बड़ा बना रहे हैं। शकि्षा और पालन-पोषण के संबंध में वशिेष उपाय करने , या चीजों को ठीक करने के बजाय, वे मामलों को और भी बदतर बना देते हैं। वे इस बात की परवाह नहीं करते कि हमिस्खलन को कैसे रोका जाए, बल्कि इसे और बड़ा कर देते हैं। आखरिकार, शुरुआत में तो बस एक छोटा सा बर्फ का गोला होता है। अगर वह ढलान से लुढ़कता है , तो वह एक हमिस्खलन बन जाता है। जैसे -जैसे इसमें बर्फ , पेड़ , पत्थर और कचरा जुड़ता जाता है , यह बड़ा और बड़ा होता जाता है और एक हमिस्खलन बन जाता है। बुराई के साथ भी ऐसा ही है : धीरे -धीरे , यह पहले से ही एक हमिस्खलन बन चुकी है और ढलान पर लुढ़क रही है। अब, इस बुराई के हमिस्खलन को नष्ट करने के लिए, एक बम हमले की आवश्यकता है।

— गेरोन्डा , क्या आप इन सब बातों को लेकर चतिति हैं ?

— आह, और मेरी दाढ़ी समय से पहले सफेद क्यों हो गई है ? मैं दोहरा कष्ट सहता हूँ। पहला, जब मैं कुछ पूर्वानुमान लगाता हूँ और हमें उभर रहे बुरे हालात से आगाह करने के लिए पुकारता हूँ। और फरि, जब इस पर कोई ध्यान नहीं देता (ज़रूरी नहीं कि उपेक्षा से), तो बुराई हमला कर देती है और लोग मुझसे मदद माँगने लगते हैं। अब मैं समझता हूँ कि पैगंबरों ने कैसे कष्ट सहे। पैगंबर सबसे बड़े शहीद थे ! वे अन्य सभी शहीदों से बड़े शहीद थे , भले ही उनमें से सभी की मृत्यु शहीद की मौत नहीं हुई। क्योंकि शहीदों ने थोड़े समय के लिए कष्ट सहे , जबकि पैगंबरों ने बुराई को होते देखा और लगातार कष्ट सहते रहे। वे चल्लिाते ही रहे , जबकि बाकी लोग अपने कामकाज में लगे रहे। और जब इन अन्य लोगों के कारण

---

[5] भजन संहति 110:10.

ईश्वर का प्रकोप हुआ , तो भविष्यवक्ताओं ने उनके साथ ही दुख झेला। लेकिन तब, कम से कम, लोगों की सोच सीमित थी, और इस वजह से वे ईश्वर से मुंह मोड़कर मूर्तियों की पूजा करने लगे। आज, जब लोग जानबूझकर ईश्वर से मुंह मोड़ते हैं , तो सबसे बड़ी मूर्तिपूजा हो रही है।

हमें अभी तक यह एहसास नहीं हुआ है कि शैतान ने ईश्वर की रचनाओं को नष्ट करने का निश्चय किया है। उसने दुनिया को नष्ट करने के लिए एक 'पंक पार्टी ' (6) का आयोजन किया है ; वह इस बात से क्रोधित हो गया है क्योंकि दुनिया में एक सकारात्मक हलचल पैदा होने लगी है। वह इस बात से क्रोधित है क्योंकि वह जानता है कि उसके पास कार्य करने के लिए बहुत कम समय बचा है। [7] अभी वह एक अपराधी की तरह व्यवहार कर रहा है , जिसे घेर लिया गया हो, और जो कहता है : 'मेरे लिए कोई रास्ता नहीं है , वे मुझे पकड़ ही लेंगे !' — और चारों ओर सब कुछ तोड़ - फोड़ देता है। या फिर युद्ध के दौरान, जब गोला-बारूद खत्म हो जाता है , तो सैनिक अपनी बायनेट या तलवारें निकालकर लड़ाई में कूद पड़ते हैं और — जो होगा देखा जाएगा! 'हम वैसे भी मरने वाले हैं ,' वे कहते हैं। 'तो चलो जितने दुश्मन मारे जा सकते हैं , मार डालें !' दुनिया आग की लपटों में घिरी हुई है ! क्या आप इसे महसूस करते हैं ? एक जबरदस्त प्रलोभन हम पर छा गया है। शैतान ने ऐसी आग भड़काई है कि अगर सभी दमकलकर्मी एक साथ भी आ जाएँ , तो भी वे इसे बुझा नहीं पाएँगे। एक आध्यात्मिक आग — कुछ भी इससे अछूता नहीं बचा। अब बस इतना ही बचा है कि हम प्रार्थना करें कि ईश्वर हमें बचा ले। आखिरकार, जब कोई बड़ी आग लग जाती है और दमकलकर्मी कुछ नहीं कर पाते , तो लोग मजबूरन ईश्वर की ओर मुड़ते हैं और आग की लपटों को बुझाने के लिए उनसे भारी बारिश की प्रार्थना करते हैं। तो इसी तरह इस आध्यात्मिक आग को शैतान ने हवा दी है —हमें बस ईश्वर की मदद के लिए प्रार्थना की ज़रूरत है।

पूरी दुनिया एक ही चीज़ की ओर बढ़ रही है : पूर्ण पतन। आप यह नहीं कह सकते , 'घर में खिड़की थोड़ी टूटी है या कुछ और है ; मैं इसे ठीक कर लूँ। ' पूरा घर ही ढह गया है। दुनिया एक तबाह गाँव बन गई है। स्थिति पहले ही नियंत्रण से बाहर हो चुकी है। अब यह पूरी तरह से ईश्वर पर निर्भर है कि वह क्या करेगा। अब यह ईश्वर पर निर्भर है कि वह काम करे : कभी स्क्रूड्राइवर से , कभी गाजर से , कभी छड़ी से , ताकि सब कुछ ठीक हो जाए। दुनिया में एक फोड़ा है ; वह पीला पड़ चुका है और फटने को तैयार है , लेकिन अभी पका नहीं है। बुराई पक रही है , ठीक वैसे ही जैसे तब यरीहो में [8] , जिसे शुद्ध करने , 'कीटाणुशोधन ' के अधीन करने की आवश्यकता थी।

लोग कैसे पीड़ित होते हैं

लोगों का दुख -दर्द खत्म होने का नाम नहीं लेता। व्यापक क्षय — पूरे परिवार, वयस्क , बच्चे ... हर दिन मेरा दिल खून के आँसू रोता है। अधिकांश घर कलह, अशांति और चिंता से भरे हैं। केवल उन्हीं घरों में जहाँ लोग ईश्वर की इच्छा के अनुसार जीते हैं , लोग शांति में रहते हैं। हालाँकि , दूसरों के यहाँ — कहीं तलाक़ हो रहे हैं , कहीं दिवालियापन, कहीं बीमारी,

---

[6] पैंकनियिा (ग्रीक : πάντες ἀπὸ κοινου – सभी एक साथ, साझा रूप से) – एक ऐसा कार्य जिसमें एक मठ या स्केटा के सभी निवासी भाग लेते हैं। (इसके बाद, ग्रीक प्रकाशकों द्वारा टिप्पणियाँ संदर्भ के लिए दी गई हैं।)

[7] प्रकाशितवाक्य 12:12 देखें।

[8] देखें यहोशू 6:23।

तो कहीं दुर्घटनाएँ ; कुछ लोग मनोदैहकि दवाओं पर हैं , तो दूसरे मादक पदार्थों पर... बेचारे प्राणी : कुछ अधकि पीड़ति हैं , कुछ कम, लेकनि हर कसिी का अपना दर्द है। खासकर अब — काम नहीं है , कर्ज है , दुख है ; बैंक लोगों से आखरिी पैसा भी नचिोड़ रहे हैं , उन्हें उनके घरों से बेदखल कर रहे हैं — कतिनी यातना! और यह सर्फि एक या दो दनि की बात नहीं है ! भले ही ऐसे परविार में एक या दो सहनशील बच्चे हों , वे भी इन परस्थितियिों के कारण बीमार पड़ जाते हैं। अगर ऐसे कई परविारों के लोग, भले ही एक दनि के लिए ही सही, संन्यासयिों जैसी चतिामुक्त और तटस्थ मानसकि स्थति ि पा सकें , तो उनके लिए यही सबसे अच्छा ईस्टर होगा।

क्या दुखद है यह दुनयिा ! यदआिप स्वयं की बजाय दूसरों की पीड़ा और चतिा करते हैं , तो यह संपूर्ण संसार एक्स -रे की तरह पारदर्शी हो उठता है , आध्यात्मकि करिणों से प्रकाशति। जब मैं प्रार्थना करता हूँ , तो अक्सर छोटे बच्चे — गरीब नन्हे -मुन्ने — मेरे सामने दुख में गुज़रते हुए दखिाई देते हैं और ईश्वर से मदद मांगते हैं। उनके परविार समस्याओं और कठनिाइयों का सामना कर रहे हैं , इसलिए उनकी माताएँ उन्हें प्रार्थना करने के लिए कहती हैं — ईश्वर से मदद मांगने के लिए। वे 'एक ही आवृत्त ि ' से जुड़ जाते हैं , और इसी तरह हम उनसे संवाद करते हैं।

सुरक्षा और संवेदनशीलता

आज की दुनयिा हर तरह के 'सुरक्षा उपायों ' से सुरक्षति है , लेकनि मसीह से दूर होने के कारण, यह पूरी तरह से असुरक्षति है। कसिी अन्य युग में लोगों को आज जैसी असहायता का अनुभव नहीं हुआ है। और, चूँक ि मानवीय सुरक्षा उपाय उनकी मदद नहीं करते , वे आध्यात्मकि रूप से सुरक्षति महसूस करने के लिए कलीसयिा के जहाज की शरण लेते हैं , क्योंक ि वे देखते हैं कसिांसारकि जहाज डूब गया है। हालाँक ि , यदवि े देखते हैं कचिर्च के जहाज़ में भी पानी रसि रहा है , और उसमें सवार लोग इस संसार की आत्मा में मग्न हैं , जबक ि पवत्रि आत्मा अनुपस्थति है , तो लोग सारी आशा खो देंगे , क्योंक ि उसके बाद उनके पास पकड़ने के लिए कुछ भी नहीं बचेगा।

दुनयिा पीड़ति है , नष्ट हो रही है , और दुर्भाग्य से , सभी लोग इस सांसारकि यातना के बीच रहने के लिए मजबूर हैं। अधकिांश लोगों को परत्यिाग और उपेक्षा की गहरी भावना महसूस होती है — खासकर अब — और यह भावना उन्हें हर जगह महसूस होती है। लोगों के पास पकड़ने के लिए कुछ भी नहीं है। जैसा क कहावत है : 'डूबता हुआ आदमी तनिके का सहारा ले लेता है ,' यानी, डूबता हुआ आदमी खुद को बचाने के लिए कुछ पकड़ने की कोशशि करता है। जहाज डूब रहा है , और कोई, खुद को बचाने की इच्छा से , मस्तूल से चपिकने की कोशशि करता है। वे यह नहीं सोचते क मिस्तूल भी जहाज के साथ ही डूब जाएगा। वह मस्तूल से चपिक जाता है और और भी तेज़ी से डूब जाता है। मेरा मतलब यह है क लिोग कसिी सहारे की तलाश में हैं , कुछ ऐसा जसि पर वे पकड़ बनाए रख सकें। और अगर उनमें उस पर भरोसा करने का वश्विास नहीं है , अगर उन्होंने ईश्वर पर इतना भरोसा नहीं कयिा है क उिस पर पूरी तरह नर्भिर हो सकें , तो वे पीड़ा से बच नहीं सकते। ईश्वर पर भरोसा करना एक बहुत बड़ी बात है।

हम जनि वर्षों से गुज़र रहे हैं , वे बहुत कठनि और बहुत खतरनाक हैं , लेकनि अंत में मसीह की वजिय होगी। आप देखेंगे क लिोग चर्च का कतिना सम्मान करेंगे — बशर्ते क हम [ईसाई] सही तरीके से जएिँ। लोगों को एहसास होगा क अिन्यथा इससे कुछ भी अच्छा नहीं होगा। राजनेताओं को पहले ही एहसास हो गया है क अिगर कोई इस दुनयिा में लोगों की मदद कर सकता है जो एक पागलखाने में बदल गई है , तो वह चर्च के लोग हैं। हाँ , आश्चर्यचकति न हों ! हमारे

राजनीतिक नेताओं ने अपनी ''शक्तिहीनता को स्वीकार कर लिया है और उन्होंने हाथ खड़े कर दिए हैं। एक बार, कई राजनेता मेरे सेल में आए और कहा: "भिक्षुओं को लोगों को उपदेश देने और ज्ञान देने के लिए दुनिया में जाना चाहिए। कोई और रास्ता नहीं है। "ये कितने कठिन वर्ष रहे हैं !... काश आप जानते कि हम कितनी दूर आ गए हैं और हमारे आगे क्या है !...

लोगों की खोजें

— एक सर्दियों में , अस्सी लोग मेरे कालीवा में आए — [हर तरह के लोग] छात्रों से लेकर रंगमंच निर्देशकों तक। अपनी आँखों में आँसू लिए, इन लोगों ने मुझसे पूछा कि क्या वे ... धर्मशास्त्र का अध्ययन कर सकते हैं ! दुनिया की स्थिति पागलपन है। हर कोई कुछ न कुछ खोज रहा है , लेकिन ज़्यादातर को नहीं पता कि क्या। कुछ लोग मनोरंजन केंद्रों में सत्य की तलाश करते हैं , जबकि अन्य पागलपन भरा संगीत सुनकर मसीह को पाना चाहते हैं ...

— यह सच है , गेरोन्डा , लोग किस खोज पर निकले हैं ! कितने सारे लोग आपके पास आते हैं , और वे घंटों तक खड़े रहते हैं , आपसे मिलने की अपनी बारी का इंतज़ार करते हुए।

— यह भी समय के संकेतों में से एक है — लोग मेरी दुर्दशा से भी मदद मांगते हैं। मैं अपने आप में कुछ भी अच्छा नहीं देखता और सोचता हूँ : लोगों को मुझमें ऐसा क्या मिलता है जो वे इस तरह बेतहाशा मेरी ओर दौड़ पड़ते हैं ? आखिर, मैं वास्तव में कौन हूँ ? एक कद्दू जिस पर तरबूज का छिलका लगा हो। और आजकल तो लोग तरबूज़ की जगह कद्दू भी खा लेते हैं , क्योंकि उनके छिलके तरबूज़ के छिलके जैसे दिखते हैं। लोग दुनिया के दूसरे छोर से मुझे देखने आते हैं और उन्हें यह भी पक्का नहीं पता होता कि उन्हें मैं वहाँ मिलूँगा भी या नहीं। और मैं कैसा महसूस करता हूँ ? एक तरफ, मैं खुद से घृणा करता हूँ , लेकिन दूसरी तरफ—इन लोगों की खातिर भी दुख होता है। हम कहाँ आ पहुँचे हैं ! दुनिया कितनी नीच हो गई है ! भविष्यवक्ता यशायाह कहते हैं कि एक समय आएगा जब लोग एक ऐसे व्यक्ति को, जो एक चोगा पहने होगा, ढूंढेंगे और उससे कहेंगे : 'आओ, हम तुम्हें राजा बनाएँ। '[9] ईश्वर हम पर दया करें !

कैपाडोसिया के संत आर्सेनियस ने उन लोगों के बारे में अठ्ठाईसवां भजन पढ़ा जो समुद्र में खतरे का सामना करते हैं। और जब मैं इसे पढ़ता हूँ , तो मैं कहता हूँ : 'हे मेरे ईश्वर , निस्संदेह ज़मीन भी—अर्थात् पूरी दुनिया —समुद्र से भी अधिक खतरनाक हो गई है ! लोग दुनिया में आध्यात्मिक रूप से डूब रहे हैं। ' जब जीवन में विश्वास खो चुके लोग मेरे पास आते हैं , तो मैं उन्हें तेतीसवां और छत्तीसवां भजन पढ़कर सुनाता हूँ : 'ईश्वर प्रतिशोध का स्वामी है , ईश्वर प्रतिशोध का स्वामी है ; वह अन्यायी नहीं है। हे पृथ्वी के न्यायी , उठो; घमण्डी लोगों को दंड दो... 'हे प्रभु , तेरे लोग दीन हो गए हैं , और तेरी विरासत का तिरस्कार किया गया है ... परन्तु प्रभु मेरा शरणस्थान रहा है , और मेरा परमेश्वर मेरी आशा की सहायक शक्ति रहा है ...'" ये पवित्र शब्द आत्मा को बहुत सांत्वना देते हैं। काश कि दुर्भाग्यशाली लोग स्वर्ग की ओर एक बार भी नज़र डालते , तो बहुत कुछ बदल जाता। लेकिन आज, लोग ईश्वर के बारे में नहीं सोचते। इसलिए, आध्यात्मिक सहायता को लोगों के भीतर कोई प्रतिक्रिया नहीं मिलती; उनके साथ पारस्परिक समझ तक नहीं पहुँचा जा सकता।

मैं निरंतर ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे संसार में धर्मनिष्ठ लोगों , ईसाइयों को उत्पन्न करें , ताकि वे दूसरों की मदद कर सकें। ईश्वर ऐसे ईसाइयों को दीर्घायु प्रदान

---

[9] देखें यशायाह 3:6।

करें। आइए प्रार्थना करें कि ईश्वर संसार को ज्ञान प्रदान करें और अन्य लोग प्रकट हों — आज संसार को नष्ट करने वालों जैसे नहीं, बल्कि नए, शुद्ध लोग। आइए हम ईश्वर से नए मक्काबीस के उभरने की प्रार्थना करें। [10] युवाओं के पास अनुभव की कमी हो सकती है, लेकिन वे छल और चालाकी से मुक्त होते हैं।

आइए हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि वे न केवल चर्च से संबंधित लोगों को, बल्कि अधिकार के पदों पर बैठे लोगों को भी प्रबुद्ध करें, ताकि उन पर ईश्वर का भय हो और वे कुछ ज्ञान का वचन बोल सकें। सत्ता में रहने वाले लोग अपनी एक प्रबुद्ध बात से पलक झपकते ही दुनिया की स्थिति बदल सकते हैं, जबकि एक ही मूर्खतापूर्ण बात से वे एक पूरे राज्य को बर्बाद कर सकते हैं। एक अच्छा निर्णय दुनिया के लिए एक आशीर्वाद है, जबकि एक बुरा निर्णय उसके लिए एक तबाही है। लोगों की दुर्भाग्य केवल उनकी भौतिक जरूरतों में ही नहीं है, न ही केवल इस तथ्य में कि उनके पास खाने के लिए कुछ नहीं है और वे वंचित हैं। उनकी आध्यात्मिक दुर्भाग्य कहीं अधिक भयानक है। यह सुनिश्चित करने में प्रार्थना बहुत मदद करेगी कि मसीह लोगों को थोड़ी रोशनी प्रदान करें। आखिरकार, मसीह [इस तरह काम करते हैं]: वे एक स्क्रूड्राइवर लेते हैं, जहाँ ज़रूरत होती है वहाँ एक पेंच कसते हैं, जहाँ ज़रूरत होती है वहाँ एक ढीला करते हैं — और सब कुछ ठीक हो जाता है; यह देखने में आनंददायक होता है — सब कुछ अपनी जगह पर आ जाता है। जब ईश्वर कुछ लोगों को ज्ञान प्रदान करते हैं, तो बुराई स्वयं धीरे-धीरे अपनी आकर्षण खो देती है और उसे अपनाने वाला कोई नहीं मिलता। क्योंकि बुराई को नष्ट करने वाला ईश्वर नहीं है —नहीं, यह स्वयं नष्ट हो जाती है। वह समय आएगा जब सब कुछ अपने आप ठीक हो जाएगा। मैं देख सकता हूँ कि उच्च पदों पर बैठे कई लोग समझते हैं कि क्या हो रहा है; इससे उन्हें पीड़ा होती है, और वे बुराई के खिलाफ लड़ रहे हैं। यह सब मुझे विशेष आनंद देता है।

हमारे युग में, जीवित उदाहरणों की कमी है

— गेरोन्डा, जेरूसलम के संत सिरिल यह क्यों कहते हैं कि अंतिम दिनों के शहीद 'सभी शहीदों से बड़े' होंगे?[11]

— क्योंकि अतीत में [आत्मा के] कई नायक थे। लेकिन हमारे युग में जीवित उदाहरणों की कमी है; मैं अभी चर्च और मठवाद के बारे में सामान्य रूप से बात कर रहा हूँ। हमारे समय में, शब्द और किताबें तो बढ़ गई हैं, लेकिन वास्तविक जीवन के अनुभव कम हो गए हैं। हम केवल अपने चर्च के पवित्र तपस्वियों की प्रशंसा करते हैं, यह महसूस किए बिना कि उनकी मेहनत कितनी महान थी। इसे समझने के लिए, हमें स्वयं प्रयास करना होगा; हमें संतों से प्रेम करना चाहिए और उनके प्रति प्रेम से[12], उनके जैसे बनने का प्रयास करना चाहिए। बेशक, दयालु ईश्वर हमारे युग की विशिष्टताओं और उन परिस्थितियों, जिनमें हम रहते हैं, दोनों को ध्यान में रखेंगे, और उसी के अनुसार हमसे हिसाब लेंगे। और यदि हम एक छोटा सा भी कार्य करते हैं, तो हमें प्राचीन काल के ईसाइयों से भी अधिक महिमा का मुकुट पहनाया जाएगा।

पहले के दिनों में, त्याग की भावना थी। हर कोई अच्छाई का अनुकरण करने का प्रयास करता था। परिणामस्वरूप, न तो बुराई और न ही आलस्य हावी हो पाता था। अच्छाई की प्रचुरता थी, त्याग की भावना थी, और इसलिए कोई आलसी व्यक्ति अपनी आलस्य में बना नहीं रह पाता था। वे अच्छाई

---

[10] यह उपनाम 'मक्काबियस' (संभावित रूप से, जिसका अर्थ है 'शत्रुओं को मारने वाला') यहूदी विद्रोह (166 ईसा पूर्व) के नेता यहूदा और उसके उत्तराधिकारियों को दिया गया था। यह विद्रोह सेल्यूसीड वंश के नेता एंटिओकस चौथे एपिफिनिस के खिलाफ था। मक्काबीयों ने अपने पूर्वजों के धर्म और इज़राइल की राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए निस्वार्थ रूप से लड़ा (देखें मक्काबी की पुस्तकें)।

[11] "अंत के दिनों के शहीद पहले शहीदों से बड़े होंगे।" सेंट सिरिल ऑफ जेरूसलम। होमलीज, 15वीं होमीली। मॉस्को, 1855। पृ. 261।

[12] फिलोतिमो (ग्रीक: φιλότιμο) – आधुनिक रूसी में इस शब्द के लिए कोई समकक्ष नहीं है। मोटे तौर पर, इसका अनुवाद उदारता, आत्म-बलिदान की प्रवृत्ति, या किसी आध्यात्मिक या नैतिक आदर्श की खोज में भौतिक चीजों की उपेक्षा के रूप में किया जा सकता है। यह शब्द अक्सर एल्डर पैसियोस की रचनाओं में दिखाई देता है, जो आध्यात्मिक जीवन में फिलोतिमो के महत्व पर जोर देते हैं। – अनुवादक की टिप्पणी।

की सामान्य लहर के साथ बहे चले जाते थे। मुझे याद है कि एक बार थ्रेसोनीकी में हम सड़क पार करने के लिए ट्रैफिक लाइट बदलने का इंतज़ार कर रहे थे। हरी बत्ती जलते ही भीड़ चल पड़ी, और मुझे लगा कि मैं भी बाकी सबके साथ बहता जा रहा हूँ। मुझे बस एक के बाद एक पैर आगे बढ़ाते रहना था और सड़क के दूसरी तरफ़ पहुँच जाना था। मेरा मतलब यह है कि अगर हर कोई एक ही दिशा में जा रहा है, तो किसी एक व्यक्ति के लिए भीड़ के साथ न चलना मुश्किल हो जाता है — भले ही वह न चाहे। दूसरे उन्हें भी अपने साथ बहा ले जाते हैं। आजकल, अगर कोई व्यक्ति ईमानदारी और आध्यात्मिकता से जीना चाहता है, तो दुनिया में उसके लिए कोई जगह नहीं है; उसे बहुत कठिनाई होती है। और अगर वह सावधान नहीं है, तो वह ढलान पर लुढ़कने लगेगा; सांसारिक प्रवाह उसे बहा ले जाएगा।

पहले के दिनों में, अच्छाई और सद्गुणों की प्रचुरता थी; बहुत से अच्छे उदाहरण थे, और अच्छाई की भीड़ में बुराई डूब जाती थी। दुनिया या मठों में मौजूद दुराचार के कुछ ही उदाहरणों पर किसी का ध्यान नहीं जाता था और वे लोगों को कोई नुकसान नहीं पहुँचाते थे। लेकिन अब क्या हो रहा है? बुरे उदाहरणों की भरमार है, जबकि जो थोड़ा बहुत अच्छाई बची है, उसकी कोई कद्र नहीं की जाती। दूसरे शब्दों में, अब ठीक इसके विपरीत हो रहा है: थोड़ी सी अच्छाई बुराई की भरमार में डूब रही है, और बुराई का बोलबाला है।

यदि एक व्यक्ति या कुछ लोगों में भक्ति की भावना हो, तो यह दूसरों के लिए बहुत मददगार होती है। क्योंकि यदि कोई आध्यात्मिक रूप से उन्नति करता है, तो इसका लाभ न केवल उसे स्वयं को, बल्कि उसे देखने वालों को भी होता है। उसी प्रकार एक आलसी व्यक्ति पर भी लागू होता है —वे दूसरों को प्रभावित करते हैं। और अगर एक व्यक्ति, फिर दूसरा, आलसी हो जाता है, तो धीरे-धीरे, अनजाने में, उनके आसपास कुछ भी अच्छा नहीं बचता। इसीलिए, प्रचलित आलस्य के बीच, त्याग की भावना आवश्यक है। हमें इस संबंध में अत्यंत सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि आज के लोग, दुर्भाग्य से, उस बिंदु पर पहुँच गए हैं जहाँ वे ढिलाई और कामुकता को बढ़ावा देने वाले कानून भी बनाते हैं। यहाँ तक कि जो लोग विश्वास में प्रयास कर रहे हैं, वे भी इन कानूनों का पालन करने के लिए बाध्य हैं। इसलिए, जो प्रयास कर रहे हैं, उन्हें न केवल सांसारिक आत्मा के प्रभाव का विरोध करना चाहिए, बल्कि इस दुनिया के लोगों से अपनी तुलना करने से भी बचना चाहिए।[13] दुनियादार लोगों से अपनी तुलना करके, ईसाई खुद को संत मानने लगते हैं और आत्मसंतुष्ट हो जाते हैं; अंततः, वे उन लोगों से भी बदतर हो जाते हैं जिनसे उन्होंने अपनी तुलना की थी। आध्यात्मिक जीवन में हमारे आदर्श इस दुनिया के लोग नहीं, बल्कि संत होने चाहिए। प्रत्येक गुण के संबंध में निम्नलिखित अभ्यास करना अच्छा होगा: उस गुण से विशिष्ट किसी संत को ढूंढें और उसकी जीवनकथा को ध्यानपूर्वक पढ़ें। तब व्यक्ति देखेगा कि उसने अभी तक कुछ भी नहीं किया है, और विनम्रता के साथ अपने आध्यात्मिक जीवन को जारी रखेगा। स्टेडियम में धावक पीछे छूटे लोगों को देखने के लिए पीछे नहीं देखते। क्योंकि अगर वे पीछे रहने वालों को घूरते, तो वे खुद ही सबसे आखिरी हो जाते। अगर मैं उत्कृष्ट लोगों की नकल करने का प्रयास करता हूँ, तो मेरा अंतःकरण परिष्कृत होता है। लेकिन जब मैं पीछे रह रहे लोगों को देखता हूँ, तो मुझे अपने लिए एक बहाना मिल जाता है, यह कहते हुए कि उनकी कमियों की तुलना में मेरी कमियाँ मामूली हैं। मैं यह सोचकर खुद को आश्वस्त करता हूँ कि मुझसे भी बुरी हालत में कोई और है। इस तरह, मैं अपनी अंतरात्मा को दबा देता हूँ, या यूँ कहें कि मैं अपने दिल को असंवेदनशील बना देता हूँ, मानो उस पर प्लास्टर की एक परत चढ़ी हो।

एक 'फिसलन भरी ढलान' खोजना और उस पर फिसलना आसान है

— 'लेकिन, गेरोना, हमें अच्छा करने में इतना कठिनाई क्यों होती है, जबकि बुराई में गिरना इतना आसान क्यों होता है?'

— क्योंकि, जब अच्छाई करने की बात आती है, तो एक व्यक्ति को पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से कड़ी मेहनत करनी होती है और स्वयं प्रयास करना होता है, जबकि जब बुराई की बात आती है, तो शैतान एक व्यक्ति की मदद करता है। इसके अलावा, लोग अच्छाई का अनुकरण नहीं करते हैं, और न ही उनके अपने अच्छे विचार होते हैं। मैं अक्सर गृहस्थों

---

[13] एल्डर पैसियोस की रचनाओं में, और सामान्य रूप से ग्रीक भाषा में, "κοσμικός" शब्द का आमतौर पर अर्थ है 'एक ऐसा व्यक्ति जो चर्च से संबंधित नहीं है, या जो केवल नाम मात्र के लिए उससे संबंधित है'। वर्तमान पाठ में, इस शब्द का सामान्यतः अनुवाद 'एक सांसारिक व्यक्ति' या 'इस दुनिया का व्यक्ति' के रूप में किया जाता है, जबकि 'layperson' शब्द ग्रीक λαϊκός के अनुरूप है, जो दुनिया में रहने वाले एक सचेत ईसाई को दर्शाता है। – अनुवादक की टिप्पणी।

को नम्निलखिति उदाहरण देता हूँ। मान लीजिए मेरे पास एक कार है। मैं तर्क करने लगता हूँ : 'मुझे इसकी ज़रूरत क्या है ? मेरा एक दोस्त , जसिके पास भी कार है , मुझे ज़रूरी कामों के लिए लफ्ट दे सकता है। ज़रूरत पड़ने पर, मैं टैक्सी ले सकता हूँ। मुझे यह कार अपने दोस्त , जो कई बच्चों का पति है , को दे देनी चाहिए, ताकि वह अपने गरीब बच्चों को शहर से बाहर मठों में ले जा सके , उन्हें आराम करने और अपनी ताकत फरि से हासलि करने दे सके। " तो, अगर मैं कार कसिी और को दे दूँ , तो कोई भी मेरे उदाहरण का पालन नहीं करेगा। हालाँकि , अगर मैं अपनी कार—जो आपके जैसी ही मॉडल है —को एक बेहतर कार से बदल दूँ , तो, आप देखिएगा , आप उस रात एक पल भी नहीं सो पाएंगे , अपनी कार को भी मेरी जैसी कसिी दूसरी , बेहतर कार से बदलने का तरीका ढूंढते रहेंगे। आप यह वचिार भी नहीं करेंगे कि जो कार आपके पास है वह भी एक अच्छी कार है। उस स्थति में , आप कहेंगे : 'मैं कुछ बेच दूँगा , कर्ज़ ले लूँगा , लेकनि मैं अपनी कार बदलूँगा। ' जबकि पहले मामले में , इसके वपिरीत, कोई भी मेरे उदाहरण का पालन नहीं करेगा ; कोई यह नहीं कहेगा : 'मुझे इस कार की ज़रूरत क्या है ? मुझे इसे कसिी ऐसे व्यक्ति को दे देना चाहिए जसिे इसकी वास्तव में ज़रूरत है !' वे तो यह भी कह सकते हैं कि मैं पागल हो गया हूँ।

लोग बुराई से आसानी से प्रभावति हो जाते हैं। गहराई में , वे अच्छाई को पहचानते हैं ; यह उनका सम्मान कमाती है। हालांकि , वे बुराई से आसानी से प्रभावति हो जाते हैं और इसके बहकावे में आ जाते हैं , क्योंकि बुराई को[14] tangalashka द्वारा ईंधन मलिता है। [15] 'मीठा रोमांच ' पाना आसान है —आखरिकार, प्रलोभी कुछ नहीं करता सवािय ईश्वर की रचनाओं को इस रोमांच की ओर धकेलने के। लेकनि मसीह परम कुलीनता के साथ कार्य करते हैं। 'यह अच्छा है ,' वह कहते हैं ,'"यदि कोई मेरी अनुसरण करना चाहता है ..."'[16] वह कसिी को जबरदस्ती अपने पास आने के लिए मजबूर नहीं करते ; वह यह नहीं कहते : 'तो चलो, मेरे पास मार्च करो!' शैतान बेईमान है। वह कसिी व्यक्ति को हाथ-पैर से बाँधकर जहाँ चाहे वहाँ ले जाता है। ईश्वर , हालांकि , मानवीय स्वतंत्रता का सम्मान करते हैं। उन्होंने लोगों को दास के रूप में नहीं , बल्कि पुत्रों के रूप में बनाया। वह जानते थे कि पतन होगा, लेकनि फरि भी, उन्होंने लोगों को अपना दास नहीं बनाया। इसके बजाय उन्होंने दया दखिाने , अवतार लेने , सूली पर चढ़ने और इस प्रकार मानव जाति को बचाने का वकिल्प चुना। ईश्वर ने मनुष्य को स्वतंत्रता प्रदान की है। और यद्यपि शैतान इसका उपयोग बहुत से बुरे कामों के लिए कर सकता है , मनुष्य को प्रदान की गई स्वतंत्रता लोगों के लिए परीक्षा का एक अनुकूल अवसर प्रदान करती है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि कोई व्यक्ति दलि से क्या करता है [और क्या नहीं करता]। और जब कोई व्यक्ति आत्म -प्रेम से भरा होता है , तो यह बहुत स्पष्ट रूप से दखिाई देता है।

ईश्वर हमें हमारी कस्मित पर नहीं छोड़ते

लोग, आज खुद को ऐसी [भयानक] स्थति में पाकर, जो मन करता है वही करते हैं। कुछ गोलयिों पर जीते हैं , तो कुछ नशीली दवाओं पर। हर अब-तब, तीन-चार भ्रम में जी रहे लोग कोई नया धर्म बना लेते हैं। फरि भी, अपेक्षाकृत रूप से कम अपराध, दुर्घटनाएँ या अत्याचार होते

---

[14] 'कानोनार्च ', यानी, वह जो यह सुझाव देता है कि क्या करना है। 'कानोनार्च ' शब्द से – एक पाठक जो, दैवीय सेवा के दौरान, यह घोषणा करता है कि गायन मंडली को क्या गाना है।

[15] तांगलाश्का (ग्रीक : ταγκαλάκι) – यह वह उपनाम है जो वृद्ध ने शैतान को दयिा था।

[16] मत्ती 16:24.

हैं। ईश्वर लोगों की मदद करता है। मुझे याद है कि एक बार एक नौजवान मेरी झोपड़ी में आ गया और पूछा : 'अरे , आपके पास गिटार है ?' वह न सिर्फ गांजा पीता है , न सिर्फ यह पूछे बिना बकबक करता रहता है कि क्या कोई और उसे सुनना चाहता है , बल्कि नहीं — उसे गिटार भी चाहिए! दूसरे जीवन से तंग आ चुके होते हैं और अपनी जान देना चाहते हैं , या फिर, कोई बुरा काम करने के बाद, कोई बड़ा हंगामा खड़ा करना चाहते हैं। हम उन लोगों की बात नहीं कर रहे हैं जिनमें ऐसी इच्छाएं धर्मनिंदा के विचारों के रूप में उत्पन्न होती हैं , और जो उन्हें दूर कर देते हैं। हम अब उन लोगों की बात कर रहे हैं जो जीवन से तंग आ चुके हैं और नहीं जानते कि क्या करें। ऐसे ही एक व्यक्ति ने मुझसे कहा: 'मैं चाहता हूँ कि अखबार लिखें कि मैं एक नायक हूँ। ' कुछ लोग अपने [दुष्ट] उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए ठीक ऐसे ही लोगों का शोषण करते हैं। लेकिन — ईश्वर का शुक्र है ! — वास्तव में अपेक्षाकृत बहुत कम बुराई होती है।

इस तथ्य के बावजूद कि हमने खुद को इस स्थिति में पहुँचाया है , ईश्वर हमें हमारी तकदीर पर नहीं छोड़ते। ईश्वर वर्तमान दुनिया की रक्षा दोनों हाथों से करते हैं , जबकि पहले के समय में वे ऐसा केवल एक हाथ से करते थे। आज, जब कोई व्यक्ति इतने सारे खतरों से घिरा होता है , तो ईश्वर उसकी रक्षा करते हैं , ठीक वैसे ही जैसे एक माँ अपने पहले कदम रखने वाले बच्चे की रक्षा करती है। आजकल, मसीह, परमेश्वर की परम पवित्र माता और संत हमें अतीत की तुलना में अधिक मदद करते हैं , लेकिन हम इसे महसूस नहीं करते हैं। और अगर यह मदद न होती तो दुनिया किस हाल में होती!...

अधिकांश लोग ऐसी स्थिति में हैं कि जिसके बारे में सोचना भी डरावना है। कोई नशे में है , कोई जीवन से निराश है , तीसरे का दिमाग़ भ्रमित है , और चौथा दर्द और अनिद्रा से पीड़ित है। और फिर भी आप इन सभी लोगों को कार चलाते , मोटरसाइकिल चलाते , जोखिम भरे काम करते और खतरनाक मशीनरी का संचालन करते हुए देखते हैं। क्या वे वास्तव में ऐसी चीजें करने की स्थिति में हैं ? कितने लोग कब के अपंग हो गए होते ! ईश्वर हमसे कितना रक्षा करता है , फिर भी हम इसे महसूस नहीं करते ...

मुझे याद है कि पुराने दिनों में , हमारे माता-पिता खेतों में काम करने चले जाते थे और हमें पड़ोसन की देखभाल में छोड़ देते थे। हम उसके बच्चों के साथ खेलते थे। उन दिनों , बच्चे संतुलित होते थे। पड़ोसन अपने घर के काम में लगी रहती थी और बीच-बीच में हमारी ओर एक नज़र डाल लेती थी, और हम चुपचाप खेलते रहते थे। इसी तरह, मसीह, ईश्वर की माता और संतों बस दुनिया पर नजर रखते थे। लेकिन आज, मसीह, ईश्वर की माता और संत लगातार या तो किसी को कहीं ले जा रहे हैं या किसी को किसी चीज़ से रोक रहे हैं , क्योंकि आजकल लोग असंतुलित हैं। जो चीजें अब हो रही हैं —भगवान न करे !... यह ठीक कई मुश्किल बच्चों वाली माँ की तरह है : एक थोड़ा बेवकूफ़ है , दूसरा थोड़ा शरारती है , और तीसरा अवज्ञाकारी है ... तो वह वहाँ है , उन पर नज़र रखती है : अपने बच्चों पर, और पड़ोसियों के बच्चों पर भी। एक बहुत ऊँचा चढ़ गया है और गिरने ही वाला है , दूसरा चाकू उठा रहा है और अपनी गला रेतना चाहता है , और तीसरा चौथे को चोट पहुँचाने की तैयारी कर रहा है। माँ आराम नहीं कर सकती, वह एक पल भी नहीं सोती, वह उन पर नज़र रखती है , फिर भी बच्चे उसकी चिंता को नहीं समझते। इसी तरह, दुनिया यह महसूस नहीं कर पाती कि ईश्वर उसकी मदद कर रहे हैं। अगर ईश्वर मदद नहीं कर रहे होते , तो इतनी खतरनाक आधुनिक तकनीक के इस प्रचुरता के साथ, दुनिया बहुत पहले ही पूरी तरह तबाह हो चुकी होती। लेकिन [सौभाग्य से] हमारे रक्षक हैं : हमारे पिता—ईश्वर , हमारी माता—परम पवित्र ईश्वर की माता, और हमारे भाई-बहन—संत और स्वर्गदूत।

मनुष्य जाति के प्रति शैतान की नफ़रत कितनी महान है ! हमें नष्ट करने की दुश्मन की इच्छा कितनी प्रबल है ! और फिर भी हम भूल जाते हैं कि हम किसके खिलाफ़ युद्ध लड़ रहे हैं। काश आप जानते कि शैतान इस धरती को नष्ट करने की कोशिश में , अपनी पूंछ से कितनी बार पहले ही जकड़ चुका है ! लेकिन ईश्वर उसे ऐसा करने नहीं देते ; वह उसकी योजनाओं को विफल कर देते हैं। ईश्वर शैतान द्वारा पहुँचाने की कोशिश किए गए बुरे से भी अच्छा निकालते हैं ; वह बुराई से महान अच्छाई निकालते हैं। शैतान अब धरती जोत रहा है , लेकिन अंततः इसे वही बोएगा जो इसे रचने वाला है।

इस पर विचार करें : क्योंकि भला परमेश्वर कभी भी बड़ी परीक्षाओं को तीन पीढ़ियों से अधिक समय तक नहीं चलने देता। वह हमेशा आशा की एक कड़ी छोड़ देता है। बेबीलोन के बंधन से पहले , इस्राएलियों ने अपनी अंतिम बलिदान की आग को एक खाली कुएँ में छिपा दिया था, ताकि वे बाद में नई बलिदानों के लिए उससे आग जला सकें। और वास्तव में — सत्तर साल बाद, जब वे निर्वासन से लौटे , तो पहली बलि के लिए आग उसी से प्रज्वलित की गई जो उन्हें कुएँ में मिला था।[17] किसी भी कठिन समय में , हर कोई बुराई की ओर आकर्षित नहीं होता। ईश्वर आने वाली पीढ़ियों के लिए खमीर को संरक्षित रखता है। कम्युनिस्टों ने पचहत्तर वर्षों तक विरोध किया, और पचहत्तर वर्षों तक डटे रहे — ठीक तीन पीढ़ियों तक। लेकिन ज़ायोनिस्ट , इतने वर्षों तक विरोध करने के बावजूद , सात साल भी नहीं टिकेंगे।

कठिन समय आने वाला है

ईश्वर अब एक गंभीर उथल-पुथल होने दे रहे हैं। कठिन समय आने वाला है। महान परीक्षाएँ हमारा इंतजार कर रही हैं। आइए इसे गंभीरता से लें और आध्यात्मिक रूप से जीना शुरू करें। परिस्थितियाँ हमें आध्यात्मिक रूप से काम करने के लिए मजबूर कर रही हैं , और करती रहेंगी। हालाँकि , यह आध्यात्मिक कार्य तभी सार्थक होगा जब हम इसे खुशी -खुशी , अपनी इच्छा से करें , न कि इसलिए करें क्योंकि हम दुख से मजबूर हैं। कई संत हमारे युग में जीना चाहते थे ताकि वे सदाचार के महान कार्य कर सकें।

मुझे खुशी होती है जब कोई मुझे चुप न रहने और उनकी योजनाओं को विफल करने के लिए धमकी देता है। जब, देर रात, मैं किसी को बाड़ फांदकर कालीवा के आँगन में कूदते हुए सुनता हूँ , तो मेरा दिल मीठी खुशी से धड़कने लगता है। लेकिन जब रात के आगंतुक पूछते हैं , 'एक तार आया है ; अमुक बीमार है , उसके लिए प्रार्थना करें !' — तब मैं अपने आप से कहता हूँ : 'आह, तो बात यह है ! लगता है मैं फिर से असफल हो गया हूँ !..' मैं यह इसलिए नहीं कहता कि मैं जीने से थक गया हूँ , बल्कि इसलिए क्योंकि मैं मसीह के लिए मरने की संभावना पर आनंदित होता हूँ। इसलिए आइए हम इस बात पर आनंद मनाएँ कि आज इतना अनुकूल अवसर प्रस्तुत हुआ है। शहीद होने की इच्छा रखने वालों के लिए एक बड़ा इनाम इंतजार कर रहा है।

पहले के दिनों में , जब युद्ध छिड़ता था, तो एक आदमी अपने देश और अपने लोगों की रक्षा करते हुए दुश्मन से लड़ने जाता था। अब हम देश की रक्षा के लिए संघर्ष में नहीं उतर रहे हैं। हम इस लड़ाई में इसलिए नहीं जा रहे हैं ताकि बिरबर लोग हमारे घर न जलाएं , हमारी बहनों के साथ दुर्व्यवहार न करें और हमें अपमानित न करें। हम न तो राष्ट्रीय हितों के लिए और न ही किसी विचारधारा के लिए युद्ध लड़ रहे हैं। अब हम या तो मसीह के पक्ष में लड़ रहे हैं या शैतान के पक्ष में। कौन किसके पक्ष में है — शक्ति का संतुलन बिल्कुल स्पष्ट

[17] देखें 2 मक्काबीस 1:19–22।

है। कब्जे के दौरान, यदि आप जर्मनों को नमस्ते नहीं करते थे तो आप एक नायक थे। अब आप एक नायक हैं यदि आप शैतान को नमस्ते नहीं करते हैं।

किसी न किसी तरह, हम भयानक घटनाओं के साक्षी बनने वाले हैं। आध्यात्मिक लड़ाइयाँ होंगी। संत और अधिक पवित्र हो जाएँगे , जबकि अशुद्ध और भी अधिक घृणित हो जाएँगे। [18] एक तूफ़ान हमारा इंतज़ार कर रहा है , और हमारे संघर्ष की एक कीमत है , क्योंकि अब हमारा दुश्मन अली पाशा नहीं , न ही हिटलर, न ही मुसोलिनी , बल्कि स्वयं शैतान है। और इसलिए हमारा इनाम भी स्वर्गीय होगा।

ईश्वर , दयालु ईश्वर के रूप में , बुराई को भलाई में बदल दे। आमीन।

भाग 1.
पाप और शैतान पर

"प्यारे यीशु से दूर रहकर, हम कड़वे प्याले से पीते हैं "

अध्याय 1.
पाप कैसे फैशनेबल हो गया है

— गेरोना , हमने सुना है कि आपने किसी को बताया था कि युद्ध होगा। क्या यह सच है ?

— मैं खुद कुछ नहीं कहता, लेकिन लोग जो मन में आए, वही कहते हैं। और अगर मुझे कुछ पता भी होता — तो मैं किसे बताता?..

— युद्ध , गेरोंडा , एक ऐसी बर्बरता है !...

— अगर लोगों ने पाप को 'परिष्कृत ' न किया होता, तो वे बर्बरता के इस स्तर तक नहीं पहुँचते। लेकिन इससे भी बड़ी बर्बरता नैतिक तबाही है। लोग आत्मा और शरीर दोनों से सड़ रहे हैं। एक आदमी ने मुझसे कहा: 'लोगों ने एथेंस को एक जंगल का नाम दे दिया है , लेकिन देखो —कोई भी इस जंगल को कभी नहीं छोड़ता। हर कोई कहता है , 'जंगल !' — और हर कोई इस जंगल में उमड़ पड़ता है। " लोग किस हाल पर आ गए हैं ! पशुओं की स्थिति में। आप जानते हैं कि पशुओं के साथ ऐसा होता है : पहले वे अस्तबल में जाते हैं , मलत्याग करते हैं , पेशाब करते हैं ; फिर गोबर सड़ने और धधकने लगता है , और जानवरों को गर्मी महसूस होती है। उन्हें अस्तबल में अच्छा लगता है और वे उसे छोड़ना नहीं चाहते। मेरा मतलब यह है कि लोग भी पाप की 'गरमाहट' को महसूस करते हैं और छोड़ना नहीं चाहते। वे बदबू को सूंघ सकते हैं , लेकिन वे उस गरमाहट को छोड़ने से हिचकिचाते हैं। अगर कोई नया व्यक्ति उस खलिहान में प्रवेश करे , तो वह उस बदबू को बर्दाश्त नहीं कर पाएगा। लेकिन किसी और को इससे पहले ही आदत पड़ चुकी है ; वह हमेशा उसी खलिहान में रहता है , और बदबू उसे परेशान नहीं करती।

— और कुछ , गेरोन्डा , यह कहकर अपना पक्ष सही ठहराते हैं कि इतनी पापी ज़िंदगी हमारी ज़माने में शुरू नहीं हुई। वे कहते हैं , 'देखो , प्राचीन रोम में क्या -क्या होता था!..'

---

[18] देखें प्रका . 22:11।

— हाँ , लेकिन रोम में लोग मूर्तियों की पूजा करते थे ; वे मूर्तिपूजक थे। और प्रेरित पौलुस [रोमियों के नाम अपने पत्र में] उन मूर्तिपूजकों से बात कर रहे थे जिन्होंने पवित्र बपतिस्मा ग्रहण कर लिया था लेकिन अभी तक अपनी बुरी आदतों का त्याग नहीं किया था।[19] हमें हर युग के सबसे बड़े नैतिक पतन के उदाहरणों को अपना आदर्श नहीं मानना चाहिए। आज पाप को फैशनेबल बना दिया गया है। बस सोचिए — आखिरकार हम एक ऑर्थोडॉक्स लोग हैं , फिर भी देखिए हम कहाँ आ पहुँचे हैं ! और जहाँ तक अन्य राष्ट्रों का सवाल है , उनका उल्लेख करना तो दूर की बात है ... लेकिन सबसे बुरी बात यह है कि आज लोग पाप के सार्वभौमिक रूप से मोहित हो गए हैं , और जब वे देखते हैं कि कोई प्रवाह के साथ नहीं चलता, पाप नहीं करता, और उसमें थोड़ी - सी भी भक्ति है , तो वे उस व्यक्ति को पिछड़ा या प्रतिक्रियावादी कह देते हैं। ऐसे लोगों को यह बात परेशान करती है कि कोई पाप नहीं करता। वे पाप को प्रगति मानते हैं। और यही सबसे बुरी बात है। अगर पाप में जीने वाले आधुनिक लोग कम से कम यह स्वीकार कर लें कि [वे पापपूर्ण जीवन जी रहे हैं], तो ईश्वर उन पर दया करेंगे। लेकिन वे जो उचित नहीं ठहराया जा सकता, उसे उचित ठहराते हैं और पाप की प्रशंसा करते हैं। और पाप को प्रगति मानना और यह दावा करना कि नैतिकता का युग समाप्त हो चुका है , अन्य बातों के अलावा, पवित्र आत्मा के विरुद्ध सबसे भयानक अपमान है। इसलिए, यदि कोई संसार में रहते हुए , अपने जीवन को शुद्ध रखने का प्रयास करता है , तो यह बहुत मूल्यवान है। ऐसे लोगों के लिए एक महान पुरस्कार प्रतीक्षा कर रहा है।

पहले के दिनों में , एक भ्रष्ट व्यक्ति या शराबी तो बाजार जाने से भी बहुत शर्मिंदा होता था, क्योंकि लोग उसका मज़ाक उड़ाते थे। और अगर कोई महिला व्यभिचारी होती, तो वह घर से बाहर झाँकने से भी डरती थी। और, कहा जा सकता है , कि यह एक तरह की ताकत के रूप में काम करता था जो पाप को रोकती थी। लेकिन आज, अगर कोई व्यक्ति धर्मपरायणता से रहता है —उदाहरण के लिए, अगर कोई युवती धार्मिक जीवन जीती है —तो लोग उसके बारे में कहते हैं : 'क्या वह चाँद से उतरी है या कुछ और?' और सामान्य तौर पर, पुराने दिनों में , अगर सांसारिक लोग कोई पाप करते थे , तो वे —बेचारे —अपने पाप का बोझ महसूस करते थे और थोड़े और विनम्र हो जाते थे। वे आध्यात्मिक जीवन जीने का मज़ाक नहीं उड़ाते थे ; बल्कि , वे उनकी प्रशंसा करते थे। लेकिन हमारे समय में , पाप करने वालों को कोई अपराध-बोध नहीं होता। और न ही वे दूसरों का कोई सम्मान करते हैं। सब कुछ समतल हो गया है। अगर कोई व्यक्ति सांसारिक जीवन नहीं जीता है , तो पापी उसका मज़ाक उड़ाते हैं।

लोगों की अंतरात्मा उन्हें दोषी ठहराती है

फ्रांस कोई साधारण विकासशील देश नहीं है ; यह कई अन्य देशों से आगे है। फिर भी, हाल के वर्षों में [20] , अस्सी हजार फ्रांसीसी लोगों ने इस्लाम धर्म अपना लिया है। क्यों ? क्योंकि उनके बीच पाप करना फैशनेबल हो गया है , लेकिन उनका अंतरात्मा उन्हें दोषी ठहराता है और वे उसे शांत करना चाहते हैं। प्राचीन यूनानियों ने , अपनी वासनाओं को सही ठहराने की इच्छा से , अपने लिए बारह देवताओं की कल्पना की। इसी तरह, फ्रांसीसियों ने भी एक ऐसे धर्म की तलाश की है जो उनकी वासनाओं को सही ठहरा सके , ताकि यह मुद्दा अब उन्हें परेशान न करे। कहा जा सकता है कि इस्लाम उनके लिए बिल्कुल उपयुक्त है : आप जितनी चाहें उतनी पत्नियाँ

---

[19] देखें रोमियों 1:24–32।

[20] नवंबर 1988 में दिया गया।

रख सकते हैं , और परलोक में यह धर्म दाल-भात की अनंत आपूर्ति , प्रचुर मात्रा में खट्टी क्रीम , और शहद का एक वास्तविक सागर का वादा करता है। और अगर मृतक को मृत्यु के बाद गर्म पानी से धोया जाए, तो वह [कथित तौर पर] अपने सभी पापों से मुक्त हो जाता है —चाहे वे कितने भी हों। वे पूरी तरह से पाक-साफ होकर अल्लाह के पास जाते हैं ! इससे ज़्यादा और क्या चाहिए? यह सब कितना सुविधाजनक है ! लेकिन फ्रांसीसी लोगों को कोई शांति नहीं मिलेगी। वे आंतरिक शांति के लिए तरसते हैं , लेकिन उन्हें वह नहीं मिलेगी , क्योंकि उनके जुनून के लिए कोई औचित्य नहीं है।

लोग चाहे कुछ भी रच लें , चाहे वे कितनी भी निर्दयता के पीछे छिप जाएँ — उन्हें फिर भी शांति नहीं मिलती। अन्याय को सही ठहराने के अपने प्रयासों में , उनकी आत्माएँ पीड़ित होती हैं। वे भीतर से ही टूट जाते हैं। इसीलिए ये दुखी आत्माएँ ध्यान भटकाने के लिए बारों और नाइटक्लबों में घूमती हैं , शराब पीती हैं , टेलीविजन देखती हैं ... दूसरे शब्दों में , उनका विवेक उन्हें दोषी ठहराता है , और उससे ध्यान हटाने के लिए, वे मूर्खतापूर्ण कामों में लग जाते हैं। और जब वे सो रहे होते हैं —क्या आपको लगता है कि वे शांति में होते हैं ? एक व्यक्ति का अंतरात्मा होता है। अंतरात्मा ही पहला पवित्र ग्रंथ है जो ईश्वर ने पहले मनुष्यों को दिया था। हम अपने माता-पिता से अपनी अंतरात्मा को 'विरासत में ' पाते हैं , ठीक एक फोटोकॉपी की तरह। कोई व्यक्ति अपनी अंतरात्मा को चाहे जितना भी कुचल ले , वह फिर भी उसके भीतर से उसे दोषी ठहराएगी। इसीलिए कहा जाता है , 'एक कीड़ा उसे खा रहा है। ' आखिरकार, एक शांतिपूर्ण , शांत अंतरात्मा से मीठी कोई चीज़ नहीं है। ऐसा व्यक्ति आंतरिक रूप से ऊंचा महसूस करता है , और फिर वह ऊँचाइयों को छूता है।

जब कोई व्यक्ति ईश्वर से मुंह मोड़ लेता है , तो उसे नरकीय यातनाओं का अनुभव होता है

मुझे एक भी दिन याद नहीं आता जब मैंने दिव्य सांत्वना का अनुभव न किया हो। कभी-कभी सन्नाटा छा जाता है , और ऐसे समय में मुझे ठीक नहीं लगता। परिणामस्वरूप , मैं यह समझ पाता हूँ कि अधिकांश लोगों का जीवन कितना दुखद है। वे ईश्वर से मुँह मोड़ चुके हैं और इसलिए दिव्य सांत्वना से वंचित हैं। कोई व्यक्ति ईश्वर से जितना दूर भटकता है , उसका जीवन उतना ही कठिन हो जाता है। लेकिन यदि किसी के पास ईश्वर है , तो उसे और किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है और न ही वह कुछ और चाहता है। यही पूरा सार है। दूसरी ओर, यदि किसी व्यक्ति के पास सब कुछ है लेकिन ईश्वर नहीं है , तो वह आंतरिक पीड़ा का अनुभव करता है। इसलिए, जहाँ तक संभव हो, हमें ईश्वर के करीब आना चाहिए। केवल ईश्वर की उपस्थिति में ही एक व्यक्ति को आनंद मिलता है —सच्चा , शाश्वत आनंद। प्यारे यीशु से दूर रहकर, हम एक कड़वे प्याले से पीते हैं। जब पुराना मनुष्य एक पुरुष —राजा का पुत्र —बन जाता है , तो वह दिव्य आनंद , स्वर्गीय मिठास का भोग करता है , और स्वर्गीय आनंद का अनुभव करता है ; यहाँ तक कि इस जीवन में भी, वह कुछ हद तक स्वर्ग के आनंद को महसूस कर लेता है। एक कम दिव्य आनंद से , एक व्यक्ति हर दिन और भी अधिक आनंद की ओर बढ़ता है। वह खुद से पूछता है : 'निश्चय ही स्वर्ग में क्या ऐसा कुछ है जो मैं अभी अनुभव कर रहा हूँ , उससे भी बड़ा हो?' वह ऐसी अवस्था का अनुभव करता है कि वह किसी भी काम पर ध्यान नहीं दे पाता। इस दिव्य गर्माहट और मिठास से , उसके घुटने ऐसे कांप जाते हैं मानो वे मोमबत्तियाँ हों। उसका हृदय आनंद से भरकर कांप जाता है ; यह अपनी पसलियों की पतली मिट्टी की दीवार को तोड़कर उड़ जाने के लिए तरसता है —क्योंकि पृथ्वी और सभी सांसारिक चीजें उसके हृदय को बेकार की तुच्छ वस्तुएं प्रतीत होती हैं।

शुरुआत में , मनुष्य ईश्वर के साथ एकता में था। हालाँकि , बाद में वह ईश्वर से मुँह मोड़ गया और उसे ऐसा महसूस होने लगा मानो वह कभी एक महल में रहता था, लेकिन फिर, खुद को महल के द्वार के बाहर हमेशा के लिए पाकर, दूर से महल को निहारता और रोता रहा। जैसे एक बच्चा अपनी माँ से अलग होने पर दुखी होता है , वैसे ही ईश्वर से मुँह मोड़ने वाला व्यक्ति भी दुखी और पीड़ित होता है। ईश्वर से मुंह मोड़ने पर, मनुष्य नारकीय यातना का अनुभव करता है। शैतान मनुष्य को ईश्वर से इतना दूर ले जाने में सफल हो गया है कि लोग मूर्तियों की पूजा करने और उन पर अपने बच्चों की बलि चढ़ाने लगे हैं। यह कितना भयानक है ! और फिर राक्षस हैं : वे धरती में इतने सारे 'देवता ' कहाँ से खोद निकालते हैं ? 'देवता ' खामोस!..[21] उन नामों में से किसी एक का सुनना ही काफी है ! फिर भी सबसे ज़्यादा दुख स्वयं शैतान को होता है — क्योंकि वह सबसे ज़्यादा ईश्वर और प्रेम से भटक गया है। लेकिन जब प्रेम चला जाता है , तो नरकीय यातना शुरू हो जाती है। प्रेम का विपरीत क्या है ? द्वेष। और द्वेष और यातना एक ही हैं।

जो ईश्वर से मुंह मोड़ लेता है , वह दैवीय प्रभाव के अधीन हो जाता है , जबकि जो ईश्वर के साथ रहता है , उसे दिव्य अनुग्रह प्राप्त होता है। ईश्वर का अनुग्रह उसी पर प्रदान किया जाएगा जिसके पास यह है। और यदि किसी व्यक्ति के पास थोड़ा सा अनुग्रह है , लेकिन वह उसका उचित श्रद्धा से व्यवहार नहीं करता, तो उसके पास जो थोड़ा सा अनुग्रह है , वह भी उससे छीन लिया जाएगा।[22] आधुनिक लोगों में ईश्वर की कृपा की कमी है क्योंकि , पाप करके , वे कृपा के उन टुकड़ों को भी दूर कर देते हैं जो उनके पास होते हैं। और जब दिव्य कृपा चली जाती है , तो सभी राक्षस क्रूरता से एक व्यक्ति में प्रवेश कर जाते हैं। जिस हद तक लोग ईश्वर से भटक गए हैं , उसी हद तक वे इस जीवन में दुख का अनुभव करते हैं। आगामी जीवन में वे शाश्वत दुख का अनुभव करेंगे। जिस हद तक कोई व्यक्ति ईश्वर की इच्छा के अनुसार जीवन जीता है , उसी हद तक — इस जीवन में भी — वह कुछ हद तक स्वर्ग की मिठास का स्वाद चखता है। या तो हम इसी जीवन में जन्नत की कुछ खुशी का अनुभव करेंगे और यहाँ से जन्नत की ओर बढ़ेंगे , या हम नरक की कुछ यातनाओं का अनुभव करेंगे और — ईश्वर न करे — नरक में पहुँच जाएँगे। जन्नत अच्छाई का सार है ; नरक की यातनाएँ बुराई का सार हैं। अच्छाई करके , एक व्यक्ति खुशी महसूस करता है। जब कोई पाप करता है , तो वह पीड़ित होता है। कोई व्यक्ति जितना अधिक अच्छा करता है , उसकी खुशी उतनी ही अधिक होती है ; वह जितना अधिक बुरा करता है , उसकी आत्मा उतनी ही अधिक पीड़ित होती है। क्या एक चोर को खुशी महसूस होती है ? उसमें क्या खुशी है ? आखिरकार, जो लोग अच्छे कर्म करते हैं , वही खुशी महसूस करते हैं। यहाँ तक कि अगर आप सड़क पर कुछ पाते हैं और उसे उठा लेते हैं , यह कहते हुए कि यह आपका है , तो आप तुरंत अपनी मानसिक शांति खो देते हैं। उसे यह नहीं पता कि वस्तु किसने खोई है ; उसने किसी का अहित या लूटपाट नहीं की है , फिर भी वह अपनी मानसिक शांति खो देता है। और एक चोर के बारे में क्या कहा जा सकता है ! यहाँ तक कि जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे से कुछ स्वीकार करता है , तो उसे वह खुशी नहीं मिलती जो उसे स्वयं कुछ देने पर मिलती है। और स्वयं दूसरों को चोरी करने और अन्याय करने में क्या खुशी हो सकती है ! तो उन लोगों को देखो जो दूसरों के साथ अन्याय और धोखा करते हैं : उनके चेहरे कितने भयानक होते हैं , वे कितनी भद्दी सूरत बनाते हैं !

एक व्यक्ति को उसके नियोक्ता द्वारा भुगतान किया जाएगा जिसके लिए वह काम करता है।

जो लोग ईश्वर से मुंह मोड़ लेते हैं , उन्हें कभी शांति नहीं मिलती और वे और अधिक कष्ट भोगते हैं। जो कोई भी ईश्वर और परलोक में विश्वास नहीं करता, वह न केवल शांति से वंचित रहता है , बल्कि स्वयं को अनंतकालिक यातनाओं के लिए भी अभिशप्त कर लेता है। एक व्यक्ति को उसी स्वामी से पुरस्कार मिलता है जिसके लिए वह काम करता है। यदि आप एक दुष्ट स्वामी के लिए काम करते हैं , तो वह इस संसार में ही आपके जीवन को दुखद बना देगा। यदि आप पाप के लिए काम करते हैं , तो शैतान आपसे अपना हक वसूल कर लेगा। यदि आप सद्गुणों का पालन करते हैं , तो मसीह आपको पुरस्कृत करेंगे। और आप मसीह के लिए जितना अधिक प्रेम से काम करते हैं , उतने ही अधिक प्रबुद्ध और आनंदित होते जाते हैं। लेकिन हम कहते हैं : 'मसीह के लिए काम करें ? क्या हम पागल हैं ?' कितना भयानक! मानव जाति के लिए मसीह की कुर्बानी को न पहचानना! मसीह ने हमें पाप से छुटकारा दिलाने के लिए सूली पर चढ़ाई सहन की,

---

[21] χαμός – मोआब के वंशजों का 'देवता ', लूत का सबसे बड़ा पुत्र (देखें 3 राजा 11:7); χαμός (आधुनिक ग्रीक) – हानि, तबाही, नुकसान। – अनुवादक का नोट।

[22] तुलना करें लूका 19:26।

ताकि पूरी मानव जाति शुद्ध हो सके। मसीह ने हमारे लिए क्या किया है, और हम उनके लिए क्या करते हैं?..

लोग पाप करना चाहते हैं और एक दयालु ईश्वर चाहते हैं। एक ऐसा ईश्वर जो हमें माफ करता रहे, जबकि हम पाप करते रहें। दूसरे शब्दों में, ताकि हम जो चाहें कर सकें, और वह हमें माफ कर दे; ताकि वह हमें लगातार माफ करता रहे, जबकि हम अपनी मनमानी करते रहें। लोग विश्वास नहीं करते, और इस वजह से वे तृष्णापूर्वक पाप में कूद पड़ते हैं। सभी बुराइयों की शुरुआत इसी से होती है —अर्थात् अविश्वास से। लोग दूसरे जीवन पर विश्वास नहीं करते और इसलिए वे किसी भी चीज़ की परवाह नहीं करते। वे एक-दूसरे को चोट पहुँचाते और धोखा देते हैं, वे अपने बच्चों को छोड़ देते हैं ... ऐसी चीजें हो रही हैं जिन्हें शब्दों में बयां करना मुश्किल है। ये गंभीर पाप हैं। इतने गंभीर पाप कि पवित्र कैनन में पवित्र पिताओं ने भी इनके जैसा कुछ नहीं देखा था। जैसा कि परमेश्वर ने सदोम और गमोरा के बारे में कहा था: 'मुझे विश्वास नहीं हो रहा है; क्या वास्तव में ऐसे पाप किए जा रहे हैं? मैं स्वयं जाकर देखूंगा।'[23]

यदि लोग पश्चाताप नहीं करते और ईश्वर की ओर वापस नहीं लौटते, तो वे अनंत जीवन खो देंगे। एक व्यक्ति को जीवन के गहरे अर्थ को खोजने में स्वयं की मदद करनी चाहिए। दिव्य सांत्वना का अनुभव करने के लिए उन्हें होश में आना चाहिए। उद्देश्य केवल पाप से परहेज़ करना नहीं, बल्कि एक व्यक्ति का आध्यात्मिक रूप से विकसित होना है।

अध्याय 2.
आजकल शैतान कैसे उत्पात मचा रहा है

हमारे पाप के द्वारा, हम शैतान को हम पर अधिकार दे देते हैं

— आज दुनिया में बहुत सारे दैवीय कब्जे के मामले हैं। शैतान ने सचमुच उत्पात मचा रखा है, क्योंकि आज लोगों ने उसे कई शक्तियाँ दे दी हैं। लोग भयानक दैवीय प्रभावों के अधीन हैं। एक व्यक्ति ने इसे बहुत सटीक रूप से समझाया: 'पहले, शैतान लोगों के मामलों में दखल देता था, लेकिन अब वह ऐसा नहीं करता। वह उन्हें [अपने] रास्ते पर ले जाता है और उन्हें विदा कर देता है, यह कहते हुए, "ठीक है, शुभकामनाएँ!" और लोग अकेले ही उस रास्ते पर भटकते रहते हैं।' यह भयावह है। इस पर विचार करें: गदरेनियों के देश के राक्षसों ने[24] मसीह से सूअरों में प्रवेश करने की अनुमति मांगी, क्योंकि सूअरों ने शैतान को उन पर कोई अधिकार नहीं दिया था और उसके पास बिना अनुमति के उनमें प्रवेश करने का कोई अधिकार नहीं था। मसीह ने इस्राएलियों को दंडित करने के लिए उसे यह अनुमति दे दी, क्योंकि कानून उन्हें सूअर का मांस खाने से रोकता था।

— और कुछ लोग, गेरोन्डा, कहते हैं कि शैतान मौजूद नहीं है।

— हाँ, एक व्यक्ति ने तो मुझे *द वेनेरेबल आर्सेनियस ऑफ कैपाडोसिया*[25] के फ्रांसीसी अनुवाद से उन अंशों को हटाने की भी सलाह दी, जो भूत-प्रेत से ग्रस्त लोगों के बारे में बात करते हैं। उन्होंने कहा, 'यूरोपीय इसे नहीं समझेंगे। वे यह नहीं मानते कि शैतान का अस्तित्व है।' आप देखिए कैसे होता है: वे हर चीज़ की व्याख्या मनोविज्ञान के माध्यम से करते हैं। अगर सुसमाचारों के भूतग्रस्त लोग मनोचिकित्सकों के हाथ लग जाते, तो वे उन्हें इलेक्ट्रोकन्वल्सिव थेरेपी (मिरगी-आघात चिकित्सा) के अधीन कर देते! मसीह ने शैतान से बुराई करने का अधिकार छीन लिया। वह केवल तभी बुराई कर सकता है जब कोई व्यक्ति स्वयं उसे यह अधिकार दे। चर्च के संस्कारों में भाग न लेकर, एक व्यक्ति दुष्ट को ये अधिकार दे देता है और दैवीय प्रभाव के प्रति असुरक्षित हो जाता है।

---

[23] उत्पत्ति 18:21 देखें।

[24] लूका 8:26–33 देखें।

[25] रूसी अनुवाद 1997 में होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लाव्रा द्वारा प्रकाशित किया गया था। – अनुवादक की टिप्पणी।

— जेरोंडा , एक व्यक्ति और कनि तरीकों से शैतान को ऐसे अधिकार दे सकता है ?

— तर्क ,[26] , वाद-विवाद की प्रवृत्ति , हठ, आत्म -इच्छा , अवज्ञा , नरि्लज्जता — ये सभी शैतान के वशिष्टि लक्षण हैं। कोई व्यक्ति ऊपर सूचीबद्ध गुणों के होने की तक दैवीय प्रभाव के प्रति संवेदनशील हो जाता है। हालाँकि, जब कसिी व्यक्ति की आत्मा शुद्ध हो जाती है , तो पवित्र आत्मा उसमें वास करता है और वह अनुग्रह से भर जाता है। यदि कोई व्यक्ति घातक पापों से स्वयं को अपवित्र करता है , तो एक अशुद्ध आत्मा उस पर अधिकार कर लेती है। हालाँकि, यदि वे पाप जनिसे व्यक्ति ने स्वयं को अपवित्र कयिा है , घातक नहीं हैं , तो वे बाहरी रूप से एक दुष्ट आत्मा के प्रभाव में होते हैं।

दुर्भाग्य से , हमारे युग में , लोग अपनी वासनाओं और अपनी इच्छाओं को त्यागने के लिए तैयार नहीं हैं। वे दूसरों की सलाह नहीं मानते। इसके बाद, वे नरि्लज्जता से बोलने लगते हैं और अपने ऊपर से ईश्वर की कृपा को दूर भगा देते हैं। और फरि, वे जहाँ भी मुड़ते हैं , वे सफल नहीं हो पाते , क्योंकि वे दैवीय प्रभावों के प्रति संवेदनशील हो गए होते हैं। एक व्यक्ति अब अपने नयिंत्रण में नहीं रहता, क्योंकि शैतान उसे बाहर से आज्ञा देता है। शैतान उसके अंदर नहीं है —भगवान न करे ! लेकनि बाहर से भी, वह एक व्यक्ति को आज्ञा दे सकता है।

पवित्र आशीर्वाद से वंचति व्यक्ति शैतान से भी बदतर हो जाता है। क्योंकि शैतान सब कुछ स्वयं नहीं करता, बल्कि लोगों को बुराई के लिए उकसाता है। उदाहरण के लिए, वह स्वयं अपराध नहीं करता, बल्कि लोगों को ऐसा करने के लिए मनाता है। और इसी कारण से , लोग प beset हो जाते हैं।

पाप-स्वीकृति शैतान को व्यक्ति पर अपना अधिकार खोने के लिए मजबूर करती है

अगर लोग कम से कम कसिी आध्यात्मकि पिता के पास जाकर पापस्वीकृति कर लें , तो दैवीय प्रभाव समाप्त हो जाएगा और वे फरि से स्पष्ट रूप से सोच पाएंगे। आखरिकार, वर्तमान में , इस दैवीय प्रभाव के कारण, वे अपने लिए सोचने में भी असमर्थ हैं। पश्चाताप और पापस्वीकृति शैतान से व्यक्ति पर उसकी शक्ति छीन लेते हैं। हाल ही में , एक जादूगर ,[27] , पवित्र पहाड़ पर आया। उसने कसिी तरह के जादुई खंभों और जालों का उपयोग करके , एक ही जगह पर मेरे कलविा तक जाने वाले पूरे रास्ते को बंद कर दयिा। अगर कोई ऐसा व्यक्ति उस रास्ते से गुज़रता जो अपने पापों का इक़रार नहीं कर चुका था, तो वह बनिा यह जाने कि कारण क्या है , कष्ट में पड़ जाता। जब मैंने सड़क पर ये जादुई जाल देखे , तो मैंने तुरंत क्रॉस का चनि्ह बनाया और उन पर से ही चल दयिा — उन्हें पूरी तरह से फाड़ते हुए। फरि वह जादूगर खुद कालीवा में आया। उसने मुझे अपनी सभी साजशिों के बारे में बताया और अपनी कतिाबें जला दीं।

शैतान का उस वशि्वासी पर कोई शक्ति या अधिकार नहीं है जो चर्च जाता है , पाप-स्वीकार करता है और पवित्र परमप्रसाद ग्रहण करता है। शैतान ऐसे व्यक्ति पर केवल भौंकता है , ठीक एक बनिा दाँत वाले कुत्ते की तरह। हालाँकि, वह एक अवशि्वासी पर बहुत शक्ति रखता है जसिने उसे अपने ऊपर अधिकार दे दयिा है। शैतान ऐसे व्यक्ति को चीर-फाड़ भी सकता है — इस मामले में , उसके दाँत हैं और वह उनका उपयोग उस दुर्भाग्यपूर्ण आत्मा को प्रताड़ति करने के लिए करता है। शैतान आत्मा पर उसी अधिकार के अनुसार शक्ति रखता है जो वह उसे देती है।

---

[26] 'तर्क ' से , एल्डर का तात्पर्य तर्कवाद , तर्कशीलता से है।

[27] यह जून 1985 में दयिा गया था, जब एल्डर 'पनागुडा ' सेल में रह रहे थे।

जब कोई आध्यात्मिक रूप से सुव्यवस्थित व्यक्ति मरता है, तो उसकी आत्मा का स्वर्ग के लिए आरोहण एक तेज़ रफ़्तार ट्रेन की तरह होता है। भौंकने वाले कुत्ते ट्रेन के पीछे दौड़ते हैं, अपनी ही भौंक से दम घुटते हुए, आगे निकलने की कोशिश करते हैं, जबकि ट्रेन बस दौड़ती ही जाती है —यह किसी आवारा कुत्ते को बीच में ही चीर सकती है। हालाँकि, यदि कोई ऐसा व्यक्ति मरता है जिसकी आध्यात्मिक स्थिति वांछित स्तर पर नहीं है, तो उसकी आत्मा उस ट्रेन की तरह है जो मुश्किल से रेंग रही हो। यह और तेज़ नहीं चल सकती क्योंकि इसके पहिये खराब हैं। कुत्ते खुले डिब्बे के दरवाज़ों से कूदते हैं और यात्रियों को काटते हैं।

जब शैतान किसी व्यक्ति पर काफी शक्ति प्राप्त कर लेता है और हावी हो जाता है, तो जो हुआ है उसका कारण पहचाना जाना चाहिए ताकि शैतान से ये शक्तियाँ छीन ली जा सकें। अन्यथा, चाहे दूसरे उस व्यक्ति के लिए कितनी भी प्रार्थना करें, दुश्मन नहीं जाएगा। वह उस व्यक्ति को अपंग कर देता है। पुरोहित उसे बार-बार फटकारते हैं,[28] लेकिन अंततः वह दुर्भाग्यपूर्ण आत्मा और भी बदतर स्थिति में पहुँच जाता है, क्योंकि शैतान उसे पहले से भी अधिक सताता है। उस व्यक्ति को पश्चाताप करना चाहिए, पाप-स्वीकार के लिए जाना चाहिए, और शैतान से वे अधिकार छीन लेने चाहिए जो उसने स्वयं उसे दिए हैं। केवल तभी शैतान जाएगा; अन्यथा, वह व्यक्ति पीड़ित होता रहेगा। आप उसे पूरे दिन, दो दिन, या हफ़्तों, महीनों और वर्षों तक फटकार सकते हैं — फिर भी शैतान उस दुर्भाग्यपूर्ण आत्मा पर अपना प्रभाव बनाए रखता है और नहीं छोड़ेगा।

शैतान ईश्वर की पवित्र सृष्टि के पास नहीं आता

— गेरोन्डा, तो फिर ऐसा कैसे है कि मैं अपनी इच्छाओं का दास बन जाता हूँ ?

— एक व्यक्ति अपनी वासनाओं का गुलाम तब बनता है जब वह स्वयं पर शैतान को शक्ति दे देता है। अपनी सभी वासनाओं को सीधे शैतान के मुँह पर फेंको। यही ईश्वर चाहता है, और यह आपके अपने सर्वोत्तम हित में भी है। दूसरे शब्दों में, क्रोध, हठ और इसी तरह की वासनाओं को दुश्मन के खिलाफ मोड़ दो। या, यूँ कहें कि अपनी इच्छाओं को शैतान को बेच दें, और उससे मिले पैसों से कुछ पथ्थर खरीदकर शैतान पर फेंक दें ताकि वह आपके पास भी न आ सके। आमतौर पर, हम इंसान, लापरवाही या घमंडी विचारों के कारण, दुश्मन को हमें नुकसान पहुँचाने की अनुमति दे देते हैं। शैतान एक विचार या शब्द का भी फायदा उठा सकता है। मुझे याद है कि एक परिवार था — एक बहुत ही घनिष्ठ परिवार। एक बार, पति ने मज़ाक में अपनी पत्नी से कहा: 'ओह, मैं तुमसे तलाक ले लूँगा !' — और पत्नी ने भी मज़ाक में जवाब दिया: 'नहीं, मैं ही यह रिश्ता खत्म करूँगी !' वे बस ऐसे ही बात कर रहे थे, बिना किसी छिपे इरादे के, लेकिन उन्होंने मज़ाक को इतना आगे बढ़ा दिया कि शैतान ने इसका फायदा उठा लिया। उसने उनके लिए एक छोटी सी अड़चन खड़ी कर दी, और वे पहले से ही तलाक के लिए गंभीर रूप से तैयार थे — उन्होंने बच्चों या किसी और चीज़ के बारे में नहीं सोचा। सौभाग्य से, एक आध्यात्मिक पिता आए और उनसे बात की। उन्होंने कहा, 'आखिर तुम इतनी छोटी सी बात पर तलाक क्यों ले रहे हो?'

यदि कोई व्यक्ति ईश्वर की आज्ञाओं से भटक जाता है, तो वह अपनी वासनाओं के वश में हो जाता है। और यदि कोई व्यक्ति अपनी वासनाओं को नियंत्रण करने देता है, तो फिर शैतान की

---

[28] अशुद्ध आत्माओं को निकालना (भूत-प्रेत उतारना या भूत-प्रेत उतारने की रस्म) एक ऐसा अनुष्ठान है जिसे चर्च ने स्थापित किया है, जिसके दौरान एक पुरोहित, विशेष मंत्र-युक्त प्रार्थनाएँ पढ़कर, उन लोगों से अशुद्ध आत्माओं को निकालता है जिन पर वे काबिज होती हैं। विशिष्ठ यह ज़ोर देते हैं कि भूत-प्रेत की चपेट में आया व्यक्ति जो भूत-प्रेत भगाने की मदद चाहता है, उसे अनिवार्य रूप से पश्चाताप करना चाहिए, अपने आध्यात्मिक पिता के सामने अपने पापों का इक़रार करना चाहिए, और एक ईसाई जीवन जीने के लिए दृढ़ संकल्पित होना चाहिए। भूत-प्रेत की बाधा और भूत-प्रेत भगाने की क्रिया पर विस्तृत जानकारी विशिष्ठ पैसियोस की 'कथनों' (Sayings) के खंड III में दी गई है। – अनुवादक की टिप्पणी।

भी ज़रूरत नहीं पड़ती। आखरिकार, राक्षसों की भी अपनी 'विशेषताएँ ' होती हैं। वे किसी व्यक्ति की छानबीन करते हैं , यह खोजते हैं कि वह कहाँ 'कमज़ोर ' है , उसकी कमज़ोरी को उजागर करने और इस प्रकार उस पर काबू पाने का प्रयास करते हैं। हमें सतर्क रहना चाहिए, खिड़कियाँ और दरवाज़े —यानी अपनी भावनाओं को बंद रखना चाहिए। हमें बुराई के लिए कोई दरारें खुली नहीं छोड़नी चाहिए, न ही उसे उन दरारों से रेंगकर अंदर आने देना चाहिए। ये दरारें और अंतराल हमारे कमजोर स्थान हैं। यदि हम दुश्मन के लिए एक भी छोटी सी दरार छोड़ देते हैं , तो वह उसमें से घुसकर नुकसान पहुँचा सकता है। शैतान उस व्यक्ति में प्रवेश करता है जिसका हृदय गंदगी से भरा होता है। शैतान ईश्वर की किसी पवित्र रचना के पास नहीं आता है। यदि किसी व्यक्ति का हृदय मैल से शुद्ध हो जाता है , तो शत्रु भाग जाता है और मसीह लौट आते हैं। जैसे कोई सूअर , गंदगी न पाकर, करहाता हुआ चला जाता है , वैसे ही शैतान भी उस हृदय के पास नहीं आता है जो अशुद्धि से मुक्त हो। और एक शुद्ध और विनिम्र हृदय में उसके ठहरने के लिए क्या है ? इसलिए, यदि हम देखते हैं कि हमारा घर—हमारा हृदय —दुश्मन का अड्डा बन गया है —एक कमजोर आधार पर खड़ा —तो हमें उसे तुरंत ध्वस्त कर देना चाहिए, ताकि टंगलाश्का —हमारा दुर्भावनापूर्ण किरायेदार —चला जाए। क्योंकि यदि कोई पाप किसी व्यक्ति के भीतर लंबे समय तक रहता है , तो स्वाभाविक रूप से , शैतान उस व्यक्ति पर अधिक अधिकार प्राप्त कर लेता है।

— गेरोन्डा , क्या होगा अगर कोई व्यक्ति पहले लापरवाही से रहता था और इस प्रकार उसने प्रलोभक को अपने ऊपर शक्ति दे दी, लेकिन अब वह अपने तरीकों को सुधारना चाहता है और सचेत रूप से जीना शुरू करना चाहता है —क्या 'टंगलाश्का ' तब भी उससे लड़ेगा ?

जब कोई व्यक्ति ईश्वर की ओर मुड़ता है , तो उसे यात्रा की शुरुआत के लिए आवश्यक शक्ति, ज्ञान और सांत्वना उनसे प्राप्त होती है। लेकिन जैसे ही कोई व्यक्ति आध्यात्मिक संघर्ष शुरू करता है , दुश्मन उनके खिलाफ एक भयंकर लड़ाई छेड़ता है। ठीक उसी समय व्यक्ति को थोड़ा धैर्य दिखाना चाहिए। अन्यथा , वासनाओं को जड़ से कैसे उखाड़ा जाएगा? पुराने स्व को कैसे त्यागा जाएगा? अहंकार को कैसे त्यागा जाएगा? इस तरह, एक व्यक्ति को एहसास होता है कि, अपने दम पर, वह कुछ भी नहीं कर सकता। वे विनिम्रतापूर्वक ईश्वर की दया मांगते हैं , और उनमें नम्रता आती है। यही बात तब भी होती है जब कोई व्यक्ति किसी बुरी आदत, जैसे धूम्रपान , नशा या शराब पीने की लत को तोड़ना चाहता है। शुरुआत में , वे खुशी महसूस करते हैं और आदत छोड़ देते हैं। फिर वे दूसरों को धूम्रपान करते , नशा करते या शराब पीते हुए देखते हैं , और एक तीव्र आंतरिक संघर्ष का सामना करते हैं। यदि कोई व्यक्ति इस संघर्ष पर काबू पा लेता है , तो आगे चलकर उसके लिए इस जुनून को त्यागना और उससे मुंह मोड़ना अब मुश्किल नहीं रहता। थोड़ी सी कोशिश करनी पड़ती है और संघर्ष करना पड़ता है। 'टंगलाश्का ' अपना काम करता है — तो हम अपना काम क्यों नहीं करते ?

आइए तंगलाश्का के साथ बहस में न पड़ें

हम सभी में जन्मजात प्रवृत्तियाँ होती हैं , लेकिन अपने आप में वे हमें कोई नुकसान नहीं पहुँचाती हैं। यह ठीक वैसे ही है जैसे कोई व्यक्ति , उदाहरण के लिए, अपने चेहरे पर एक तिल के साथ पैदा हुआ हो, जो उसे एक विशेष सुंदरता प्रदान करता है। लेकिन अगर उस तिल को खुरचा जाए, तो एक कैंसरयुक्त ट्यूमर विकसित हो सकता है। हमें शैतान को अपनी कमज़ोरियों को कुरेदने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। अगर हम उसे अपनी कमज़ोरियों को कुरेदने दें , तो हम [आध्यात्मिक] कैंसर से ग्रस्त हो जाएँगे।

हममें आध्यात्मिक साहस होना चाहिए, शैतान और उसके सभी चालाक विचारों —उसके 'टेलीग्रामों '—से घृणा करनी चाहिए। हमें प्रलोभक से बातचीत में न पड़ें। भले ही दुनिया का हर वकील एक साथ आ जाए, वे एक छोटे से शैतान को तर्क में नहीं हरा पाएंगे। प्रलोभक से बातचीत न करें ; इस तरह आप उससे संबंध तोड़ लेंगे और प्रलोभन से बचेंगे। मान लीजिए हमारे साथ कुछ हुआ है : हमारे साथ अन्याय हुआ है , या हमारा अपमान हुआ है। आइए जांच करें कि क्या इसके लिए हम खुद दोषी हैं। यदि हम दोषी नहीं हैं , तो हमें इसका प्रतिफल मिलेगा। हमें वहीं रुकना चाहिए: और गहराई में जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि कोई व्यक्ति प्रलोभक के साथ बातचीत जारी रखता है , तो वह बाद में झूठ का ऐसा जाल बुनता है ,[29] और एक ऐसा तमाशा रचता है ... प्रलोभक व्यक्ति को अपने 'सत्य ' के नियमों के अनुसार यह जांचने के लिए प्रेरित करता है कि क्या हुआ है और उसे कटुता की ओर धकेलता है।

मुझे याद है कि जब इतालवी सैनिक ग्रीस से पीछे हटे , तो वे हाथ के ग्रेनेड के ढेरों से भरे तंबू छोड़ गए थे। और साथ ही वहाँ बारूद के भी पूरे ढेर पड़े थे। लोगों ने ये तंबू अपने लिए ले लिए, और जो कुछ भी उनके अंदर था, वह भी ले लिया। बच्चे उन ग्रेनेडों से खेलते थे , और क्या आप जानते हैं कि उन बेचारों में से कितने मारे गए!

आखिर कोई ग्रेनेड के साथ कैसे खेल सकता है ! हमारे साथ भी यही हाल है — क्या हम सच में शैतान के साथ खेल खेलने जा रहे हैं ?

शैतान शक्तिहीन है

— गेरोन्डा , मेरे मन में एक विचार आता है कि शैतान के पास अपार शक्ति है , खासकर हमारे इस युग में।

— शैतान के पास शक्ति नहीं , बल्कि दुर्भावना और घृणा है। ईश्वर का प्रेम सर्वशक्तिमान है। शैतान सर्वशक्तिमान होने का दिखावा करता है , लेकिन वह इस भूमिका को निभा नहीं सकता। वह मजबूत लगता है , लेकिन वास्तव में वह पूरी तरह से शक्तिहीन है। उसकी कई विनाशकारी योजनाएँ शुरू होने से पहले ही बिखर जाती हैं। निश्चित रूप से एक पिता—एक बहुत अच्छा और दयालु पिता—कभी भी किसी गुंडे को अपने बच्चों को पीटने की अनुमति नहीं देगा ?

— लेकिन मैं , गेरोन्डा , टंगलाश्की से डरता हूँ।

— आप उनसे क्यों डरते हैं ? तांगलाश्की के पास कोई शक्ति नहीं है। मसीह सर्वशक्तिमान हैं , जबकि शैतान केवल सड़न है। क्या आप क्रॉस नहीं पहनते ? शैतान के हथियारों में कोई शक्ति नहीं है। मसीह ने हमें अपने क्रॉस से लैस किया है। शत्रु को शक्ति तभी प्राप्त होती है जब हम स्वयं अपने आध्यात्मिक हथियार त्याग देते हैं। एक मामला था जब एक ऑर्थोडॉक्स पादरी ने एक जादूगर को एक छोटा सा क्रॉस दिखाया और इस प्रकार उस राक्षस में आतंक भर दिया जिसे जादूगर ने अपनी जादू -टोने से बुलाया था।

— 'और वह क्रूस से इतना क्यों डरता है ?'

---

[29] दूसरे शब्दों में , टंगलाश्का व्यक्ति को 'तुच्छ कार्यों ' में व्यस्त रखता है – यह उनमें ऐसे विचार डालता है कि वे लगातार 'व्यस्त ' रहते हैं , कष्ट की अवस्था में बने रहते हैं , और आध्यात्मिक कार्यों में संलग्न नहीं हो पाते। इस प्रकार , शैतान व्यक्ति को कमजोर कर देता है।

'क्योंकि जब मसीह ने थूक, उपहास और पिटाई को सहन किया, तो शैतान का राज्य और शक्ति कुचल गई। मसीह के लिए उस पर विजय पाने का यह कितना अद्भुत तरीका था! एक संत कहते हैं, 'शैतान के साम्राज्य को एक बेंत से कुचल दिया गया था।' अर्थात्, शैतान की शक्ति तब कुचल दी गई जब मसीह ने अपने सिर पर बेंत से अंतिम प्रहार सहन किया। इससे यह निष्कर्ष निकलता है, कि शैतान के खिलाफ रक्षात्मक आध्यात्मिक उपाय धैर्य है, और उसके खिलाफ सबसे शक्तिशाली हथियार नम्रता है। शैतान का कुचला जाना सबसे उपचारात्मक मरहम है, जो मसीह ने सूली पर अपने बलिदान के दौरान प्रदान किया। मसीह के सूली पर चढ़ाए जाने के बाद, शैतान उस सांप की तरह है जिससे उसका विष छीन लिया गया हो, जैसे दांतों से वंचित कुत्ते। शैतान को उसकी विषैली शक्ति से वंचित कर दिया गया है; कुत्तों —अर्थात् राक्षसों —के दाँत निकाल दिए गए हैं। वे अब निहत्थे हैं, जबकि हम क्रूस से सुसज्जित हैं। राक्षस ईश्वर की सृष्टि को कुछ भी नहीं कर सकते, जब तक कि हम स्वयं उन्हें ऐसा करने का अधिकार न दें। वे केवल उत्पात मचा सकते हैं —क्योंकि उनके पास कोई अधिकार नहीं है।

एक बार, जब मैं होली क्रॉस हर्मिटेज में रह रहा था, मैंने एक अद्भुत रात्रि जागरण में भाग लिया! रात के दौरान, छत के ऊपरी हिस्से में राक्षसों का एक समूह इकट्ठा हो गया। पहले तो वे पूरी ताकत से स्लेजहैमर्स से कुछ ठोक रहे थे, और फिर उन्होंने शोर मचाना शुरू कर दिया, जैसे वे छत के ऊपरी हिस्से में विशाल लकड़ी के लट्ठे और तने लुढ़का रहे हों। मैंने छत की ओर क्रॉस का चिह्न बनाया और गाया: "हे प्रभु, हम तेरी क्रॉस के सामने नमन करते हैं ..."[30] जब मैंने गाना समाप्त किया, तो वे फिर से लकड़ी के लट्ठों को लुढ़काने लगे। "ठीक है," मैंने उनसे कहा, "आओ हम दो गायन मंडलों में बंट जाएँ। तुम ऊपरी गायक मंडली पर लट्ठें लुढ़काओ, जबकि मैं यहाँ निचली मंडली में गाऊँगा। " जब मैं गाना शुरू करता, तो वे रुक जाते। मैंने बारी-बारी से "हे प्रभु, हम तेरी क्रूस के सामने सिर झुकाते हैं ..." और "हे प्रभु, तूने हमें शैतान के खिलाफ हथियार के रूप में अपनी क्रूस दी है ..." गाया।[31] मैंने भजन गाते हुए एक अत्यंत आनंददायक रात बिताई। जैसे ही मैं चुप हो जाता, वे मेरा मनोरंजन करना जारी रखते। और उनके पास कितनी विस्तृत गीत-संग्रह है! वे हर बार कुछ नया लेकर आते हैं !..

— और जब आपने पहली बार ट्रोपारियन गाना शुरू किया, तो क्या वे नहीं चले गए?

— नहीं। जैसे ही मैंने गाना खत्म किया, वे भी शामिल हो गए। जाहिर है, हमें दो मंडली के साथ जागरण गाना चाहिए था। वह एक अद्भुत जागरण था। मैंने पूरे भाव से गाया! वे शानदार दिन थे ...

— गेरोन्डा, शैतान कैसा दिखता है?

— क्या आप जानते हैं कि वह कितना 'सुडौल' है? इसका वर्णन करना असंभव है, परी कथाओं या लेखन में भी! काश आप उसे देख पाते !.. ईश्वर का प्रेम कितनी [समझदारी से] किसी व्यक्ति को शैतान को देखने से रोकता है! अगर वे उसे देख लेते, तो ज़्यादातर लोग डर से मर जाते। सोचिए, अगर लोग देख सकें कि वह कैसे काम करता है, अगर वे देख सकें कि वह वास्तव में कितना 'सुंदर' है !.. सच है, कुछ लोग इसे अपने लिए मनोरंजन का एक साधन बना लेंगे। मैं भूल गया हूँ कि इसे क्या कहते हैं ... शायद 'सिनेमा'?... हालाँकि, ऐसी 'सिनेमा स्क्रीनिंग' का भारी दाम चुकाना पड़ता है, और भारी कीमत चुकाने के बावजूद भी, ऐसी चीज़ को देखना आसान नहीं है।

— क्या शैतान के सींग और पूँछ होती है?

— हाँ, उसके हैं। सींग, एक पूँछ, और बाकी सब कुछ !

— गेरोन्डा, क्या राक्षस अपने पतन के बाद, जब वे देवदूतों से राक्षस बने, इतने भयानक प्राणी बन गए थे?

---

[30] 'हे प्रभु, हम तेरे क्रूस के समक्ष नमन करते हैं, और हम तेरे पवित्र पुनरुत्थान की महिमा करते हैं' – पवित्र क्रूस के लिए स्टिचिरा।

[31] स्तुतियों के लिए आठवें स्वर के रविवार के स्टिचिरा।

— हाँ , बल्कुल। वे अब ऐसे ही हैं , मानो उन पर बजिली गरि गई हो। अगर कसिी पेड़ पर बजिली गरिती है , तो क्या वह पलक झपकते ही एक जलकर कोयला हो गई लकड़ी में नहीं बदल जाता? खैर , वे अब बल्कुल वैसे ही हैं —मानो उन पर बजिली गरि गई हो। एक समय था जब मैं शैतान से कहता था: 'यहाँ आओ, ताकमिैं तुम्हें देख सकूँ और तुम्हारी चपेट में न आ जाऊँ ! अब तो मैं बस तुम्हें देख रहा हूँ , और मैं पहले से ही देख सकता हूँ कतिुम कतिने क्रूर हो! और अगर मैं तुम्हारी चपेट में आ गया—ओह, मैं बस कल्पना कर सकता हूँ कतिब मेरे लएि क्या इंतज़ार कर रहा होगा!"

शैतान मूर्ख है

— गेरोन्डा , क्या शैतान जानता है कहिमारे दलिों में क्या है ?

— कोई मौका नहीं ! मानो वह यह जान ही सकता हो कलिोगों के दलिों में क्या है। केवल ईश्वर ही हृदयों को जानता है। और केवल ईश्वर के लोगों को ही वह कभी-कभी, हमारी भलाई के लएि, यह प्रकट करता है कहिमारे हृदयों में क्या है। वह छोटा शैतान केवल छल और द्वेष को जानता है , जसिे वह स्वयं उन लोगों में भरता है जो उसकी सेवा करते हैं। वह हमारे अच्छे वचिारों के बारे में कुछ नहीं जानता। केवल अनुभव से ही वह कभी-कभी उनका अनुमान लगाता है , लेकनि तब भी, ज्यादातर मामलों में , वह गलत होता है !

और यदि ईश्वर शैतान को कुछ भी समझने न दें , तो शैतान हर बात में लगातार गलत रहेगा। आखरिकार, शैतान घोर अंधकार है ! "दृश्यता — शून्य !" मान लीजएि कमिेरे मन में कोई अच्छा वचिार आता है। शैतान को इसके बारे में कुछ भी पता नहीं चलता। अगर मेरे मन में कोई बुरा वचिार आता है , तो शैतान को पता चल जाता है , क्योंकि वही उसे मेरे मन में डालता है। यदि अब मैं कहीं जाकर कोई अच्छा काम करना चाहता हूँ , उदाहरण के लएि कसिी को बचाना, तो शैतान को इसके बारे में पता नहीं होता। हालाँकि , यदि शैतान स्वयं कसिी व्यक्ति को सुझाव देता है : 'जाकर फलाने -ढसिाने को बचाओ'—यानी उनके मन में ऐसा वचिार डालता है —तो वह स्वयं उनके अहंकार को भड़काएगा और इस प्रकार वह जान जाएगा कि उस व्यक्ति के हृदय में क्या है।

यह सब बहुत सूक्ष्म है। क्या आपको अब्बा मकरयिुस की कहानी याद है ?[32] एक बार उनकी मुलाकात शैतान से हुई , जो पास के रेगस्तिान से लौट रहा था। वह वहाँ के भकि्षुओं को प्रलोभति करने गया था। शैतान ने अबा मकरयिस से कहा: "पूरा भाईचारा मेरे प्रति बहुत कठोर है , सवािय मेरे एक दोस्त के जो मेरी आज्ञा मानता है और, जब वह मुझे देखता है , तो एक खुरपे की तरह घूमता है। " — "यह भाई कौन है ?" — अबा मकरयिस ने पूछा। "उसका नाम थयिोपेम्प्टस है ," — शैतान ने जवाब दयिा। आदरणीय रेगस्तिान में गए और इस भाई को पाया। उन्होंने बहुत चतुराई से उसे अपने वचिारों का इकबालयिा बयान करवाया और उसे आध्यात्मकि रूप से मदद की। शैतान से फरि मलिने पर, आबा मकारयिस ने उनसे रेगस्तिान में रहने वाले भाइयों के बारे में पूछा। "वे सभी मेरे प्रति बहुत कठोर हैं ," शैतान ने जवाब दयिा। "और सबसे बुरी बात यह है कजिो मेरा दोस्त हुआ करता था—मुझे नहीं पता क्यों —वह बदल गया है , और अब वह उन सभी में सबसे कठोर है। " शैतान को यह नहीं पता था कबिाबा मकरयिस उस भाई के पास गए थे और उसे सही कर दयिा था, क्योंकि पूजनीय पति ने प्रेम के कारण वनिम्रता से काम कयिा था। शैतान का मठाधीश के अच्छे इरादे पर कोई अधकिार नहीं था। लेकनि अगर वह आदरणीय अभमिानी हो गए होते , तो उन्होंने ईश्वर की कृपा को खुद से दूर भगा दयिा होता, और शैतान ने वह शक्ति प्राप्त कर ली होती। तब

[32] देखें द एंशयिंट पैटरिकिॉन , मॉस्को , 1899। पृ . 343–344।

वह आदरणीय के इरादे को जान गया होता, क्योंकि उस स्थिति में शैतान ने खुद ही उनके अहंकार को भड़काया होता।

— और अगर किसी व्यक्ति ने कहीं कोई अच्छा विचार व्यक्त किया है, तो क्या शैतान उसे चुपके से सुनकर उस व्यक्ति को बहका सकता है ?

— वह कैसे जासूसी कर सकता है अगर कही गई बात में शैतान का कोई अंश नहीं है ? हालाँकि, अगर कोई व्यक्ति घमंड करने के उद्देश्य से अपना विचार व्यक्त करता है, तो शैतान हस्तक्षेप करेगा। यानी, अगर किसी व्यक्ति में घमंड की प्रवृत्ति है और वह गर्व से घोषणा करता है, 'मैं जाकर अमुक को बचाऊँगा !' — तो शैतान इसमें शामिल हो जाएगा। इस मामले में, शैतान उसके इरादे से अवगत होगा, जबकि यदि कोई व्यक्ति प्रेम से प्रेरित होकर विनम्रता से कार्य करता है, तो शैतान इसके बारे में अनजान रहता है। सावधानी बरतने की आवश्यकता है। यह एक बहुत ही नाजुक मामला है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि पवित्र पिता आध्यात्मिक जीवन को 'विज्ञानों का विज्ञान' कहते हैं।

— गेरोंडा, हालाँकि, ऐसे समय होते हैं जब कोई जादूगर भविष्यवाणी करता है, उदाहरण के लिए, तीन युवतियों से कि एक की शादी होगी, दूसरी की भी होगी लेकिन वह दुखी रहेगी, और तीसरी अविवाहित रहेगी —और यह सच हो जाता है। ऐसा क्यों होता है ?

— शैतान के पास अनुभव है। उदाहरण के लिए, एक इंजीनियर, किसी जर्जर हालत में पड़े घर को देखकर बता सकता है कि वह और कितने समय तक खड़ा रहेगा। इसी तरह, शैतान देखता है कि कोई व्यक्ति कैसे जीता है और, अपने अनुभव से, यह अनुमान लगाता है कि उसका अंत कैसा होगा।

शैतान के पास तीव्र बुद्धि की कमी है ; वह बहुत मूर्ख है। वह एक बड़ी गड़बड़ है ; उसका कोई अंत नहीं है। और वह कभी-कभी एक चतुर व्यक्ति की तरह, कभी-कभी एक मूर्ख की तरह व्यवहार करता है। उसके दांव -पेंच अनाड़ी हैं। ईश्वर ने इसे इस तरह से व्यवस्थित किया है ताकि हम उसे पहचान सकें। शैतान को न देख पाने के लिए कोई व्यक्ति अहंकार से गहराई तक ग्रस्त होना चाहिए। विनम्रता से, हम शैतान के जालों को पहचानने में सक्षम होते हैं, क्योंकि विनम्रता से एक व्यक्ति प्रबुद्ध होता है और ईश्वर के साथ एक हो जाता है। विनम्रता ही शैतान को पंगु बनाती है।

ईश्वर शैतान को हमें लुभाने की अनुमति क्यों देते हैं ?

— एल्डर, मुझे बताइए, ईश्वर शैतान को हमें लुभाने की अनुमति क्यों देते हैं ?

— ताकि वह अपने बच्चों को वापस जीत सके। ईश्वर कहते हैं, 'शैतान, जो चाहे कर ले।' क्योंकि शैतान चाहे कुछ भी कर ले, अंत में उसे फिर भी मुख्य आधार—मसीह—पर अपना दाँत तोड़ना ही पड़ेगा। और अगर हम विश्वास करते हैं कि मसीह ही मुख्य आधार हैं, तो हमें डरने की कोई बात नहीं है।

ईश्वर किसी परीक्षा को तब तक नहीं आने देते जब तक उससे कुछ अच्छा न निकले। यह देखकर कि परिणामस्वरूप जो अच्छा होगा वह बुराई से भारी पड़ेगा, ईश्वर शैतान को अपना काम करने देते हैं। क्या आपको हेरोद याद है ? उसने चौदह हज़ार शिशुओं की हत्या की और स्वर्गीय सेना में चौदह हज़ार दैवी शहीदों को शामिल कर दिया। क्या आपने कभी किसी दैवी शहीद को देखा है ? शैतान फँस गया! डायोक्लेटियन, ईसाइयों पर क्रूर अत्याचार करके, शैतान का साथी था। फिर भी, अनजाने में, उसने चर्च को संतों से समृद्ध करके उसे एक उपकार किया। वह सोचता था कि वह सभी ईसाइयों का सफाया कर देगा, लेकिन वह कुछ भी हासिल नहीं कर सका—

उसने केवल हमें पूजने के लिए पवित्र अवशेषों की एक बड़ी संख्या छोड़ दी और चर्च को समृद्ध कर दिया।

ईश्वर बहुत पहले ही शैतान का काम तमाम कर सकते थे, क्योंकि वह ईश्वर हैं। और अभी भी, यदि वह चाहें, तो वे शैतान के सींगों को मरोड़कर उसे [सर्वकाल के लिए] नारकीय यातनाओं में भेज सकते हैं। लेकिन ईश्वर ऐसा हमारे अपने भले के लिए नहीं करते। क्या वह वास्तव में शैतान को अपनी सृष्टि को सताने और पीड़ा देने देगा? और फिर भी, एक हद तक, कुछ समय के लिए, उसने इसकी अनुमति दी है, ताकि शैतान अपनी दुर्भावना से हमारी मदद कर सके, ताकि वह हमें लुभा सके और हम ईश्वर की ओर मुड़ सकें। ईश्वर शैतान को हमें लुभाने की अनुमति केवल तभी देता है जब इससे अच्छा हो। यदि इससे अच्छा नहीं होता, तो वह इसकी अनुमति नहीं देता। ईश्वर हर चीज़ की अनुमति हमारे अपने भले के लिए देता है। हमें इस पर विश्वास करना चाहिए। ईश्वर शैतान को बुराई करने की अनुमति इसलिए देता है ताकि मनुष्य संघर्ष कर सके। आखिरकार, अगर आप आटे को गूंथते नहीं हैं, तो आपको रोटी नहीं मिलेगी। अगर शैतान हमें लुभाता नहीं, तो हम खुद को संत समझकर घमंडी हो सकते थे। और इसीलिए ईश्वर उसे अपनी दुर्भावना से हमें घायल करने की अनुमति देते हैं। क्योंकि, हमें चोट पहुँचाकर, शैतान हमारी धूल भरी आत्माओं से सारी फूंदी झाड़ देता है, और वे अधिक शुद्ध हो जाती हैं। या फिर ईश्वर उसे हम पर झपटने और हमें काट खाने की अनुमति देते हैं, ताकि हम मदद के लिए उनकी ओर मुड़ें। ईश्वर हमें लगातार अपनी ओर बुलाते हैं, लेकिन आमतौर पर हम उनसे मुंह मोड़ लेते हैं और केवल तब उनकी ओर लौटते हैं जब हम खतरे में होते हैं। जब कोई व्यक्ति ईश्वर के साथ एक हो जाता है, तो दुष्ट की घुसने की कोई जगह नहीं होती। लेकिन, इसके अलावा, ईश्वर के पास शैतान को ऐसे व्यक्ति को बहकाने की अनुमति देने का कोई कारण नहीं है; वास्तव में, वह ऐसा इसलिए अनुमति देते हैं ताकि जिस पर प्रलोभन डाला जा रहा है, वह उनके पास लौटने के लिए विवश हो जाए। फिर भी, किसी न किसी तरह, बुराई करने वाला हमारे लिए अच्छा ही करता है—वह हमें पवित्र होने में मदद करता है। इसी कारण से ईश्वर उसे सहन करते हैं।

ईश्वर ने न केवल लोगों को बल्कि राक्षसों को भी स्वतंत्र छोड़ दिया है, क्योंकि वे कोई नुकसान नहीं करते, और न ही वे किसी व्यक्ति की आत्मा को नुकसान पहुँचा सकते हैं, सिवाय उन मामलों के जहाँ व्यक्ति स्वयं अपनी आत्मा को नुकसान पहुँचाना चाहता है। इसके विपरीत, दुष्ट या लापरवाह लोग — जो अनजाने में हमें नुकसान पहुँचाते हैं — हमारे पुरस्कार की तैयारी कर रहे हैं। एक बाबा कहते हैं, 'यदि परीक्षाएँ न होतीं, तो कोई भी नहीं बचता,'[33]। वह ऐसा क्यों कहते हैं? क्योंकि परीक्षाओं से बहुत लाभ होता है। यह इसलिए नहीं कि शैतान कभी अच्छा करने में सक्षम होगा—नहीं, वह दुष्ट है। वह हमारे सिर तोड़ना चाहता है और हम पर एक पत्थर फेंकता है, लेकिन दयालु ईश्वर ... उस पत्थर को पकड़ लेते हैं और उसे हमारे हाथ में रख देते हैं। और हमारे दूसरे हाथ की हथेली में, वह हमारे लिए मेवे डाल देते हैं, ताकि हम उन्हें उसी पत्थर से तोड़कर खा सकें! दूसरे शब्दों में, ईश्वर परीक्षाओं की अनुमति इसलिए नहीं देते कि शैतान हम पर अत्याचार करे। नहीं, वह हमें परीक्षा में डालने की अनुमति देता है ताकि इस तरह हम अगले जीवन में प्रवेश के लिए परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो सकें और मसीह के दूसरे आगमन पर शिकायत का कोई आधार न रहे। हमें यह स्पष्ट रूप से समझना चाहिए कि हम स्वयं शैतान के साथ युद्ध में हैं और हम इस

---

[33] अब्बा इवाग्रियस। सक्रिय जीवन पर निर्देश। इसमें: *द लव ऑफ गुडनेस* (रूसी अनुवाद)। खंड I। होली ट्रिनिटी सेंट सेर्गीयस लावरा, 1992। पृ. 637.

जीवन से प्रस्थान करे तक उससे लड़ते रहेंगे। जब कोई व्यक्ति जीवित होता है, तो उसे अपनी आत्मा को सुधारने के लिए बहुत काम करना होता है। जब वे जीवित हैं, तो उन्हें आध्यात्मिक परीक्षाओं में बैठने का अधिकार है। हालाँकि, यदि कोई व्यक्ति मर जाता है और असफल हो जाता है, तो उसे परीक्षार्थियों की सूची से हटा दिया जाता है। दूसरा मौका नहीं है।

शैतान पश्चाताप करने से इनकार करता है

सदैव शुभ ईश्वर ने स्वर्गदूतों को बनाया। हालाँकि, अहंकार के कारण, उनमें से कुछ गिर गए और राक्षस बन गए। ईश्वर ने एक परिपूर्ण सृष्टि — मनुष्य — बनाई ताकि वह गिरे हुए स्वर्गदूतों के क्रम को बदल सके। इसीलिए शैतान मनुष्य — ईश्वर की सृष्टि — से बहुत ईर्ष्या करता है। दैत्य चिल्लाते हैं: 'हमने एक ही अपराध किया, और आप हम पर अत्याचार करते हैं, फिर भी आप उन लोगों को माफ कर देते हैं जिनके नाम पर इतने सारे अपराध हैं।' हाँ, वह क्षमा करते हैं, लेकिन लोग पश्चाताप करते हैं, जबकि वे पूर्व देवदूत इतने नीच हो गए हैं कि वे राक्षस बन गए हैं, और पश्चाताप करने के बजाय, वे और भी अधिक चालाक, और भी अधिक दुर्भावनापूर्ण हो जाते हैं। क्रोध के साथ उन्होंने ईश्वर की रचनाओं को नष्ट करना शुरू कर दिया। लूसिफर स्वर्गदूतों की पंक्तियों में सबसे तेजस्वी था! और देखो उसका क्या हाल हो गया है ... घमंड के कारण, राक्षसों ने हजारों साल पहले ईश्वर से मुख मोड़ लिया था, और घमंड के कारण ही वे आज भी उससे मुख मोड़े हुए हैं और पश्चाताप नहीं करते। काश उन्होंने एक बात कही होती: 'हे प्रभु, दया करें,' तो ईश्वर [उन्हें बचाने का] कोई रास्ता निकाल लेते। काश उन्होंने कहा होता 'मैंने पाप किया है,' लेकिन वे ऐसा नहीं कहते। अगर उसने कहा होता 'मैंने पाप किया है,' तो शैतान फिर से एक देवदूत बन जाता। ईश्वर का प्रेम असीम है। लेकिन शैतान जिद्दी इच्छा, हठ और स्वार्थ से ग्रस्त है। वह हार नहीं मानना चाहता; वह बच नहीं ना चाहता। यह भयानक है। आखिरकार, वह कभी एक देवदूत था!

— गेरोन्डा, मुझे बताइए, क्या शैतान को अपनी पूर्व अवस्था याद रहती है?

— आप अभी भी पूछ रहे हैं! वह [पूरी तरह] आग और क्रोध है, क्योंकि वह नहीं चाहता कि दूसरे —जो उसकी पूर्व स्थिति को ग्रहण करेंगे —देवदूत बनें। और यह जितना लंबे समय तक चलता है, वह उतना ही बुरा होता जाता है। वह द्वेष और ईर्ष्या से भरा हुआ है। ओह, काश कोई व्यक्ति शैतान की उस स्थिति को महसूस कर सकता! वह दिन-रात रोता। जब कोई अच्छा व्यक्ति भी बुरे के लिए बदलता है और अपराधी बन जाता है, तो भी उसके लिए बहुत दया आती है। तो फिर एक व्यक्ति एक देवदूत के पतन को देखकर क्या कह सकता है!

एक बार, एक निश्चित भिक्षु [34] को राक्षसों के लिए बहुत दुख हुआ। घुटने टेककर और प्रणाम करके, उन्होंने ईश्वर से निम्नलिखित शब्दों में प्रार्थना की: "आप ईश्वर हैं, और यदि आप चाहें, तो आप इन दुष्ट राक्षसों को भी बचाने का कोई रास्ता खोज सकते हैं, जो कभी इतनी महान महिमा के स्वामी थे, लेकिन अब दुनिया की सारी दुर्भावना और चालाकी से भर गए हैं; और यदि आपकी मध्यस्थता न होती, तो वे सभी मानव जाति को नष्ट कर देते।" भिक्षु ने बड़े दुख के साथ प्रार्थना की। जैसे ही उसने ये शब्द बोले, उसने अपने बगल में एक कुत्ते का थूथन देखा, जो उसकी ओर जीभ निकालकर उसका मज़ाक उड़ा रहा था। जाहिर है, ईश्वर ने ऐसा होने दिया था, ताकि भिक्षु को यह बता सकें कि यदि राक्षस पश्चाताप करें तो वह उन्हें स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। लेकिन वे स्वयं अपनी मुक्ति की इच्छा नहीं रखते। इस पर

[34] जैसा कि बाद में पता चला, यह भिक्षु स्वयं एल्डर पैसियस ही थे।

वचिार करें : आदम का पतन ईश्वर के पृथ्वी पर आने , यानी अवतार से ठीक हुआ। लेकनि शैतान का पतन उसकी अपनी वनिम्रता के अलावा कसिी और चीज़ से ठीक नहीं हो सकता। शैतान सुधार नहीं करता क्योंकि वह स्वयं ऐसा नहीं चाहता। क्या आप जानते हैं कि शैतान के सुधार की इच्छा करने पर मसीह कतिने प्रसन्न होते ! और कोई व्यक्ति केवल तभी सुधार नहीं करता जब वह स्वयं ऐसा नहीं चाहता।

— गेरोन्डा , तो फरि क्या ? क्या शैतान जानता है कि ईश्वर प्रेम हैं , जानता है कि वह उससे प्रेम करते हैं , और फरि भी, इसके बावजूद , पहले की तरह ही चलता रहता है ?

— बेशक वह जानता है ! लेकनि क्या उसका अहंकार उसे कभी खुद को नम्र बनाने देगा ? इससे भी बढ़कर , वह चालाक भी है। अभी वह पूरी दुनिया को जीतने की कोशशि कर रहा है। वह कहता है , 'अगर मेरे और अनुयायी हों , तो अंततः ईश्वर को अपनी सभी रचनाओं को बचाने के लिए मजबूर होना पड़ेगा , और मैं भी उस योजना में शामलि हो जाऊँगा !' वह यही मानता है। इसीलिए वह यथासंभव अधकितम लोगों को अपने पक्ष में करना चाहता है। क्या आप समझ रहे हैं कि वह कसि ओर जा रहा है ? वह कहता है , 'मेरे पक्ष में इतने सारे लोग हैं ! ईश्वर को मुझ पर भी दया करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा !' [वह बनिा पश्चाताप के] बचाया जाना चाहता है ! और क्या यहूदा ने बल्कुि यही नहीं कयिा? वह जानता था कि मसीह मृतकों को नरक से मुक्त करेंगे। यहूदा ने कहा, "मैं मसीह से पहले नरक में जाऊँगा , ताकि वह मुझे भी मुक्त कर सकें !" क्या आप समझते हैं कि यह कतिनी चालाक योजना है ? मसीह से क्षमा मांगने के बजाय, उसने अपनी गर्दन फांसी के फंदे में डाल ली। और देखो , जसि अंजीर के पेड़ पर उसने खुद को फांसी दी थी, परमेश्वर की दया ने उसे झुका दयिा, लेकनि यहूदा [जीवति नहीं रहना चाहकर] अपनी टाँगों को अपने नीचे इस तरह समेट गया कि वे जमीन को न छू सकें। और यह सब सर्फि इसलिए, ताकि एक भी 'मुझे क्षमा करो' न कहना पड़े। कतिना भयानक! यहां तक कि शैतान , जो स्वार्थ का मूर्त रूप है , भी यह नहीं कहता कि 'मैंने पाप कयिा है ', बल्कि वह लगातार अधकि से अधकि लोगों को अपनी ओर खींचने का प्रयास करता रहता है।

नम्रता शैतान को धूल चटा देती है

नम्रता में महान शक्ति होती है। नम्रता शैतान को धूल में मलि देती है। यह शैतान पर सबसे शक्तशिाली प्रहार है। जहाँ नम्रता होती है , वहाँ शैतान के लिए कोई जगह नहीं होती। और अगर शैतान के लिए कोई जगह नहीं है , तो कोई प्रलोभन भी नहीं होते। एक बार, एक तपस्वी ने एक टंगलाश्का को यह कहने के लिए मजबूर कयिा, 'हे पवत्रि ईश्वर ...' 'हे पवत्रि ईश्वर , हे सर्वशक्तमिान , हे अमर!' — टंगलाश्का ने जल्दी -जल्दी यह कह दयिा, और वहीं रुक गया; उसने 'हम पर दया करो' नहीं कहा। 'कहो: "हम पर दया करो!"" कोई मौका नहीं ! अगर उसने वे शब्द कहे होते , तो वह एक देवदूत बन जाता। एक तांगलाश्का कुछ भी कह सकता है , सविाय 'हम पर दया करें ' के , क्योंकि उन शब्दों को उच्चारति करने के लिए वनिम्रता की आवश्यकता होती है। 'हम पर दया करें ' की वनिती में वनिम्रता है — और जो आत्मा ईश्वर की महान दया की याचना करती है , उसे वही प्राप्त होता है जसिकी वह याचना करती है।

हम जो कुछ भी करें , वनिम्रता , प्रेम और महानता आवश्यक हैं। आखरिकार, यह बहुत सरल है — हम ही हैं जो [अपने आध्यात्मकि जीवन] को स्वयं जटलि बनाते हैं। आइए, हम यथासंभव , शैतान के लिए जीवन को कठनि और मनुष्य के लिए आसान बनाएं। प्रेम और वनिम्रता शैतान के लिए कठनि और मनुष्य के लिए आसान हैं। एक कमजोर, बीमार व्यक्ति भी, जसिमें तपस्या की शक्ति की कमी हो, वनिम्रता के माध्यम से शैतान को हरा सकता है। एक व्यक्ति एक ही पल में ,

एक देवदूत या एक शैतान बन सकता है। कैसे ? विनम्रता या अहंकार के माध्यम से। क्या लूसिफर को एक देवदूत से शैतान बनने में बहुत समय लगा? उसका पतन क्षणों में हुआ। उद्धार पाने का सबसे आसान तरीका प्रेम और विनम्रता है। इसलिए, हमें प्रेम और विनम्रता से शुरुआत करनी चाहिए, और तभी बाकी चीज़ों की ओर बढ़ना चाहिए।

मसीह से प्रार्थना करें कि हम लगातार उन्हें आनंद दें और शैतान को परेशान करें , क्योंकि वह नारकीय यातनाओं का बहुत शौकीन है और पश्चाताप करने से इनकार करता है।

अध्याय 3.
दुनियावी आत्मा पर

शैतान घमंड पर शासन करता है

— गेरोन्डा , शैतान को 'इस संसार का शासक' क्यों कहा जाता है ? क्या वह वास्तव में संसार पर शासन करता है ?

[35]— यह तो हम बिल्कुल नहीं चाहते —कि शैतान दुनिया पर राज करे ! जब मसीह ने शैतान को 'इस संसार का राजकुमार ' कहा ([36]), तो उनका मतलब यह नहीं था कि वह दुनिया का शासक है , बल्कि यह कि वह व्यर्थता और झूठ के माध्यम से राज करता है। लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है ! क्या ईश्वर कभी शैतान को दुनिया पर शासन करने देंगे ? हालाँकि , जिनके दिल व्यर्थ और सांसारिक चीज़ों के लिए समर्पित हैं , वे 'इस युग के शासक' के अधिकार में रहते हैं। दूसरे शब्दों में , शैतान अहंकार और उन लोगों पर शासन करता है जो अहंकार और दुनिया के दास हैं। आखिरकार, 'दुनिया ' शब्द का क्या मतलब है ? अलंकरण , व्यर्थ की छोटी-छोटी सजावट की चीज़ें , है ना?[37] इस प्रकार , जो कोई भी अहंकार का दास है , वह शैतान के अधीन है। व्यर्थ की दुनिया से मोहित हृदय आत्मा को स्थिरता की अवस्था में और मन को अंधकार में रखता है। और फिर एक व्यक्ति केवल मानव प्रतीत होता है ; वास्तव में , वे एक आध्यात्मिक गर्भपात हैं।

मेरे विचार बताते हैं कि हमारी आत्मा का सबसे बड़ा दुश्मन , शैतान से भी बड़ा दुश्मन , सांसारिक आत्मा है। यह हमें मीठी प्रलोभनों से लुभाती है और हमें अनंत काल के लिए कड़वाहट में छोड़ देती है। लेकिन अगर हम स्वयं शैतान को देखें , तो हम भय से ग्रस्त हो जाएँगे ; हम ईश्वर की ओर मुड़ने के लिए विवश हो जाएँगे और निस्संदेह स्वर्ग में जाएँगे। हमारे युग में , बहुत कुछ सांसारिक इस दुनिया में प्रवेश कर गया है , इस दुनिया की आत्मा का बहुत कुछ। यही सांसारिकता इस दुनिया को नष्ट कर देगी। इस संसार को अपने भीतर स्वीकार करके [अंदर से सांसारिक बनकर], लोगों ने मसीह को अपने भीतर से निकाल दिया है।

— गेरोन्डा , ऐसा क्यों है कि हम यह महसूस नहीं करते कि सांसारिक आत्मा कितना बुराई लाती है , और फिर भी हम उसकी ओर आकर्षित होते हैं ?

---

[35] इफिसियों 6:12 देखें।

[36] यूहन्ना 16:11.

[37] प्राचीन ग्रीक में 'κόσμος' शब्द के अर्थ : 1. आभूषण , सजावट; 2. व्यवस्था ; 3. संसार , ब्रह्मांड ; 4. वह सब जो सांसारिक और भौतिक है। देखें ए.डी. वीज़मैन। ग्रीक -रूसी शब्दकोश। सेंट पीटर्सबर्ग , 1899। पृ . 725.

— क्योंकि दुनिया की आत्मा धीरे -धीरे हमारी ज़िंदगी में रेंग आती है। ठीक वैसे ही जैसे काँटेदार सूअर खरगोश के छोटे से घर में घुसा था: पहले उसने खरगोश से सिर अंदर रखने की इजाज़त माँगी ताकि बारिश में भीग न जाए। फिर उसने एक पंजा अंदर डाला, फिर दूसरा , और अंत में अपने पूरे शरीर को घुसा लिया, और अपनी काँटों का इस्तेमाल करके खरगोश को उसके घर से बाहर निकाल दिया। इसी तरह, सांसारिक बुद्धि हमें छोटी-छोटी रियायतों से धोखा देती है और धीरे -धीरे हमें अपने कब्ज़े में कर लेती है। बुराई चुपचाप आगे बढ़ती है। अगर यह अचानक छलांगों में आगे बढ़ती , तो हम धोखा नहीं खाते। जब [शरारती बच्चे] किसी मेंढक को उबालते हैं , तो वे उस पर एक-एक बूंद करके उबलता पानी डालते हैं। अगर वे सारा उबलता पानी एक साथ मेंढक पर डाल दें , तो वह ऊपर कूदकर खतरे से भाग जाएगा। लेकिन अगर आप उस पर थोड़ा -थोड़ा करके उबलता पानी डालते रहें , तो पहले वह उसे झटक देगा , और फिर शांत हो जाएगा। अगर आप इसे धीरे -धीरे डालते रहें , तो पहले वह कुछ पानी फिर से झटक देगा , लेकिन धीरे -धीरे वह बिना समझे ही झुलस जाएगा। 'चल अब, छोटे मेंढक ! जैसे ही उबलता पानी आप पर छींका जाए, कूदकर भाग जाइए!" नहीं , वह भागता नहीं है। वह खुद को फुलाता है , फुलाता है , और फिर जल जाता है। शैतान भी यही करता है — वह हमें बूंद -बूंद करके 'उबलते पानी से छींकता है ', और अंत में , बिना हमें एहसास हुए , हम खुद को 'जल चुका ' पाते हैं। [38]

आत्मा की सुंदरता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए

भौतिक दुनिया की सुंदरताओं से प्रभावित एक आत्मा इस बात की पुष्टि करती है कि उसके भीतर एक व्यर्थ की दुनिया बसती है। इसलिए, वह स्रष्टा से नहीं बल्कि सृष्टि से , ईश्वर से नहीं बल्कि मिट्टी से मोहित होती है। यह तथ्य कि यह मिट्टी शुद्ध और पापी की गंदगी से मुक्त है , उसका कोई महत्व नहीं है। दुनियावी सुंदरताओं से मोहित होकर, जो यद्यपि पापी नहीं हैं , फिर भी व्यर्थ की ही रहती हैं , हृदय एक क्षणिक आनंद का अनुभव करता है —एक ऐसा आनंद जो दैवी सांत्वना और आध्यात्मिक उल्लास के साथ आने वाली आंतरिक प्रेरणा से रहित होता है। हालाँकि , जब कोई व्यक्ति आध्यात्मिक सुंदरता से प्रेम करता है , तो उसकी आत्मा भर जाती है और सुंदर बन जाती है।

यदि कोई व्यक्ति —और विशेष रूप से एक भिक्षु —अपनी आंतरिक कुरूपता से अवगत होता, तो वह बाहरी सुंदरता के पीछे नहीं भागता। आत्मा इतनी मैली , इतनी कीचड़ भरी है , और फिर भी हम, उदाहरण के लिए, अपने कपड़ों की चिंता करते हैं ? हम अपने कपड़े धोते और इस्त्री करते हैं , और बाहर से हम साफ होते हैं , लेकिन अंदर से हम कैसे हैं —यह पूछना बेहतर नहीं है। इसलिए, अपने ध्यान को अपनी आंतरिक आध्यात्मिक अशुद्धि की ओर मोड़कर , कोई व्यक्ति अपने कपड़ों को आखिरी धब्बे तक बारीकी से साफ करने में अपना समय बर्बाद नहीं करेगा — क्योंकि ये कपड़े उनकी आत्मा से हजार गुना अधिक स्वच्छ हैं। फिर भी, अपने भीतर जमा आध्यात्मिक कचरे को अनदेखा करते हुए , कोई व्यक्ति अपने कपड़ों से सबसे छोटे से धब्बे को भी हटाने के लिए बारीकी से प्रयास करता है। हमारा सारा ध्यान आध्यात्मिक पवित्रता की ओर, बाहरी दिखावट के बजाय आंतरिक सुंदरता की ओर होना चाहिए। दिखावटी सुंदरताओं को नहीं , बल्कि आत्मा की सुंदरता , आध्यात्मिक सुंदरता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। क्योंकि हमारे प्रभु स्वयं ने कहा है कि संपूर्ण संसार एक आत्मा के बराबर भी नहीं है। [39]

---

[38] एल्डर यह उदाहरण यह दिखाने के लिए देते हैं कि यदि बुराई या पाप धीरे -धीरे , कदम-दर-कदम हमारे जीवन में प्रवेश कर जाएं , तो हम उन्हें कितनी आसानी से स्वीकार कर लेते हैं। यदि बुराई या पाप अचानक हमारे जीवन में प्रवेश कर जाएँ , तो हम उनका विरोध करेंगे ; जबकि, धीरे -धीरे बुराई के आगे झुकने से , हम उससे अभ्यस्त हो जाते हैं और अंततः पूरी तरह से उसका गुलाम बन जाते हैं। – अनुवादक की टिप्पणी।

[39] मत्ती 16:26 देखें।

दुनियावी इच्छाएँ

जो लोग अपने दिलों पर काबू नहीं रखते, जो ऐसी भौतिक इच्छाओं के लिए तरसते हैं जिनके बिना भी काम चल सकता है (शारीरिक वासनाओं का तो कहना ही क्या), और जो अपने मन को अपने दिल में नहीं लाते ताकि उसे अपनी आत्मा के साथ मिलकर ईश्वर के हवाले कर सकें — उन्हें एक बहुत ही भयंकर दुर्भाग्य की प्रतीक्षा है।

— गेरोन्डा, क्या कुछ चाहना हमेशा गलत है?

— नहीं, एक दिल से निकलने वाली इच्छा अपने आप में बुरी नहीं है। लेकिन चीजें, भले ही वे पापी न हों, मेरे दिल का एक हिस्सा कब्ज़ा करके, मसीह के प्रति मेरे प्रेम को कम कर देती हैं। और ऐसी पाप रहित इच्छा भी बुरी हो जाती है, क्योंकि इसके माध्यम से शत्रु मसीह के प्रति मेरे प्रेम में बाधा डालता है। यदि मैं कुछ उपयोगी प्राप्त करना चाहता हूँ, उदाहरण के लिए एक किताब, और यह उपयोगी वस्तु मेरे हृदय का एक हिस्सा कब्ज़ा कर लेती है, तो ऐसी इच्छा अच्छी नहीं है। एक किताब मेरे हृदय का एक हिस्सा क्यों कब्ज़ा करे? कौन सा बेहतर है — एक किताब की चाह रखना या मसीह के लिए तरसना? कोई भी मानवीय इच्छा —चाहे वह कितनी भी अच्छी क्यों न लगे —फिर भी मसीह या परमेश्वर की परम पवित्र माता से नीच है। क्या ईश्वर मुझे अपना सर्वस्व देने में असफल हो सकते हैं यदि मैं उन्हें अपना हृदय दूँ? ईश्वर मानवीय हृदय की खोज में हैं। "मुझे अपना हृदय दे दो, हे मेरे पुत्र। "[40] और यदि कोई व्यक्ति उसे अपना हृदय दे देता है, तो ईश्वर उन्हें वह देता है जो उनका हृदय चाहता है, बशर्ते कि उससे उन्हें कोई हानि न हो। हृदय केवल तभी व्यर्थ में बर्बाद होता है जब उसे मसीह को नहीं दिया जाता। और केवल मसीह में ही कोई व्यक्ति इस जीवन में दिव्य प्रेम की पूर्ति पाता है, और आने वाले जीवन में ईश्वर का शाश्वत आनंद पाता है।

हमें सांसारिक चीज़ों से बचना चाहिए, कहीं वे हमारे दिलों को मोह न लें। हमें साधारण चीज़ों का ही उपयोग करना चाहिए, जो केवल हमारी ज़रूरतों को पूरा करें। हालाँकि, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जिन चीज़ों का हम उपयोग करते हैं, वे भरोसेमंद हों। जब मैं किसी सुंदर वस्तु का उपयोग करना चाहता हूँ, तो मैं अपना पूरा दिल उस सुंदरता को दे देता हूँ। तब दिल में ईश्वर के लिए कोई जगह नहीं बचती। उदाहरण के लिए, किसी घर के पास से गुज़रते हुए, आप शानदार सजावट, संगमरमर और बढ़िया फिनिशिंग देखते हैं; आप पत्थरों और ईंटों को देखकर चकित हो जाते हैं और अपना दिल सब कुछ के बीच में ही छोड़ आते हैं। या आप दुकान में चश्मे का एक सुंदर जोड़ा देखते हैं, और आप उसे खरीदना चाहते हैं। अगर आप उन्हें नहीं खरीदते हैं, तो आपका दिल उस दुकान में ही रह जाएगा। लेकिन अगर आप उन्हें खरीद लेते हैं और पहन लेते हैं, तो आपका दिल उन फ्रेमों में बस जाएगा और उन पर चिपक जाएगा। महिलाएं, विशेष रूप से, इस जाल में बहुत आसानी से फंस जाती हैं। बहुत कम महिलाएं ऐसी हैं जो अपने दिल को व्यर्थ की तुच्छ चीजों पर बर्बाद नहीं करती हैं। मेरा मतलब यह है कि शैतान सांसारिक, रंगीन और चमकदार सभी चीजों की मदद से उनके समृद्ध दिलों को लूट लेता है। अगर किसी महिला को एक थाली चाहिए, तो वह फूलों वाली थाली ही ढूंढने की कोशिश करेगी। क्या आप सोच सकते हैं कि बिना फूलों वाली थाली में उसका खाना स्वादिष्ट नहीं लगेगा! और कुछ आध्यात्मिक महिलाएँ गंभीर डिज़ाइनों के चक्कर में पड़ जाती हैं — जैसे दो-सिर वाले [बाइज़ेंटाइन] चील और इसी तरह की चीज़ें। और फिर वे पूछती हैं: 'हम आध्यात्मिक चीज़ों

---

[40] नीतिवचन 23:26.

के प्रति असंवेदनशील क्यों हैं ?' लेकिन आप होश में कैसे आ सकती हैं अगर आपका दिल अलमारियों और कटोरियों में बिखर गया हो? तुम्हारे पास दिल नहीं है , बस मांस का एक टुकड़ा है —दिल की मांसपेशी जो तुम्हारी छाती में घड़ी की तरह टिक-टिक करती है। और दिल का ऐसा यांत्रिक काम सिर्फ तुम्हारे पैरों को चलाने के लिए ही काफी है। क्योंकि दिल का थोड़ा हिस्सा एक चीज़ पर जाता है , थोड़ा दूसरे पर, और मसीह के लिए कुछ भी नहीं बचता।

— गेरोन्डा , क्या इसका मतलब यह है कि इतनी सीधी-सादी इच्छाएँ भी पापी हैं ?

— ये इच्छाएँ , चाहे वे कितनी भी निर्दोष क्यों न हों , पापी इच्छाओं से भी बदतर हैं। क्योंकि पापी वासना को अंततः एक व्यक्ति पाप के रूप में पहचान लेता है — समय के साथ, उन्हें अंतरात्मा का कष्ट महसूस होने लगेगा और वे अपने तरीकों को सुधारने का प्रयास करेंगे। वह पश्चाताप करेगा , यह कहते हुए : 'हे मेरे ईश्वर , मैंने पाप किया है। ' जबकि ये 'अच्छी ' इच्छाएँ , इसके विपरीत, उसे परेशान नहीं करतीं ; एक व्यक्ति मान लेता है कि सब कुछ ठीक है। वह कहता है , 'मैं , सब अच्छाई से प्रेम करता हूँ , सब सुंदरता से। आखिरकार, ईश्वर ने भी तो सब कुछ सुंदर बनाया है। ' हाँ , यह सच है , लेकिन ऐसे व्यक्ति का प्रेम सृष्टिकिर्ता की ओर नहीं , बल्कि सृष्टि की ओर होता है। इसलिए, यह अच्छा है कि हम ऐसी हर इच्छा को त्याग दें। जब कोई व्यक्ति मसीह के लिए कुछ प्रयास करता है , उस चीज़ का त्याग करता है जिसे वह प्यार करता है — चाहे वह कितनी भी अच्छी क्यों न हो — और वह करता है जिसे वह पसंद नहीं करता, तो परमेश्वर उसे अधिक शांति प्रदान करते हैं।

हृदय शुद्ध होने से पहले , यह सांसारिक इच्छाओं को पालता है , और ये उसे आनंद देती हैं। हालाँकि , एक बार शुद्ध हो जाने पर, हृदय सांसारिक इच्छाओं पर शोक करता है और उनसे घृणा महसूस करता है। और फिर हृदय आध्यात्मिक चीजों में आनंदित होता है। इस प्रकार , सांसारिक इच्छाओं से घृणा करके , हृदय शुद्ध हो जाता है। यदि हृदय को इन इच्छाओं से घृणा नहीं होती है , तो यह उनमें बहक जाता है। लेकिन देखो इसका परिणाम क्या होता है : हम अपने पुराने स्व को थोड़ा भी नियंत्रित नहीं करना चाहते , बल्कि उसकी हर इच्छा को पूरा करना चाहते हैं। तो फिर, हम मसीह के अनुयायी कैसे बन सकते हैं ?

— गेरोन्डा , यदि मुझे किसी विशेष इच्छा को त्यागना कठिन लगता है , तो क्या मुझे संघर्ष जारी रखना चाहिए?

— हाँ। भले ही आपका हृदय इस बात से दुखी हो कि आप उसकी इच्छा पूरी नहीं कर रहे हैं , आपको उसकी आज्ञा नहीं माननी चाहिए; क्योंकि यदि आप ऐसा करते हैं , तो पहले आपको सांसारिक आनंद मिलेगा , और बाद में सांसारिक चिंता। लेकिन यदि आप अपने हृदय की आज्ञा नहीं मानते हैं और यह इस बात से दुखी है कि आप इसके आगे नहीं झुके , जबकि आप स्वयं इस पर प्रसन्न हैं , तो दैवीय अनुग्रह आता है। और दैवीय अनुग्रह की प्राप्ति ही हमारा कार्य है। अर्थात् , दैवीय अनुग्रह प्राप्त करने के लिए, इच्छाओं को समाप्त करना होगा—यहाँ तक कि अच्छी इच्छाओं को भी—और आत्म -इच्छा को समाप्त करना होगा। तब व्यक्ति विनिम्र हो जाता है। और जब वे विनिम्र हो जाते हैं , तो दैवी कृपा आती है। सांसारिक चीजों के प्रति उदासीन होकर, हृदय आध्यात्मिक रूप से आनंदित होता है। हमें , यथासंभव , सांसारिक आराम से बचने और दैवी आराम प्राप्त करने के लिए आंतरिक आध्यात्मिक कार्य में संलग्न होने का तरीका सीखना चाहिए।

दुनियावी आनंद भौतिक आनंद हैं।

— गेरोन्डा , दुनिया के लोग अक्सर कहते हैं कि जीवन की सभी सुख -सुविधाओं के होते हुए भी उन्हें एक तरह की खालीपन का अनुभव होता है।

— सत्य है , शुद्ध आनंद मसीह में ही पाया जा सकता है। प्रार्थना में स्वयं को उनके साथ एक करके , आप पाएँगे कि आपकी आत्मा भर जाती है। इस संसार के लोग सुखों में आनंद की खोज करते हैं। कुछ आध्यात्मिक लोग धार्मिक बहसों , चर्चाओं और इसी प्रकार की चीज़ों में आनंद की खोज करते हैं। लेकिन जब उनकी धर्मशास्त्रीय चर्चाएँ समाप्त हो जाती हैं , तो वे एक खालीपन का अनुभव करते हैं और खुद से पूछते हैं कि उन्हें आगे क्या करना चाहिए। वे जो कुछ भी कर रहे हों —चाहे पापपूर्ण हो या तटस्थ —परिणाम एक ही होता है। उनके लिए कुछ देर सो जाना बेहतर होगा ताकि वे सुबह एक स्पष्ट मन के साथ काम पर जा सकें।

आध्यात्मिक आनंद उन लोगों को नहीं मिलता जो अपने दिल की सांसारिक इच्छाओं में लिप्त रहते हैं। ऐसे लोग बेचैनी से ग्रस्त रहते हैं। आध्यात्मिक लोग सांसारिक आनंद से असहज महसूस करते हैं। सांसारिक आनंद न तो स्थायी है और न ही सच्चा। यह एक अस्थायी , क्षणिक आनंद है —एक भौतिक, गैर -आध्यात्मिक आनंद। दुनियावी आनंद मानव आत्मा को 'पोषित' नहीं करता, बल्कि केवल उसे उलझाता है। आध्यात्मिक आनंद का अनुभव करने के बाद, हमें भौतिक आनंद की कोई इच्छा नहीं होगी। 'मैं तृप्त हो जाऊँगा जब मैं तेरी महिमा को देखूँगा। [41] दुनियावी आनंद आध्यात्मिक व्यक्ति की शक्ति को पुनर्स्थापित नहीं करता, बल्कि उसे कम कर देता है । एक आध्यात्मिक व्यक्ति को सांसारिक अपार्टमेंट में रखें — उन्हें वहाँ कोई शांति नहीं मिलेगी। और जहाँ तक एक सांसारिक व्यक्ति की बात है : वे केवल यही सोचेंगे कि वे आराम कर रहे हैं , लेकिन वास्तव में वे पीड़ित होंगे। बाहरी रूप से वे प्रसन्न होंगे , लेकिन इससे उन्हें कोई आंतरिक संतुष्टि नहीं मिलेगी , और वे कष्ट सहेंगे।

— गेरोना , सांसारिक रास्तों में सांस लेना मुश्किल है !

— लोगों को यह घुटन भरा लगता है , लेकिन वे खुद ही इस कैद को चाहते हैं ! बिल्कुल एक मेंढक की तरह — आखिरकार, वह अपनी मर्जी से साँप के जबड़ों में कूदता है। साँप तालाब के किनारे छिपा रहता है और ध्यान से मेंढक को घूरता है। साँप को घूरते -घूरते और अपने आप पर काबू खोकर, मेंढक , जैसे किसी जादू में बँधा हो, टर्र -टर्र करता हुआ उसके जबड़ों में चला जाता है। साँप उसे जहर दे देता है ताकि वह विरोध न कर सके। मेंढक चिल्लाता है , लेकिन अगर कोई उसकी मदद करने आए और साँप को भगा भी दे , तब भी मेंढक मर जाएगा, क्योंकि उसे पहले ही जहर दे दिया गया होता है।

— गेरोन्डा , लोग सांसारिक चीजों में आनंद क्यों लेते हैं ?

— आजकल लोग अनंतकाल के बारे में नहीं सोचते। आत्म -प्रेम उन्हें यह भूलने में मदद करता है कि वे सब कुछ खो देंगे। उन्होंने अभी तक जीवन के गहरे अर्थ को नहीं समझा है , न ही उन्होंने अन्य , स्वर्गीय आनंद का अनुभव किया है। इन लोगों के दिल खुशी से किसी ऊँची चीज़ की आकांक्षा नहीं करते। उदाहरण के लिए, आप एक आदमी को एक कद्दू देते हैं। 'क्या अद्भुत कद्दू है !' वह कहता है। आप उसे एक अनानास देते हैं। 'अरे , इन अनानासों पर कितने सुंदर पैमाने हैं !' वह कहता है , और अनानास को फेंक देता है , क्योंकि उसने कभी उसका स्वाद नहीं चखा है। या एक गिलहरी से कहें , 'सूरज कितना सुंदर है !' — और वह फिर से

---

[41] भजन संहिता 16:15.

जमीन में घुस जाता है। जो लोग भौतकि दुनयि से संतुष्ट हैं , वे उन मूरख चूजों की तरह हैं जो अपने अंडों में चुपचाप बैठे रहते हैं , और खोल को तोड़कर बाहर नकिलने , रेंगकर धूप में आनंदति होने —स्वर्गीय जीवन की उस दव्यि उड़ान —का कोई प्रयास नहीं करते , बल्कि , बनि हलि -डुले , अंडे के खोल के अंदर ही मर जाते हैं।

आध्यात्मकि जीवन में सांसारकि भावना

— गेरोना , आप कभी-कभी कहते हैं कि कोई व्यक्ति पूर्वी आत्मा के लेंस के बजाय यूरोपीय लेंस से देखता है। आपका क्या मतलब है ?

— मेरा मतलब है कि वे यूरोपीय आँखों से , यूरोपीय तर्क के साथ, बनि आस्था के , मानवीय ढंग से देखते हैं।

— और पूर्वी आत्मा क्या है ?

— '...पूर्व का पूर्व , और जो अंधकार और छाया में नविास करते हैं ...'[42]

— आपका क्या मतलब है ?

— जब मैं कहता हूँ कि किसी ने पूर्वी आत्मा को अपना लयि है और यूरोपीय आत्मा को पीछे छोड़ दयि है , तो मेरा मतलब है कि तर्क और तर्कवाद को अलग रखकर, उस व्यक्ति ने सादगी और श्रद्धा को अपना लयि है। क्योंकि सादगी और श्रद्धा ही ऑर्थोडॉक्स आत्मा का सार है , जसिमें मसीह वास करते हैं। आजकल आध्यात्मकि लोगों में अक्सर सादगी की कमी होती है — वह पवत्रि सादगी जो आत्मा की शक्ति को पुनर्स्थापति करती है। जब तक कोई सांसारकि आत्मा को त्यागकर सरलता से व्यवहार करना शुरू नहीं करता—यानी, इस बात की चंति कए बनि कि दूसरे आपको कैसे देखेंगे या आपके बारे में क्या कहेंगे —तब तक वह ईश्वर या संतों के साथ एकता में प्रवेश नहीं करता। ऐसी एकता में प्रवेश करने के लए, कसी को आध्यात्मकि क्षेत्र में जीना शुरू करना चाहए। कोई व्यक्ति जतिना सरल व्यवहार करता है —वशिषकर एक मठवासी समुदाय में —वे उतने ही सहज, उतने ही 'नखिरे ' हो जाते हैं , क्योंकि उनके जुनून के खुरदरेपन को पॉलशि कर दयि जाता है। यदि ऐसा नहीं है , तो वे खुद को एक नकली व्यक्ति में ढालने की कोशशि करते हैं। इसलए, स्वर्गदूतों जैसा बनने के लए, आइए हम सांसारकि मेले के वेशभूषा को उतार फेंकने का प्रयास करें।

क्या आप जानते हैं कि सांसारकि लोग आध्यात्मकि लोगों से कैसे भन्नि होते हैं ? सांसारकि लोग यह सुनश्चिति करते हैं कि उनका आँगन साफ हो। उन्हें इस बात की परवाह नहीं होती कि उनका घर अंदर से गंदा है या नहीं। वे आँगन और साफ करते हैं और कचरे को घर के अंदर झाड़ देते हैं। वे कहते हैं , 'लोग आँगन तो देख सकते हैं ; वे घर के अंदर नहीं देख सकते। ' दूसरे शब्दों में , वे सोचते हैं , "मेरा अंदर का हाल चाहे बुरा ही क्यों न हो, पर बाहर से मैं सलीके से दखिूँ। " वे चाहते हैं कि दूसरे उनकी प्रशंसा करें। दूसरी ओर, आध्यात्मकि लोग यह सुनश्चिति करते हैं कि उनका घर अंदर से साफ़ -सुथरा हो। वे इस बात की परवाह नहीं करते कि लोग उनके बारे में क्या कहते हैं , क्योंकि मसीह उस घर में - आँगन में नहीं , बल्कि हृदय में - वास करते हैं।

हालाँकि , ऐसा भी होता है कि आध्यात्मकि लोग भी दखिावटी ढंग से , सांसारकि तरीके से और, सीधे शब्दों में कहें तो, फरीसी ढंग से व्यवहार करते हैं। ऐसे लोग इस बारे में नहीं सोचते कि स्वर्ग में , ईश्वर तक कैसे पहुँचा जाए, बल्कि इस बारे में सोचते हैं कि इस जीवन में अच्छे कैसे दखिें। वे खुद को सभी आध्यात्मकि आनंदों से वंचति कर लेते हैं , जबकि वे

---

[42] "उन्होंने स्वर्ग से हमारा दर्शन कयि है , हमारे उद्धारकर्ता , जो पूरबों के भी पूरब हैं , और हम जो अंधकार और छाया में थे , हमें सत्य मलि गया है , क्योंकि प्रभु कुँवारी से जन्मे "– मसीह के जन्म पर मैटन्सि में 9वीं ओड के लए भजन।

यहीं एक स्वर्गीय अवस्था का अनुभव कर सकते थे। और इस प्रकार वे सांसारिक लोग ही बने रहते हैं। वे सांसारिक रीति-रिवाजों के अनुसार आध्यात्मिक जीवन जीने की कोशिश करते हैं। फिर भी, अंदर से वे खोखले होते हैं —ईश्वर उनके भीतर नहीं है।

दुर्भाग्य से, सांसारिक भावना का आध्यात्मिक लोगों पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है। और अगर आध्यात्मिक लोग सांसारिक तरीके से काम करते और सोचते हैं, तो सांसारिक लोगों के पास करने और सोचने के लिए क्या बचता है? जब मैंने कुछ लोगों से युवा नशेड़ियों की मदद करने को कहा, तो उन्होंने जवाब दिया: 'अगर हम नशेड़ियों के लिए एक आश्रय स्थापित करते हैं, तो कोई भी इस काम के लिए दान देना नहीं चाहेगा। तो हमारे लिए बुजुर्गों के लिए एक देखभाल गृह स्थापित करना बेहतर होगा।' मैं यह नहीं कह रहा कि बुजुर्गों के लिए देखभाल गृहों की आवश्यकता नहीं है —वे निश्चित रूप से आवश्यक हैं। लेकिन यदि हम इस तरह की धारणाओं पर आगे बढ़ते हैं, तो हमारा परोपकारी कार्य विफलता में समाप्त हो जाएगा। लोग यह महसूस करने में विफल रहते हैं कि सांसारिक सफलता ही आध्यात्मिक विफलता है।

संन्यास जीवन में सांसारिक भावना

—गेरोना, बहुत से लोग हमसे कहते हैं: 'आप यहाँ स्वर्ग की तरह रहते हैं।'

—प्रार्थना करो कि तुम दूसरे स्वर्ग के बिना न रह जाओ। मुझे खुशी होगी अगर तुम्हारे आध्यात्मिक विकास का सांसारिक लोगों पर प्रभाव पड़े, लेकिन तुम स्वयं —ठीक इसी विकास के कारण—दूसरों पर पड़ने वाले प्रभाव पर ध्यान नहीं दोगे, और न ही कोई प्रभाव डालने की कोशिश करोगे; इसे आंतरिक और स्वाभाविक होने दो, जो अपने आप उत्पन्न हो। व्यर्थता में खुद को खोने की कोशिश न करें —अन्यथा आप मसीह को खो देंगे। अपने विवेक को यथासंभव संन्यासी बनाने का प्रयास करें। नन की तरह आध्यात्मिक रूप से जिएं। मसीह को न भूलें, ताकि वह भी आपको याद रखें। मेरा उद्देश्य आपको दुखी करना नहीं, बल्कि आपकी मदद करना और आपको मजबूत बनाना है। सांसारिक आत्मा, जब यह मठवासी जीवन में प्रवेश करती है, तो स्वयं मसीह को दुख पहुँचाती है। इस पराये आत्मा को पहचानने और उसे भगाने का प्रयास करें।

दुर्भाग्यवश, सांसारिक भावना बाहरी दुनिया से कई मठों में समा गई है। इसका कारण यह है कि हमारे युग में कुछ आध्यात्मिक मार्गदर्शक मठवासी जीवन को सांसारिक मार्ग पर ले जा रहे हैं, और संन्यासियों की आत्माएँ पवित्र पिताओं की अनुग्रह-पूर्ण भावना की ओर नहीं बह रही हैं। मैं देखता हूँ कि आज मठों में पवित्र पिताओं की आत्मा के विपरीत एक आत्मा हावी है। भिक्षु उस शुभ, पवित्र-पितृवत् आत्मा को स्वीकार नहीं करते। अर्थात्, वे आध्यात्मिक रूप से नहीं जीते। आज्ञाकारिता और अपनी इच्छा को वश में करने के नाम पर कार्य करते हुए, वे आध्यात्मिक ऊँचाइयों को धरती के स्तर तक लाते हैं और सांसारिक स्व-इच्छा में लिप्त हो जाते हैं। इस तरह जीने से, वे फलते-फूलते नहीं हैं, क्योंकि प्रलोभक, सांसारिक आत्मा, मठ में उनके साथ 'मेहनत' करता है। हमारे पास ईश्वर की आज्ञाओं की व्याख्या अपने हिसाब से करने का कोई अधिकार नहीं है। हमारे पास मठवाद को अपनी इच्छानुसार चित्रित करने का कोई अधिकार नहीं है। अपनी कमजोरियों को स्वीकार करना और विनम्रता से ईश्वर की दया मांगना एक बिल्कुल अलग बात है। मेरी दृष्टि में, सबसे बड़ी बुराई यह है कि कुछ लोग इस सांसारिक आत्मा को प्रगति मानते हैं। हमें इस आत्मा को एक पतन के रूप में पहचानना चाहिए और इसे अपने भीतर से निकाल फेंकना चाहिए, ताकि हम

आध्यात्मिक रूप से शुद्ध हो सकें। और फिर पवित्र आत्मा तुरंत आएगा, जो आत्माओं को पवित्र करता है, ज्ञान प्रदान करता है और उन्हें मजबूत बनाता है।

और ऐसे संन्यासी भी हैं जो कहते हैं: 'हमें अपनी संस्कृति का प्रकटीकरण करना चाहिए।' कौन सी संस्कृति? एक सांसारिक संस्कृति? यह स्वाभाविक होगा यदि हम, संन्यासियों के रूप में, अपनी आध्यात्मिक संस्कृति, अपने आध्यात्मिक विकास का प्रकटीकरण करें। किस प्रकार का आध्यात्मिक विकास? इस प्रकार का: सांसारिक विकास में कुछ अत्यधिक आध्यात्मिक गृहस्थों से आगे निकलने की कोशिश न करना, क्योंकि यह सांसारिक विकास साधुओं को तो छोड़िए, यहां तक कि उन्हें भी सताता है। हमारी आध्यात्मिक गति इतनी ऊँची होनी चाहिए कि इस संसार के लोग भी हमारे पदचिन्हों पर चलने के लिए आकर्षित हों। यदि हम संन्यासी भी किसी अत्यधिक आध्यात्मिक गृहस्थ जैसा ही करते हैं, तो यह फिर से, गृहस्थ लोगों के किसी काम का नहीं है, क्योंकि उनके पास हमारे बिना ही एक अत्यधिक आध्यात्मिक गृहस्थ का उदाहरण पहले से ही मौजूद है। हमारा जीवन आध्यात्मिक गृहस्थों की तुलना में एक उच्चतर स्तर का होना चाहिए। एक संन्यासी को दूसरों के सामने किसी प्रकार के सांसारिक विकास का प्रदर्शन करने का लक्ष्य नहीं रखना चाहिए। यह संन्यासवाद का अपमान है। जो संन्यासी सांसारिक ढंग से सोचता है, वह यह दर्शाता है कि वह मार्ग से भटक गया है —उसने ईश्वर की खातिर मार्ग चुना, फिर भी उसकी आत्मा संसार के लिए तरसती है। सांसारिक विकास, जिसे प्रगति माना जाता है, के माध्यम से संन्यासवाद आध्यात्मिक पतन की ओर जाता है।

संन्यासी जीवन से बहुत कुछ गायब हो रहा है, ठीक वैसे ही जैसे दुनिया से सम्मान और इज़्ज़त गायब हो रहे हैं और उन्हें अतीत की चीज़ें बताकर खारिज कर दिया जा रहा है। इसीलिए मुझे इतना दुख होता है कि मैं चिल्ला ही पड़ूँ। मैं कहीं दूर चले जाने की लालसा रखता हूँ [ताकि यह सब न देखूँ]। जो कोई भी कुछ भी उच्चतर का अनुभव नहीं कर पाया है, वह अपने आध्यात्मिक जीवन के बारे में ज़्यादा चिंता नहीं करता, जिसमें वे सब कुछ अपने ही नियम के अनुसार व्यवस्थित करते हैं। लेकिन, क्या आप जानते हैं कि किसी ऐसे व्यक्ति के लिए, जिसने कुछ उच्चतर का स्वाद चखा हो, ऐसे नियम के अनुसार जीना कितना कष्टदायक है? अगर मसीह मुझे अपनी इच्छानुसार, एक मठाधीश की तरह जीने और एक वीर की तरह मरने का वरदान दें, तो मैं इसे मोर्चे पर, युद्ध में मरना मानूँगा। ये ऐसे समय हैं कि सिर्फ़ इसलिए मरना, शहीद होना और बलिदान देना सार्थक है ताकि पवित्र पिताओं की निंदा न हो।

हम पवित्र पिताओं के बारे में बार-बार पढ़ते हैं, लेकिन इस बात पर थोड़ा भी ध्यान नहीं देते कि वे कहाँ और कैसे रहते थे। प्रभु ने कहा: 'लोमड़ियों के बिल होते हैं, और आकाश के पक्षियों के घोंसले होते हैं, पर मनुष्य के पुत्र के पास अपना सिर रखने के लिए कोई जगह नहीं है।'[43] यह चौंकाने वाला है। पवित्र फादर गुफाओं में रहने और मसीह के समान बनने का प्रयास करते थे। उन्होंने मसीह के आनंद का अनुभव किया क्योंकि उन्होंने हर बात में उनकी नकल की। यही उनकी एकमात्र चिंता थी। पवित्र फादरों ने रेगिस्तान को एक आध्यात्मिक शहर में बदल दिया, जबकि आज हम इसे एक सांसारिक शहर में बदल रहे हैं। मसीह की कलीसिया बचने के लिए मरुभूमि में भागती है,[44], जबकि हम मरुभूमि को एक सांसारिक नगर में बदल रहे हैं। और लोग इससे बहक जाएंगे, सहायता के बिना रह जाएंगे, और बाद में उनके पास पकड़ने के लिए कुछ भी नहीं बचेगा। यह ठीक यही बड़ा खतरा है जो मैं उन कठिन वर्षों में देखता हूं,

---

[43] मत्ती 8:20 और लूका 9:58।

[44] तुलना करें प्रका. 12:6.

जनिका हम वर्तमान में अनुभव कर रहे हैं। जबकि आज हमें दिव्य शक्ति प्राप्त करने के लिए अधिक मठवासी ढंग से जीना चाहिए, हम, दुर्भाग्य से, सांसारिक आत्मा के प्रभाव में आ जाते हैं; यह हमें बदतर बना देती है, और हम शक्तिहीन हो जाते हैं। यानी, हम स्वयं अपनी आत्मा को अपने भीतर से बाहर निकाल देते हैं और एक मृत शरीर बन जाते हैं।

आज ऐसे भिक्षु हैं जो केवल दिखावे के लिए ही संन्यासी जीवन जीते हैं। वे धूम्रपान नहीं करते, कामुक पाप नहीं करते, *द लव ऑफ गुडनेस * पढ़ते हैं, और हर मोड़ पर पवित्र पिताओं का हवाला देते हैं। धर्मनिरपेक्ष दुनिया में, जो बच्चे झूठ नहीं बोलते थे, क्रॉस का चिन्ह बनाते थे, चर्च जाते थे, और बड़े होने पर नैतिक आचरण के प्रति कुछ हद तक सचेत रहते थे, वे इसे ही पर्याप्त मानते थे। कुछ मठों में लोग बिल्कुल इसी तरह का जीवन जीते हैं, और यह आम लोगों को वहाँ आकर्षित करता है। लेकिन, जब सामान्य लोग ऐसे संतों को करीब से जानते हैं, तो वे देखते हैं कि वे इस दुनिया के लोगों से अलग नहीं हैं, क्योंकि उनमें पूरी दुनिया की भावना बनी रहती है। और अगर वे धूम्रपान करें, अखबार पढ़ें, या राजनीति के बारे में बात करें, तो सामान्य लोग कम से कम उन्हें इस दुनिया के लोगों के रूप में टाल देंगे, और संन्यासवाद कलंकित नहीं होगा।

एक आध्यात्मिक रूप से दुर्बल भिक्षु सांसारिक व्यक्ति के हृदय को कैसे छू सकता है? यदि आप शराब को खुली बोतल में छोड़ दें, तो वह वाष्पित हो जाएगी, अपनी सारी शक्ति खो देगी, और न तो कीटाणुओं को मार पाएगी और न ही जल पाएगी। और यदि आप एक स्पिरिट लैंप में ऐसी बासी स्पिरिट भरें, तो यह, इसके अलावा, बत्ती को भी बर्बाद कर देगी। एक भिक्षु के साथ भी ऐसा ही है: लापरवाही करने से, वह दिव्य अनुग्रह को दूर भगा देता है और उसके बाद उसके पास केवल स्कीमा — एक भिक्षु का बाहरी स्वरूप — ही रह जाता है। वह बासी स्पिरिट की तरह है और शैतान को 'जलाकर भस्म' नहीं कर सकता। क्योंकि 'संन्यासियों का प्रकाश स्वर्गदूत हैं, और मनुष्यों का प्रकाश संन्यासी हैं!'[45] लेकिन 'क्षीण' संन्यासी प्रकाश नहीं रह जाते। क्या आप समझते हैं कि सांसारिक बुद्धि कितनी विनाशकारी है! यदि आध्यात्मिक शक्ति संन्यासी जीवन से चली जाए, तो उसमें कुछ भी नहीं बचता। क्योंकि 'यदि नमक अपनी खारापन खो दे,'[46], तो वह खाद के लायक भी नहीं रहता। गंदगी और कचरा ह्यूमस में बदल जाते हैं, लेकिन नमक नहीं। यदि आप किसी पौधे में नमक से 'खाद डालें', तो वह उसे जला देगा। जिस युग में हम अब जी रहे हैं, उसमें मठवाद को उज्ज्वल रूप से चमकना चाहिए। इस सारी सड़न और क्षय के लिए नमक की आवश्यकता है। यदि मठों में सांसारिक ज्ञान नहीं है, यदि उनकी स्थिति आध्यात्मिक है, तो यह समाज के लिए उनका सबसे बड़ा योगदान होगा। उन्हें न तो कुछ बोलने की और न ही कुछ और करने की आवश्यकता होगी, क्योंकि वे अपने जीवन के माध्यम से ही बोलेंगे। आज दुनिया को ठीक यही चाहिए।

---

[45] "संन्यासियों का प्रकाश स्वर्गदूत हैं, और सभी लोगों के लिए प्रकाश संन्यासी जीवन है; और इसलिए संन्यासियों को हर बात में एक अच्छा उदाहरण बनने का प्रयास करना चाहिए, किसी को भी किसी भी बात में, न तो कर्म से और न ही वचन से, कोई आपत्ति न हो (2 कुरिन्थियों 6:3)। लेकिन यदि यह प्रकाश अंधकार बन जाए, तो वह अंधकार —अर्थात् जो संसार में हैं —और भी अधिक अंधकारमय हो जाता है।" आदरणीय पिता अबा जॉन, माउंट सिनाई के मठाधीश, *द लैडर * (रूसी अनुवाद)। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लावरा, 1898। पृ. 181।

[46] मत्ती 5:13.

और कैथोलिकों को देखिए — बस देखिए कि वे किस हाल में पहुँच गए हैं ! मुझे याद है , कई साल पहले , जब मैं कोनट्सिा के स्टोमयिन मठ में था, तो किसी ने मुझे अखबार का एक टुकड़ा लाकर दिया जिस पर लिखा था: तीन सौ कैथोलिक ननों ने विरोध प्रदर्शन किया — पहले इसलिए कि उन्हें सिनेमा में एक फीचर फिल्म देखने की अनुमति नहीं दी गई थी, और फिर एक और विरोध — इसलिए कि उनके कपड़े घुटनों तक की बजाय टखनों तक लंबे थे। " यह पढ़कर मैं इतना आक्रोशित हुआ कि मैंने तो यह भी कहा: "अरे , भगवान के लिए, आप सबसे पहले नन ही क्यों बनीं ?" और लेख के अंत में लिखा था कि उन्होंने अपनी नन वाली पोशाक उतार दी थी और धर्मनिरपेक्ष दुनिया में लौट आई थीं। लेकिन उस तरह की मानसिकता के साथ, वे तो पहले ही लौट चुकी थीं। एक और अवसर पर, मैं एक कैथोलिक नन से मिली जो कथित तौर पर मिशनरी कार्य में लगी हुई थी और थी—मैं इसे कैसे कहूँ ?—खैर , बिल्कुल कुछ बहुत ही सांसारिक युवतियों की तरह। बिल्कुल भी कोई अंतर नहीं ! इसलिए आइए हम इस यूरोपीय भावना को अपने भीतर जड़ जमाने न दें , नहीं तो हम भी उसी हालत में पहुँच जाएँगे।

— गेरोना , सांसारिक तर्क को त्यागना मुझे एक कठिन कार्य लगता है।

— यह मुश्किल नहीं है , लेकिन इसके लिए सतर्कता की आवश्यकता है। लगातार इस पर चिंतन करो कि महान आर्सेनियस ने क्या कहा था: 'तुमने दुनिया क्यों छोड़ी ?..'[47] हम भूल जाते हैं कि हम मठ में क्यों आए थे। अच्छा हो या बुरा , हर कोई अच्छी शुरुआत करता है , लेकिन हर कोई अच्छी तरह समाप्त नहीं करता, क्योंकि वे भूल जाते हैं कि वे मठ में क्यों आए थे।

— गेरोना , आपने कहा था कि इस संसार की आत्मा मठवासियों के जीवन में रिस रही है और इसके आध्यात्मिक मानक क्षीण हो रहे हैं। क्या मठवाद की सच्ची आत्मा बनी रहेगी ?

— यह तूफ़ान आ गया है , लेकिन ईश्वर हमें नहीं छोड़ेंगे।

— गेरोना , मेरे मन में एक विचार आया: 'क्या आध्यात्मिक प्रकृति के कोई मठवासी भाईचारे अभी भी मौजूद हैं ?'

— मानो पहले से ही कम हों ! अगर ऐसा नहीं होता, तो ईश्वर की माता हमारी पूरी 'बंधुता ' को एस्कॉर्ट के साथ बहुत दूर नहीं जगहों पर भेज देतीं !.. ऐसे संन्यासी हैं जो बहुत आध्यात्मिक जीवन जीते हैं , बिना किसी धूम -धाम के। ऐसे प्राणी हर मठ में , हर धर्मप्रांत में मिल सकते हैं। यही दुर्लभ प्राणी हैं जो ईश्वर को दया के लिए प्रेरित करते हैं , और इसीलिए वह हमसे सहन करते हैं।

दुनियावी आत्मा एक बीमारी है

आज सबसे महत्वपूर्ण बात इस सांसारिक भावना के अनुरूप न होना है। इस तरह का विरोध मसीह की गवाही है। आइए, हम यथासंभव प्रयास करें कि इस वर्तमान प्रवाह को हमें बहाकर सांसारिक धारा में न ले जाए। एक चतुर मछली कांटे में नहीं फंसती। वह चारा देखती है , पहचान जाती है कि वह क्या है , उस जगह से दूर तैर जाती है और पकड़ी नहीं जाती। लेकिन दूसरी मछली चारा देखती है , उसे निगलने के लिए दौड़ती है और तुरंत कांटे में फँस जाती है। संसार के साथ भी ऐसा ही है —उसके पास अपना चारा है , और वह लोगों को पकड़ने के लिए इसका इस्तेमाल करता है। लोग सांसारिक भावना से आकर्षित होते हैं और फिर उसके जाल में फँस जाते हैं।

---

[47] देखें पवित्र और धन्य पिताओं के तपस्वी जीवन की स्मरणीय कहानियाँ। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लाव्रा , 1993। पृ . 27.

दुनियावी बुद्धि एक बीमारी है। जैसे कोई व्यक्ति किसी भी बीमारी से संक्रमित न होने की कोशिश करता है, वैसे ही उसे दुनियावी बुद्धि से संक्रमित न होने की कोशिश करनी चाहिए—चाहे वह किसी भी रूप में हो। आध्यात्मिक रूप से विकसित होने और स्वस्थ रहने के लिए, दिव्य आनंद के साथ आनंदित होने के लिए, एक व्यक्ति का दुनियावी आत्मा से कोई लेना -देना नहीं होना चाहिए।

अध्याय 4.
अन्याय का महान पाप

अन्याय परमेश्वर का क्रोध उत्पन्न करता है

यदि किसी व्यक्ति पर ईश्वर का आशीर्वाद है, तो यह एक महान बात है। यह सच्ची संपत्ति है! जिस पर आशीर्वाद होता है वह स्थायी है और नष्ट नहीं होता। जिस पर आशीर्वाद नहीं है वह स्थायी नहीं रहता। अन्याय एक बड़ा पाप है। सभी पापों के लिए क्षमाकारक परिस्थितियाँ होती हैं, लेकिन अन्याय के लिए नहीं—यह ईश्वर के क्रोध को भड़काता है। यह कितना भयानक है! जो लोग दूसरों के साथ अन्याय करते हैं, वे अपने ही सिर पर आग लाते हैं। लोग कोई अन्यायपूर्ण कार्य करते हैं, और फिर उनके प्रियजन मर जाते हैं, फिर भी वे इसके कारण को नहीं समझ पाते। लेकिन इतने सारे अन्याय करने वाले लोग समृद्धि कैसे प्राप्त कर सकते हैं? ऐसा करके, वे खुद पर शैतान को शक्ति दे देते हैं, और फिर उन पर दुर्भाग्य, बीमारियाँ और अन्य आपदाएँ आती हैं ... और [इन दुर्भाग्यों के आध्यात्मिक कारणों को समझे बिना] वे आपसे अपने ठीक होने के लिए प्रार्थना करने को कहते हैं।

अधिकांश दुर्भाग्य अन्याय से उत्पन्न होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि लोग अन्याय से धन इकट्ठा करते हैं, तो वे कुछ वर्षों के लिए ऐश-ओ-आराम की ज़िंदगी जी सकते हैं, लेकिन फिर वे अपने अन्याय से अर्जित की गई सारी संपत्ति डॉक्टरों पर खर्च कर देते हैं। आखिरकार, जैसा कि भजन संहिता में लिखा है: 'धर्मियों के लिए थोड़ा सा भी दुष्टों की बड़ी संपत्ति से बेहतर है।'[48] 'बुराई से अर्जित धन हवा की तरह है,' कहावत है। धोखे से जमा किया गया सब कुछ हवा में उड़ जाता है। बीमारी, दिवालियापन और अन्य विपत्तियाँ, जो ईश्वर की परीक्षा के रूप में आती हैं, बहुत कम और केवल कुछ लोगों पर ही होती हैं। ऐसे लोग ईश्वर से शुद्ध पुरस्कार प्राप्त करेंगे, और वे आमतौर पर बाद में और अधिक धनी हो जाते हैं, ठीक यॉब की तरह।[49] इसके अलावा, कई मृतकों के शरीर इसीलिए जमीन में बिना सड़े पड़े रहते हैं—अपने जीवनकाल में इन लोगों ने कुछ अन्याय किया था।[50]

अधर्मी पीड़ित होते हैं

एक अधर्मी व्यक्ति—वास्तव में, कोई भी व्यक्ति जिसने किसी के साथ किसी भी तरह से अन्याय किया हो और उसने क्षमा न मांगी हो—अपने ही विवेक की पीड़ा से, और इसके अलावा,

---

[48] भजन संहिता 36:16।

[49] देखें यॉब की पुस्तक।

[50] माउंट अथोस और सामान्य रूप से ग्रीस में, दिवंगत व्यक्ति के अवशेषों को मृत्यु के 3–4 साल बाद कब्र से निकाल लिया जाता है, धोया जाता है और विशेष दफन कक्षों में रखा जाता है। यदि मृतक का शरीर विघटित नहीं हुआ है, तो उसे कब्र में फिर से दफनाया जाता है और दिवंगत की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थनाओं को और तीव्र कर दिया जाता है। – अनुवादक की टिप्पणी।

जिस व्यक्ति के साथ उसने अन्याय किया है, उसकी नाराज़गी से पीड़ित होता है। क्योंकि यदि जिस व्यक्ति के साथ अन्याय हुआ है, वह अपने अपराधी को माफ नहीं करता और उसके प्रति द्वेष बनाए रखता है, तो बाद वाला तीव्र कष्ट और पीड़ा का अनुभव करने लगेगा। वह सो नहीं पाएगा; उसे ऐसा महसूस होगा मानो उसे तूफानी लहरों द्वारा उछाला जा रहा हो। यह समझ से परे है कि वह जिस व्यक्ति का अहित करता है, उसके क्रोध को वह कितनी तीव्रता से महसूस करता है! जब एक व्यक्ति दूसरे से प्रेम करता है और उसके बारे में सोचता है, तो दूसरा उस प्रेम को महसूस करता है। अपराधी के मामले में भी कुछ इसी तरह होता है। ओह, तब जिस व्यक्ति के साथ उसने अन्याय किया है, उसकी नाराज़गी उसकी आत्मा को चीर देती है! भले ही वह बहुत दूर हो— चाहे वह ऑस्ट्रेलिया में हो या जोहान्सबर्ग में —अगर किसी की आत्मा उसके कारण नाराज़ है, तो उसे कोई शांति नहीं मिलती।

— लेकिन अगर वह निर्दयी हो तो?

— क्या आपको लगता है कि निर्दयी लोग पीड़ित नहीं होते? वे पीड़ित होते हैं, लेकिन वे अपने मन को इससे हटाने के लिए मनोरंजन में खुद को व्यस्त रखते हैं। यह भी हो सकता है कि किसी ने अन्यायपूर्वक अन्याय किया हो और पीड़ित व्यक्ति ने अपराधी को माफ कर दिया हो, फिर भी उनके दिल में थोड़ी नाराज़गी बची रहती है। तब वे खुद कुछ हद तक पीड़ित होते हैं, लेकिन उनकी नाराज़गी के लिए ज़िम्मेदार व्यक्ति बहुत अधिक पीड़ित होता है। हालाँकि, यदि दोषी व्यक्ति क्षमा माँगता है और अन्याय सहने वाला उसे माफ नहीं करता है, तो अन्याय सहने वाला स्वयं पीड़ित होने लगता है। अंतरात्मा की पीड़ा से उत्पन्न आत्मा की भीतरी जलन से अधिक तीव्र कोई आग नहीं है। ऐसे व्यक्ति की अंतरात्मा इस जीवन में ही पीड़ित रहती है; एक आंतरिक कीड़ा इसे लगातार चाटता रहता है। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि अगले, शाश्वत जीवन में, 'वह कीड़ा जो कभी नहीं सोता' उसके विवेक को और भी भयानक रूप से चाटेगा, यदि इस जीवन में वह व्यक्ति पश्चाताप नहीं करता है और अपने पड़ोसियों से जो अन्यायपूर्वक लिया है, उसे वापस नहीं करता है — कम से कम अपनी व्यक्तिगत इच्छा से, यदि किसी अन्य तरीके से ऐसा करना अब संभव नहीं है।

मुझे एक वकील याद आता है जिसने लोगों के साथ कई अन्याय किए। अपने जीवन के अंत में उसे कितनी पीड़ा झेलनी पड़ी! जिस जिले में उसका वकालत का काम था, वहाँ बहुत से पशुपालक थे, और इसलिए पशुओं द्वारा फसलों और घास के मैदानों को नुकसान पहुँचाने के मामले असामान्य नहीं थे। नुकसान के लिए जिम्मेदार चरवाहे मदद के लिए इस वकील के पास जाते थे, और वह, अपनी चालाकी से, मामले को इस तरह से तोड़-मरोड़ देता था कि वह कृषि विशेषज्ञ और मजिस्ट्रेट दोनों को उनकी बेगुनाही पर यकीन दिला देता था, जबकि बेचारी किसानों को न केवल न्याय नहीं मिल पाता था, बल्कि वे खुद ही मुसीबत में पड़ जाते थे। हर कोई जानता था कि यह वकील एक पूरा धूर्त था, और कोई भी ईमानदार व्यक्ति उसके पास नहीं जाता था। अब उन हिस्सों में रहने वाले एक आध्यात्मिक रूप से संवेदनशील गड़रिये को एक धर्म-परामर्शदाता द्वारा दी गई सलाह सुनें।

इस गड़रिये के पास भेड़ों का एक छोटा सा झुंड और एक कुत्ता था। एक दिन, कुत्ते ने पिल्ले दिए, और गड़रिये ने सभी पिल्लों को बाँट दिया। लगभग उसी समय, एक छोटी सी भेड़ खो गई, और पीछे एक दूध पीता हुआ मेमना रह गया। अपनी माँ को न पाकर, मेमना कुत्ते के पीछे दौड़ा और उसका दूध पीने का आदी हो गया। कुत्ते को राहत महसूस हुई। दोनों जानवर इस बात के इतने आदी हो गए थे कि वे एक-दूसरे को खोजते थे। गरीब चरवाहा उन्हें अलग करने की कितनी भी कोशिश कर ले, वे फिर भी एक-दूसरे तक पहुँच ही जाते थे। चरवाहा, जो एक आध्यात्मिक रूप से

संवेदनशील व्यक्ति था, यह नहीं जानता था कि इस मेमने का मांस खाना उचित है या नहीं , और उसने इस बारे में अपने पादरी से पूछने का फैसला किया। कन्फेशनर ने यह जानते हुए कि गड़रिया गरीब था, एक पल के लिए सोचा और कहा: 'नहीं , मेरे बेटे , तुम्हें इस मेमने का मांस नहीं खाना चाहिए, क्योंकि इसे कुत्ते के दूध पर पाला गया है। इसके बजाय यह करो: इस मेमने को हमारे वकील के लिए उपहार के रूप में ले जाओ, क्योंकि दूसरे गड़रिये भी उसके लिए मेमने और पनीर लाते हैं। उसे यह मांस खाने दो; आखिर, उसे ही इसका आशीर्वाद मिला है : हर कोई जानता है कि वह कितना अन्यायी है। "

अब बूढ़ा और बिस्तर पर पड़ा हुआ , वह अधर्मी वकील दुस्वप्नों से पीड़ित था और सो नहीं पाता था। यह कई वर्षों तक चलता रहा। और भी बुरी बात यह थी कि वह पक्षाघात से ग्रस्त हो गया और बोल नहीं सकता था। उसके पादरी ने उसे कम से कम कागज पर अपने पाप लिखने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन वह दुर्भाग्यशाली व्यक्ति खुद पर पूरी तरह से काबू खो चुका था। पुरोहित को उस पर 'बीमार और अनिद्रा से पीड़ित सात युवकों की प्रार्थना ' ([51]) का पाठ करने के लिए मजबूर होना पड़ा , ताकि वह थोड़ी देर के लिए ही सही सो सके , साथ ही उसकी स्थिति को किसी तरह से कम करने के लिए मंत्रोच्चारण वाली प्रार्थनाएँ भी की गईं। इस प्रकार उस वकील की मृत्यु हो गई, और अब बस इतना ही शेष है कि ईश्वर से प्रार्थना की जाए कि वह उसकी आत्मा को सच्ची शांति प्रदान करें।

— गेरोना , कई लोग इस बात पर आश्वस्त हैं कि उन पर जादू -टोना किया गया है। क्या कोई शाप किसी व्यक्ति को नुकसान पहुँचा सकता है ?

— यदि कोई व्यक्ति पश्चाताप करता है और पाप-स्वीकृति के लिए जाता है , तो नहीं , यह हानि नहीं पहुँचा सकता। किसी व्यक्ति को शाप से हानि पहुँचाने के लिए, उन्हें स्वयं किसी न किसी तरह से [शैतान] को अपने ऊपर शक्ति देनी होती है। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति किसी के प्रति अन्याय करता है , धोखे से किसी युवती को बहकाता है , या कोई अन्य इसी तरह का कार्य करता है। इस मामले में , उन्हें अपने किए पर पश्चाताप करना चाहिए, जिसे व्यक्ति से उन्होंने अन्याय किया है उससे क्षमा मांगनी चाहिए, पाप-स्वीकार के लिए जाना चाहिए, और अपने कर्मों का प्रायश्चित करना चाहिए। अन्यथा — भले ही सभी पादरी उन्हें फटकारने के लिए इकट्ठा हो जाएँ — जादू -टोने का श्राप दूर नहीं होगा। वास्तव में , भले ही उस पर कोई शाप न डाला गया हो, जिसे आत्मा को उसने आहत किया है , उसकी केवल नाराज़गी ही उसे पीड़ा पहुँचाने के लिए काफी होगी।

अन्याय दो प्रकार का होता है : भौतिक और नैतिक। भौतिक अन्याय तब होता है जब कोई व्यक्ति किसी के साथ भौतिक, मूर्त रूप में अन्याय करता है। नैतिक अन्याय तब होता है जब कोई व्यक्ति , उदाहरण के लिए, किसी युवती का सिर घुमा देता है और उसे भटका देता है। और यदि उस धोखा खाई हुई लड़की अनाथ भी हो, तो जिसने उसे धोखा दिया है , वह अपनी आत्मा पर पाँच गुना बोझ डालता है। क्या आप जानते हैं कि युद्ध में एक गोली ऐसे अनैतिक लोगों को कितनी जल्दी ढूंढ लेती है ? युद्ध में , दैवीय न्याय और लोगों के प्रति ईश्वर की देखभाल विशेष रूप से स्पष्ट होती है। युद्ध अपमान को बर्दाश्त नहीं करता — एक गोली एक अनैतिक व्यक्ति को जल्दी ही ढूंढ लेती है। एक बार, हमारी दो कंपनियों को मोर्चे पर एक बटालियन की जगह लेने थी जो आराम के लिए पीछे हट रही थी। हाथ बदलने के दौरान, कम्युनिस्टों ने हम पर हमला कर दिया,

---

[51] देखें द ग्रेट सर्विस बुक। अस्वस्थ और अनिद्रा से पीड़ित के लिए प्रार्थना। मॉस्को : सिनोडल प्रिंटिंग हाउस, 1884। फोल. 165 ओब.

और लड़ाई भड़क उठी। वदिा हो रही बटालयिन का एक सैनकि कल एक घनिौना अपमानजनक कृत्य कर चुका था — उसने एक बेचारी गर्भवती महलिा के साथ बलात्कार कयिा था। और क्या हुआ ? उस लड़ाई में , वह अकेला मारा गया! क्या यह भयानक नहीं है ? बाद में सभी ने कहा: 'उस दरदिे को यही सज़ा मलिनी चाहएि थी — उसे उसकी करनी का फल मलिा।'

और यह उन लोगों के साथ भी होता है जो कपटी होते हैं , जो भागने या बच नकिलने की कोशशि करते हैं — अंत में , यहीं लोग मारे जाते हैं। जनिकी आस्था मजबूत होती है , वे स्वाभावकि रूप से ईमानदारी से , एक ईसाई तरीके से जीते हैं। और यहाँ एक बात देखी गई है : ऐसे लोग अपने शरीर के सम्मान की रक्षा करते हैं , और यह उन्हें दुश्मन की गोलयिों और छर्रों से इतनी अच्छी तरह से बचाता है , मानो उन्होंने प्रभु के पवत्रि क्रूस का एक टुकड़ा पहन रखा हो।

अन्याय कसिी के वंशजों को भी दुख पहुँचाता है

— गेरोना , जब मैं एक नन बनी, तो मेरे परविार ने मेरे साथ अन्याय कयिा। क्या मैं अब उनसे वह ले सकती हूँ जो कानून के अनुसार मेरा हक है ?

— नहीं , यह गलत होगा।

— हाँ , लेकनि मुझे डर है कउिनके द्वारा कएि गए अन्याय के कारण उन पर कोई वपित्तिन आ जाए।

— बस देखो कतिुममें कतिना शुद्ध स्वार्थ -प्रेम है ! अगर मैं तुम्हारी जगह होती, तो मैं उनसे यह कहती: 'मुझे अपने लएि कुछ भी नहीं चाहएि। हालांकि , मैं चाहूँगी कआिप अपनी ही हाथों से , वरिासत के उस हसि्से को जो मेरा है , गरीबों में बाँट दें। और सबसे बढ़कर , हमारे गरीब रशि्तेदारों की मदद करें। मैं यह इसलएि कह रहा हूँ ताकि ईश्वर का प्रकोप आपके बच्चों पर न पड़े। ' क्योंकि कभी-कभी ऐसा होता है कएिक पता अपने आत्मा की शांति के लएि अजनबयिों को दान देता है — उदाहरण के लएि, कसिी धर्मार्थ संस्थान को पैसा दान करना — फरि भी अपने ही बच्चों के लएि कुछ नहीं छोड़ता।

हो सकता है कि कसिी वशिेष परविार में दादा या दादी ने कुछ अन्यायपूर्ण कृत्य कएि हों , फरि भी उन पर व्यक्तगित रूप से इसका कोई प्रभाव न पड़ा हो। हालाँकि , सजा उनके बच्चों या पोते -पोतयिों पर आती है , जो बीमार पड़ जाते हैं और अपने पूर्वजों के कर्ज चुकाने के लएि, जो कुछ अन्याय से अर्जति कयिा गया था, उसे डॉक्टरों पर खर्च करने के लएि मजबूर हो जाते हैं। मुझे एक परविार याद है जसि पर कई वपित्तयिाँ आईं। पहले , परविार के मुखयिा को एक गंभीर बीमारी ने घेर लयिा: वह कई वर्षों तक बस्तिर पर पड़ा रहा, और फरि उसकी मृत्यु हो गई। फरि उसकी पत्नी और बच्चे — एक के बाद एक — मर गए। हाल ही में , उनमें से आखरिी—पाँचवाँ बच्चा —भी मर गया। यह परविार कभी बहुत अमीर था, लेकनि वे गरीबी में धकेल दएि गए क्योंकि डॉक्टरों को भुगतान करने और अन्य वभिन्नि खर्चों को पूरा करने के लएि, उन्होंने अपनी सारी संपत्ति तुच्छ दामों पर बेच दी थी। मैं सोचने लगा, 'तो फरि, उन पर इतनी सारी बीमारयिाँ और दुर्भाग्य क्यों आ रहे हैं ?' मैं इस परविार के कुछ सदस्यों को जानता था। उनसे यह स्पष्ट हो गया कउिनकी बदकस्मिती का उन आशीर्वादति परीक्षाओं से कोई लेना -देना नहीं था जो ईश्वर अपने चुने हुए लोगों को भेजते हैं। मैंने सोचा, "सबसे अधकि संभावना है कउिनके मामले में ईश्वर के आध्यात्मकि नयिम लागू हुए हैं। " अपने संदेहों को दूर करने के लएि, मैंने उनके परविार के बारे में कुछ भरोसेमंद बुजुर्गों —उनके साथी ग्रामीणों —से पूछने की कोशशि की, और उन्होंने मुझे यह बताया। इस परविार के मुखयिा को अपने पता से कसिी तरह की वरिासत मलिी थी और बाद में उसने वभिन्नि अन्यायपूर्ण कार्य करके उसे बढ़ा लयिा था।

उदाहरण के लिए, एक वधिवा ने उससे अपनी बेटी की शादी के लिए पैसे उधार मांगे थे। वह फसल की कटाई और अनाज की थ्रेसगि के बाद कर्ज चुका देती। लेकनि उसने पैसे इस शर्त पर दिए कि वह घर बनाने के उद्देश्य से अपनी जमीन का मालकिाना हक उसे सौंप दे। बेहद मुश्कलि हालात में , उस बेचारी महलि ने उसे वह सब कुछ दे दयिा जो उसने माँगा था। एक और आदमी ने बैंक का कर्ज चुकाने के लिए कर्ज माँगा। वह कपास की फसल के बाद पैसे चुका देता , लेकनि अन्यायपूर्ण मुखयिा ने मना कर दयिा और बदले में पूरा खेत माँगा। बैंक द्वारा उत्पीड़न के डर से , उस बेचारी ने अपना खेत सौंप दयिा। तीसरे व्यक्ति ने डॉक्टरों का बलि चुकाने के लिए थोड़ा पैसा उधार माँगा , और उस दुष्ट साहूकार ने उससे एक गाय की माँग की। गरीब आदमी ने उसे वही दे दयिा जो उसने माँगा था। इस तरह, उस आदमी ने काफी संपत्ति इकट्ठी कर ली। हालाँकि , जनि लोगों के साथ उसने अन्याय कयिा था, उनकी सामूहकि शकिायतों का प्रभाव न केवल उस पर और उसकी पत्नी पर पड़ा , बल्कि उनके बच्चों पर भी पड़ा। इस प्रकार , आध्यात्मकि नयिम लागू हुए , और अन्याय करने वाले अमीर आदमी के परविार के सदस्य ही खुद को उन लोगों की जगह पाए जन्हिोंने उनके साथ अन्याय कयिा था। इस प्रकार , डॉक्टरों और बीमारयिों , दुर्घटनाओं और अन्य दुर्भाग्यों से संबंधति अन्य खर्चों का भुगतान करने के लिए, उन्होंने अपनी सारी संपत्ति तुच्छ मूल्य पर बेच दी। बहुत अमीर होने से , वे भखिारी बन गए, और वे सभी एक-एक करके मर गए। बेशक , ईश्वर उनका न्याय अपने महान प्रेम और न्याय के अनुसार करेंगे। जहाँ तक उन लोगों का सवाल है , जन्हिें अपनी ज़रूरत के समय में डॉक्टरों या अन्य लोगों को भुगतान करने के लिए अपनी आखरिी चीज़ें बेचने के लिए मजबूर होना पड़ा , और जसिके परणिामस्वरूप वे गरीबी में धकेल दिए गए, उन्हें अपने साथ हुई अन्याय के अनुसार अपना प्रतफिल प्राप्त होगा। हालाँकि , अन्याय करने वाले लोग, ऐसी वपित्तयिों को सहकर, उसी के द्वारा ईश्वर के प्रति अपने ऋण का भुगतान कर रहे होते हैं।

'जो हमारे साथ अन्याय करता है , वह हमारे लिए एहसान करता है '

— गेरोना , हमें उस व्यक्ति के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए जो हमारे साथ अन्याय करता है ?

— हमें उनके प्रति कैसा दृष्टकिोण रखना चाहिए? एक ऐसे महान उपकारी के रूप में , जो हमारी ओर से ईश्वर के बचत खाते में जमा करता है। ऐसा व्यक्ति हमें अनंत काल के लिए धनी बनाता है। क्या यह पर्याप्त नहीं है ? क्या हम उन लोगों से प्रेम नहीं करते जो हम पर एहसान करते हैं , क्या हम उन्हें अपना आभार व्यक्त नहीं करते ? ठीक उसी तरह, हमें उन लोगों से प्रेम करना चाहिए और उनके प्रति आभारी होना चाहिए जो हमारे साथ अन्याय करते हैं , क्योंकि वे शाश्वत काल के लिए हम पर एहसान कर रहे हैं। जैसे अधर्मी हमेशा के लिए औचत्यि से वंचति रहते हैं , वैसे ही जो लोग खुशी -खुशी अन्याय को स्वीकार करते हैं , वे शाश्वत औचत्यि प्राप्त करते हैं।

एक धर्मनष्ठि व्यक्ति , अपने परविार का मुखयिा , ने कार्यस्थल पर कई अन्याय सहन कयि। लेकनि वह बहुत दयालु व्यक्ति था, और उसने इन सभी अन्यायों को बनिा कसिी शकिायत के सहन कयिा। एक दनि वह माउंट अथोस आया, मेरी कोठरी में मुझसे मलिा और अपनी परीक्षाओं के बारे में बताने के बाद पूछा : 'आप मुझे क्या सलाह देंगे ?' 'जैसा आप अब तक कर रहे हैं , वैसे ही जारी रखें ,' मैंने उत्तर दयिा। — दैवीय न्याय और दैवीय प्रतफिल पर भरोसा रखो, और धैर्य रखो। [ईश्वर के साथ] कुछ भी खोया नहीं जाता। ऐसा करके , तुम अपनी संपत्ति को ईश्वर के बचत खाते में जमा कर रहे हो। इसमें कोई संदेह नहीं कि आगामी जीवन ( ) में तुम्हें उन

परीक्षाओं का प्रतिफल मिलेगा जो तुम पर आई हैं। लेकिन, इसके अलावा, यह भी जानो कि दयालु ईश्वर इस जीवन में भी उस व्यक्ति को प्रतिफल प्रदान करता है जिसके साथ अन्याय हुआ है; यदि हमेशा स्वयं उस व्यक्ति को नहीं, तो निश्चित रूप से उनके बच्चों को। ईश्वर अपनी सृष्टि का पालन-पोषण करता है; वह जानता है [कि उन्हें कैसे पुरस्कृत करना है]।"

यदि कोई व्यक्ति धैर्यवान है, तो सब कुछ अपने आप ठीक हो जाता है। ईश्वर सब कुछ व्यवस्थित करता है। लेकिन धैर्य की आवश्यकता होती है —एक ऐसा धैर्य जो तर्कहीन हो। चूँकि ईश्वर सब कुछ देखता है और सभी चीजों की देखभाल करता है, इसलिए एक व्यक्ति को खुद को पूरी तरह से उस पर सौंप देना चाहिए। यूसुफ [52] को देखो —आखिरकार, जब उसके भाइयों ने उसे गुलामी में बेच दिया तो वह चुप रहा। वह कह सकता था: "मैं उनका भाई हूँ," लेकिन उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा — फिर भी बाद में ईश्वर ने अपना वचन कहा और उन्हें एक शासक बना दिया। हालाँकि, यदि किसी व्यक्ति में धैर्य नहीं है, तो उसका जीवन यातना बन जाता है — वे चाहते हैं कि सब कुछ उनके मन के मुताबिक हो, ताकि वे सहज महसूस कर सकें। लेकिन, स्वाभाविक रूप से, उन्हें कोई शांति नहीं मिलती, और चीजें उनकी इच्छानुसार नहीं होतीं।

यदि किसी व्यक्ति ने इस जीवन में लोगों या राक्षसों के हाथों अन्याय सहा है, तो ईश्वर इससे परेशान नहीं होते, क्योंकि ऐसे व्यक्ति की आत्मा को इससे लाभ होता है। हालाँकि, हम अक्सर कहते हैं कि कोई हमारे साथ अन्याय कर रहा है, जबकि वास्तव में हम स्वयं दूसरों के प्रति अन्याय कर रहे होते हैं। ऐसे मामलों में, हमें सावधान रहने और यह महसूस करने की आवश्यकता है कि दोष स्वयं हमारा ही है।

"जो सीज़र का है, वह सीज़र को दो"[53]

— गेरोना, जब हम मठ के लिए कुछ खरीदते हैं, तो कुछ व्यापारी हमें रसीद देने से इनकार कर देते हैं। [54] ऐसे मामलों में हमें क्या करना चाहिए?

— उन्हें हमेशा आपको रसीद देनी चाहिए, लेकिन इसके अलावा, आपको स्वयं अपनी मांगों को सीमित करना चाहिए। अपनी जरूरतों को केवल आवश्यक चीज़ों तक सीमित रखें; अनावश्यक निर्माण कार्य या मरम्मत का काम न करें। अगर मैं आपकी जगह होता, तो मैं भी बिल्कुल यही करता। और जिसकी भी ज़रूरत होगी, ईश्वर वह प्रदान कर देगा। बिना बिल बनाए कहने से, हम— भिक्षुओं के रूप में —दूसरों को पाप करने के लिए उकसा रहे हैं, जो कह सकते हैं: 'अच्छा, अगर मठ भी ऐसा व्यवहार करते हैं ...' क्या आप समझते हैं कि हम—जो ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करने का प्रयास कर रहे हैं —इस तरह का व्यवहार करके दूसरों को पाप करने के लिए उकसा रहे हैं? पवित्र शास्त्र कहता है, 'जो सीज़र का है, वह सीज़र को दो।' जब मैं पत्र डाक से नहीं बल्कि किसी संदेशवाहक के माध्यम से भेजता हूँ, तब भी मैं लिफाफे पर डाक टिकट लगाता हूँ। दुनियादार लोग ऐसे मामलों में अपने लिए बहाने बनाते हैं, लेकिन अगर मठ भी ऐसा ही व्यवहार करते हैं, तो यह उनकी असंगति और इस बात को दर्शाता है कि उनके लिए सुसमाचार गौण हो गया है। भौतिक, मूर्त संपत्ति न देकर (जैसा कि सुसमाचार आज्ञा देता है: 'यदि कोई तुम्हारी कमीज़ लेना चाहे, तो उसे अपना ओढ़ना भी दे दो'[55]), हम एक बुरा उदाहरण स्थापित कर रहे हैं, और बाद में सांसारिक लोग अपनी कमियों को सही ठहराते हैं, और अपने विवेक को शांत करने के लिए बहाने ढूंढते हैं। हमें सावधान रहना चाहिए, क्योंकि न्याय के दिन हमारे पास कोई बचाव नहीं होगा। हमारा काम केवल भौतिक लाभ के बजाय, सबसे बढ़कर

---

[52] उत्पत्ति 37:20 ff. देखें।

[53] रोमियों 13:7।

[54] रसीद न देकर, व्यापारी कर अधिकारियों से लेनदेन छिपाते हैं, और खरीदार आवश्यक कर का भुगतान नहीं करता है, जो ग्रीस में बहुत अधिक है (माल के मूल्य का 25 प्रतिशत तक)। – अनुवादक की टिप्पणी।

[55] तुलना करें मत्ती 5:40।

आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करना है। और यदि, किसी कारण से, आपको रसीद नहीं दी जाती है, तो आपको यह मान लेना चाहिए कि आपको आध्यात्मिक हानि हुई है।

— और कभी-कभी, गेरोन्डा, ऐसा होता है: कोई व्यक्ति मठ को थोड़ी सी राशि दान करता है और रसीद में यह लिखवाने के लिए कहता है कि उसने अधिक राशि दान की है। ऐसे मामलों में क्या करना चाहिए?

— उससे कहो: 'हम बड़ी रकम के लिए रसीद नहीं देते। अगर यह तुम्हें ठीक नहीं लगता, तो चलो तुम्हारे पैसे वापस कर देते हैं; शायद तुम्हारी इच्छा कहीं और पूरी हो जाए।' सावधान रहना कि इस तरह की बीमारी से संक्रमित न हो जाओ।

— एक कारीगर, जेरोंडा, ने हमसे मठ से निकाल दिए जाने का अनुरोध किया ताकि वह बेरोजगारी भत्ता ले सके, और फिर हमारे लिए काम पर वापस आ सके।

— नहीं, मेरे भाई, यह सही नहीं है! अगर किसी व्यक्ति के अंदर जरा भी विवेक है, तो वह ऐसी बात में शामिल नहीं होगा। एक मठ में ऐसे मामलों में शामिल होना उचित नहीं है। भले ही मठ के पास अतिरिक्त पैसा न हो, उसे दोगुना भुगतान करना बेहतर है —बशर्ते कि वह ऐसे धोखे का सहारा न ले। आखिरकार, यह एक गंभीर पाप है! शुभ कर्म से शुभ फल मिलता है, जबकि पाप विनाश को जन्म देता है। इस मामले में बहुत सावधान रहें। और मठ में काम करने वालों से मोल-भाव न करें, क्योंकि इससे बाद में मठों में आग और विनाश हो सकता है।

एक सरकारी कर्मचारी ईमानदारी से अपने कर्तव्य निभाने की शपथ लेता है।[56] हम भिक्षु ऐसी शपथ नहीं लेते, बल्कि एक दोगुनी महान शपथ लेते हैं: हम एक आध्यात्मिक संकल्प लेते हैं, और यदि हम इसे तोड़ते हैं, तो हमारा पाप दोगुना हो जाता है। संतुलन बनाए रखने का प्रयास करें, मठ जीवन के भीतर एक अलग [अलौकिक] व्यवस्था को संरक्षित करें। मैं उस फोड़े को सड़ते हुए देख सकता हूँ। यह फटेगा और साफ़ हो जाएगा। जो आध्यात्मिक रूप से गलत स्थिति में हैं, उन्हें ईश्वर अपनी कृपा नहीं देते — अन्यथा वे शैतान की मदद कर रहे होते। ईमानदारी और सच्चाई के लिए प्रयासरत रहें। जो अब हो रहा है वह उस नशेड़ी की तरह है जो मुश्किल से अपने पैरों पर खड़ा हो पाता है। क्या ऐसी स्थिति लंबे समय तक रह सकती है? ईश्वर का प्रकोप फूटेगा। हम एक परीक्षा का सामना करने वाले हैं। पहले दौर में, अशुद्धियों को सोने से अलग कर दिया जाएगा; दूसरे में, यह स्पष्ट हो जाएगा कि हम में से प्रत्येक में कितने कैरेट का सोना है।

दुनिया झूठों के जाल में बदल गई है। लोग झूठे बनते जा रहे हैं; उन्होंने अपने लिए एक और अंतरात्मा बना ली है। लेकिन मैं झूठा नहीं बन सकता; मैं सिर्फ इसलिए अपने सच्चे स्वरूप से विश्वासघात नहीं कर सकता क्योंकि समाज इसकी मांग करता है। मैं तो इससे बेहतर है कि मैं कष्ट सहूँ। इस दुनियावी रीत में न फँसने का ध्यान रखना पड़ता है। लेकिन वर्तमान आर्थिक व्यवस्था लोगों को ईमानदार रहने के लिए प्रोत्साहित नहीं करती। उन्हें कर अधिकारियों के सामने अपनी आय कम बताने और इसी तरह की अन्य चालाकियाँ अपनाने के लिए मजबूर होना पड़ता है। मैंने तो अपने जानने वाले कुछ कर निरीक्षकों को भी डाँटा —जो धर्मनिष्ठ लोग हैं। मैंने उनसे कहा, 'आप आखिर कर क्या रहे हैं? अपनी अंतरात्मा का कम से कम थोड़ा सा हिस्सा तो बचाकर रखें!' क्या आप जानते हैं कि कितने लोग आपसे शिकायत करते हैं? कोई व्यक्ति कर कार्यालय आता है और कहता है, 'मेरी आय दस लाख है,' और कर निरीक्षक लिख देता है कि उसकी आय तीन लाख है। कुछ लोग अपनी आय का केवल एक तिहाई घोषित करते हैं, और इसलिए कर निरीक्षक बाकी सभी को धोखेबाज़ मान लेते हैं और सभी के साथ एक जैसा व्यवहार करते हैं। लेकिन अगर एक विवेकशील व्यक्ति आपके पास आता है, और आप उस पर तीन गुना कर लगाते हैं, तो आप उसे चोर बनने के लिए मजबूर कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में, समग्र स्थिति पर थोड़ा भी सकारात्मक प्रभाव डालने के बजाय, आप बिल्कुल उल्टा कर रहे हैं। " इसके जवाब में, उन्होंने मुझसे कहा कि वे यह नहीं बता सकते कि कब उनसे सच कहा जा रहा है और कब उनसे झूठ बोला जा रहा है। मैंने कहा, "आप अंतर बता सकेंगे, अगर आप एक आध्यात्मिक जीवन जीते हैं। तब आप सत्य को असत्य से अलग कर सकेंगे। ईश्वर आपको यह प्रकट कर देगा, और यह आपके लिए स्पष्ट हो जाएगा।"

दुनिया इतनी कपटी कैसे हो गई है

लोगों की दुर्भावना सभी सीमाओं से परे चली गई है। लोग एक-दूसरे को धोखा देने की कोशिश करते हैं और धोखे को एक उपलब्धि मानते हैं। सचमुच, यह दुनिया कितनी झूठ की जगह बन गई है! हर काम बेईमानी और लापरवाही से किया जाता है, फिर भी वे बीते दिनों की तुलना में अधिक पैसा लेते हैं। और आम तौर पर, आप जहाँ भी देखें, हर चीज़ झूठ और घटिया काम की जाल बन गई

[56] ग्रीस में सरकारी कर्मचारी ईमानदारी से अपने कर्तव्य निभाने की शपथ लेते हैं। – अनुवादक की टिप्पणी।

है। एक बार, कसिी ने मुझे कुछ टमाटर के पौधे लाकर दिए। प्रत्येक पौधा एक छोटे से सेलोफ़ेन के बैग में लगाया गया था, जसिे काली मट्टिी और मोटी रेत मलिी मट्टिी के गुच्छों से भरा गया था, ताकि बैग से नमी बाहर न नकिल सके। दूसरे शब्दों में , इन पौधों को पानी देना एक बहुत बड़ा झंझट है ! उस मश्रिण में खाद नहीं थी — बस ऊपर से थोड़ी सी छड़िकी गई थी — लेकनि फरि भी वह काली मरि्च जतिनी ही काम आती है ! खैर , जब मैंने पौधों को थैलों से बाहर नकिाला, तो पता चला कि उनकी सारी जड़ें सड़ चुकी थीं। मुझे कुछ समय के लिए पौधों को पूरी तरह से मट्टिी से ढकना पड़ा ताकि वे नई जड़ें उगा सकें।

[57]ओह, वे लोगों का कतिना मज़ाक उड़ाते हैं ! एक बार कसिी ने मुझे मठिाइयों का एक बड़ा डबि्बा लाकर दिया। मैंने उसे खोला नहीं और तीर्थयात्रियों के एक बड़े समूह के आने का इंतज़ार किया। मैंने सोचा, 'अन्यथा , मठिाइयाँ बनिा खाए रह जाएँगी और खुले डबि्बे में चींटियाँ उन्हें खराब कर देंगी। ' एक दनि, जब एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई थी, तो मैंने सोचा कि डबि्बे में सभी के लिए पर्याप्त मठिाई होगी और कुछ बच भी जाएगी। जब मैंने डबि्बा खोला, तो मैंने देखा कि वह लगभग पूरी तरह से पॉलीस्टाइन से भरा हुआ था, और मठिाई के लिए बीच में केवल एक छोटी सी जगह थी — दूसरे शब्दों में , डबि्बा लगभग पूरी तरह से खाली नकिला! एक और अवसर पर, मुझे रबिन से बँधा हुआ तुर्की मीठे का एक सुंदर उपहार बक्सा दिया गया। मैंने सोचा, "मैं इसे अफोनिया के बच्चों के लिए बचाकर रखूँगा। " लेकनि जब मैंने उसे खोला, तो पता चला कि तुर्की मीठा पुराना और पहले से ही सख्त हो चुका था। मैं लोगों को इतना सख्त तुर्की मीठा नहीं देता — मैं नरम वाले चुनता हूँ।

— गेरोन्डा , क्या ऐसा करने वालों को यह एहसास नहीं होता कि यह सच नहीं है ?

— वे इसे एक उपलब्धि मानते हैं , क्योंकि हमारे समय में पाप फैशनेबल हो गया है और झूठ को चतुराई माना जाता है। दुर्भाग्य से , सांसारकि आत्मा मन को चालाकी में तराशती है , और जो कोई भी अपने पड़ोसी के साथ अन्याय करता है , वह इसे एक उपलब्धि मानता है। मामले को और भी बदतर बनाने के लिए, लोग उसके बारे में कहते हैं : 'उस धूर्त को देखो , वह तो खुद शैतान जैसा है !' — जबकि अंदर ही अंदर यह व्यक्ति अपने अंतरात्मा के आरोपों से पीड़ित होता है , और उसे नारकीय यातना का एक छोटा सा अहसास होता है।

यदि कोई व्यक्ति न्यायप्रिय है , तो ईश्वर उनकी ओर है

आज इस दुनिया में सभी के लिए पर्याप्त जगह नहीं बची है। यदि कोई व्यक्ति ईमानदारी और आध्यात्मकिता से जीना चाहता है , तो दुनिया में उसके लिए कोई जगह नहीं है।

— लेकनि , गेरोन्डा , उनके लिए जगह क्यों नहीं है ?

— अगर एक संवेदनशील , संस्कारी व्यक्ति खुद को क्रूरता और निर्दयता के बीच पाता है , और उसका जीवन नराशाजनक बना दिया जाता है , तो वह इसे कैसे सहन कर सकता है ? या क्या उसे भी, बाकी सभी की तरह, बदतमीज़ बनना होगा, बाकी हर बात में दूसरों के साथ सहमत होना होगा, या फरि उसे वहाँ से चले जाना होगा? लेकनि वह जा भी नहीं सकता, क्योंकि उसे कसिी न कसिी तरह अपना गुज़ारा तो करना ही है। उदाहरण के लिए, एक भूसे का व्यापारी अपने मजदूर से कहता है : 'मुझे तुम पर भरोसा है क्योंकि तुम चोरी नहीं करते। लेकनि तुम्हें अच्छी भूसी में कुछ सड़ी हुई भूसी भी मलिा देनी होगी। जब क्लोवर (एक प्रकार की घास) लाद रहे हो, तो तुम्हें अच्छी घास के बीच कुछ ज्यादा पकी हुई गड्डियाँ भी डालनी होंगी। " एक ईमानदार कर्मचारी को बनाए रखने के लिए, नयिोक्ता उसे कसिी तरह का चौकीदार बना देता है , लेकनि वह बाद वाला नयिोक्ता की बात मानने के लिए मजबूर हो जाता है — वरना उसे नकिाल दिया जाएगा। फरि वह बेचारा सो नहीं पाता और गोलयिाँ खाना शुरू कर देता है। क्या आप जानते हैं कि ये बेचार लोग कैसे दुख झेलते हैं ! क्या आप जानते हैं कि कई लोग अपने मालकिों से काम पर कतिनी कठनिाइयाँ ,

---

[57] अफोनीडा (माउंट अथोस चर्चलि अकादमी) – माउंट अथोस पर स्थति लड़कों के लिए एक बोर्डगि स्कूल। 1753 में स्थापति। माध्यमकि वद्यिालय के पाठ्यक्रम में शामलि वषियों के अलावा, अथोनयिाडा के छात्र धार्मकि और चर्च संबंधी वषियों (पवत्रि शास्त्र , संतों के जीवन, पूजा - वधि, प्राचीन ग्रीक , बाइज़ेन्टाइन चर्च गायन, प्रतमिा -कला, आदि) का अध्ययन करते हैं। – अनुवादक की टप्पिणी।

कतिना दुर्व्यवहार सहते हैं ? उनका जीवन पूरी तरह से नरिाशाजनक बना दयिा जाता है। और वे क्या करें ? अपनी नौकरी छोड़ दें ? उनके परविार हैं। रहें ? यह यातना है। ऐसा बंजर रास्ता कि मुड़ने के लिए कोई जगह नहीं है। ठीक वैसे ही जैसे दो चक्कयिों के बीच गेहूं का दाना — चाहे जतिना भी चलि्ला लो, कोई फायदा नहीं। आपको इसे बर्दाश्त करना होगा, इससे लड़कर बाहर नकिलना होगा।

कभी-कभी ऐसा होता है : सारा काम एक व्यक्ति पर थोप दयिा जाता है , जबकि उसका सहकर्मी सरि्फ़ अपनी तनख्वाह लेने आता है। मैं ऐसे ही एक व्यक्ति को जानता हूँ ; वह एक संगठन का प्रबंधक था। चुनावों के बाद, उसे उसके पद से हटा दयिा गया और उसकी जगह कसिी और को – उस पार्टी के एक सदस्य को – नयिुक्त कर दयिा गया जो सत्ता में आई थी। इस नए प्रबंधक ने तो माध्यमकि वद्यिालय की शकि्षा भी नहीं ली थी। उन्होंने उसे मैनेजर बना दयिा, लेकनि उसे काम की जानकारी नहीं थी, इसलिए वे उसके पूर्ववर्ती को दूसरे पद पर स्थानांतरति नहीं कर सके। तो उन्होंने क्या समाधान नकिाला? खैर , यह: उन्होंने मैनेजर के दफ्तर में एक और मेज लगा दी! पुराना मैनेजर सारा काम करता था, जबकि नया वाला बस हाथ पर हाथ धरे बैठा रहता था: सगिरेट , कॉफी, बेमतलब की बातें ... ना कोई शर्म , ना कोई ववि‍ेक ! और सबसे बड़ी बात यह कि वह कोई बहुत होशयिार भी नहीं था — वह तरह-तरह की बकवास बोलता रहता था, जबकि सारी जमि्मेदारी पुराने मैनेजर पर आ पड़ती थी। मामला उस हद तक पहुँच गया कि उस बेचारे को नौकरी छोड़नी पड़ी। "सुनो ," उसने नए वाले से कहा, "मुझे लगता है मैं जा रहा हूँ। हमारा ऑफसि थोड़ा तंग है —दो डेस्क के लिए मुश्कलि से जगह है। तुम्हारे लिए अकेले रहना ही बेहतर होगा।" और वह चला गया, क्योंकि दूसरे वाले ने उसकी ज़दिंगी जीना मुहाल कर दयिा था। और यह सरि्फ़ एक-दो दनि के लिए नहीं , बल्कि हर रोज़ तुम्हारे ऊपर कोई ऐसा आदमी खड़ा रहता है जो तुम्हें हर पल घूरता रहे —यह तो सरासर यातना है !

एक धार्मकि व्यक्ति को आमतौर पर दूसरे लोग कतार में सबसे पीछे धकेल देते हैं , या उसे पूरी तरह से बाहर ही छोड़ देते हैं। ऐसे लोगों के साथ अन्याय कयिा जाता है ; उन्हें दरबान की तरह इस्तेमाल कयिा जाता है , और दूसरे , जैसा कि कहा जाता है , उन पर पैर रखकर नकिल जाते हैं। लेकनि जतिना अधकि लोग ऐसे धर्मनष्ठि व्यक्ति पर दबाव डालते हैं , उन्हें नीचे धकेलते हैं , उतना ही ईश्वर उन्हें ऊपर और मजबूत उठाता है — ठीक वैसे ही जैसे पानी एक तैरते हुए तख्ते को ऊपर की ओर धकेलता है। हालाँकि , इसके लिए अपार धैर्य की आवश्यकता होती है। धैर्य के माध्यम से , कई चीजें अपने आप सही हो जाती हैं। जो कोई भी सदाचार से जीना चाहता है और अपने काम में ईमानदार रहना चाहता है — चाहे वह एक मजदूर हो, व्यापारी हो या कोई और — उसे इस तथ्य के लिए तैयार रहना चाहिए कि ईमानदारी से काम करना शुरू करने के बाद, वे एक ऐसे मोड़ पर आ सकते हैं जहाँ , उदाहरण के लिए, वे अपना कराया नहीं दे सकते — यदि मान लीजिए, वे एक दुकान चलाते हैं। लेकनि इस तरह, ईश्वर का आशीर्वाद उन पर आएगा। हालाँकि , [ईमानदारी और कम कीमतों के माध्यम से] अधकि से अधकि ग्राहकों और उपभोक्ताओं को आकर्षति करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। [ईमानदारी का] उद्देश्य ऐसा नहीं होना चाहिए— ऐसे में , ईश्वर कुछ भी नहीं देगा। ईश्वर उस व्यक्ति को नहीं छोड़ेंगे जो कहे : 'मैं ईश्वर की इच्छा के अनुसार जयिूँगा। मैं कसिी के प्रति अन्याय नहीं करूँगा। मैं हर वस्तु की सही कीमत बताऊँगा : उदाहरण के लिए, इस वस्तु की कीमत पचास ड्रैक्मा है , और उस वस्तु की दो सौ।' वह इस तरह काम करेगा , जबकि उसी समय एक दूसरा व्यापारी उसी वस्तु को, जसिकी कीमत पचास ड्रैक्मा है , पाँच सौ में बेचेगा — और अमीर हो जाएगा। हालाँकि , अंत में , धोखेबाज़ का भेद खुल जाएगा, और वह उस बदि्दु पर पहुँच जाएगा जहाँ उसे अपनी दुकान बंद करनी पड़ेगी ,

क्योंकि वह करिया भी नहीं दे पाएगा। दूसरी ओर, ईमानदार व्यापारी धीरे -धीरे एक ऐसे मुकाम पर पहुँच जाएगा जहाँ ग्राहकों की भीड़ उमड़ पड़ेगी , और इस भीड़ से नपिटने के लिए, उसे लगातार और अधकि से अधकि सेल्स असस्टिेंट (बक्रिी सहायक) को काम पर रखने के लिए मजबूर होना पड़ेगा ! लेकनि पहले , परीक्षाओं से गुजरना पड़ता है। एक अच्छे व्यक्ति की परीक्षा तब होती है जब वह दुष्टों के हाथों से गुजरता है — ठीक वैसे ही जैसे ऊन कंघी करने वाली मशीन से गुजरती है।

यदि कोई व्यक्ति शैतान की सुनता है और चालाकी और धोखे से जीता है , तो ईश्वर उनके कामों को आशीर्वाद नहीं देता। जो कुछ भी लोग धोखे से करते हैं , वह सफल नहीं होगा। ऐसा लग सकता है कि धोखेबाज़ लोगों के काम-काज फल-फूल रहे हैं , लेकनि अंत में वे फरि भी ढह जाएँगे। कसिी भी प्रयास में , सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उसे ईश्वर का आशीर्वाद मांगकर शुरू कयिा जाए। यदि कोई व्यक्ति धार्मकि रूप से जीवन यापन करता है , तो ईश्वर उसकी ओर है। और यदि, इसके अलावा, उनमें ईश्वर के प्रति थोड़ी भी धृष्टता हो, तो चमत्कार होते हैं। सुसमाचार के अनुसार जीने से , एक व्यक्ति मसीह के साथ रहता है और दविय सहायता का हकदार होता है। यह और कैसे हो सकता है ? आखरिकार, वे इसके हकदार हैं। यह ही सब कुछ का आधार है। यदि यह मौजूद है , तो डरने की कोई बात नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि हमारे हर कर्म मसीह, परमेश्वर की माता और संतों को प्रसन्न करने वाला हो। तब मसीह, परमेश्वर की माता और संतों का आशीर्वाद हम पर बना रहेगा , और पवत्रि आत्मा हम में वास करेगा। कसिी व्यक्ति की ईमानदारी ही सबसे अच्छा 'ईमानदारी का वृक्ष ' है। यदि कोई बेईमान है और उसके पास ईमानदारी के वृक्ष का एक अंश भी है , तो ऐसा है मानो उसके पास कुछ भी नहीं है। लेकनि यदि एक ईमानदार व्यक्ति के पास ईमानदारी के वृक्ष का एक अंश भी न हो, तब भी उसे दैवीय सहायता प्राप्त होती है। बस कल्पना कीजिए कि यदि अपनी ईमानदारी के साथ-साथ उसके पास ईमानदारी के वृक्ष का एक अंश भी हो!...

एक धर्मी व्यक्ति को इस जीवन में भी अपना पुरस्कार प्राप्त होता है

मैंने ऐसी आत्माएँ देखी हैं , जनिके साथ अन्याय हुआ था, फरि भी उन्होंने नेक इरादों से उस अन्याय को सहन कयिा, और इस जीवन में उन पर कृपा बरसी। कई साल पहले , एक धर्मनष्ठि ईसाई—एक साधारण और दयालु व्यक्ति —मेरे पास आए थे। उन्होंने मुझसे अपने बच्चों के लिए प्रार्थना करने को कहा, कि मिसीह उन्हें ज्ञान दें और जब वे वयस्क हों , तो वे अपने रश्तिेदारों से उस बड़े अन्याय के लिए नफरत न करें जो उन्होंने उनके साथ कयिा था। फरि उसने मुझे बताया कि मामला क्या था, और मुझे एहसास हुआ कि वह सचमुच ईश्वर का आदमी था। वह अपने पति के पाँच बच्चों में सबसे बड़ा था, और अपने पति की अचानक मृत्यु के बाद, उसने अपने भाई-बहनों के लिए अपने पति की जगह ले ली। एक प्यार करने वाले पति की तरह, उसने अथक परश्रिम कयिा, संपत्ति और जमीन हासलि की, और परविार का भरण-पोषण कयिा। उन्होंने अपनी दो बहनों का ववािह कराया। उनके छोटे भाई भी शादी कर लिए, और उन्होंने सारी अच्छी खेती की ज़मीन , जैतून के बाग़ आदि अपने लिए ले लिए, और उसे बंजर , उपजाऊ नहीं , रेतीली ज़मीन छोड़ दी। अंततः , उन्होंने भी शादी की और उनके तीन बच्चे हुए। वह अब जवान नहीं रहा था और उसे चंति थी कि जैसे -जैसे उसके बच्चे बड़े होंगे , उन्हें एहसास होगा कि उनके साथ अन्याय हुआ है और वे शकिायत करने लगेंगे। उसने मुझसे कहा, 'मैं इस अन्याय से परेशान नहीं हूँ , क्योंकि मैं भजन संहति पढ़ता हूँ। शाम को एक काथस्मिा और भोर से पहले दो। मैंने भजन संहति को लगभग रट लयिा है , और एक भी भजन यह नहीं कहता कि अधर्मी

फलते -फूलते हैं , लेकिन यह जरूर कहता है कि ईश्वर धर्मी लोगों का भरण-पोषण करता है। पादरी, मैं उन ज़मीनों के टुकड़ों के लिए शोक नहीं करता जो मैंने खो दी हैं —मैं अपने उन भाइयों के लिए शोक करता हूँ जो अपनी आत्मा को बर्बाद कर रहे हैं। " वह धन्य व्यक्ति चला गया। वह लगभग दस साल बाद मुझसे मिलने आया। वह बहुत प्रसन्न दिख रहा था और उसने पूछा , 'फादर, क्या आपको मैं याद हूँ ?' — 'हाँ ,' मैंने जवाब दिया, और पूछा कि वह कैसा है। "अब," उसने कहा, "मैं अमीर हो गया हूँ !" — "भाई, आखिर तुम अमीर कैसे हुए ?" — "खैर , इस तरह: मेरे पास जो बेकार रेत वाले भूखंड थे , उनका मूल्य काफी बढ़ गया है , क्योंकि वे समुद्र के किनारे स्थित थे। अब मेरे पास बहुत सारा पैसा है , और मैं आपसे पूछने आया हूँ कि मुझे इसके साथ क्या करना चाहिए।" — "बनाओ," मैंने कहा, "अपने बच्चों के लिए एक छोटा सा घर और उनकी शिक्षा के लिए कुछ पैसे अलग रख दो — जब तक कि वे अपने पैरों पर खड़े न हो जाएँ। " — "मैंने बच्चों के लिए पहले ही कुछ अलग रख दिया है ," उसने कहा, "लेकिन अभी भी बहुत कुछ बचा है। " — "तो गरीबों की मदद करो — पहले अपने रिश्तेदारों की, और फिर दूसरों की।" — "मैंने उनकी पहले ही मदद कर दी है , फादर, लेकिन अभी भी बहुत कुछ बचा है !" — "उस पैसे को अपने गाँव में एक चर्च और चैपल बनाने के लिए दान कर दो।" — "मैंने उसमें भी दान किया है , लेकिन फिर भी बहुत कुछ बचा है !" तो मैंने उससे कहा कि मैं प्रार्थना करूँगा कि मसीह उसे उस जगह अच्छा करने की समझ दें जहाँ इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है। फिर मैंने पूछा : "और आपके भाई कैसे हैं ? वे कहाँ हैं ?" वह फूट -फूट कर रो पड़ा और रोते हुए बोला: "मुझे नहीं पता, फादर; उनके निशान तक खो गए हैं। उन्होंने गाँव में अपनी ज़मीनें , जैतून के बाग़ और खेती की ज़मीन बेच दी। वे अब कहाँ हैं — मुझे कोई अता-पता नहीं। पहले वे जर्मनी गए, फिर ऑस्ट्रेलिया , और अब उनसे कोई ख़बर नहीं मिलती।" मुझे एहसास नहीं था कि वह अपने भाइयों के बारे में इतना परेशान होगा, और मुझे यह पूछने का पछतावा हुआ। बाद में , मैंने उसे सांत्वना दी, और वह शांति से चला गया। मैंने उससे कहा, "आओ हम मिलकर प्रार्थना करें कि हमें उनके बारे में भी अच्छी खबर मिले। " तब मेरे मन में यह भजन आया: "मैंने दुष्टों को घमंड करते और लेबनान के देवदारों की तरह ऊँचा उठते देखा ; परन्तु जब मैं निकला, तो वह नहीं रहा; मैंने उसे ढूँढा , परन्तु उसका कोई पता नहीं चला।"[58] उसके दुर्भाग्यशाली भाइयों के साथ भी ठीक यही हुआ था।

इसलिए, अन्याय से बुरा कुछ भी नहीं है। अतः , आप जो कुछ भी करें , उस पर ईश्वर का आशीर्वाद बना रहे , इसके लिए अपनी पूरी कोशिश करें।

अध्याय 5.
"आशीर्वाद दो, श्राप मत करो..."[59]

एक व्यक्ति ने मुझसे पूछा : "महान उपवास के दौरान हम क्यों गाते हैं : 'हे प्रभु , उन पर बुराई लाओ, पृथ्वी के गौरवशाली लोगों पर बुराई लाओ।'[60] निस्संदेह यह एक शाप है। " मैंने उन्हें उत्तर दिया: "जब बर्बर लोग, बिना किसी उचित कारण के , किसी विशेष लोगों के खिलाफ युद्ध करने जाते हैं , उन्हें नष्ट करने की इच्छा से , और लोग प्रार्थना करते हैं कि उन

[58] भजन संहिता 36:35–36।

[59] देखें रोमियों 12:14।

[60] इसा. 26:15.

पर बुराई आ पड़े — अर्थात्, कि उनके रथ टूट जाएँ, उनके घोड़े बीमार पड़ जाएँ, कि कोई चीज़ उन्हें रोक दे — क्या यह अच्छी बात है या बुरी बात? यही ठीक वही है जिसका पवित्र शास्त्र अर्थ है — कि उनके मार्ग में एक बाधा आनी चाहिए। यह कोई शाप नहीं है। "

— गेरोन्डा, शाप कब असर करता है ?

— शाप तब प्रभावी होता है जब यह अन्याय की प्रतिक्रिया हो। उदाहरण के लिए, यदि कोई महिला किसी दूसरी महिला का, जो पीड़ित है, मज़ाक उड़ाती है या उसे कोई हानि पहुँचाती है, और पीड़ित महिला उस पर शाप देती है, तो अन्याय करने वाली की वंशावली टूट जाती है। दूसरे शब्दों में, यदि मैं किसी को नुकसान पहुँचाता हूँ और वे मुझे शाप देते हैं, तो उनका शाप असर करता है। ईश्वर शापों को असर करने देता है, ठीक वैसे ही जैसे वह, उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति को दूसरे की हत्या करने देता है। हालाँकि, यदि कोई अन्याय नहीं हुआ है, तो शाप उसी पर वापस आ जाता है जिससे वह उत्पन्न हुआ है।

— और किसी को शाप से कैसे मुक्ति मिल सकती है ?

— पश्चाताप और पाप-स्वीकार के माध्यम से। मैं ऐसे कई मामलों को जानता हूँ। शापित होने से पीड़ित लोगों ने, यह महसूस करते हुए कि किसी न किसी तरह से उनकी ही गलती थी, पश्चाताप किया, पाप-स्वीकार के लिए गए, और उनकी सभी दुर्भाग्यपूर्ण स्थितियाँ समाप्त हो गईं। यदि दोषी व्यक्ति कहता है : 'हे मेरे ईश्वर, मैंने ऐसा-वैसा अन्याय किया है। मुझे क्षमा करें !' — और पश्चाताप और ईमानदारी के साथ पादरी के सामने अपने पापों का ब्योरा देता है, तो ईश्वर उसे क्षमा कर देंगे, क्योंकि वही ईश्वर हैं।

— क्या दंड केवल उस व्यक्ति पर आता है जिस पर शाप निर्देशित है, या उस व्यक्ति पर भी जिससे यह उत्पन्न होता है ?

— जिस व्यक्ति पर शाप निर्देशित होता है, वह इस जीवन में पीड़ित होता है। हालाँकि, जिस व्यक्ति से शाप उत्पन्न होता है, वह इस जीवन में पीड़ित होता है और आने वाले जीवन में भी पीड़ित होगा, क्योंकि यदि वह पश्चाताप और स्वीकारोक्ति नहीं करता है, तो उसे वहाँ ईश्वर द्वारा एक अपराधी के रूप में दंडित किया जाएगा। ठीक है, हो सकता है कि किसी ने सचमुच आपसे किसी न किसी तरह से अन्याय किया हो। लेकिन जिसने आपसे अन्याय किया है, उस पर शाप देकर, ऐसा है जैसे आप बंदूक उठाकर उन्हें मार रहे हों। आप किस अधिकार से ऐसा करते हैं ? आपके अपराधी ने आपके साथ चाहे कुछ भी किया हो, उसे मारने का आपका कोई अधिकार नहीं है। जब कोई किसी को शाप देता है, तो इसका मतलब है कि उसके भीतर द्वेष है। कोई व्यक्ति दूसरे को तब शाप देता है जब वह जुनून और आक्रोश के साथ उस व्यक्ति के लिए बुराई की कामना करता है।

एक सही व्यक्ति द्वारा किया गया शाप काफी शक्तिशाली होता है। एक विधवा का शाप विशेष रूप से प्रभावशाली होता है। मुझे एक बूढ़ी औरत याद आती है जिसके पास एक छोटा घोड़ा था; वह उसे जंगल के किनारे चराने के लिए छोड़ देती थी, और चूँकि घोड़ा बेचैन था, वह उसे एक मजबूत रस्सी से बाँध देती थी। एक दिन, उसी गाँव के तीन पड़ोसी लकड़ी काटने के लिए जंगल में गए। एक अमीर था, दूसरा विधवा थी, और तीसरा अनाथ और बहुत गरीब था। बँधे हुए घोड़े को देखकर, उन्होंने कहा, 'चलो रस्सी ले लेते हैं और लकड़ी के गट्ठों को बाँधने के लिए इसका इस्तेमाल करते हैं। ' उन्होंने रस्सी को तीन टुकड़ों में काट लिया, और प्रत्येक ने अपनी-अपनी लकड़ी की गट्ठियाँ बांधने के लिए एक-एक टुकड़ा ले लिया। इस बीच, घोड़ा भटक गया था। बूढ़ी औरत लौटी, घोड़ा नहीं मिला, और वह परेशान होने लगी। उसने हर जगह खोज की—जब तक उसे वह मिला, वह पूरी तरह से थक चुकी थी। आखिरकार, उसे ढूंढ लेने पर, उसने गुस्से

में कहा: 'जसि भी यह ले गया है , उसे उसी रस्सी से बाँधकर घसीटा जाए!' कुछ समय बीत गया, और एक दनि एक अमीर पड़ोसी का भाई (इतालवी लोगों द्वारा छोड़ी गई) बंदूक से खेल रहा था — यह सोचकर कि वह खाली है। लेकनि वह लोडेड नकिली; एक गोली चली, आ र गोली अमीर महलि की गर्दन में लगी। उसे अस्पताल ले जाया गया। उन्होंने उसे स्ट्रेचर की तरह लकड़ी की सीढ़ियों से नीचे ले जाने का फैसला कयि, और घायल महलि को गरिने से बचाने के लिए, उन्हें उसे सीढ़ियों से बांधना पड़ा। उन्हें रस्सी का वह चोरी का टुकड़ा मलि, लेकनि वह पर्याप्त लंबा नहीं था। वे पड़ोसयिों के पास भागे , दो और चोरी के टुकड़े वापस लाए, उस गरीब महलि को सीढ़ियों से बांधा और उसे अस्पताल ले गए। इस प्रकार उस बूढ़ी महलि का शाप सच हो गया: वह भी 'उसी रस्सी से खींची गई'। अंत में , वह गरीब महलि मर गई—भगवान उसकी आत्मा को शांति दें। देखिए , शाप उस अमीर महलि पर पड़ा , जसि कसिी भी भौतकि चीज़ की ज़रूरत नहीं थी। बाकी दो महलिाएँ गरीब थीं और इसलिए उनके मामले में कुछ राहत देने वाले हालात थे।

शाप से उत्पन्न होने वाली बीमारयिाँ और दुर्भाग्य

कई बीमारयिाँ , जनिके कारण डॉक्टर नहीं ढूंढ पाते , हो सकता है कि वे कसिी शाप के कारण ही हों। और डॉक्टरों का क्या —क्या वे सचमुच कसिी शाप का पता लगा सकते हैं ? एक बार, एक लकवाग्रस्त आदमी को मेरी झोपड़ी में लाया गया था। वह एक हट्टा -कट्टा आदमी था, फरि भी वह बैठ भी नहीं सकता था! उसका धड़ नहीं मुड़ता था; वह लकड़ी की तरह सख्त था। एक आदमी उसे अपनी पीठ पर ले जा रहा था, जबकि दूसरा उसे पीछे से सहारा दे रहा था। मैंने उस बेचारी आदमी के लिए दो लकड़यिाँ रखीं , और वह जैसे -तैसे उन पर बैठ गया। उसके साथयिों ने मुझे बताया कि वह पंद्रह साल की उम्र से इस हालत में था और अठारह साल से इस तकलीफ को झेल रहा था। मैंने सोचा, "लेकनि क्या ऐसा कुछ अचानक हो सकता है ?" "ऐसा नहीं हो सकता; इसके पीछे कोई छपिा हुआ कारण होगा।" मैंने सवाल करना शुरू कयि और पता चला कि किसी ने इस युवक को शाप दयि था। क्या हुआ था? खैर , हुआ यह था: एक दनि वह स्कूल जा रहा था, बस में चढ़ा और एक सीट पर धड़ाम से गरि पड़ा। एक स्टॉप पर, एक वृद्ध पुजारी और एक बूढ़ा आदमी बस में चढ़े और उसके बगल में खड़े हो गए। कसिी ने उससे कहा, "उठो, अपने बड़ों को अपनी सीट दे दो।" लेकनि उसने कसिी की परवाह कए बनि, और भी पीछे लुढ़क गया। तब उसके बगल में खड़े बूढ़े आदमी ने उससे कहा: 'तू हमेशा ऐसे ही पसरा रहेगा — तू बैठ भी नहीं पाएगा।' और वह शाप असर कर गया। देखिए , वह लड़का काफी शरारती था। 'आखरि मैं क्यों उठूँ ?' उसने कहा, 'मैंने अपनी सीट का करिाया दयि है। ' हाँ , लेकनि दूसरे आदमी ने भी अपनी सीट का करिाया दयि था। वहाँ एक बुजुर्ग , सम्मानति व्यक्ति खड़ा है , और तुम — एक पंद्रह साल का लड़का — फैले हुए पड़े हो। मैंने उससे कहा, "यही वजह है कि यह सब हुआ। ठीक होने के लिए, पश्चाताप करने की कोशशि करो। तुम्हें पश्चाताप करने की ज़रूरत है। " और जैसे ही उस बेचारे लड़के ने अपनी गलती समझी और उसे एहसास हुआ , वह तुरंत स्वस्थ हो गया।

और आज की कतिनी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएँ शापों और कटुता से उत्पन्न होती हैं ! यह जान लो: यदि किसी परविार में कई लोग मर जाते हैं , या पूरा परविार नष्ट हो जाता है , तो इसका कारण या तो अन्याय में , या जादू -टोने में , या कसिी शाप में नहिति होता है। एक पति था जसिका बेटा लगातार घर से भाग जाता था और पता नहीं कहाँ भटक जाता था। एक दनि, गुस्से में आकर उसके पति ने उससे कहा: 'तू मुझे पागल कर रहा है — एक बार और हमेशा के लिए घर आ जा!' और उसी शाम, जब वह लड़का घर लौट रहा था, तो उनके घर के ठीक सामने एक कार की चपेट में आकर उसकी मौत हो गई। वह गरि पड़ा और वहीं मृत पड़ा रहा; बाद में , उसके दोस्तों ने उसका शव उठाया और

उसे घर ले आए। उसके बाद, उसका पति पवत्रि पहाड़ गया और मेरे कालीवा में मुझसे मलिने आया। वह रोया और बोला, 'मेरे बच्चे की मौत मेरे घर के दरवाज़े पर ही हो गई।' उसने अपनी कहानी सुनानी शुरू की, और फरि कहा: 'मैंने ठीक उससे पहले उससे कुछ कहा था।' — 'अरे , तुमने उससे क्या कहा?' — 'वह रात में भटकता रहता था, भगवान जाने कहाँ ; मुझे गुस्सा आया और मैंने उससे कहा: "अब तू एक बार और हमेशा के लिए मेरे पास घर आएगा!" शायद यही बात इस त्रासदी का कारण बनी?' — 'और क्या हो सकता है ?' मैंने जवाब दिया। — 'तौबा करने की कोशशि करो और पादरी के पास जाकर अपना पाप कबूल करो।' देखो , होता क्या है : वह कहता है , 'इस बार तू आखरिी बार घर आना' — और बच्चा लाश बनकर लौट आता है। और फरि पति अपना सरि पटिने लगता है और रोने लगता है ...

माता-पति का शाप बहुत शक्तशिाली होता है

ध्यान रखें कि एक शाप, और यहाँ तक कि माता-पति का [सरि्फ] आक्रोश , का बहुत शक्तशिाली प्रभाव होता है। और भले ही माता-पति ने अपने बच्चों को शाप न दिया हो, लेकनि सरि्फ उनके कारण आक्रोशति हुए हों , तब बच्चों का बाद में एक भी सुखद दनि नहीं होता है : उनका पूरा जीवन एक नरिंतर यातना होती है। ऐसे बच्चे फरि अपने सांसारकि जीवन भर बहुत कष्ट सहते हैं। बेशक , परलोक में उनका जीवन आसान होता है , क्योंकि अपने दुखों के माध्यम से वे अपने सांसारकि कुछ कर्ज चुका देते हैं। जो होता है वह वही है जसिके बारे में संत इसाक कहते हैं : 'वह अपनी ही गेहेन्ना का स्वाद चखता है ,'[61] यानी, यहाँ इस जीवन में , दुख के माध्यम से , एक व्यक्ति नरक में अपने कष्ट को कम कर लेता है , क्योंकि इस जीवन में दुख नरकीय यातना का पूर्वाभास है। दूसरे शब्दों में , जब आध्यात्मकि कानून लागू होते हैं , तो एक व्यक्ति कुछ हद तक गेहेन्ना , यातना से मुक्त हो जाता है।

लेकनि वे माता-पति भी, जो अपने शब्दों से अपने बच्चों को शैतान के पास 'भेजते ' हैं , उन्हें उसके लिए 'समर्पति ' कर देते हैं। उसके बाद, शैतान का ऐसे बच्चों पर हक़ बन जाता है ; वह कहता है : 'तुमने उन्हें मेरे लिए समर्पति किया है। ' Faras[62] में एक पति-पत्नी रहते थे। उनका बच्चा बहुत नखरेबाज़ था, और पति लगातार कहते थे : 'अशुद्ध आत्मा तुम्हें उठा ले जाए!' और ऐसा हुआ : पति ने शशिु से ऐसा कहा, और ईश्वर की अनुमति से , बच्चा अपने पालने से गायब होने लगा। फरि बेचैन माँ हाज्जेफेन्दी के पास जाती।[63] "हम पर आशीर्वाद करें , हाज्जेफेन्दी ! मेरे बच्चे को राक्षसों ने उठा ले गए हैं। " हाजी एफेन्दी उनके घर जाते , पालने पर दुआएँ पढ़ते , और बच्चा वापस आ जाता। और यह सलिसलि अनंत तक चलता रहा। "हाजी एफेन्दी , उस पर दुआ करें !" वह बेचारी औरत बार-बार कहती और पूछती , "यह सब कैसे खत्म होगा?" — "मेरे लिए," संत ने उत्तर दिया, "आपके पास आना कोई मुश्कलि नहीं है। और क्या आपके लिए आकर मुझे बुलाना सच में इतना मुश्कलि है ? तो, एक दनि शैतान इससे थक जाएगा, और वह आपके बेटे को चैन से छोड़ देगा। " उसी दनि से , बच्चा गायब होना बंद हो गया। लेकनि जब वह बड़ा हुआ , तो उन्होंने उसका उपनाम 'शैतान का अंश ' रख दिया। वह पूरे गाँव में झगड़ा खड़ा करता था — किसी को भी चैन से नहीं रहने देता था। मेरे पतिाजी को इसकी वजह से कितना कष्ट झेलना पड़ा ![64] पहले , वह लड़का एक गाँव वाले के पास जाता और कहता, 'फलाने ने आपके बारे में यह-वह कहा,' फरि वह दूसरे के पास जाता और उसे भी यही बात बताता। लोग आपस में झगड़ने लगे ; यहाँ तक कि मारपीट भी हो गई। फरि, जब उन्हें एहसास हुआ कि उन पर झूठे आरोप

---

[61] "जो यहाँ अपनी लज्जा के लिए दण्डति होता है , वह अपनी ही गेहेन्ना का स्वाद चखता है। " हमारे पति इसाक़ सीरयिाई के पवत्रि लेखों से। तपस्या के वचन। मॉस्को , 1993। पृ . 365।

[62] कैपाडोसिया के सेज़रिया में छह यूनानी गांवों का प्रमुख। कैपाडोसिया के पूजनीय आर्सेनियस और धन्य एल्डर पैसियस का जन्मस्थान।

[63] यह नाम फारस के नविासयिों द्वारा कापाडोसिया के पूजनीय आर्सेनियस को दिया गया था।

[64] वृद्ध पैसयिोस के पति गाँव के मुखिया थे।

लगाए गए थे , तो वे उस बदनाम करने वाले को पकड़ने और उससे नपिटने पर सहमत हो गए। लेकनि उसने मामले को इस तरह से मोड़ दयिा कि अंत में , वे दोनों ही उससे माफी मांग रहे थे ! धोखेबाजी में उसकी यही महारत थी! एक सच्चा 'शैतान का संतान '! ईश्वर ने ऐसा होने दयिा ताकि, बच्चे के गायब होने की कहानी को सामने आते देख , लोग होश में आएं , खुद पर काबू रखें और बहुत सावधान रहें। हम यहां इस बात पर चर्चा नहीं करेंगे कि ईश्वर इस आदमी का न्याय कैसे करेंगे। यह स्पष्ट है कि उसके पक्ष में कई राहत देने वाले परस्थितियिाँ हैं।

दुनयिा में रहने वाले लोगों के लिए सबसे बड़ा खजाना उनके माता-पिता का आशीर्वाद है। ठीक उसी तरह, संन्यासी जीवन में सबसे बड़ा आशीर्वाद वह है जो आपके आध्यात्मकि पिता द्वारा आपको प्रदान कयिा जाता है। इसीलिए कहते हैं : 'अपने माता-पिता का आशीर्वाद न चूकें। ' मुझे एक माँ याद है जिसके चार बच्चे थे। उनमें से किसी ने भी विवाह नहीं कयिा था। माँ रो पड़ीं : "मैं दुःख से मर जाऊँगी ," उन्होंने कहा, "मेरे किसी भी बच्चे ने विवाह नहीं कयिा है। उनके लिए प्रार्थना करो।" वह विधवा थीं ; उनके बच्चे अनाथ थे। मेरा हृदय उनके लिए तरस गया। मैंने बहुत प्रार्थना की, लेकनि कोई फायदा नहीं हुआ। मैंने सोचा, 'यहाँ कुछ तो गड़बड़ है। ' उसके बच्चों ने कहा, 'किसी ने हम पर शाप लगा दयिा है। ' मैंने कहा, 'नहीं , यह शाप नहीं है ; शाप तो स्पष्ट होता है ... शायद तुम्हारी माँ ने तुम्हें शाप दयिा है ?' — "बिल्कुल सही, फादर," उन्होंने जवाब दयिा, "हम बचपन में बहुत शरारती थे , और वह सुबह से लेकर रात तक हमसे लगातार यही कहती रहती थीं : 'तुम्हारा नाश हो!'" — "जाओ," मैंने कहा, "अपनी माँ के पास जाओ और उन्हें अपनी बदकिस्मती का असली कारण बताओ, ताकि वह होश में आ सकें। उसे कहो कि वह पश्चाताप करे , पादरी से पाप-स्वीकृति कराए, और आज से , बिना रुके , तुम्हें आशीर्वाद दे। " और डेढ़ साल के भीतर, उन चारों ने अपने -अपने परविार बसा लिए! ऐसा लगता है कि यह बेचारी महिला न केवल विधवा थी, बल्कि अ वह आसानी से चिड़चिड़ाहट और निराशा की स्थिति में आ जाती थी। शरारती बच्चों ने उसे तंग कर दयिा, और इसलिए उसने उन पर शाप लगाया।

— और अगर माता-पिता अपने बच्चों को शाप देकर मर जाते हैं , तो बच्चे अपने माता-पिता के शाप से कैसे मुक्त हो सकते हैं ?

'अपने बारे में अच्छी तरह से सोचने पर, वे शायद यह स्वीकार करेंगे कि उन्होंने अपने समय में परेशानी पैदा की और अपने माता-पिता को सताया, और इसीलिए उनके माता-पिता ने उन पर श्राप लगाया। यदि वे अपने दोष को पहचानते हैं , सच्चे दिल से पश्चाताप करते हैं और अपने पापों का इकरार करते हैं , तो उनके लिए सब कुछ ठीक हो जाएगा। आध्यात्मकि प्रगति करके , वे अपने दिवंगत माता-पिता की भी मदद करेंगे। '

— गेरोन्डा , जब मैं कन्वेंट में आई थी, तो मेरे माता-पिता ने भी मुझे शाप दयिा था...

— ऐसे शाप — और केवल यही — एक आशीर्वाद बन जाते हैं।

'एक उत्तम श्राप '

— गेरोन्डा , क्या यह सही है , जब कोई हमसे बुरा करता है , तो हम अपराधी के बारे में कहें : 'ईश्वर उसे उसके बुरे कर्म का फल देगा '?

— जो कोई भी ऐसा बोलता है , वह स्वयं को दुष्ट के उपहास का पात्र बनाता है। ऐसे व्यक्ति को यह एहसास नहीं होता कि, इस तरह बोलकर, वे दूसरों को 'उदारतापूर्वक ' शाप दे रहे हैं। कुछ लोग स्वयं को संवेदनशील , प्यार करने वाला और चतुर बताते हैं , और यह कहते हैं कि वे दूसरों द्वारा उन पर किए गए अन्याय को सहन करते हैं। फिर भी, उसी समय, वे उनसे कहती हैं जिन्होंने उनके साथ अन्याय कयिा है : 'भगवान उन्हें उनके बुरे कर्मों का फल दे। ' इस जीवन

में , सभी लोग एक और, शाश्वत जीवन — स्वर्ग — में प्रवेश करने के लिए परीक्षा दे रहे हैं। मेरा अंतरात्मा मुझे बताता है कि इस तरह का 'महान शाप' आध्यात्मिक उत्तीर्ण अंक से भी नीचे है और एक ईसाई के लिए अनुचित है। आखिरकार, मसीह ने हमें इस तरह का प्रेम नहीं सिखाया। 'पिता, उन्हें क्षमा कर, क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं '([65]) — यह वही प्रेम है जिसे वे सिखाते हैं। इसके अलावा, सबसे बड़ी आशीष तब मिलती है जब हम पर अन्यायपूर्वक श्राप डाला जाता है , और हम इसे चुपचाप और दया के साथ स्वीकार करते हैं।

यदि सितही या कपटी लोग — जो द्वेष पालते हैं और सत्य को तोड़ते -मरोड़ते हैं — हम पर बदनामी करते हैं या हमारे साथ अन्याय करते हैं , तो हमें प्रयास करना चाहिए, यदि हम कर सकें , तो जब वह अन्याय व्यक्तिगत रूप से हमसे संबंधित हो, तो अपने लिए औचित्य न खोजें। और हम यह नहीं कहेंगे , 'भगवान उनका बुरा करे ', क्योंकि वह भी एक शाप है। यह अच्छा है कि हम अपने अपराधियों को पूरे दिल से क्षमा करें , ईश्वर से निंदा का बोझ उठाने के लिए हमें शक्ति देने का आग्रह करें , और यथासंभव गुप्त रूप से अपना आध्यात्मिक जीवन जारी रखें। और जो लोग दूसरों को आंकने और उनकी निंदा करने की आदत रखते हैं , उन्हें हमें अन्याय से पेश आने दें —क्योंकि इस तरह वे हमारे लिए सच्चे जीवन के लिए अथक प्रयास से स्वर्ण मुकुट तैयार कर रहे हैं। बेशक , जो लोग ईश्वर के साथ जीते हैं , वे कभी दूसरों को शाप नहीं देते , क्योंकि उनमें द्वेष नहीं , केवल दया होती है। इन पवित्र लोगों पर दूसरों द्वारा फेंका गया बुराई स्वयं पवित्र हो जाती है —चाहे वह किसी भी रूप में हो। इस बीच, जो लोग ईश्वर के साथ जीते हैं , वे एक महान आनंद का अनुभव करते हैं , जो दूसरों के लिए अदृश्य है।

बुरी नज़र

ईर्ष्या , जिसमें द्वेष होता है , दूसरों को नुकसान पहुँचा सकती है। यह दुष्ट नजर है — एक दैवीय कृत्य।

— गेरोना , क्या चर्च बुरी नज़र को मान्यता देती है ?

— हाँ , 'बुरी नज़र के विरुद्ध ' एक विशेष प्रार्थना भी है। [66] 'बुरी नज़र ' दूसरों को तब नुकसान पहुँचाती है जब कोई व्यक्ति ईर्ष्या से बोलता है।

— गेरोन्डा , कई लोग हमसे बच्चों को बुरी नज़र से बचाने के लिए तावीज़ मांगते हैं। क्या ऐसे तावीज़ पहनना जायज़ है ?

— नहीं , उन्हें नहीं पहनना चाहिए। माताओं से कहो कि वे अपने नन्हे -मुन्नों पर क्रॉस लगाएं।

— जेरोंडा , अगर कोई कुछ अद्भुत करता है , दूसरा व्यक्ति उसकी प्रशंसा करता है , पहला व्यक्ति गर्व भरे विचार के साथ प्रशंसा स्वीकार करता है , और फिर उस चीज़ को किसी तरह नुकसान पहुँचता है —क्या यह बुरी नज़र है ?

— नहीं , यह बुरी नज़र नहीं है। इस मामले में , आध्यात्मिक कानून लागू होते हैं। ईश्वर उस व्यक्ति से अपनी कृपा वापस ले लेते हैं , और इसीलिए हानि होती है। बुरी नज़र केवल दुर्लभ मामलों में होती है। विशेष रूप से , जो लोग ईर्ष्यालु द्वेष पालते हैं — और ऐसे लोग

---

[65] लूका 23:34.

[66] देखें यूचोलॉजियन ए। एजियास्माटारियन। माउंट अथोस। 2001। पृ . 161। एल्डर ने बार-बार जोर देकर कहा कि 'आँखों की अंधता से ' प्रार्थना केवल एक पुरोहित द्वारा ही पढ़ी जा सकती है।

बहुत कम होते हैं — वे दूसरों पर बुरी नज़र डाल सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक ईर्ष्यालु महिला एक माँ को एक प्यारे छोटे बच्चे के साथ देखती है और द्वेषपूर्वक कहती है, 'मुझे ऐसा बच्चा क्यों नहीं है? ईश्वर ने उसे यह क्यों दिया?' इस मामले में, बच्चे को तकलीफ हो सकती है: वह सो नहीं पाएगा, रोने लगेगा, और परेशान रहेगा, क्योंकि उसने यह द्वेषपूर्वक कहा। और अगर वह बच्चा बीमार पड़कर मर जाए, तो ऐसी द्वेषी और ईर्ष्यालु महिला खुशी मनाएगी। उदाहरण के लिए, कोई दूसरी किसी और के बछड़े को देखती है, उसे बेताबी से अपना बनाना चाहती है, और वह जानवर जल्द ही मर जाता है।

हालांकि, अक्सर अपने बच्चे के दुख के लिए खुद माँ ही दोषी होती है। उदाहरण के लिए, एक माँ किसी और के दुबले-पतले बच्चे को देखती है और कहती है: 'कितना दुबला-पतला बच्चा है!' सिर्फ़ हड्डी-पसली ही बची है!' वह अपने बच्चे की तारीफ़ करती है, पर किसी और के बच्चे को तुच्छ समझती है। लेकिन किसी और के बच्चे के बारे में द्वेष से बोले गए शब्द उसके अपने ही बच्चे को चोट पहुँचाते हैं। और वह बच्चा, अपनी किसी गलती के बिना ही, अपनी माँ की वजह से दुख झेलता है। वह बेचारी नन्ही जान हमारी आँखों के सामने ही सूखती चली जाती है — माँ को दंड स्वरूप, ताकि उसे अपने किए का एहसास हो। लेकिन, बेशक, इस मामले में बच्चे को ही शहीदों में गिना जाता है। ईश्वर के निर्णय अथाह हैं।

दिल से निकली दुआ एक दैवीय आशीर्वाद होती है

...खैर, और अब मैं भी तुम्हें 'एक शाप के हवाले करता हूँ!' यह रहा: 'भगवान आपके दिलों को अपनी भलाई और अपने प्रचुर प्रेम से इस हद तक भर दें कि आप पागल हो जाएँ, कि आपका मन पृथ्वी से अलग हो जाए और अब से स्वर्ग में, उनके करीब रहे। तो ईश्वर के प्रेम के दैवीय उन्माद में पागल हो जाएँ! ईश्वर आपके हृदयों को अपने प्रेम से प्रज्वलित कर दे!.." यह उस प्रकार का "शाप" है जो मैं आप पर डाल रहा हूँ, और मुझे इसे दोहराने के लिए मजबूर न करें — क्योंकि मेरा यह दयालु "शाप" मेरे हृदय से उत्पन्न होता है और इसलिए इसमें शक्ति है। यहाँ तक कि जब मैं अभी भी सैनटिोरियम में था,[67] मुझे आपके लिए दुख हुआ। आप में से कुछ लोग आठ साल से इंतजार कर रहे थे, कह रहे थे, 'हम एक मठ स्थापित करेंगे,' लेकिन मठ कहीं नजर नहीं आ रहा था। आप बेचारे पूरी तरह से थक चुके थे! फिर मैंने आपसे कहा: 'जैसे ही मैं अस्पताल से छुट्टी पाऊँगा, मठ उग आएगा, ठीक वैसे ही जैसे बारिश के बाद खरपतवार उगते हैं। 'तुम एक साल के भीतर मठ में होगे!' और वास्तव में: एक साल के भीतर, मठ बन गया। उस समय, सैनटिोरियम में, मैंने दिल से कहा था, और तुम सद्भावनापूर्ण थे, इसीलिए ईश्वर ने तुम्हें नहीं छोड़ा। मैं इसके लिए कोई और स्पष्टीकरण नहीं ढूंढ पा रहा।

यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति करुणा महसूस करते हैं जो विनम्र है और आपसे दिल से प्रार्थना करने के लिए कहता है, उदाहरण के लिए, ताकि वह किसी ऐसे जुनून से मुक्त हो सके जो उसे सता रहा है, और आप उससे कहते हैं, 'डरो मत, तुम ठीक हो जाओगे,' तो [ऐसा करने से] आप उस पर एक दिव्य आशीर्वाद प्रदान करेंगे। इस शुभकामना में बहुत सारा प्यार और बहुत सारा दर्द है, और इसीलिए इसमें शक्ति है। यह ईश्वर को प्रसन्न करता है, और वह उस आशीर्वाद को पूरा करते हैं। इसलिए, जो दर्द एक व्यक्ति दूसरे के लिए महसूस करता है, वह अपने आप में ही एक आशीर्वाद के समान है।

[68]एक बार, जब मैं एक सैनिक था, हमारे कमांडर ने मुझे संत जॉन द बैपटिस्ट को दिया गया एक वादा पूरा करने के लिए भेजा था, जो हमने युद्ध में उनकी मदद के बाद किया था। हमने संत जॉन द बैपटिस्ट को समर्पित एक छोटे से चर्च के लिए दो बड़ी चर्च की मोमबत्तियाँ खरीदने का व्रत लिया था। इसलिए, मुझे मोमबत्तियाँ खरीदनी थीं, और साथ ही अपने एक साथी को

---

[67] 1966 में

[68] दक्षिण-पश्चिमी ग्रीस में एक शहर और बंदरगाह – अनुवादक की टिप्पणी।

नाफपक्टोस शहर ले जाना था ताकि उसे सैन्य न्यायाधिकरण के हवाले किया जा सके। मुझे याद है कि अन्य अधिकारियों ने कमांडर से कहा था: "अरे , तुमने उसके लिए क्या शानदार एस्कॉर्ट ढूंढ लिया है !" जिसे मुझे एस्कॉर्ट करना था, वह एपिरस का मूल निवासी था,[69] पेशे से संगीतकार , एक गरीब आदमी, शादीशुदा और बच्चों वाला। उस पर आत्म -हत्या के आरोप थे , यानी उसने खुद को चोट पहुँचाई ताकि उसे पीछे भेजा जा सके। "एक पैर से जीना," उसने तर्क दिया, "मारे जाने से तो बेहतर है। " पहले हम एग्रिनियो गए,[70] जहाँ उसके कुछ परिचित थे। "चलो," उसने कहा, "और उनसे मिलते हैं। " "ठीक है ," मैंने जवाब दिया, "चलो।" 'चलो यहाँ चलते हैं , चलो वहाँ चलते हैं '—मैं क्या कर सकता था? मुझे उसके साथ हर जगह जाना पड़ता था। ओह, क्या कष्ट था! इसके ऊपर, वह नहीं चाहता था कि मैं उसे कोर्ट -मार्शल के हवाले कर दूँ। लेकिन मुझे खुद उस बेचारे पर तरस आता था; मैं उसके लिए बहुत दुखी था, और मैंने उससे कहा: "देखना — सब कुछ तुम्हारे पक्ष में हो जाएगा और तुम सबसे बेहतर स्थिति में रहोगे ! हमारा कमांडर तुम्हारे मामले के बारे में एक स्पष्टीकरण पत्र भेजेगा , और वे तुम्हें किसी शांत जगह पर तैनात कर देंगे — ताकि तुम अपने बच्चों की मदद कर सको, और तुम्हारा जीवन सुरक्षित रहेगा। " जब हम आखिरकार नाफपक्टोस पहुँचे , तो हमें पता चला कि कमांडर का एक पत्र पहले ही न्यायाधिकरण तक पहुँच चुका था और हमारे आकस्मिक गोली चलाने वाले के खिलाफ मामला बंद कर दिया गया था। फिर भी उसे फांसी का सामना करना पड़ रहा था — वे युद्ध के समय थे , कठोर समय थे। कमांडर को उस पर तरस आ गया, क्योंकि वह परिवार का मुखिया था, और उसने उसे भर्ती वितरण केंद्र में रसोइया नियुक्त कर दिया। उसका परिवार इस केंद्र के करीब आ गया, और वह युद्ध किसी से बेहतर तरीके से पार कर गया; और चूँकि सैनिक कभी-कभी दोपहर के भोजन के लिए कैंटीन में नहीं आते थे , उसके पास बचा हुआ खाना बच जाता था, जिसे वह अपने बच्चों को खिला देता था। युद्ध के बाद, सभी ने उससे कहा: 'तुम्हारा हाल किसी से भी बेहतर था!' क्योंकि हम पहाड़ों में , बर्फ में फंसे हुए थे। मैंने जो उसके लिए चाहा वह ईश्वर को भाया, क्योंकि मैंने यह दर्द से , दिल से कहा था। इसीलिए ईश्वर ने यह आशीर्वाद दिया।

मुझे एक और ऐसी ही घटना याद है — कोनट्सिा में , स्टोमियन मठ में अपने समय के दौरान। 8 सितंबर को, मठ ने अपने संरक्षक उत्सव — परमेश्वर की अति पवित्र माता के जन्म का उत्सव मनाया। उत्सव के बाद, तीर्थयात्रियों ने जगह को बहुत गंदा कर दिया था। मैंने चुपचाप सफाई करना शुरू कर दिया। मैंने देखा कि मेरी बहन और एक दूसरी युवती मेरी मदद करने के लिए रुक गई थीं। इस दूसरी युवती की दो बहनें थीं – एक बड़ी और दूसरी छोटी। दोनों बहनों की शादी हो चुकी थी, जबकि वह खुद अभी तक अविवाहित थी। उसकी कितनी निस्वार्थ भावना थी! वह मदद करने के लिए रुकी , और जब हमने सब कुछ साफ-सुथरा कर लिया, तो उसने कहा: "पादरी जी, अगर कोई और काम करना है , तो हम रुकेंगे और जो भी ज़रूरत होगी, वह करेंगे। " — "क्या उदार भावना है !" — मैंने मन ही मन सोचा। मैं चर्च के अंदर गया और दिल की गहराई से कहा: "हे परमेश्वर की परम पवित्र माता, उसकी स्वयं देखभाल करें। मेरे पास उसे देने के लिए कुछ भी नहीं है। " लेकिन अगर मेरे पास कुछ होता भी, तो भी वह कुछ नहीं लेती। और फिर क्या हुआ ? वह घर लौट आई, और वहाँ उसका इंतज़ार कर रहे थे मेरे एक पूर्व सहकर्मी — कोई साधारण लड़का नहीं , बल्कि एक असली रत्न , एक अच्छे परिवार के बहुत अच्छे इंसान। उन्होंने शादी कर ली और हमेशा खुशहाल जीवन जिए। देखिए कि परमेश्वर की परम पवित्र माता ने उसे कैसे पुरस्कृत किया!

अध्याय 6.
पाप कैसे दुर्भाग्य लाता है

— क्या आपने कैटरपिलर से छुटकारा पाने के लिए पेड़ों पर कीटनाशक छिड़का ?

— मैंने किया, गेरोन्डा।

[71][72]— तुम नन इतनी सारी हो, और फिर भी तुम कुछ इल्लियों को भी नहीं मार सकतीं ! जब कब्जे के दौरान यहाँ चैलकिदिकी में टिड्डियों ने खेतों में धावा बोल दिया था, तो उन्होंने

---

[69] एपिरस – पश्चिमी ग्रीस का एक क्षेत्र – अनुवादक की टिप्पणी।

[70] दक्षिण -पश्चिमी ग्रीस का एक शहर – अनुवादक की टिप्पणी।

[71] चल्किडीकी – उत्तरी -पूर्वी ग्रीस में एक प्रायद्वीप और प्रशासनिक इकाई। चल्किडीकी की नोकों में से एक माउंट अथोस है। – अनुवादक की टिप्पणी।

[72] सर्वपवित्र थिओटोकोस का पट्टा – सबसे महान ईसाई अवशेषों में से एक, जो माउंट अथोस पर वाटोपेडी मठ में रखा है। – अनुवादक की टिप्पणी।

वाटिकापेदी मठ से परमेश्वर की परम पवित्र माता का पवित्र पट्टा लाया — और टिड्डियाँ पूरे झुंड के साथ समुद्र में गिर गईं। और एपिरस में , मुझे याद है , वे खेतों को बर्फ की तरह ढक देते थे। हम सब तब खेतों में गए — चादरों से टिड्डियों को इकट्ठा करके उन्हें ले जाते थे। और उस समय कितना अकाल पड़ा था! आप पूछिएगा नहीं तो बेहतर ... टिड्डियों के बाद गेहूँ तो उबर आया, लेकिन वह पहले से ही बहुत , बहुत कमजोर था।

टिड्डियों का प्रकोप , युद्ध , सूखा , बीमारियाँ — ये सब विपत्तियाँ हैं। और ऐसा नहीं है कि ईश्वर चाहता है कि इस तरह मानवता को अनुशासित किया जाए; नहीं , ये दुर्भाग्य मानवता के ईश्वर से दूर होने का परिणाम हैं। यह सब इसलिए होता है क्योंकि लोग ईश्वर से मुंह मोड़ लेते हैं। और ईश्वर का क्रोध आता है — ताकि लोग ईश्वर को याद करें और उसकी मदद माँगें। ऐसा नहीं है कि ईश्वर यह सब रचता है और लोगों पर एक के बाद एक विपत्ति लाने के लिए आदेश देता है। नहीं , बल्कि ईश्वर , यह देखते हुए कि लोगों की दुष्टता कितनी बढ़ जाएगी और यह जानते हुए कि वे बदलेंगे नहीं , उन्हें होश में लाने के लिए विपत्ति को होने देता है। इसका यह मतलब नहीं है कि ईश्वर स्वयं यह सब रचता है।

परमेश्वर ने यहोशू [73] को एक मूर्तिपूजक जनजाति—फिलिश्ती —को नष्ट न करने की आज्ञा दी, ताकि जब यहूदी परमेश्वर को भूल जाएँ , तो फिलिश्ती उनके लिए एक विपत्ति बन जाएँ। इसलिए, जब यहूदी परमेश्वर से मुंह मोड़ गए, तो शैतान ने अपना अधिकार जमाया, अपने 'भाइयों '—अफीकी लोगों —को भड़काया और वे यहूदियों के खिलाफ युद्ध करने चले गए। उन्होंने यहूदी शिशुओं को पकड़ लिया और [उन सभी को नष्ट करने के लिए] उन्हें चट्टानों से पटक दिया। लेकिन जब यहूदियों की किसी गलती के बिना दुश्मनों ने इस्राएल पर हमला किया, तो स्वयं परमेश्वर यहूदियों के पक्ष में लड़े। परमेश्वर ने pagans पर पत्थरों की बौछार[74] की और उन्हें नष्ट कर दिया, क्योंकि उस मामले में इस्राएलियों को दैवीय हस्तक्षेप का अधिकार था।

परमेश्वर ने सुलैमान के मंदिर के बारे में कितने वादे किए थे ! और फिर भी, वह मंदिर कितनी बार जलाया गया और नष्ट किया गया! जब इस्राएल के लोग परमेश्वर से मुंह मोड़ गए, तो भविष्यवक्ताओं ने लोगों से पुकारना और उन्हें होश में आने के लिए कहना शुरू कर दिया, लेकिन उनके प्रयास व्यर्थ थे : यह दीवार पर मूंगें छिड़कने जैसा था। लोग इस विचार से खुद को आश्वस्त करते थे : 'जब सुलैमान ने मंदिर का निर्माण किया, तो परमेश्वर ने कई आशीर्वाद दिए और कहा कि इस स्थान से सभी लोग धन्य और पवित्र होंगे। [75] इसलिए यह सब — हमारी दीवारें और हमारा मंदिर — सुरक्षित रहेगा। परमेश्वर ने ऐसा वादा किया था।' हाँ , ईश्वर ने ऐसा वादा तो किया था, लेकिन इस शर्त पर कि इस्राएली स्वयं धर्मपरायणता से जिएँगे। ईश्वर ने सुलैमान के मंदिर पर अपनी कृपा प्रदान की, लेकिन जब इस्राएलियों ने आज्ञाओं का पालन करना बंद कर दिया, तो उनकी अनुमति से मंदिर आग या विनाश के हवाले कर दिया गया। लेकिन एक बार जब उन्होंने पश्चाताप किया, तो इस्राएलियों ने मंदिर का पुनर्निर्माण किया। उदाहरण के लिए, जब वे राजा सिदकियाह के अधीन परमेश्वर से मुंह मोड़ गए, तो नबूकदनेसर आया, उसने मंदिर में आग लगा दी, यरूशलेम की दीवारों को ध्वस्त कर दिया, और यहूदियों को बेड़ी में डालकर बेबीलोन की कैद में ले गया।[76] बेशक , निर्दोष लोगों को भी बंदी बना लिया गया था, लेकिन

---

[73] देखें यहोशू 13:1–2 और न्यायी 3:1–4।

[74] देखें यहोशू 10:11।

[75] देखें 3 राजा 9:1–9।

इन लोगों को एक उचित प्रतिफल मिला। जिनका दोष बहुत बड़ा था, उन्होंने उसका प्रायश्चित किया। और जो पीड़ित हुए, जिनका दोष इतना बड़ा नहीं था, उन्हें एक कम प्रतिफल मिला। जब कोई ईश्वर के क्रोध को भड़काता है और निर्दोष भी पीड़ा सहते हैं, तब, यद्यपि निर्दोष पीड़ितों के लिए पुरस्कार प्रतीक्षा कर रहा है, उनके दुख का दोषी फिर भी अपराधी ही रहता है; क्योंकि [निर्दोष] लोग बिना पीड़ा के स्वर्ग के राज्य के वारिस बन सकते थे, जबकि अब वे पीड़ा सह रहे हैं।

हमें यह समझना चाहिए कि जो विश्वासी परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं, उन्हें परमेश्वर की कृपा प्राप्त होती है, और परमेश्वर — इसे कैसे कहूँ — 'निस्संदेह' इन कठिन समयों में उनकी मदद करते हैं। मैंने सुना है कि अमेरिका में एक नई बीमारी आई है।[77] जो लोग अप्राकृतिक, पापी जीवन जीते हैं, उनमें से कई इससे संक्रमित होकर मर जाते हैं। और अब मुझे पता चला है कि यह बीमारी यहाँ भी आई है। देखिए, लोगों को नष्ट करने वाला ईश्वर नहीं है — लोग स्वयं अपनी ही प्रजाति का संहार कर रहे हैं, स्वयं को नष्ट कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में, उन्हें दंड देने वाला ईश्वर नहीं है, बल्कि अपने पापी जीवन के कारण वे स्वयं पर दंड ला रहे हैं। और यह स्पष्ट है कि जिन लोगों के जीवन का कोई अर्थ नहीं है, वे छंटनी के दायरे में आ रहे हैं।

— गेरोन्डा, वे कैंसर का इलाज क्यों नहीं ढूंढ पा रहे हैं? क्या ईश्वर ऐसा नहीं होने दे रहे हैं, या लोग स्वयं दैवीय सहायता के लिए पुकारने में विफल हो रहे हैं?

— समस्या यह है कि भले ही कैंसर का इलाज खोज लिया जाए, कोई दूसरी बीमारी आ जाएगी। पहले तपेदिक थी — तपेदिक का इलाज खोज लिया गया — फिर कैंसर आया। और अगर ईश्वर हमें कैंसर पर काबू पाने में मदद करता है, तो कोई और बीमारी आ जाएगी। लोग स्वयं नई बीमारियों के उदय का कारण बनेंगे, और इसका कोई अंत नहीं होगा।

ईश्वर जो कुछ भी अनुमति देते हैं, वह मानव जाति के भले के लिए होता है

— गेरोन्डा, ईश्वर कुछ दुर्भाग्य क्यों होने देता है?

— इसके कई कारण हो सकते हैं। कुछ मामलों में, ईश्वर किसी बुराई को इसलिए होने देता है ताकि उससे कुछ बेहतर निकल सके; दूसरों में, 'शैक्षिक' उद्देश्यों के लिए। कुछ को उनका उचित प्रतिफल मिलता है, जबकि अन्य अपने पापों का प्रायश्चित करते हैं — कुछ भी बर्बाद नहीं होता। जान लो कि ईश्वर जो कुछ भी अनुमति देता है, वह मानवता के प्रति प्रेम से ही होता है, यहाँ तक कि, उदाहरण के लिए, लोगों की मृत्यु भी। क्योंकि ईश्वर 'दयालु' है। याद करो कि नबी एलियाह ने कितनों को मौत की सज़ा दी थी?[78] Baal के तीन सौ पुरोहित! उन्होंने उनसे कहा: 'प्रार्थना करो, और मैं भी प्रार्थना करूँगा।' 'जिसकी आग अपने आप जल उठे, वही सच्चा ईश्वर है।' तब बाअल के पुरोहित चिल्लाने लगे: 'हमारी सुनो, हमारे ईश्वर बाअल, हमारी सुनो!' कोई उत्तर नहीं आया। 'तुम्हारा ईश्वर,' नबी एलियाह ने उनसे कहा, 'किसी और काम में व्यस्त है और तुम्हें सुन नहीं सकता।' 'ज़रा ज़ोर से चिल्लाओ!' वे चिल्लाते रहे और, अपनी प्रथा के अनुसार, उन्होंने दर्द से अपनी चीखें और तेज़ करने और बालगो से सुनाए जाने के लिए चाकुओं से अपने शरीर को चीर लिया। अंत में, जब उन्हें कुछ भी हासिल नहीं हुआ, तो नबी

---

[76] देखें 4 राजा 24 और बाद के।

[77] एल्डर एड्स का उल्लेख कर रहे हैं (नवंबर 1984 में कहा गया)

[78] देखें 3 राजा 18:17–40।

एलियाह ने कहा, 'मेरी लकड़ी को भीगने के लिए पानी डालो,' फिर उनसे कहा, 'इसे तीन बार करो।' उन्होंने लकड़ी और बलिदान पर पानी डाला—एक बार, फिर से , और फिर से ! उन्होंने इतना पानी डाला कि लकड़ी गीली हो गई और पानी वेदी के चारों ओर फैल गया। जैसे ही भविष्यवक्ता एलिय ने प्रार्थना की, स्वर्ग से आग बरसी और बलिदान के लिए वेदी पर रखी गई हर चीज़ को—खुद वेदी के साथ ही—भस्म कर दिया! 'पुजारियों को पकड़ो ,' नबी ने लोगों से कहा, 'क्योंकि वे लोगों को मूर्तिपूजा की ओर भटका रहे हैं। ' और फिर उन्होंने उन सभी झूठे नबियों को मार डाला।

बहुत से लोग कहते हैं : 'मुझे माफ करें , लेकिन नबी एलिय ने इतने सारे लोगों को कैसे मार डाला होगा?' ईश्वर में कोई क्रूरता नहीं है , और न ही नबी में कोई क्रूरता थी। हालाँकि , उस समय तक मूर्तिपूजक पुरोहित पहले ही पूरे राष्ट्र को गुमराह कर चुके थे। मामला उस हद तक पहुँच गया था जहाँ नबी को यह कहने के लिए मजबूर होना पड़ा कि वह अकेला रह गया था! बस इसके बारे में सोचिए! लेकिन , इसके अलावा, मूर्तिपूजक पुरोहितों को पैगंबर एलिय की तलवार से , जिसने उनके दुख को समाप्त किया, उससे अधिक अपने ही घावों से पीड़ा हुई। आत्म -यातना से उनका दर्द अधिक गहरा था। देखिए : ईश्वर जो कुछ भी अनुमति देता है , वह मानवता के प्रति प्रेम से होता है , जबकि जो घाव उन्होंने खुद को दिए, वे उनके लिए अत्यंत पीड़ादायक थे।

— और, गेरोन्डा , पुराने नियम में ईश्वर की सज़ा इतनी तेज़ी से क्यों आई?

— पुराने नियम के लोग उस भाषा, उस कानून को समझते थे। ईश्वर तब भी वही थे जो अब हैं , लेकिन पुराने नियम का कानून उस समय के लोगों के लिए था, क्योंकि वे इसे किसी अन्य तरीके से समझ नहीं सकते थे। पुराने नियम के कानून को आपके लिए क्रूर या सुसमाचार से अलग न लगने दें। उस युग के लिए, वह कानून लाभदायक था। कानून कठोर नहीं था; वह पीढ़ी कठोर थी। आज के लोग, बेशक , और भी बड़े अत्याचार कर सकते हैं , लेकिन कम से कम अब वे इसे समझने में सक्षम हैं। आजकल, बस एक दीपक के टिमटिमाने भर से ही लोग विस्मित हो जाते हैं ! लेकिन उन दिनों , ईश्वर हर तरह की चीजें करते थे ! इस पर विचार करें : उन्होंने इस्राएलियों को मिस्र से बाहर निकालने के लिए फिरौन पर दस विपत्तियाँ लाईं ; उन्होंने लाल सागर को फाड़ दिया ताकि वे उसमें से होकर गुज़र सकें। दिन में उन्होंने उन्हें तपती धूप से बचाने के लिए एक बादल दिया, और रात में मार्गदर्शन के लिए एक अग्नि स्तंभ दिया। और इन सभी चमत्कारों के बाद, वे इतने आगे बढ़ गए कि उन्होंने अपने लिए एक सुनहरी बछड़ी बनवाने की मांग की और उसे ईश्वर के रूप में पूजने लगे ![79] आज के लोग लाखों में से एक बार भी यह नहीं कहेंगे कि कोई बछड़ी उन्हें प्रतिज्ञात भूमि तक ले जा सकती है।

आज, ईश्वर को अंतिम स्थान पर धकेल दिया गया है

सदैव कल्याणकारी ईश्वर हम पर अपनी प्रचुर कृपा बरसाता है। आइए हम कृतघ्न न बनें और न ही उसके क्रोध को भड़काएँ , क्योंकि 'अवज्ञा के पुत्रों पर ईश्वर का क्रोध आने वाला है। '[80] आइए हम स्वयं ऐसे पुत्र न बनें। हमारे युग के लोगों ने न तो युद्ध का अनुभव किया है और न ही अकाल का। वे कहते हैं , 'और हमें ईश्वर की भी कोई ज़रूरत नहीं है। ' उनके पास सब कुछ है और इसलिए वे किसी भी चीज़ की कद्र नहीं करते। हालाँकि , यदि कठिन समय आता है —अकाल या कुछ इसी तरह की—और उनके पास खाने के लिए कुछ नहीं होता, तो वे एक साधारण रोटी, साधारण जैम , और उन सभी चीज़ों का मूल्य सचमुच समझेंगे जिनसे वे तब वंचित होंगे।

---

[79] निर्गमन 32:1–6 देखें।

[80] इफिसियों 5:6।

यदि हम ईश्वर की महिमा नहीं करते हैं, तो वह हमारे रास्ते में कोई परीक्षा आने देता है — ताकि हम अपनी चीज़ों की कद्र कर सकें। लेकिन अगर हम अपनी चीज़ों की कद्र करते हैं, तो ईश्वर हमें किसी भी बुराई से नहीं आने देता।

पहले के दिनों में, जब ये सारी सुविधाएँ नहीं थीं, जब विज्ञान ने अभी तक इतनी बड़ी प्रगति नहीं की थी, तब लोगों को अपनी सभी कठिनाइयों में परमेश्वर की ओर मुड़ना पड़ता था, और परमेश्वर उनकी मदद करता था। लेकिन अब जब विज्ञान ने बड़ी सफलताएँ हासिल कर ली हैं, तो परमेश्वर को पृष्ठभूमि में धकेला जा रहा है। आजकल, लोग ईश्वर के बिना जीवन जीते हैं, इस-उस चीज़ की योजनाएँ बनाते हैं, अपनी आशाएँ अग्निशिमन सेवा, बोरहोल, और हर तरह की चीज़ों पर लगाते हैं ... लेकिन ईश्वर के बिना लोग क्या कर सकते हैं? वे केवल अपने ऊपर ईश्वर का क्रोध लाएँगे। आप देखिए मामला क्या है: जब बारिश नहीं होती, तो लोग यह नहीं कहते, 'आओ ईश्वर से प्रार्थना करें,' बल्कि कहते हैं, 'आओ कुएँ खोदें।' समस्या यह है कि, इन सभी तकनीकी उन्नतियों के कारण, इस तरह की सोच केवल अविश्वासियों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि विश्वासियों में भी है — और वे धीरे-धीरे ईश्वर की शक्ति को भूलने लगे हैं। सौभाग्य से, ईश्वर हमारे प्रति धैर्यवान हैं। लेकिन लोगों को यह एहसास भी नहीं होता कि ईश्वर उनकी देखभाल कर रहे हैं।

एक बार, कुछ लोग मेरे पास आए और कहने लगे: 'हमें ईश्वर की ज़रूरत नहीं है: हमारे पास आर्टेशियन कुएँ हैं।' और यह उस समय हो रहा था जब पहले से कहीं ज़्यादा, हमें ईश्वर से एक सच्चा चमत्कार करने के लिए कहना ज़रूरी है — क्योंकि लोगों ने अपने ही हाथों के कामों से प्रकृति को पहले ही विकृत कर दिया है। एक बार मैं बादलों को देख रहा था—हवा उन्हें इधर-उधर ले जा रही थी; वे एक जगह इकट्ठा होते, फिर दूसरी जगह बह जाते, फिर ऊपर उठते, फिर नीचे गिर जाते ... हवा चलने लगती है और बारिश के बादलों को बिखेरने लगती है, और लोग यह कहने के बजाय कि, 'अब उन्हें रोकने के लिए ईश्वर को एक सच्चा चमत्कार करना होगा,' कहते हैं, 'हमें ईश्वर की ज़रूरत नहीं है।' सौभाग्य से, ईश्वर हमारे शब्दों को गंभीरता से नहीं लेते; वरना हम तो बड़ी मुश्किल में पड़ जाते।

पानी की तलाश में लोग 100–150 मीटर की गहराई तक आर्टेशियन कुएँ खोद रहे हैं, लेकिन उन्हें कोई पानी नहीं मिल रहा। नाफ्प्लियो [81] में 180 मीटर की गहराई तक एक कुआँ खोदा गया — और ताजे पानी के बजाय उन्हें समुद्र का पानी मिला। अन्य लोगों ने एलेनोस नदी[82] को एथेंस तक मोड़ने का निर्णय लिया है। लेकिन इसे एथेंस तक मोड़ने में दस साल का काम लगेगा और भारी लागत आएगी, और तब भी यह पानी अंततः समाप्त हो जाएगा। लोग यह नहीं कहते, 'हमने पाप किया है।' हाल ही में, सूखे के दौरान, एक राजनेता [83] कुछ दूरदराज के गाँव में पहुँचे और निवासियों को बताया कि उनके गाँव में एक सीवेज उपचार प्रणाली लगाई जाएगी — ताकि उनके पास पीने के लिए पानी हो। और उन्होंने वास्तव में इस योजना को कुछ असाधारण के रूप में लिया! फिर भी ऐसे विचारों को सोचना भी अश्लील है —! बस देखिए कि लोग किस हद तक पहुँच गए हैं — अपना ही पेशाब पी रहे हैं, मेरी भाषा के लिए क्षमा करें! अगर ऐसा किसी बड़े शहर में होता, जहाँ लोग [सच्चे] रास्ते से भटक गए हैं, तो ठीक है, कम से कम इसके लिए कोई बहाना तो होता, क्योंकि शहर में वे सांसारिक तरीकों में बह गए हैं। लेकिन जब किसी दूर-दराज के गाँव के निवासियों को अपना ही पेशाब शुद्ध करके पीने का समाधान दिया जाता है, और वे (ईश्वर की ओर दृष्टि मोड़ने, एक ही शब्द – 'मैंने पाप किया है' – कहने और उससे जल प्राप्त करने के बजाय) इस प्रस्ताव को एक गंभीर कार्य मानते हैं – यह भयानक है।

और पवित्र पर्वत पर एक मठ में, उन्होंने चीड़ के पेड़ लगाने और फिर उन्हें कागज उद्योग को बेचने का विचार निकाला। और ईश्वर ने उन्हें दंड दिया — उनके द्वारा लगाए गए सभी पेड़ सूख गए। अरे मेरे भाई, आखिर पवित्र पर्वत नैपकिन और टॉयलेट पेपर बनाने वाला कैसे बन जाएगा? क्या तुम्हें एहसास है कि क्या हो रहा है? तो वे पेड़ लगाकर मेहनत करते रहे, और जो कुछ भी उन्होंने लगाया वह सब सूख गया। ईश्वर का प्रकोप!...

— गेरोना, क्या उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ?

---

[81] नाफ्प्लियोन – पेलोपोनेस (दक्षिणी ग्रीस) में एक शहर और बंदरगाह। – अनुवादक की टिप्पणी।

[82] एलेनोस – मध्य ग्रीस में एक नदी। – अनुवादक की टिप्पणी।

[83] नवंबर 1990 में दिया गया।

— आह, बात तो यही है —उन्होंने नहीं समझा! उसके बाद, उन्होंने जर्मनी से ड्रलिगि रगि मंगवाए ताकगिहराई से पानी पंप कर सकें। परणिामस्वरूप , पहले से जो पानी था वह भी गायब हो गया। देखो , अगर आध्यात्मकि संवेदनशीलता खो जाए तो चीजों के प्रतिभाड़े का दृष्टकिोण कहाँ तक ले जा सकता है ! इसीलएि मठवासी जीवन से श्रद्धा धीरे -धीरे गायब हो रही है। वे यह नहीं समझते कि अगर बारशि नहीं होगी, तो कुछ भी काम नहीं आएगा — भंडारण में बचा हुआ पानी भी सूख जाएगा। लोग केवल तर्क पर भरोसा करते हैं , और ईश्वर को आखरिी जगह पर धकेल देते हैं।

पुरानी वाचा में ऐसी ही एक घटना का वर्णन मलिता है। [84] सीरयिाई लोगों द्वारा सामरयिा की घेराबंदी के दौरान, शहर में पानी तक खत्म हो गया था। एक भयंकर वपित्तिआई: अकाल पड़ा , जानवर मर गए, और माताएँ अपने ही बच्चों को खाने की स्थतिि तक पहुँच गईं। नबी एलशिा राजा योराम के व्यवस्थापक के पास गए और उससे कहा, 'जानवर मर गए हैं , लोग भूख से मर रहे हैं , लेकनि ईश्वर हमें अपनी मदद भेजेंगे। 'व्यवस्थापक ने हर चीज़ को तार्ककि दृष्टकिोण से देखा। 'वह कैसे मदद करेंगे ?' उसने नबी से पूछा। 'क्या वह इसे स्वर्ग से भेजेगा , शायद?' 'कल,' नबी ने उत्तर दयिा, 'ईश्वर हमें मदद भेजेगा , लेकनि तुम इसमें आनंदति नहीं हो पाओगे। ' और वास्तव में , ठीक अगले ही दनि, ईश्वर ने शत्रु शविरि में एक भयंकर दहशत फैला दी। सीरयिाई लोगों ने घोड़ों की नालों की ठक-ठक और रथों की खड़खड़ाहट सुनी ; उनके कान गूंज उठे , और उन्होंने सोचा कि मिस्रिवासी इस्राएलयिों की मदद के लिए आ गए हैं। वे भाग खड़े हुए , और शविरि में अपनी सारी संपत्तिि —तंबू , राशन, हथयिार—छोड़ गए। और जब वे अपने देश पहुँचे , तो परीक्षा करने वाले ने उनके बीच इतना भयंकर भ्रम फैला दयिा कि एक लाख अस्सी हजार पुरुषों ने एक-दूसरे को मार डाला। इस बीच, सामरयिा के फाटकों पर बैठे चार कोढ़ी आपस में कहने लगे : 'क्या हम शत्रुओं के शविरि में न जाएँ —शायद हमें कुछ भोजन मलि जाए? आखरिकार, हमें तो मरना ही है , चाहे कसिी भी तरह से। ' वे एक तंबू के पास गए – वहाँ कोई नहीं था। वे दूसरे के पास गए – वहाँ भी कोई नहीं था! एक भी दुश्मन नजर नहीं आया! उन्होंने खाना और सामान इकट्ठा कयिा – उन्होंने पूरे बोरे भर लिए। फरि वे शहर लौटे और इस्राएलयिों को बताया कि दुश्मन ने घेराबंदी हटा ली है। लेकनि इस्राएलयिों ने फैसला कयिा कि यह एक सैन्य चाल है। उन्होंने कहा, "दुश्मन हमसे डरकर छपि गए हैं , ताकि हम शहर के द्वार खोलें और वे शहर में प्रवेश कर सकें। " तब एक सेनापतिि ने सुझाव दयिा: "हमारे पास पाँच घोड़े बचे हैं। शायद हमें कुछ सैनकिों को यह देखने के लिए टोही पर भेजना चाहिए कि क्या हो रहा है ?" सैनकि अलग-अलग दशिाओं में नकिल पड़े और, लौटने पर, उन्होंने बताया: "दुश्मन घबराहट में भाग गए, और अपनी सारी चीजें वहीं छोड़ गए।" फरि सभी इस्राएली शहर के द्वारों पर शहर छोड़ने और दुश्मन के शविरि से भोजन और वभिन्नि सामान इकट्ठा करने के लिए दौड़ पड़े। इस बीच, राज्यपाल स्वयं शहर के द्वारों पर खड़े थे , वहाँ व्यवस्था बहाल करने की कोशशि कर रहे थे। और इस प्रकार , फाटकों से भागती भीड़ ने उसे रौंद डाला। सब कुछ ठीक वैसा ही हुआ जैसा कि नबी एलीशा ने भवष्यिवाणी की थी: राज्यपाल ने ईश्वर की मदद देखी , लेकनि उसे इसमें आनंद मनाने का कोई मौका नहीं मलिा। क्या आप देखते हैं कि ईश्वर ने सब कुछ कैसे व्यवस्थति कयिा है ?

---

[84] देखें 4 राजा 7।

ईश्वर दुनिया पर दया करे और हमें बारिश भेजे

परमेश्वर ने कितनी बुद्धिमानी से सब कुछ व्यवस्थित किया है ! बर्फ पिघलती है — झरने भर जाते हैं। लेकिन अभी[85] — न तो बर्फ है और न ही बारिश। इस सब का क्या परिणाम होगा? लोग क्या पिएंगे ? परमेश्वर दुनिया पर दया करें , हमसे प्रसन्न हों और बारिश भेजें। क्योंकि अगर सूखा जारी रहा, तो पेड़ों की पत्तियाँ भी धीरे -धीरे मुरझा जाएँगी। जैतून के पेड़ों पर न तो कोई हरा फल दिखाई देगा , और न ही एक भी हरी पत्ती। कोई भी व्यक्ति चाहे कुछ भी बोए, अगर ईश्वर ऊपर से पवित्र जल—अर्थात वर्षा —नहीं बरसाएगा, तो जो कुछ भी लगाया गया है , वह सब मुरझा जाएगा। वर्षा ही पवित्र जल है।

गरीब लोग – पानी की प्रचुरता के आदी हो चुके वे पानी की कमी के समय आखिर क्या करेंगे ? ईश्वर पापों के कारण पानी नहीं रोकते , लेकिन एक आम इंसान के नजरिए से भी सोचा जा सकता है : जब लोग पानी को इतनी बेदर्दी से बर्बाद करेंगे तो पर्याप्त पानी कैसे हो सकता है ? मैं तो बस यह ही सोच सकता हूँ कि शहरों में क्या होगा! आखिरकार, सिर्फ़ एक शौचालय की टंकी में ही पानी का एक पूरा बड़ा डिब्बा लगता है। शहर कीड़े -मकोड़ों से भर जाएँगे ; हैज़ा फैल जाएगा। लोग मरेंगे , बिना दफ़नाए पड़े रहेंगे , जबकि उनके शवों पर किसी तरह का कीटाणुनाशक पाउडर छिड़का जाएगा। सौभाग्य से , ईश्वर ने अभी तक पूरी तरह से दुनिया को नहीं छोड़ा है और अभी भी इसकी परवाह करते हैं।

हम प्रलयकारी समय में जी रहे हैं। आपको क्या लगता है कि हिम साल-दर-साल जो सूखा और बारिश की कमी झेल रहे हैं , वह क्या है ? क्या पहले कभी वर्तमान जैसी सूखा पड़ने की घटना हुई है ? यहाँ चाल्किडिकी में भी नदी सूख गई है , मछलियाँ मर गई हैं , और पूरे इलाके में एक भयानक बदबू फैल गई है। और थ्रेसोनीकी में , पानी की समस्या गंभीर हो गई है। लेक मैराथन [86] में , जल स्तर काफी गिर गया है , और सूखी ज़मीन के धब्बे पहले से ही दिखाई दे रहे हैं। पेनियस [87] में भी जल स्तर गिर गया है। एवरोस[88] में पहले कम से कम थोड़ा पानी होता था, लेकिन ऊपर की ओर बुल्गारियाई लोगों ने बांध बना दिया है , और यह पूरी तरह से सूख गया है। अगर कोई परेशानी होती है , तो टैंक आसानी से नदी पार कर जाएंगे। और साइप्रस में — अगर इस साल फिर से बारिश नहीं हुई , तो पानी की समस्या बहुत गंभीर हो जाएगी। और क्या बस इतना ही है ? और भी बहुत कुछ है ... पेड़ — कुछ सूख रहे हैं , दूसरों को बीमारी ने घेर लिया है ... लोग बीमार पड़ रहे हैं और मर रहे हैं। अगर लोग पश्चाताप नहीं करते हैं , तो हम किस तरह की बारिश की उम्मीद कर सकते हैं ? क्या ईश्वर इसे भी देंगे ? लेकिन क्या आप जानते हैं कि जब आप ईश्वर में अपना विश्वास रखते हैं तो सब कुछ कैसे बदल जाता है ? ईश्वर को अपना सहयोगी बनाना — क्या यह कोई मामूली बात है ? ईश्वर के लिए कोई भी स्थिति असंभव नहीं है ; किसी भी स्थिति से बाहर निकलने का रास्ता खोजना उनके लिए मुश्किल नहीं है। ईश्वर के लिए सब कुछ सरल है। वह अलौकिक के लिए अधिक शक्ति और प्राकृतिक के लिए कम शक्ति का उपयोग नहीं करते ; वह हर चीज़ पर एक ही शक्ति लागू करते हैं। जब तक कोई व्यक्ति उनसे चिपका रहता है — यही सबसे ज़्यादा मायने रखता है।

क्या आप बारिश के लिए प्रार्थना करते हैं , या यह मामला आपकी चिंता का विषय नहीं है ? अब लोगों के लिए ज़मीन जोतने और बोआई शुरू करने का बिल्कुल सही समय है। खेतों में पहले ही

---

[85] गंभीर सूखे के दौरान नवंबर 1990 में दिया गया।

[86] दक्षिण -पश्चिमी ग्रीस में एक झील – एथेंस के जल आपूर्ति का स्रोत। – अनुवादक की टिप्पणी।

[87] थेस्साली में एक नदी। – अनुवादक की टिप्पणी।

[88] एवरोस उत्तरी ग्रीस में एक नदी है (बुल्गारिया में इसे मारित्सा के नाम से जाना जाता है)। – अनुवादक की टिप्पणी।

बोआई हो जानी चाहिए थी, लेकिन लोग अभी तक उन्हें जोत भी नहीं पाए हैं। [89] यह सूखा ईश्वर की ओर से एक परीक्षा है। और ऐसी परीक्षाओं के सामने प्रार्थना करना एक भिक्षु का कर्तव्य है। मैं यह तथ्य नहीं छिपाऊँगा कि मैं आपसे असंतुष्ट हूँ। पिछली सूखे के दौरान, जब बारिश की कमी के कारण लोग गेहूं को चारे के लिए काटने पर मजबूर थे, तब आपने प्रार्थना के लिए एक उंगली भी नहीं उठाई। क्यों? क्या इसलिए कि आप स्वयं होज़ से अपने सब्जी के बगीचे को पानी दे रहे हैं? यह आखिरी बार हो — आपको लोगों की पीड़ा महसूस करनी चाहिए। जब आप सुनो कि क्या हो रहा है, तो उसके लिए प्रार्थना करो। और जो हो रहा है उसके बारे में मुझे लिखना। तुम्हारी परीक्षाएँ आने वाली हैं। अगर तुम उनमें पास हो जाओ — यानी, अगर बारिश हो जाए — तो मैं तुम्हें प्रार्थना में अपना साथी बना लूँगा। और ईश्वर की कृपा से हमें जो कुछ भी मिलेगा, हम उसे आपस में बाँटेंगे।

जब मैं बारिश के लिए प्रार्थना कर रहा होता हूँ और आकाश में एक भी बादल दिखाई देता है, तो मैं उसे भेजने के लिए ईश्वर की स्तुति करता हूँ — भले ही बारिश न हो। और मेरा अंतकरण मुझे फटकारता है,, कि मुझमें कई आध्यात्मिक बादल हैं जो ईश्वर के बादलों को भगा देते हैं। यदि हम विनम्रतापूर्वक ईश्वर की दया की याचना करें, तो ईश्वर सहायता करेंगे। सूखे के दौरान एक विनम्र व्यक्ति की प्रार्थना वर्षा लाने वाले बादलों को आकर्षित करती है। आइए हम यह भी प्रार्थना करें कि ईश्वर द्वारा भेजी गई वर्षा का एक आध्यात्मिक प्रभाव हो, ताकि यह उस आध्यात्मिक अग्नि को बुझा सके जो शैतान की दुष्टता से दुनिया में भड़क रही है और लोगों की आत्माओं को झुलसा रही है।

मुझे यह सुनकर हर्ष हुआ कि कुछ लोग कह रहे थे: 'हम अयोग्य हैं, लेकिन ईश्वर ने एक बार फिर हम पर दया की है: उन्होंने हमें थोड़ी सी बारिश और बर्फ दी है।' यदि हम ऐसे विनम्र विचार रखते हैं, तो ईश्वर हमें और अधिक देंगे। कम से कम, अपनी अयोग्यता को स्वीकार करना ही पश्चाताप है। सौभाग्य से, अभी भी थोड़ा सा खमीर बचा है। ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह लोगों के मन में पेंच कस दे। मैं देख सकता हूँ कि उच्च पदों पर बैठे कुछ लोग अनुकूल हैं। वे समझते हैं कि हम किस ओर जा रहे हैं।

आइए हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि वे संसार को पश्चाताप की अनुग्रह दें

हे, काश हम ईश्वर की दीर्घ सहनशीलता को समझ पाते! नूह की कश्ती बनाने में सौ साल लगे। [90] क्या आपको लगता है कि ईश्वर जल्दी से कोई कश्ती नहीं बना सकते थे? बेशक वे बना सकते थे, लेकिन उन्होंने नूह को सौ साल तक कष्ट सहने दिया ताकि बाकी लोग भी यह समझ सकें कि उनका क्या इंतज़ार कर रहा है और वे पश्चाताप कर सकें। "देखो," नूह लोगों से कहता, "एक बाढ़ आने वाली है! पश्चाताप करो!" लेकिन वे बस उस पर हँसते थे। "वह किस तरह का डिब्बा बना रहा है?" नूह के समकालीन लोग उपहास उड़ाते, और पहले की तरह ही अपना काम करते रहे। और आज भी, ईश्वर पूरी दुनिया को दो मिनट में हिला सकता है और उसे बदलने पर मजबूर कर सकता है — ताकि हर कोई विश्वासी बन जाए, या यहाँ तक कि "अति-विश्वासी"। कैसे? खैर, इस तरह: अगर वह 'भूकंप' का स्विच ऑन कर दे और चुपचाप एम्पलीफायर का बटन घुमाना शुरू कर दे: पहले 'रिक्टर पैमाने पर 5' पर, फिर '6' पर, फिर '7' पर... 'आठ' पर, ऊँची-ऊँची इमारतें नशे में धुत लोगों की तरह डोलने और एक-दूसरे से टकराने लगेंगी। 'दस' पर, हर कोई कहेगा: 'हमने पाप किया है! हम आपसे विनती करते हैं, हमें बचा लीजिए!' और शायद लोग भिक्षु बनने का व्रत भी ले लेंगे — उनमें से हर एक! लेकिन जैसे ही भूकंप खत्म होगा—भले ही लोग अभी भी थोड़ा झूम रहे होंगे, वे अपने पैरों पर खड़े रहने में सक्षम होंगे —वे बार और डिस्को में वापस भागेंगे! क्योंकि ईश्वर की ओर ऐसे मुड़ने में कोई सच्चा पश्चाताप नहीं होगा; वे केवल बुराई से बचने के लिए सतही तौर पर पश्चाताप के शब्द बोलेंगे।

— गेरोन्डा, मान लीजिए कि एक प्राकृतिक आपदा ईश्वर के क्रोध के रूप में आती है और धर्मी लोग दया के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं —क्या ईश्वर उनकी प्रार्थनाएँ सुनता है?

---

[89] क्योंकि मिट्टी बहुत सूखी है। – अनुवादक की टिप्पणी।

[90] उत्पत्ति 5:32 और आगे देखें।

— क्या आप जानते हैं कि यहाँ समस्या क्या है ? लोगों में पश्चाताप नहीं है , और इसीलिए ईश्वर धर्मात्माओं की प्रार्थनाएँ नहीं सुनते। यदि ईश्वर को क्रोधित करने के बाद, हम अपना दोष स्वीकार करते हैं , तो यह एक बिल्कुल अलग बात है — तब ईश्वर हमसे प्रसन्न होते हैं और हमारी मदद करते हैं। लेकिन अगर कोई व्यक्ति यह स्वीकार नहीं करता कि उसने ईश्वर को क्रोधित किया है और ऐसा व्यवहार करता है जैसे कुछ हुआ ही नहीं , तो ईश्वर धर्मात्माओं की प्रार्थनाएँ कैसे सुन सकता है ? किसी व्यक्ति को क्षमा करने के लिए, जिसने कोई अपराध किया है , उस व्यक्ति को यह एहसास होना चाहिए कि उसने वह अपराध किया है। इसके अलावा, यदि आध्यात्मिक लोग अपराध करते हैं , तो उनके लिए कोई परिस्थिति-सौम्यता नहीं होती। 'हमारे पापों और मानव अज्ञान के लिए'[91] — जैसा कि एक प्रार्थना में कहा गया है। यदि दुर्भाग्यपूर्ण सामान्य लोगों के अपराध 'अज्ञानता ' हैं , तो आध्यात्मिक लोगों के अपराध पहले से ही 'पाप' हैं। इसलिए, जब आध्यात्मिक लोग कोई अपराध करते हैं , तो यह कोई हँसी -मज़ाक की बात नहीं है। सामान्य लोगों के लिए परिस्थितियाँ हल्की होती हैं।

इस वर्ष ,[92] , जब डॉर्मिशन फास्ट के दौरान पवित्र पर्वत पर आग लगी, तो कुछ भयानक घटित हो रहा था। सभी सर्वश्रेष्ठ अग्निशामक अथोस पर इकट्ठा हो गए, लेकिन उनमें से कोई भी कुछ नहीं कर सका; वे बस लपटों को भड़कते हुए देख सकते थे। अग्निशमन सेवा का ''वमिान आग को और भी तीव्र और हवा देने वाला ही प्रतीत हो रहा था। एक मठ को आग के फैलाव को रोकने के लिए विशेष अग्नि-रोधक बाधाओं से घेर लिया गया था, लेकिन आग — सभी अग्नि-रोधक बाधाओं को चुनौती देते हुए — मठ के अंदर — आर्कोंडारिकी में — कूद गई — जहाँ किसी को इसकी उम्मीद नहीं थी। पवित्र पर्वत पंद्रह दिनों तक जलता रहा – और 15 अगस्त [93] को आग अपने आप बुझ गई। कुछ लोगों ने कहा: 'ईश्वर की माता इसे क्यों नहीं बुझातीं ?' इसका मतलब है कि हम उस बिंदु पर पहुँच गए हैं जहाँ हम ईश्वर के नाम का अपमान करने लगे हैं। लेकिन जब, छह दिन बाद, आग फिर से लगी—इस बार पवित्र पर्वत के एक अलग हिस्से में —तो तुरंत बारिश होने लगी और सब कुछ बुझ गया। एक आग बुझ गई, लेकिन दूसरी नहीं। क्या यह वास्तव में स्पष्ट नहीं है कि क्यों ?

कुछ लोग, जो काम कर रहे आध्यात्मिक नियमों से अनजान हैं , वे पीड़ा के साथ प्रार्थना करते हैं लेकिन उनकी प्रार्थना सुनी नहीं जाती, क्योंकि उन पर आई यह विपत्ति ईश्वर का क्रोध है। हालाँकि, अन्य लोग आपदा आने पर बिल्कुल भी प्रार्थना नहीं करते —एक भी माला नहीं जपते —क्योंकि वे ईश्वर के क्रोध के न्याय को पहचानते हैं , जिसका उद्देश्य लोगों को होश में लाना है। ईश्वर हम संन्यासियों को और अधिक ज्ञान प्रदान करें , क्योंकि हम अधिकांशतः 'पवित्र मूर्ख ' ([94]) हैं , और हमारे दीपक पानी से भरे हुए हैं —केवल बत्ती ही थोड़ी सी तेल में भीगी हुई है। फिर भी सांसारिक लोग हमसे यह अपेक्षा करते हैं कि हम उनका मार्ग प्रकाशित करें ताकि वे ठोकर न खाएं !

इसलिए हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि वे संसार को पश्चाताप की कृपा दें , और हमें उनके धार्मिक क्रोध से बचाएँ। ईश्वर का आने वाला क्रोध पश्चाताप और ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के अलावा टाला नहीं जा सकता।

---

[91] संत जॉन क्रिसोस्टोम की दैवीय लिटिर्जी के दौरान महान प्रवेश पर अर्पणों की प्रार्थना।

[92] नवंबर 1990 में किया गया।

[93] पुराने शैली के कैलेंडर के अनुसार , अर्थात् परमेश्वर की अतिपवित्र माता के निद्रोपवेश के ठीक उसी दिन। – अनुवादक की टिप्पणी।

[94] मत्ती 25:1–13 देखें।

भाग 2.
समकालीन संस्कृति पर

संस्कृति अच्छी -खासी बात है , लेकिन अगर इससे कोई लाभ लेना है , तो आत्मा को भी 'संस्कृत ' करना होगा।

अध्याय 1.
ईश्वर की बुद्धिमत्ता और पर्यावरण

"सारी बुद्धिमत्ता से तूने रचा है ..."[95]

— जेरोंडा , क्या हम गौरैया के घोंसलों को नष्ट कर सकते हैं ? गौरैया गंदगी फैलाती हैं , और वहाँ चिड़ियाँ इकट्ठा हो जाती हैं।

— क्या आप स्वयं एक भी छोटी गौरैया का घोंसला बना सकते हैं ? आह, ईश्वर ने केवल एक शब्द से ही कितनी सुंदरता रची है ! कितनी सामंजस्यपूर्ण विविधता! जहाँ भी आप देखें , ईश्वर की बुद्धिमत्ता और महिमा हर चीज़ में स्पष्ट है। स्वर्गीय पिंडों को देखें , तारों को — उनके दिव्य हाथ ने कितनी सादगी से उन्हें बिखेरा है ! उन्होंने उस सीसा की लकीर या स्पिरिट लेवल का उपयोग नहीं किया जो कारीगर इस्तेमाल करते हैं। और तारों भरे आकाश को निहारते समय कैसे किसी की आत्मा तरोताज़ा हो जाती है ! जबकि सुव्यवस्थित पंक्तियों में लगे सांसारिक दीयों से कोई बहुत थक जाता है। ईश्वर ने सब कुछ कितनी सामंजस्यपूर्ण तरीके से व्यवस्थित किया है ! बस मनुष्य द्वारा लगाए गए जंगलों को देखो : पेड़ सैनिकों की टुकड़ियों की तरह सैनिक पंक्तियों में खड़े हैं। और एक असली जंगल — न कि कोई कृत्रिम जंगल — एक व्यक्ति की ताकत कैसे लौटा देता है ! कुछ पौधे छोटे हैं , तो कुछ बड़े ; हर पेड़ दूसरे से अलग है , यहाँ तक कि रिंग में भी। ईश्वर की कृपा का एक छोटा सा फूल कृत्रिम कागज़ के फूलों की एक पूरी बाँह से भी अधिक कृपा रखता है। वे एक दूसरे से वैसे ही भिन्न हैं जैसे आत्मा , आत्माओं से भिन्न है। [96]

ईश्वर द्वारा रचित हर चीज़ अद्भुत है। उदाहरण के लिए मानव शरीर लें – यह अपने आप में एक पूरा उद्यम है। ईश्वर ने बुद्धिमानी से हर अंग के लिए स्थान निर्धारित किया है – हृदय , यकृत , फेफड़े। और पौधे – उन्होंने कितनी बुद्धिमानी से उन्हें व्यवस्थित किया है ![97] के दौरान हमने खरबूज़ों की पाँच स्ट्रिप्स [98] लगाईं और उन्हें पानी दिया। एक दिन, यह सोचकर कि मैं खरबूज़ों को बेहतर बनाने के लिए सही काम कर रहा हूँ , मैंने जड़ों के पास के बड़े पत्ते छाँट दिए। हालाँकि , यह पता चला कि ये बड़े पत्ते पौधों के लिए एक तरह के 'फ़िल्टर ' या 'गुर्दे ' के रूप में काम करते हैं , जो सारी कड़वाहट को सोख लेते हैं। ओह, उस समय हमारे खरबूज़े कितने स्वादिष्ट होते थे ! वे तो जीभ को जला ही देते थे !..

---

[95] भजन संहिता 103:24.

[96] ग्रीक पाठ में एक उल्लेखनीय शब्द -खेल है : διαφέρουν ὅσο διαφέρει καὶ τὸ ἄυλον ἀπὸ τὸ νάυλον (शाब्दिक रूप से : 'वे एक-दूसरे से वैसे ही भिन्न हैं जैसे अदरव्य पॉलीइथाइलीन से भिन्न है ') – अनुवादक की टिप्पणी।

[97] 1941–44 में जर्मनी , इटली और बुल्गारिया द्वारा ग्रीस पर कब्ज़ा। – अनुवादक की टिप्पणी।

[98] स्ट्रेम्मा क्षेत्रफल की एक इकाई है जो 1,000 वर्ग मीटर के बराबर होती है। – अनुवादक की टिप्पणी।

— आप सच में सब कुछ देख लेते हैं , गेरोना !...

— खैर , मैं हर चीज़ में ईश्वर को पाता हूँ ! पौधों में , जानवरों में — हर चीज़ में। और कोई आश्चर्यचकति कैसे न हो! एक नन्हा सा पक्षी यात्रा पर नकिलता है , अफ्रीका पहुँचता है , फरि — बनिा कम्पास के — लौटता है और अपना छोटा सा घोंसला ढूंढ लेता है ! लेकनि लोग — नक्शों और संकेत -चह्निों के बावजूद — अपना रास्ता खो देते हैं। और आखरिकार, पक्षी ज़मीन पर नहीं , आसमान में उड़ते हैं — इसलएि वे अपने पीछे कोई नशिान नहीं छोड़ते। वे समुद्र के ऊपर, बहुत ऊँचा उड़ते हैं ! खैर , मुझे बताइए, ज़रा , आप ज़मीन पर अपनी नशिानयिाँ कहाँ छोड़ेंगे ? और कुछ तो ऐसे छोटे -छोटे पक्षी भी हैं जो हंसों की पीठ पर बैठ जाते हैं —ठीक वैसे ही जैसे हवाई जहाज पर! असली हवाई यात्री ! समुद्र के ऊपर उड़ने वाले पक्षी कसिी द्वीप या अन्य जगह पर उतरकर आराम करते हैं। एक बार, जब मैं होली क्रॉस गाँव में रहता था, तो मैंने पूर्व से उड़कर आते हुए चरिईं देखीं , जो गौरैया जैसी थीं , बस बड़ी और अधकि सुंदर थीं। उनकी एक पूरी झुंड थी। लेकनि उनमें से चार या पाँच ने , पूरी संभावना है कि, अपनी ताकत खो दी थी और वे और उड़ नहीं सकते थे। फरि लगभग पंद्रह और पक्षी झुंड से अलग हो गए — बाकी अपने रास्ते पर आगे बढ़ते रहे — और थके हुए पक्षयिों के बगल में एक पेड़ पर बैठ गए। वे कुछ देर तक वहीं बैठे रहे , थोड़ा आराम कयिा, और फरि सभी एक साथ आकाश में उड़ान भरकर अपनी उड़ान जारी रखी। और उन्होंने सबसे पहले जो कयिा वह यह था कि वे अपनी दशिा पता करने और बाकी के साथ फरि से जुड़ने के लएि बहुत ऊँचा उड़ गए। मैं इस बात से बहुत प्रभावति हुआ कि झुंड ने थके हुए पक्षयिों को अकेला नहीं छोड़ा , बल्कि उन्हें पंद्रह और साथी दएि — एक 'सहायता समूह '।

ईश्वर ने सब कुछ कतिनी खूबसूरती से बनाया है ! बल्लिी के बच्चों को ही देखो : वे कतिने रंग -बरिंगे हैं ! और उनके कतिने प्यारे कोट हैं ! हम इंसानों को जानवरों के कोट से ईर्ष्या करनी चाहएि! खुद रानी ने भी ऐसा फर कोट नहीं पहना होगा! आप जहाँ भी देखें , आपको हर चीज़ में ईश्वर की बुद्धमिानी दखिाई देती है। और कतिनी सुंदरता हुआ करती थी, जब सब कुछ प्राकृतकि था! उस छोटे से मुर्गे को देखो —वह मौसम की परवाह कएि बनिा बाँग देता है। वह एक पैर पर खड़ा होता है , और जैसे ही वह सुन्न हो जाता है , वह 'कोक-ए-डूडल -डू !' चल्लिाता है — 'कतिने घंटे बीत गए,' वह कहता है। फरि वह दूसरी टांग पर खड़ा हो जाता है , और जब वह भी सुन्न हो जाती है —तो फरि से : 'कुक -डू -डू !' और देखएि , वह आधी रात को, सुबह तीन और छह बजे कुकड़ियाँ बाँटता है। हमेशा हर तीन घंटे पर। फरि भी उस नरमुर्गी के पास न तो कोई अलार्म घड़ी है और न ही बैटरी। और उसे घुमाकर सेट करने की भी कोई ज़रूरत नहीं है ...

आप जो कुछ भी देखते और सुनते हैं , उसे स्वर्गीय लोक से संवाद का साधन मानें। हर चीज़ आपको स्वर्ग की ओर ले जानी चाहएि। इस प्रकार , सृष्टि से , मनुष्य धीरे -धीरे स्रष्टा तक पहुँचता है। चंद्रमा पर उड़ान भरने के बाद अमेरकियिों ने तो कम से कम वहाँ एक पट्टकिा छोड़ दी थी जसि पर लखिा था: 'आकाश परमेश्वर की महमिा की घोषणा करते हैं।' [99] रूसी भी अंतरक्षि में गए हैं , लेकनि गगारनि ने कहा कि उन्होंने ईश्वर को नहीं देखा। खैर , यह बल्लिकुल सही है —आखरि आपने उन्हें देखा ही कैसे होता? आखरिकार, आप आसमान की ओर हाथ उठाकर तो नहीं उड़ रहे थे , बल्कि आपके पैर सीधे ऊपर की ओर उठे हुए थे ... और फरि, इन सब से , वे यह कहने लगते हैं : 'प्रकृति ने ब्रह्मांड की रचना की।' पूरा ब्रह्मांड ... आप इससे क्या नष्किर्ष नकिालते हैं ? खैर , यहाँ , अगर कोई पुरानी कार खराब हो जाती है , तो उसे ठीक

[99] भजन संहति 18:2।

करने के लिए मैकेनिक और विशेषज्ञों का एक पूरा झुंड इकट्ठा हो जाता है। वे सोचते हैं, वे अपनी पूरी कोशिश करते हैं — और वह भी सिर्फ एक पुरानी कार के लिए। जबकि ईश्वर, बिना किसी बिजली के, पूरे गोल धरती को घुमाता है, और न तो बैटरी खत्म होती है और न ही मोटर रुकती है। वह इसे कितनी तेज़ गति से घुमाता है —और लोगों को इसका एहसास भी नहीं होता! यह अविश्वसनीय है! अगर पृथ्वी थोड़ी भी धीमी गति से घूमे, तो लोग इधर-उधर लुढ़कते फिरेंगे। पृथ्वी इतनी [अत्यधिक] गति से घूमती है, फिर भी समुद्र का पानी बाहर नहीं छलकता, भले ही वह बहुत अधिक मात्रा में है। और तारे, जो इतने विशाल हैं, चकरा देने वाली गति से चलते हैं, फिर भी वे एक-दूसरे के संपर्क में नहीं आते; वास्तव में, वे दूर से ही दूसरे तारों को अपने पास आने नहीं देते। और मनुष्य, किसी तरह का हवाई जहाज आविष्कार करके, उस पर हैरान होता है और गर्व करता है। लेकिन जैसे ही उसका दिमाग थोड़ा सा भी भ्रमित हो जाता है, वह खुद यह महसूस किए बिना ही तरह-तरह की बकवास करने लगता है।

आज लोगों ने क्या हासिल कर लिया है?

संस्कृति एक अच्छी चीज़ है, लेकिन इसके किसी भी लाभ के लिए, आत्मा को भी 'संस्कृत' किया जाना चाहिए। अन्यथा, संस्कृति विनाश में समाप्त हो जाएगी। 'बुराई,' एटोलीया के संत कोस्मास ने कहा, 'शिक्षित लोगों से आएगी।'[100] इस तथ्य के बावजूद कि विज्ञान इतनी दूर तक उन्नत हो चुका है और इतनी बड़ी सफलताएँ हासिल कर चुका है, लोग दुनिया की मदद करने की अपनी इच्छा में ऐसा करते हैं कि वे स्वयं को न जाने बिना ही उसे नष्ट कर देते हैं। ईश्वर ने मनुष्य को अपनी समझ के अनुसार सब कुछ करने की अनुमति दी है, लेकिन ईश्वर की बात न सुनकर मनुष्य स्वयं को ही नष्ट कर रहा है। मनुष्य अपनी रचनाओं के माध्यम से स्वयं को नष्ट करता है।

20वीं सदी के लोग — उन्होंने अपनी संस्कृति और सभ्यता से क्या हासिल किया है! उन्होंने दुनिया को पागल कर दिया है, उन्होंने वायुमंडल को प्रदूषित कर दिया है, उन्होंने सूरज के नीचे की हर चीज़ को बर्बाद कर दिया है। अगर एक पहिया अपनी धुरी से उतर जाए, तो वह बेतरतीब घूमता रहता है। लोगों के साथ भी ऐसा ही है — ईश्वर की सामंजस्य की धुरी से भटक जाने के कारण, वे कष्ट भोगते हैं। पहले के दिनों में, लोग युद्ध से पीड़ित थे; आज वे सभ्यता से पीड़ित हैं। उस समय, युद्ध के कारण, लोग शहरों से गाँवों में चले गए और एक छोटे से सब्जी के खेत से अपना गुज़ारा करते थे। लेकिन अब लोग शहरों में रहने में असमर्थ होंगे और सभ्यता के आक्रमण के कारण उन्हें छोड़ देंगे। पहले, युद्ध लोगों के लिए मृत्यु लाया; अब सभ्यता उन्हें बीमारी लाती है।

— गेरोना, कैंसर इतना व्यापक क्यों हो गया है?

— चेरनोबिल और ऐसी सभी चीज़ें —क्या आपको लगता है कि वे बिना किसी निशान के गुज़र गईं? यहीं से तो यह सब शुरू होता है। लोगों को देखो —यह सब उनके अपने ही कर्मों का फल है... लोग भयानक रूप से विकृत हो गए हैं। किस युग में इतने सारे बीमार लोग थे? पुराने दिनों में, लोग ऐसे नहीं थे। लेकिन अब, मेरे पास जो भी पत्र आता है, उसमें मुझे या तो कैंसर, या मानसिक बीमारी, या स्ट्रोक, या टूटे हुए परिवारों के बारे में ही पता चलता है। कैंसर एक

---

[100] संत कोस्मास की भविष्यवाणी उन शिक्षित लोगों को संदर्भित करती है जिनमें ईश्वर का भय नहीं है। देखें: द लाइफ एंड प्रॉफेसिज़ ऑफ़ कोस्मास ऑफ़ एटोलीया। – मॉस्को, होली माउंटेन, 2007।

दुर्लभ बीमारी हुआ करती थी। आखरिकार, उस समय जीवन प्राकृतकि था। हम यहाँ इस बारे में बात नहीं कर रहे हैं कि ईश्वर ने क्या अनुमति दी थी। लोग प्राकृतकि भोजन खाते थे और उत्तम स्वास्थ्य का आनंद लेते थे। सब कुछ शुद्ध था: फल, प्याज , टमाटर। लेकनि अब तो प्राकृतकि भोजन भी लोगों को नुकसान पहुँचा रहा है। जो लोग केवल फल और सब्जयिों पर नरि्भर हैं , उन्हें और भी अधकि नुकसान होता है , क्योंकि सब कुछ दूषति है। अगर अतीत में चीजें ऐसी होतीं , तो मैं कम उम्र में ही मर गया होता, क्योंकि अपने संन्यासी जीवन के दौरान मैं वही खाता था जो सब्जी का बगीचा देता था: लीक, सलाद पत्ता ,[101] साधारण प्याज , पत्तागोभी और इसी तरह की चीजें — और मैं बलि्कुल स्वस्थ महसूस करता था। लेकनि अब — वे उर्वरक का उपयोग करते हैं , वे कीटनाशक छड़िकते हैं ... बस सोचिए — आजकल लोग क्या खाते हैं !... मानसकि बेचैनी , कृत्रमि खाद्य वकिल्प — यह सब कसिी व्यक्ति पर बीमारी लाता है। बनिा ववेक के वज्ञिान का उपयोग करके , लोग अपना ही नुकसान कर रहे हैं।

— गेरोन्डा , अतीत में लोग अपने तपस्या -बल में और स्वास्थ्य में हमसे अधकि दृढ़ क्यों थे ? क्या उनके खाने में जो वे खाते थे , उसका कोई फर्क पड़ता था?

— हाँ , क्योंकि उन दनिों भोजन शुद्ध था। मेरी राय में , यह तो कहने की बात ही नहीं है। लोग जो कुछ भी खाते थे वह पूरी तरह से पका हुआ होता था। लेकनि आजकल, फलों और सब्जयिों को खराब होने से बचाने के लिए, उन्हें कच्चा ही तोड़कर फ्रजि में रख दयिा जाता है। वे पेड़ से कच्फ़े , हरे फल तोड़ते हैं और उन्हें डब्बिों में पकने के लिए छोड़ देते हैं। अतीत में , एक बार फल पक जाने पर, वह अपने आप पेड़ से गरि जाता था या जैसे ही आप उसे हाथ से छूते , वह टहनी से टूट जाता था। बच्चे मक्खन या दूध के साथ ब्रेड खाते थे , और इससे वे स्वस्थ रहते थे। लेकनि लोग, अच्छे और पौष्टकि भोजन के साथ-साथ, अपने दमिाग का भी इस्तेमाल करते थे ; और अगर वे कसिी बीमारी से ग्रस्त हो जाते थे , तो वे बता सकते थे कयिह उनके भोजन के कारण था या नहीं। हालाँकि , आजकल भोजन अस्वाभावकि है और लोग अपने दमिाग का इस्तेमाल नहीं करते हैं।

बस आजकल लोग जो घटयिा सामान बनाते हैं , उसके बारे में सोचिए! ऊन का इस्तेमाल धीरे -धीरे बंद कयिा जा रहा है। पसीना सोखने वाली ऊनी बनयिान मलिना एक बड़ी चुनौती है। जैसे ही मैं बनयिान पहनता हूँ , मुझे तुरंत पता चल जाता है कि उसमें सथिेटकि फाइबर हैं या नहीं। अगर होते हैं , तो मैं ठीक से सांस नहीं ले पाता; मैं बहुत बेचैन हो जाता हूँ और बहुत तकलीफ होती है ! और फरि भी वे मानते हैं कि ऐसे बनयिान प्राकृतकि बनयिानों से अधकि टकिाऊ और बेहतर होते हैं। वे इसे प्रगति मानते हैं ! लेकनि क्या वे आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छे हैं ? नहीं , इसके वपिरीत, ऐसी चीजें बनाकर लोग अपने ही स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचा रहे हैं। और वे उस पर एक लेबल चपिका देते हैं जसि पर लखिा होता है : 'वर्जनि ऊन से बना!' हाँ , मुझे लगता है कि वे अपने वज्ञिापनों के लिए और भी शानदार वाक्यांश ढूंढ लेंगे — उससे भी ज्यादा शानदार! आजकल, हम भेड़ों को सरि्फ उनके मांस के लिए पालते हैं , क्योंकि हम तेल से ऊन बनाते हैं। और रेशम के कीड़े कहते हैं : 'खैर , अगर आपको हमसे बेहतर रेशम चाहिए, तो जाइए और खुद बना लीजिए!..'

लोगों का धैर्य खत्म हो गया है

— गेरोन्डा , आजकल हममें धैर्य की कमी क्यों है ?

— आज जो कुछ भी हो रहा है वह लोगों की भलाई के लिए नहीं है। अतीत में , जीवन शांतपिूर्ण था और लोग स्वयं शांतपिूर्ण थे , बहुत लचीले — सहन करने में सक्षम। आज, दुनयिा पर हावी हो गई यह सारी जल्दबाज़ी लोगों को अधीर बना रही है। पुराने दनिों में , लोग जानते थे कि वे जून के अंत में टमाटर खाना शुरू करेंगे। उनके मन में समय से पहले टमाटर खाने का वचिार भी कभी नहीं आया होता। लोग तरबूज खाने के लिए अगस्त तक इंतजार करते थे ; वे जानते थे कि अंजीर खाने का समय कब आएगा, और खरबूजे का कब। लेकनि अब क्या हो रहा है ? व्यापारी मस्रि की यात्रा करते हैं और मौसम से पहले ही वहां से टमाटर खरीद लाते हैं , जबकि टमाटर अभी पक रहे होते हैं , तब भी ग्रीस में संतरे होते हैं — जनिमें बलि्कुल वही वटिामनि होते हैं। नहीं , आप देखिए , लोग संतरे नहीं चाहते ! अरे , मेरे दोस्त , थोड़ी देर और धैर्य रखो और इस बीच कुछ और खा लो! नहीं —चाहे कुछ भी हो जाए, वे मस्रि जाएँगे और टमाटर लाएँगे। क्रीट में , उन्होंने इस स्थति पर अच्छी तरह से गौर कयिा और ग्रीनहाउस बनाना शुरू कर दयिा ताकि उनके

[101] लेट्यूस – एक प्रकार का खाद्य सलाद। – अनुवादक की टप्पिणी।

टमाटर भी जल्दी पक सकें। और इसका नतीजा यह हुआ कि पूरे ग्रीस में हर जगह ग्रीनहाउस बना दिए गए ताकि वे सर्दियों में भी टमाटर खा सकें। वे हर तरह की सब्जियों के लिए ग्रीनहाउस बनाने में अपनी हड्डी -पसली एक कर रहे हैं , ताकि साल के किसी भी समय वे प्राकृतिक मौसम का इंतज़ार किए बिना, जो कुछ भी उनका मन चाहे , मेज पर रख सकें।

कुल मिलाकर यह काफी अच्छा था। लेकिन वे इसे और भी आगे ले जा रहे हैं। शाम को टमाटर हरे होते हैं , और सुबह तक वे पहले ही दुकानों पर पहुँच जाते हैं —लाल और गोल-मटोल! मैंने इस बारे में एक मंत्री से भी दोस्ताना अंदाज में बात की। मैंने कहा, "ग्रीनहाउस एक बात है , और यह सब ठीक है। लेकिन फल, टमाटर और अन्य उपज हार्मोन का उपयोग करके उगाई जा रही है ! फल रातों -रात पक जाते हैं , लेकिन क्या उन्हें उन बेचारों की परवाह नहीं जो हार्मोनल तैयारियों के प्रति अतिसंवेदनशील होते हैं ? उन्हें बीमार पड़ने दो, है ना...?" उन्होंने जानवरों को भी बर्बाद कर दिया है। उदाहरण के लिए, मुर्गियों या बछड़ों को ही ले लो। चालीस दिन के चूजों को हार्मोन से इतना भर दिया जाता है कि उनका वजन छह महीने के बच्चों जितना हो जाता है। लोग उनका मांस खाते हैं , लेकिन उन्हें इससे क्या फायदा होता है ? गायों से अधिक दूध उत्पादन करवाने के लिए, उन्हें भी हार्मोन से भर दिया जाता है। गायें तो अधिक दूध देती हैं , लेकिन फिर उत्पादक उसे बेच नहीं पाते ! हड़तालें शुरू हो जाती हैं , दूध की कीमत गिर जाती है , इसे सड़क पर फेंक दिया जाता है , और लोग दूध पीते हैं ——जो हार्मोन से भरपूर होता है ! लेकिन अगर उन्होंने चीजों को वैसे ही रहने दिया होता जैसा ईश्वर ने चाहा था, तो सब कुछ अपने आप हो जाता और लोग शुद्ध , ताज़ा दूध पी रहे होते ! और इसके अलावा, ये इंजेक्शन सब कुछ बेस्वाद बना देते हैं। बेस्वाद खाना, बेस्वाद लोग — सब कुछ बेस्वाद हो गया है। लोगों के लिए तो ज़िंदगी का स्वाद ही खत्म हो गया है। आप जवान लड़कों से पूछें , 'तुम्हें क्या पसंद है ?' — 'कुछ नहीं ,' वे जवाब देते हैं। और वे तगड़े जवान लड़के होते हैं ! 'खैर , कम से कम मुझे बताओ कि तुम्हें क्या करना पसंद है ?' — 'कुछ नहीं। ' लोगों की हालत इस कदर हो गई है ! अपने हाथों की मेहनत से , वे सोचते हैं कि वे 'ईश्वर की गलतियों को सुधार ' सकते हैं। मुर्गियों से अंडे निकालने के लिए, वे दिन को रात में बदल देते हैं। क्या आपने ऐसी मुर्गियों के दिए हुए अंडे देखे हैं ? आखिरकार, अगर ईश्वर ने चाँद को सूरज की तरह चमकाया होता, तो लोग पागल हो गए होते। ईश्वर ने रात बनाई ताकि लोग आराम कर सकें , लेकिन देखो अब वे किस हाल में पहुँच गए हैं !

लोगों ने अपनी शांति की भावना खो दी है। ये सभी ग्रीनहाउस , सब्जी के पूरक और इसी तरह की चीज़ों ने लोगों को अधीर भी बना दिया है। पुराने दिनों में , लोग जानते थे कि एक जगह से दूसरी जगह पैदल जाने में उन्हें कुछ घंटे लगेंगे। अगर किसी के पैर मजबूत होते , तो वह थोड़ी जल्दी पहुँच जाता। फिर उन्होंने गाड़ियाँ , फिर कारें , फिर हवाई जहाज आदि का आविष्कार किया। वे हमेशा नए और तेज़ परिवहन के साधन खोजने की कोशिश करते रहते हैं। उन्होंने ऐसे हवाई जहाज बनाए हैं जो फ्रांस से अमेरिका तक तीन घंटे में उड़ सकते हैं। [102] लेकिन अगर कोई व्यक्ति इतनी तेज़ गति से एक जलवायु क्षेत्र से दूसरे में उड़ता है , तो जलवायु में अचानक बदलाव उसका स्वास्थ्य बिगाड़ देगा। यह सब एक पागल दौड़ है , एक पागल दौड़ ... जल्द ही हम उस बिंदु पर पहुँच जाएँगे जहाँ एक व्यक्ति उड़ने वाले प्रक्षेप्य में चढ़ता है , फिर — एक धमाका, एक उड़ान , एक टक्कर , एक विस्फोट — और एक चकराया हुआ यात्री जनता की

[102] एल्डर का संदर्भ 'कॉन्कॉर्ड 'जैसे लंबी दूरी के सुपरसोनिक यात्री विमानों से है।

आँखों के सामने प्रकट होता है। आप क्या उम्मीद कर रहे थे ? बात यहाँ तक पहुँचेगी। एक सच्चा पागलखाना!

उन्होंने पूरे वायुमंडल को प्रदूषित कर दिया है – यह तो एक बात है , लेकिन उनकी हड्डियाँ रास्ते में आ रही हैं

— जेरोंडा , मैंने सुना है कि वे मृतकों का दाह संस्कार करने की योजना बना रहे हैं — जैसा कि वे कहते हैं , 'स्वच्छता के कारणों से और जमीन बचाने के लिए।'

— स्वच्छता के कारण? बस यह सुनिए तो! क्या उन्हें ऐसी बातें कहते हुए शर्म नहीं आती? यह तो अलग बात है कि उन्होंने पूरा माहौल ही बर्बाद कर दिया, लेकिन हड्डियाँ , देखिए , उनकी राह में आ गईं ! लेकिन अवशेष , किसी भी बात के अलावा, धोए भी जाते हैं। और जहाँ तक 'जमीन बचाने ' की बात है —क्या पूरे ग्रीस में , उसके सभी जंगलों के साथ, कब्रिस्तानों के लिए जगह खोजना वास्तव में असंभव है ? मैंने इस सब के बारे में एक विश्वविद्यालय के प्रोफेसर से कुछ दयालु शब्द कहे। यह कैसे हो सकता है कि वे कचरे के लिए इतनी जगह ढूंढ लेते हैं , लेकिन पवित्र अवशेषों के लिए कोई जगह नहीं ? क्या ज़मीन की कमी है , या क्या ? और कब्रिस्तानों में आखिर कितने संतों के अवशेष हो सकते हैं ? क्या उन्होंने इसके बारे में नहीं सोचा?

यूरोप में , वे मृतकों का दाह संस्कार इसलिए नहीं करते क्योंकि उन्हें दफ़नाने के लिए कोई जगह नहीं है , बल्कि इसलिए क्योंकि दाह संस्कार को एक प्रगतिशील प्रथा माना जाता है। मृतकों के लिए जगह बनाने के लिए एक छोटे से पेड़ -पौधे को काटने के बजाय, वे तो मृतकों को खुद ही जलाकर राख में बदलकर जगह साफ़ कर देते हैं। फिर वे इस राख को एक बहुत छोटे से डब्बे में भर देते हैं और इस पूरे काम को एक प्रगतिशील कार्य मानते हैं। मृतकों का दाह संस्कार इसलिए किया जाता है क्योंकि निहिलिस्ट हर चीज़ को नष्ट करना चाहते हैं —मानवों सहित। वे यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि किसी व्यक्ति को उनके माता-पिता, उनके दादा-दादी, या उनके पूर्वजों के जीवन की याद दिलाने के लिए कुछ भी न बचे। वे लोगों को परंपरा से अलग करना चाहते हैं ; वे उन्हें आने वाले जीवन को भूलने और इस जीवन से बाँधने के लिए मजबूर करना चाहते हैं।

— हालाँकि , गेरोना , वे कहते हैं कि एथेंस की कुछ नगर पालिकाओं में वास्तव में ऐसी समस्या उत्पन्न हो गई है —मृतकों को दफ़नाने के लिए कहीं जगह नहीं है।

— लेकिन वहाँ इतनी खाली जगह है ! निश्चित रूप से वे थोड़ी सी ज़मीन नहीं ढूंढ सकते ? एथेंस के आसपास शहर की बहुत सारी बंजर ज़मीन है। और मैं सरकार में ऐसे लोगों को जानता हूँ जिनके पास एथेंस के उपनगरों में बहुत सारी ज़मीन है। क्या , वे वहाँ एक कब्रिस्तान नहीं बना सकते ? इसके अलावा, एथेंस के अधिकांश निवासी मूल रूप से प्रांतों से हैं। मृतकों को दफ़नाने के लिए उनके गृहनगर और गांवों में वापस क्यों नहीं भेजा जाता? हर व्यक्ति को उसके गृहनगर ले जाकर वहीं दफ़नाया जाए। वहाँ , प्रांतों में , अंतिम संस्कार पर ज्यादा खर्च नहीं होगा; बस शव के परिवहन का खर्च ही देना होगा। यह घोषणा की जाए कि जो लोग हाल के वर्षों में एथेंस आए हैं , उन्हें उनकी मृत्यु पर वहीं दफनाया जाना चाहिए जहाँ से वे आए थे। यह वास्तव में सबसे अच्छा होगा। जहाँ तक उन परिवारों का सवाल है जो कम से कम तीन पीढ़ियों से राजधानी में रह रहे हैं , उनके लिए शहर के भीतर एक जगह ढूंढनी चाहिए। जब, अंतिम संस्कार के तीन साल बाद, अवशेषों को खोदा जाता है , तो उन्हें गहरी सामूहिक कब्रों में रख दिया जाए।[103] क्या यह वास्तव में इतना मुश्किल है ? देखो कि लोग कोयला निकालने के लिए धरती

में कतिनी गहराई तक खुदाई करते हैं। उन्हें अवशेषों के लिए किसी तरह का बड़ा भंडारण केंद्र बनाने दें और उन्हें सभी को एक साथ वहीं रख दें।

सम्मान पूरी तरह से खत्म हो गया है। बस देखिए कि अब क्या हो रहा है ! बच्चे अपने ही माता-पिता को देखभाल केंद्रों में डाल रहे हैं ! जबकि पुराने दिनों में , वे बूढ़े बैलों की भी देखभाल करते थे ; वे उन्हें नहीं मारते थे , बल्कि कहते थे : 'आखिरकार, वे हमारे रोटी कमाने वाले हैं। ' और वे मृतकों का कितना सम्मान करते थे !... मुझे वह युद्ध याद है : शहीदों को दफ़नाने के लिए हमने जो जोखिम उठाए! पादरी, बेशक , जाने के लिए बाध्य था। लेकिन सैनिक भी उसके साथ गए — अपने शहीद साथियों के शवों को उठाने के लिए — बर्फ के ढेरों के बीच, कड़कती ठंड में , गोलियों की बौछार के नीचे। 1945 में गृहयुद्ध के दौरान, जब मुझे सैन्य सेवा के लिए बुलाया गया था, उससे पहले , मैंने हमारे चर्च के रखवाले की मदद की, जो मारे गए लोगों को इकट्ठा करके दफनाता था। पुजारी धूपदान लेकर आगे -आगे चलता था। जैसे ही हमें गोले की सीटी सुनाई देती , हम खुद को ज़मीन पर फेंक देते थे। फिर हम उठ जाते थे। एक और गोला सीटी बजाता हुआ आया – फिर से ज़मीन पर गिर पड़े। बाद में , जब मैं पहले से ही एक सैनिक था और हम बर्फ़ में नंगे पैर बैठे थे , तो हमें बताया गया कि जो कोई भी चाहे , वह जाकर मृतकों के जूते उतार सकता है। एक भी व्यक्ति अपनी जगह से नहीं हिला। आह, वे दिन भी क्या दिन थे !

समस्या यह है कि सित्ता में रहने वाले चुप रहते हैं , जो हो रहा है उसे मान लेते हैं। जब से मृतक के साथ यह समस्या उत्पन्न हुई , चर्च को एक स्पष्ट रुख अपनाना और व्यक्त करना चाहिए था ताकि इस समस्या का समाधान हो सके , क्योंकि [अपनी चुप्पी के कारण] चर्च इस दुनिया के लोगों को आध्यात्मिक मामलों में दखल देने और जो मन में आए कहने का अवसर देती है। लेकिन यह अधर्मीपन है। और वर्तमान दुनिया ईश्वर का आशीर्वाद कैसे प्राप्त करेगी ? हम कहाँ आ पहुँचे हैं ! धीरे -धीरे , वे एक व्यक्ति से उसकी गरिमा छीनना चाहते हैं। आह, इसीलिए अब मृतकों के लिए बहुत सारी जगहें हैं , यहाँ तक कि पर्याप्त से भी अधिक...

पर्यावरणीय प्रदूषण और विनाश

सूरज सिनाई पर्वत की तरह ही प्रचंड रूप से तप रहा है — यहाँ तक कि सर्दियों में भी, क्योंकि वायुमंडल में ओज़ोन के छेद खुल गए हैं। जब तक उत्तर से हवा न चले , धूप में खड़ा होना असंभव है।

— गेरोन्डा , यह ओज़ोन की समस्या कब खत्म होगी?

— हमें बस कुछ समय के लिए धैर्य रखना होगा, जब तक कि वैज्ञानिक पाँच किलो ग्राम फिलिर लेकर उस छेद को नहीं भर देते ! हाँ , हाँ , उन्हें जाने दो और वायुमंडल में ओज़ोन के छेदों को सील कर दो। वे देखेंगे कि ईश्वर ने सब कुछ बड़ी बुद्धिमानी और पूर्ण सामंजस्य से बनाया है , और वे कहेंगे : 'हम चीजों को गड़बड़ करने के लिए माफी मांगते हैं। ' जहाँ तक वायुमंडल में इस छेद की बात है — प्रार्थना करो कि यह बंद हो जाए। देखो , 'कटोरों ' में से एक[103] वहाँ भी खुल गया है। पेड़ और पौधे मुरझा रहे हैं। हालाँकि , ईश्वर सब कुछ फिर से ठीक कर सकते हैं।

और बस देखो कि उन धोखेबाजों में से कुछ कितने चालाक हो गए हैं , जो उन अमीरों को लूट रहे हैं जिनके पास अपना पैसा खर्च करने के लिए और कोई जगह नहीं है। वे कहते हैं , 'वायुमंडल में एक ओज़ोन छिद्र खुल गया है। दुनिया नष्ट हो जाएगी। हम दुनिया को कैसे बचा

[103] देखें प्रका . 15:7।

सकते हैं ? ऐसे — वज्ञिान गहरे खदानों और लोगों को सूरज से बचाने के लिए भूमगित बसाने की योजनाएँ बना रहा है। " अंत में , जब यह स्पष्ट हो गया कि 'भूमगित बसाहट' असंभव थी, तो उन्होंने कुछ और कहना शुरू कर दिया: 'चंद्रमा पर आवासीय विकास किए जाएँगे , जहाँ रेस्तरां , होटल और घर बनाए जाएँगे , और लोग वहाँ बस जाएँगे। जो लोग गारंटी के साथ चंद्रमा पर जाना चाहते हैं , उनसे योगदान देने के लिए कहा जाता है !" लेकिन संयोग से , इस सब में एक भी सच्चाई नहीं है ! यह किस तरह का "आवासीय विकास" है , जब मनुष्य वहाँ रहने के काबिल भी नहीं हैं ! खैर , कुछ लोग "टिन के डिब्बों " में चढ़े , वहाँ उड़कर गए और वापस आ गए। और कुछ लोग इन सभी परी-कथाओं पर विश्वास करते हैं और अपना पैसा सौंप देते हैं।

— गेरोंडा , कई लोग निकास धुएँ और औद्योगिक उत्सर्जन को लेकर चिंतित हैं।

— हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कुछ कारखाना निदेशक अपनी चिमनियों पर शुद्धिकरण फिल्टर लगाएँ , ताकि औद्योगिक धुएँ से दम घुट रहे लोग कम से कम थोड़ी राहत से सांस ले सकें। सांसदों को रिश्वत देने और अपने स्वार्थों की देखभाल करने के बजाय, हर कारखाना निदेशक थोड़ा और पैसा खर्च करे और एक शुद्धिकरण प्रणाली खरीदे। पहले के दिनों में , ऐसे कीटाणु नहीं थे , ऐसे धुएँ नहीं थे। लेकिन अब उन्होंने सब कुछ बर्बाद कर दिया है और फिर भी इसे प्रगति कहते हैं। और ऐसी 'प्रगति' कहाँ ले जाती है ? यह लोगों को नष्ट कर देती है। आप सड़क पर निकलते हैं , और हवा में धुएँ की बदबू आती है। आप घर पर बैठते हैं , और जैसे ही आप खिड़की थोड़ी सी खोलते हैं , सड़क का कालिख अंदर रेंग आता है। और जब आप अपने हाथ धोते हैं , तो यह कालिख धुलकर नहीं उतरती; दूसरे शब्दों में , यह हानिरहित नहीं है। चूल्हे की कालिख में कोई तेल नहीं होता, इसलिए जैसे ही आप खांसते हैं , यह सीधे आपके फेफड़ों से बाहर आ जाती है। लेकिन यह औद्योगिक कालिख आपके फेफड़ों को नहीं छोड़ती —यह उन पर चिपक जाती है।

उच्च -मंजिला इमारतों में , लोग एक-दूसरे पर चढ़े हुए , एक ही बर्तन में बंद मछलियों की तरह ठूसे होते हैं। कोई अपनी बालकनी पर अपने गलीचे झाड़ता है , और सारी धूल नीचे वाले पड़ोसी की बालकनी में उड़ जाती है। निचली मंजिलों पर रहने वाले उन बेचारे लोगों को कितनी तकलीफ होती होगी! ऊपरी मंजिलों की सारी धूल और कचरा उन पर नीचे गिरता है। कोई व्यक्ति अपनी बालकनी में कपड़े सुखाने के लिए टाँगता है या खिड़की खोलता है , और ऊपर से लोग बिना उनकी परवाह किए अपने कालीन पीटना शुरू कर देते हैं। पहले के दिनों में , उन्होंने ऐसे ऊँची - ऊँची इमारतों में जेलें लगाई होतीं — इएंडी -कुले। [104] यह बहुत भयानक है ! आखिरकार, उन दिनों घरों में आँगन हुआ करते थे जहाँ जानवर चरते थे , और पास में पेड़ों वाला एक छोटा सा बगीचा होता था जहाँ पक्षियों के पूरे झुंड इकट्ठा होते थे ...

— लेकिन अब, गेरोन्डा , लोग तो गौरैया को देख भी नहीं पाते।

— गौरैया की तो बात ही छोड़िए —क्या वे पागल हो गई हैं कि ऊँची इमारतों में उड़कर चली गईं ? जल्द ही वह दिन आ जाएगा जब लोगों को यह भी नहीं पता होगा कि गौरैया क्या होती है। अमेरिका में , एक विश्वविद्यालय में , एक ऐसा विभाग है जहाँ पुराने और नए नियम की पवित्र शास्त्रों का अध्ययन ऐतिहासिक दृष्टिकोण से किया जाता है। तो, छात्रों को यह समझने में मदद करने के लिए कि 'गेहूँ ' क्या है , उन्होंने गेहूँ बोया हुआ एक खेत बनाया है। और उन्हें यह समझने में मदद करने के लिए कि 'चरवाहा' और 'भेड़ ' क्या होते हैं , उनके पास भेड़ों का एक छोटा झुंड और एक काठी वाला चरवाहा है। और यह सब एक विश्वविद्यालय में हो रहा है !

---

[104] थेस्सालोनिकी शहर की किलेबंदी की दीवारों के भीतर स्थित जेलें।

लोग पहले ही पूरे वातावरण को प्रदूषित कर चुके हैं। बाहर सर्दी है , फिर भी हवा कूड़े के ढेरों की बदबू से भरी हुई है। ज़रा सोचिए कि गिरमियों में कैसा होता होगा! और फिर भी वे कूड़े के ढेरों पर किसी तरह का कीटाणुनाशक घोल छिड़कने के लिए कोई विमान नहीं भेजते। सौभाग्य से , ईश्वर ने सुगंधित फूल बनाए। ये सभी फूल , बड़े और छोटे , यह सारी पुष्प विविधता, कचड़े की बदबू को बेअसर कर देती है। क्या होता अगर यह पुष्प सुगंध पूरे वातावरण में न फैली होती? उदाहरण के लिए, जब कहीं सड़ी हुई लाश पड़ी होती है —तो उसकी बदबू चारों ओर फैल जाती है। ईश्वर हम पर कितनी कृपा करते हैं ! और अगर वह हमारी देखभाल न करते तो हमारा जीवन कितना दुखद हो जाता! ज़रा सोचिए: अगर फूल न होते , पौधे न होते ... आखिरकार, यही उनकी खुशबू है जो हमारी बदबू को छिपाती और दूर करती है।

एक बार, एक आम आदमी मेरे आश्रम में आया और पूछा : 'सुनिए , आप यहाँ क्या कर रहे हैं ? आप दिन-रात क्या करते हैं ?' और ठीक उसी क्षण , चारों ओर छोटी झाड़ियाँ खिली हुई थीं , और आश्रम के पास की पहाड़ी जंगली फूलों से भरी हुई थी। सब कुछ महक रहा था। मैंने कहा, "अच्छा , मेरे पास पीठ सीधा करने का भी समय नहीं है ! दिन भर मैं इन सभी फूलों और पौधों को पानी देता हूँ और इनकी देखभाल करता हूँ जो आप देख सकते हैं। और रात को— , क्या तुमने देखा है कि आकाश में कितने छोटे -छोटे दीये जल रहे हैं ? उन सबको जलाने की कोशिश करो!" वह मुझे काफी अजीब तरह से देखने लगा, लेकिन मैंने समझाना जारी रखा: "तुम्हारा क्या मतलब है ? क्या तुमने नहीं देखा कि रात में आकाश में छोटे -छोटे दीये कैसे जलते हैं ? खैर , उन्हें जलाने वाला मैं ही हूँ ! चलिए, खुद करके दिखाइए! क्या आपको लगता है कि इतने सारे दीयों में तैरते बत्ती के टुकड़े और बत्तियाँ ठीक करना, और उनमें तेल भरना... आसान है ?" यह सुनकर , बेचारा लड़का पूरी तरह से हैरान रह गया।

और छिड़काव भी ज़हर है। इन छिड़कावों से सिर्फ़ कीट ही नहीं मरते , बल्कि बेचारे पक्षी भी। पेड़ों को उनकी बीमारियों से ठीक करने के लिए, उन पर ज़हरीले रसायन छिड़के जाते हैं , और बाद में लोग बीमार पड़ जाते हैं। हर चीज़ को ज़हर दिया जा रहा है। क्या यह ज़्यादा समझदारी नहीं होगी कि कम रसायन इस्तेमाल किए जाएँ और सड़े हुए पौधों को ज़मीन में गाड़ दिया जाए — बजाय इसके कि अच्छे फलों को गाड़ दिया जाए, जैसा कि वे अब करते हैं [ताकि उनकी कीमत न गिर जाए]? विषाक्त रसायनों का एक पूरा बादल—क्या यह मनुष्यों के लिए हानिरहित है ? विशेष रूप से छोटे बच्चों के लिए—उनके लिए, ये सभी विषाक्त रसायन बस घातक हैं। इसीलिए बच्चे पहले से ही बीमार पैदा होते हैं। मैंने एक कृषि विज्ञानी से कहा: 'आखिर हो क्या रहा है ! आपने कीड़ों को खत्म कर दिया है , और अब लोग मर रहे हैं। " कीड़ों को मारने के लिए, वे फूलों पर छिड़काव करते हैं , और बाद में लोग बीमार पड़ जाते हैं। और फिर वे और भी ज़हरीले रसायन बनाएंगे — मौजूदा वालों से भी ज़्यादा तेज़ — लेकिन इससे हमें क्या हासिल होगा?

यह पहले ही साबित हो चुका है कि छिड़काव से मारे गए कुछ कीड़े दूसरे कीड़ों का शिकार करते थे। अब, बाकी कीड़ों से छुटकारा पाने के लिए, हमें उन्हीं की कृत्रिम रूप से प्रजनन कराना होगा जिन्हें हमने पहले मारा था। ईश्वर ने कितनी बुद्धिमानी से सब कुछ व्यवस्थित किया है ! जहाँ झिंगुर हैं , वहाँ मच्छर नहीं हैं। एक बार, एक आदमी मेरी झोपड़ी पर आया और उसने मुझे एक छोटा सा यंत्र दिखाया जो मच्छरों को झींगुर की चिर् -चिर् जैसी आवाज़ों से भगाता है , बस थोड़ी मोटी आवाज़ में। लोग उन झींगुरों को मार देते हैं जो हमें अपनी धुन से आनंदित करते हैं , और बाद में वे बैटरी का उपयोग करके उसी चीज़ को फिर से बनाना चाहते हैं जिसे ईश्वर ने बनाया है। हमने उन्हें सभी खत्म कर दिया है —झींगुरों और कबूतरों , दोनों

को ही... आजकल तो कौआ देखना भी दुर्लभ हो गया है। जल्द ही हम कौओं को पकड़कर पिंजरों में डाल देंगे।

और आप भी, जब पेड़ों पर छिड़काव करें, तो ईश्वर के लिए भी कुछ छोड़ दें, ताकि वह आपकी मदद कर सकें। और अगर कोई एक-दो पत्ते रसायन से बच भी जाएं, तो इसमें कोई हर्ज़ नहीं है। सभी आधुनिक तकनीकी साधन किसी व्यक्ति के विश्वास में मदद नहीं करते हैं। एक बार किसी के यहाँ जाते समय, मैंने लोगों को कहते सुना : 'क्या वास्तव में किसी विशेष कीट के लिए कोई नया रसायन विकसित किया गया है ? और कहाँ ? विदेश में ?' और तुरंत ही उन्होंने इसे ऑर्डर करने के लिए फोन करना शुरू कर दिया। धीरे -धीरे, आम लोग और संन्यासी दोनों ईश्वर को अंतिम स्थान पर धकेल रहे हैं। लोग आध्यात्मिक विकास को प्राथमिक महत्व नहीं देते —ताकि सब कुछ पवित्र हो सके। समस्या यह है कि हम संन्यासी भी, आम लोगों से आगे आध्यात्मिक विकास में नेतृत्व नहीं कर रहे हैं।

— गेरोन्डा, लेकिन जैतून के पेड़ों को वाकई में डाकोस — जैतून की कीट — से नुकसान हो रहा है।

— डाकोस के चले जाने के लिए अपनी माला से प्रार्थना करो। कीटों से केवल छिड़काव से ही नहीं लड़ो ; मदद के लिए मसीह से भी प्रार्थना करो। इसके अलावा, हम भी हर काम गृहस्थों की तरह ही अच्छी तरह से करना चाहते हैं। हम भूल जाते हैं कि संन्यासियों का जीवन अलग तरह का होता है। साधारण लोगों की तरह, या उनसे भी ज़्यादा, बिल्कुल वैसा ही करने का प्रयास करने की कोई ज़रूरत नहीं है। मसीह का क्या —क्या हम उन्हें भूल गए हैं ? मैं यह नहीं कह रहा कि हमें पेड़ों पर बिल्कुल भी छिड़काव नहीं करना चाहिए, लेकिन कुछ लोग इन जहरीले रसायनों के साथ वास्तविक प्रयोग कर रहे हैं। और जब पेड़ों पर छिड़काव करने की वास्तव में आवश्यकता हो, तो रेस्पिरेटर पहनें।

किसी कीड़े द्वारा थोड़ा -सा खाए गए फल को खाना, जहर छिड़के हुए सुंदर दिखने वाले फल से बेहतर है। छिड़काव के चक्कर में न पड़ें —इसे कम करें। श्रद्धापूर्वक प्रार्थना करें —पहला भजन पढ़ें [105] और पेड़ों पर पवित्र जल छिड़कें। यदि आप धर्मपरायणता से जीवन यापन करते हैं, तो बारिश की बौछारें पड़ेंगी, और कीड़े [106] नष्ट हो जाएँगे। ईश्वर आपकी ज़रूरतों का ध्यान रखेंगे — आपको उनके प्रति श्रद्धा और विश्वास रखना चाहिए।

अध्याय 2.
कैसे एक युग जिसमें कई सुविधाएँ हैं कई समस्याओं के युग के बराबर है [107]

लोगों के दिल भी लोहे के हो गए हैं

मानवीय सुख -सुविधाएँ सभी सीमाओं से परे हो गई हैं और इसलिए वे कठिनाइयों में बदल गई हैं। जैसे -जैसे मशीनें बढ़ी हैं, वैसे -वैसे हमारी परेशानियाँ भी बढ़ी हैं। अब मशीनें और धातु के टुकड़े लोगों पर हुकुम चलाते हैं, उन्हें स्वयं मशीनों में बदल देते हैं। इसीलिए लोगों के दिल लोहे के हो गए हैं। हमारे पास उपलब्ध सभी तकनीकी साधनों के बावजूद, मानव अंतरात्मा अब भी अपरिष्कृत है। अतीत में, लोग जानवरों की मदद से काम करते थे और उनमें करुणा होती थी। अगर आप किसी गरीब जानवर पर उसकी क्षमता से अधिक बोझ लादते, तो वह घुटनों के बल गिर जाता, और आपको उसके लिए बुरा लगता। अगर वह भूखा होता और दयनीय रूप से आपको देखता, तो आपका दिल पसीज जाता। मुझे याद है कि जब हमारी गाय बीमार हो गई थी तो हमने

---

[105] कैपाडोसिया के पूजनीय आर्सेनियस वृक्ष और पौधे लगाते समय पहला भजनपाठ करते थे – ताकि जो लगाया गया हो वह अच्छा फल दे।

[106] नवंबर 1990 में एक भीषण सूखे के दौरान कहा गया। उसी वर्ष जून में, ग्रीस में बहुत सारी कीट-पतंगे थे।

[107] इस अध्याय को पढ़ने से व्यक्ति उस अत्यधिक तपस्वी भावना को महसूस कर सकता है जो स्वयं एल्डर पैसियोस की विशेषता थी, और उस चिंता को भी जो उन्होंने इस बात को लेकर महसूस की थी कि संपूर्ण मठवासी समुदाय की तपस्वी भावना बदल सकती है। एल्डर संस्कृति के विरोधी नहीं हैं, लेकिन वे इस बात पर जोर देना चाहते हैं कि संस्कृति को मनुष्य पर शासन नहीं करना चाहिए, बल्कि मनुष्य को संस्कृति पर शासन करना चाहिए। एल्डर ने कहा कि भिक्षुओं को विशेष रूप से आधुनिक प्रौद्योगिकी पर निर्भर होने से बचना चाहिए और इसका विवेकपूर्ण उपयोग करना चाहिए, ताकि वे अपनी ऊर्जा को आध्यात्मिक संघर्ष की ओर निर्देशित कर सकें।

कतिना कष्ट उठाया था — हम उसे अपने परविार का सदस्य मानते थे। लेकनि आजकल, लोग धातु के टुकड़ों के साथ काम करते हैं , और उनके दलि उतने ही कठोर हैं जतिना लोहा। क्या धातु का कोई टुकड़ा टूट गया है ? उसे वेल्ड करवाने के लिए ले जाइए। क्या कार खराब हो गई है ? उसे गैराज में ले जाइए। ठीक नहीं हो सकता? स्क्रैपयार्ड भेज दो—कोई बुरा नहीं मानता। वे कहते हैं , 'धातु , तो बस धातु ही है। ' लोगों के दलि बलि्कुल नहीं धड़कते , और फरि भी इसी तरह एक व्यक्ति में आत्म -महत्व और स्वार्थ की जड़ें जम जाती हैं।

आजकल, लोग एक-दूसरे के बारे में नहीं सोचते। पुराने दनिों में , [जब फ्रजि नहीं थे], अगर अगले दनि के लिए खाना बच जाता था, तो वह खराब हो जाता था। इसलिए लोग गरीबों के बारे में सोचते थे और कहते थे , 'यह वैसे भी खराब हो जाएगा, तो मुझे इसे कसिी गरीब को दे देना चाहिए।' और जो आध्यात्मकि रूप से उन्नत थे , वे कहते थे : 'पहले गरीब व्यक्ति खाए, फरि मैं खाऊँगा। ' आजकल, बचे हुए खाने को फ्रजि में रख दयिा जाता है , और लोग अपने ज़रूरतमंद पड़ोसी के बारे में नहीं सोचते। मुझे याद है कि उन दनिों जब हमारी सब्जयिों और अन्य उपज की अच्छी फसल होती थी, तो हम अपनी सब्जयिाँ पड़ोसयिों को दे देते थे — हम उन्हें बाँटते थे। हम इतनी सारी सब्जयिों का क्या करते ? बची हुई सब्जयिाँ वैसे भी खराब हो जातीं। आजकल, लोगों के पास फ्रजि हैं , और वे कहते हैं : 'अतरिक्ति खाना दूसरों को क्यों दें ? हम इसे फ्रजि में रखेंगे और बाद में खुद ही खा लेंगे। ' मैं इस तथ्य का उल्लेख भी नहीं करूंगा कि टनों खाना फेंक दयिा जाता है या जमीन में दफना दयिा जाता है — जबकि दूसरी जगह लाखों लोग भूखे मर रहे हैं।

मशीनों के कारण लोग पागल हो गए हैं

आधुनकि तकनीक बस लगातार वकिसति होती जा रही है — अनंत रूप से। यह मानव मन से तेज़ी से वकिसति हो रही है , क्योंकि शैतान इसकी मदद कर रहा है। पुराने दनिों में , इन सभी गैजेट्स , इन सभी टेलीफोनों , फैक्स मशीनों और उपकरणों के ढेर के बनिा, लोगों के पास शांति और सादगी थी।

— गेरोना , वे जीवन में आनंद लेते थे !

— हाँ , लेकनि अब, कारों के कारण, लोग पागल हो गए हैं। इनमें से कई सुवधिाएँ उन्हें कष्ट देती हैं ; वे चंति से दम नहीं ले पाते। मुझे सनिाई में अपने समय के दौरान जाने -पहचाने बेदुइनों की याद है ,[108] — वे कतिने प्रसन्न थे ! उनके पास सरि्फ एक तंबू था, और वे साधारण जीवन जीते थे। वे अलेक्जेंड्रयिा या काहरि में नहीं रह सकते थे — रेगस्तिान में तंबुओं में जीवन ही उनका स्वभाव था। अगर उनके पास थोड़ी सी चाय भी होती, तो वे खुशी से झूम उठते और ईश्वर की स्तुति करते थे। लेकनि अब सभ्यता उनके पास भी पहुँच गई है , और वे भी ईश्वर को भूलने लगे हैं। यहाँ तक कि बेदुइनों पर भी यूरोपीय भावना का प्रभाव पड़ गया है ! पहले यहूदयिों ने बेदुइनों के लिए झोपड़यिाँ बनाईं , फरि उन्हें पूरे इज़राइल से पुरानी कारें बेचीं। [109] ओह, वे यहूदी ... अब हर बेदुइन के पास एक झोपड़ी है , आँगन में एक टूटी -फूटी कार है , और मन चंति और बेचैनी से भरा है। कारें खराब हो जाती हैं , और बेदुइनों को

---

[108] 1962–1964 में

[109] माउंट सनिाई, जो अब प्रशासनकि रूप से मस्रि का हस्सिा है , उस समय इज़राइली नयिंत्रण में था।

उन्हें ठीक करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। और अगर आप सच में इसके बारे में सोचें , तो इस सब से उन्हें क्या मिला है ? सिरदर्द और कुछ नहीं।

पहले के दिनों में , चीजें कम से कम मजबूत हुआ करती थीं ; वे लंबे समय तक चलती थीं। लेकिन अब — आप एक बड़ी रकम खर्च करते हैं और ऐसी चीजें खरीदते हैं जो तुरंत टूट जाती हैं। और यह कंपनियों को बिल्कुल ठीक लगता है — वे अपने उत्पादन में वृद्धि करती हैं और इससे अच्छा -खासा मुनाफा कमाती हैं। और फिर लोगों के पास पैसे खत्म हो जाते हैं , और, अधिक कमाने की अपनी खोज में , वे खुद को हड्डी -पसली कर काम करते हैं। ये सभी मशीनें और यंत्र यूरोपीय लोगों के पास ही हैं , जो पूरे दिन हाथ में पेचकस लेकर बैठे रहते हैं। पहले वे , मान लीजिए, किसी तरह का ढक्कन बनाते हैं। फिर उसमें स्क्रू का धागा लगाते हैं , फिर एक बटन जोड़ते हैं – उस बेचारी ढक्कन को और भी बेहतर बनाते जाते हैं ... दूसरे शब्दों में , नई मशीनें और गैजेट लगातार आ रहे हैं , और ये बेचारी लोग हमेशा कुछ और परिष्कृत चाहते हैं। वे पुराने का कर्ज चुकाने से पहले ही कुछ नया खरीद लेते हैं , और इसीलिए वे कर्ज में डूबे और थके हुए हैं। उदाहरण के लिए, एक गरीब आदमी को ही ले लीजिए: वह भी एक कार चाहता है , इसलिए वह जाकर सबसे सस्ते मॉडलों में से एक खरीद लेता है। और उसे खरीदने के लिए, वह अपने बैल और घोड़े बेच देता है — वह अपनी आखिरी चीजें बेच देता है। यह सब एक ऐसी स्थिति की ओर बढ़ रहा है जहाँ जल्द ही वे दुकानों की खिड़कियों में गधे भी रखेंगे और उन्हें सिर्फ देखने के लिए लोगों से पैसे लेंगे ! तो यह है हाल: गरीब आदमी अपने लिए एक सस्ती सी छोटी कार खरीदता है। कार खराब हो जाती है। और वे उससे कहते हैं , 'और ऐसी कारों के लिए, कोई स्पेयर पार्ट्स नहीं होते। ' वह गरीब आदमी एक और कार खरीदने के लिए मजबूर हो जाता है। हालाँकि , नवीनतम मॉडल उसकी पहुँच से बाहर होता है , इसलिए वह एक ऐसी कार खरीदता है जो उसकी पिछली कार से थोड़ी बेहतर होती है , और पुरानी वाली को एक तरफ रख देता है। फिर नई वाली भी खराब हो जाती है , और यह सिलसिला चलता रहता है ... हमें सावधान रहना चाहिए कि हम कुछ और भी बेहतर की तलाश के इस फैशनेबल चलन में बह न जाएँ।

टेलीविजन ने लोगों को बहुत नुकसान पहुँचाया है

— गेरोन्डा , अब टेलीविजन संचार के ऐसे साधन हैं कि कोई भी दुनिया के दूसरी तरफ उसी क्षण क्या हो रहा है , देख सकता है।

— लोग पूरी दुनिया तो देख लेते हैं , पर खुद को नहीं देख पाते। लोगों को नष्ट करने वाला ईश्वर नहीं है ; नहीं , आजकल लोग अपने ही मन से खुद को नष्ट कर रहे हैं।

— जेरोंडा , टेलीविजन बहुत बुराई लाता है।

— "बहुत अधिक नुकसान !.." आप आखिर बात क्या कर रहे हैं !.. एक आदमी ने मुझसे कहा: "टेलीविजन , फादर, एक अच्छी चीज़ है। " — "अंडे ," मैंने जवाब दिया, "भी एक अच्छी चीज़ हैं , लेकिन अगर आप उन्हें मुर्गी की बूंदियों के साथ मिला दें , तो वे पूरी तरह से बेकार हो जाते हैं। " टीवी और रेडियो के साथ भी बिल्कुल यही होता है। आजकल, जब आप समाचार सुनने के लिए रेडियो चालू करते हैं , तो आपको यह स्वीकार करना पड़ता है कि समाचार के साथ-साथ आपको कोई न कोई गाना भी सुनना होगा। उस गाने के खत्म होते ही समाचार शुरू हो जाएगा। पहले ऐसा नहीं था। अतीत में , लोग ठीक-ठीक जानते थे कि रेडियो पर समाचार कब प्रसारित होता था। लोग एक निश्चित समय पर रेडियो चालू करते थे और ताज़ा समाचार सुनते थे। लेकिन अब आपको एक गाना भी सुनना पड़ता है , क्योंकि अगर आप गाना सुनने के बिना ही रेडियो बंद कर देते हैं , तो आप समाचार भी चूक जाएंगे।

टेलीवजिन ने लोगों को बहुत नुकसान पहुँचाया है। इसका छोटे बच्चों पर वशिष रूप से वनिाशकारी प्रभाव पड़ता है। एक बार, एक सात साल का लड़का अपने पता के साथ मेरे कालीवा में आया। मैंने उस बच्चे के मुँह से टेलीवजिन के राक्षस को बोलते हुए देखा , ठीक वैसे ही जैसे एक राक्षस सवार व्यक्ति के मुँह से बोलता है। यह ठीक वैसा ही है जैसे कसिी बच्चे के दाँत लेकर ही जन्म हुआ हो। आजकल आप सामान्य बच्चों को अक्सर नहीं देखते — बच्चे राक्षसों में बदल गए हैं। बच्चे अपने लिए सोचते नहीं हैं ; वे बस वही दोहराते हैं जो उन्होंने देखा और सुना है। इस तरह, टेलीवजिन के माध्यम से , कुछ लोग दुनिया का ब्रेनवॉश करना चाहते हैं। यानी, [उनकी योजनाओं के अनुसार] बाकी सभी को वही मानना चाहिए जो उन्होंने [टेलीवजिन पर] सुना है और उसी के अनुसार काम करना चाहिए।

— गेरोन्डा , माताएँ हमसे पूछ रही हैं : हम बच्चों को टीवी से कैसे दूर कर सकते हैं ?

— उन्हें अपने बच्चों को समझाने दें कि टेलीवजिन देखने से उनका दमिाग सुस्त हो जाएगा और सोचने की उनकी क्षमता छनि जाएगी। मैं तो यह भी नहीं कहूँगा कि टेलीवजिन उनकी दृष्टि को नुकसान पहुँचाता है। जसि टेलीवजिन की हम अभी बात कर रहे हैं , वह एक मानवीय रचना है। लेकनि एक और प्रकार है — आध्यात्मकि टेलीवजिन। जब एक ईसाई की आत्मा की आँखें पुराने स्व के त्याग से शुद्ध हो जाती हैं , तो वे तकनीकी सहायता के बनि भी दूर तक देख सकते हैं। क्या माताओं ने अपने बच्चों को इस तरह के टेलीवजिन के बारे में नहीं बताया है ? बच्चों को ठीक इसी बात को समझने की ज़रूरत है —यह आध्यात्मकि टेलीवजिन। जबकि, 'बॉक्स ' के सामने बैठने से , बच्चे बस सुस्त हो जाते हैं। पहले मनुष्यों के पास विवेक का वरदान था, जसि उन्होंने पतन के बाद खो दयिा। हालाँकि , यदि बच्चे पवित्र बपतस्मिा में प्राप्त अनुग्रह को बनाए रखते हैं , तो उनके पास भी विवेक का वरदान—आध्यात्मकि टेलीवजिन —होगा। मनुष्य को चौकस रहना चाहिए और आध्यात्मकि रूप से परश्रिम करना चाहिए। आज की माताएँ व्यर्थता में अपना नाश कर लेती हैं , और फरि विलाप करने लगती हैं : 'मैं क्या करूँ , फादर? मैं अपना बच्चा खो रही हूँ !..'

संन्यासी और आधुनकि तकनीकी प्रगति

— गेरोन्डा , एक भकि्षु को आधुनकि तकनीक का उपयोग कैसे करना चाहिए?

— एक भकि्षु को यह प्रयास करना चाहिए कि वह जनि साधनों का उपयोग करता है , वे हमेशा गृहस्थों द्वारा उपयोग कयि जाने वाले साधनों से सरल हों। उदाहरण के लिए, मुझे जलाऊ लकड़ी पसंद है : चूल्हा गर्म करने , खाना पकाने और शल्पिकारयिों के लिए आवश्यक आग जलाने के लिए। हालाँकि , यदि अथोस की लकड़ी का यह पूरा व्यापार कुछ समय तक वर्तमान की तरह ही चलता रहा, और लकड़ी खत्म हो जाए या मलिना मुश्कलि हो जाए, तो मैं सामान्य लोगों द्वारा उपयोग कयि जाने वाले साधनों से कहीं सरल साधन का उपयोग करूँगा। गर्मी के लिए — एक पैराफनि स्टोव या कुछ और, सस्ता और अधकि साधारण; शल्पि के लिए — एक प्रमिस स्टोव , और इसी तरह।

— और कोई यह कैसे नर्धिारति कर सकता है कि एक सामुदायकि मठ में कोई चीज़ कसि हद तक आवश्यक है ?

— यदि कोई भकि्षु की तरह सोचे , तो यह नर्धिारति कयि जा सकता है। लेकनि यदि कोई भकि्षु की तरह नहीं सोचता, तो जो कुछ भी वह ले लेता है , वह एक आवश्यकता बन जाएगी, और फरि भकि्षु स्वयं एक गृहस्थ बन जाएगा, या उससे भी बदतर। हमें संन्यासयिों को गृहस्थों की तुलना में कम से कम थोड़ा अधकि साधारण जीवन जीना चाहिए, या — कम से कम — ठीक वैसे ही जैसे हमने

स्वयं मठ में प्रवेश करने से पहले जीवन जिया था। हमारे पास उन चीज़ों से बेहतर चीज़ें नहीं होनी चाहिए जो हमारे पास पहले घर पर थीं। मठ उस गृहस्थ के घर से भी अधिक गरीब होना चाहिए जहाँ से मैं आया हूँ। यह भीतर से भिक्षु और संसार दोनों की मदद करता है।

ईश्वर ने व्यवस्था इस प्रकार की है कि लोग नश्वर चीज़ों में आराम नहीं पाते। यदि यह सांसारिक प्रगति गृहस्थों को भी पीड़ित करती है, तो संन्यासियों के बारे में क्या कहा जा सकता है! यदि मैं किसी धनी घर में पहुँच जाऊँ और वहाँ का स्वामी मुझसे पूछे: 'मैं आपके लिए रात बिताने की जगह कहाँ तैयार करूँ?' मैं आपके लिए शानदार सजे-धजे बैठक कक्ष में बिस्तर लगा सकता हूँ या बकरियों के तबेले में, जहाँ मैं रात के लिए बकरियों को बाँधता हूँ। आप कौन सी पसंद करेंगे?' — मैं आपको अपना वचन देता हूँ, मेरी आत्मा बकरियों के तबेले में अधिक शांति से रहेगी। आखिरकार, जब मैंने संन्यास की शपथ ली, तो मैंने दुनिया को किसी बेहतर घर या महल को पाने के लिए नहीं छोड़ा था। मैं संसार में रहते हुए जो कुछ भी था, उससे कहीं अधिक कठोर जीवन जीने के लिए ही तो भिक्षु बना था। अन्यथा, मैं मसीह के लिए कुछ भी नहीं कर रहा हूँ। लेकिन आधुनिक तर्क के नियमों के अनुसार जीने वाले लोग मुझसे कहेंगे: 'सुनो, महल में रहने से तुम्हारी आत्मा को क्या नुकसान होगा? आखिरकार, उस खलिहान में तो बहुत बदबू आती है, जबकि महल में महक अच्छी होती है, और वहाँ तुम्हारे प्रशंसक भी होंगे।' हमारे पास आध्यात्मिक अनुभूति की क्षमता होनी चाहिए। ठीक एक कम्पास की तरह— दोनों सुइयां चुम्बकीकृत होती हैं, और इसीलिए एक सुई उत्तर की ओर इशारा करती है। मसीह 'चुम्बकीकृत' हैं, लेकिन उनकी ओर मुड़ने के लिए, हमें भी थोड़ा 'चुम्बकीकृत' होना चाहिए।

और सामुदायिक मठों में कितनी कठिनाइयाँ हुआ करती थीं! मुझे याद है कि रसोई में एक विशाल भगौना था, जिसे एक विशेष लीवर से उठाया जाता था। रसोई में खाना पकाने के लिए लकड़ी की आग जलाई जाती थी। आग की लपटें उठतीं और फिर बुझ जातीं, और खाना जल जाता था। अगर मछली जल जाती, तो हम बेकिंग ट्रे को धातु के ब्रश से रगड़ते थे। फिर हम ओवन से राख निकालते, उसे नीचे छेद वाली एक बड़ी मिट्टी की हांडी में भरते, और उस पर पानी डालते थे। नीचे के छेद से क्षार बहकर निकलता था, जिसका उपयोग हम बर्तन धोने के लिए करते थे। क्षार से हमारे हाथ खुरदरे हो जाते थे। और हम रस्सी और पल्ले का उपयोग करके अर्खोंडारिक में पानी खींचते थे।

आजकल मठों में जो कुछ हो रहा है, उसमें से कुछ का औचित्य नहीं दिया जा सकता। मैंने देखा कि एक मठ में, ब्रेड को एक इलेक्ट्रिक ब्रेड स्लाइसर से काटा जाता है। यह कैसी बकवास है? अगर बेकर बीमार या कमजोर है और चाकू से ब्रेड नहीं काट सकता, और उसकी जगह लेने वाला कोई नहीं है, तो ठीक है — एक इलेक्ट्रिक ब्रेड स्लाइसर कुछ हद तक जायज़ है। लेकिन आजकल आप एक हट्टे-कट्टे लड़के को सर्कुलर आरी से ब्रेड काटते हुए देख सकते हैं! वह खुद ही एक कंप्रेसर की तरह काम कर सकता है, फिर भी वह ब्रेड काटने के लिए मशीनरी का उपयोग करता है और इसे एक उपलब्धि भी मानता है!...

आध्यात्मिक रूप से प्रगति करने का प्रयास करें। इन सभी मशीनों, सुविधाओं और इसी तरह की चीजों में आनंद न लें। यदि तपस्या की भावना भिक्षु जीवन से चली जाती है, तो भिक्षुओं का जीवन निरर्थक हो जाता है। यदि हम सुविधाओं को भिक्षु जीवन से ऊपर रखते हैं तो हम सफल नहीं होंगे। एक भिक्षु सुविधाओं से इसलिए बचता है क्योंकि, आध्यात्मिक रूप से कहें तो, वे उसकी मदद नहीं करती हैं। धर्मनिरपेक्ष जीवन में भी, लोग सुख-सुविधाओं की प्रचुरता से बोझिल रहते हैं। एक भिक्षु के लिए—भले ही उसकी आत्मा सांसारिक चीजों में शांति पा ले —सुविधा और भी अधिक अनुचित है। तो आइए, हम इसकी तलाश न करें। आदरणीय

अरसेनियस महान के समय में , कोई 'वलिासी' केरोसनि लैंप ,[110] या कोई अन्य प्रकाश उपकरण नहीं थे। महलों में , बहुत शुद्ध तेल से जलने वाले दीपक इस्तेमाल कएि जाते थे। क्या आदरणीय अरसेनियस महान अपने साथ रेगस्तिान में ऐसा दीपक नहीं ले जा सकते थे ? वे ले जा सकते थे , लेकनि उन्होंने नहीं लयिा। रेगस्तिान में , उन्होंने एक बत्ती या साधारण वनस्पतिा तेल में भीगे हुए सूती रुए का एक टुकड़ा इस्तेमाल कयिा, और उनकी रोशनी के लएि यह पर्याप्त था।[111]

अपने कर्तव्यों का पालन करते समय हमारे पास वभिन्नि उपकरण, तकनीकी सहायता और अन्य सुवधिाएँ उपलब्ध होने पर, हम अक्सर यह कहकर खुद को सही ठहराते हैं कि काम जल्दी नपिटाने के लएि यह सब आवश्यक है , और हम कथति तौर पर इस तरह से मुक्त हुए समय का उपयोग आध्यात्मकि गतविधियिों के लएि करेंगे। लेकनि अंततः हम चतिाओं और मानसकि उथल-पुथल से भरा जीवन जीते हैं , भक्षिुओं की तरह नहीं , बल्कि इस दुनयिा के लोगों की तरह। जब युवा भक्षिुओं का एक नया समुदाय कसिी मठ में आया, तो उन्होंने सबसे पहले प्रेशर कुकर खरीदे — ताकि उन्हें मठ के नयिमों का पालन करने के लएि अधकि समय मलि सके। बाद में , ये भक्षिु घंटों तक कुछ नहीं करते हुए और हर तरह की बातचीत में लगे रहते थे। तो, यह पता चलता है कि समय बचाने और उसे कसिी आध्यात्मकि चीज़ के लएि समर्पति करने के लएि वभिन्नि सुवधिाओं का उपयोग करना काम नहीं करता है। आज, इन सुवधिाओं की मदद से , भक्षिु समय तो पा लेते हैं , लेकनि उनके पास प्रार्थना के लएि कोई समय नहीं बचता।

[112]— गेरोना , मैंने सुना है कि माउंट अथोस के आदरणीय अथानासयिस को भी प्रगतशिील वचिारों वाले व्यक्ति के रूप में वर्णति कयिा जाता है !

— हाँ , वाकई बहुत प्रगतशिील ! आज के 'प्रगतविादयिों ' जतिने ही प्रगतशिील !... काश उन्होंने आदरणीय अथानासयिस के जीवन के बारे में थोड़ा भी पढ़ा होता! उनके मठ में भक्षिुओं की संख्या आठ सौ, यहाँ तक कि एक हजार तक पहुँच गई थी, और कतिने ही अन्य लोग मदद के लएि उनके पास आए! कतिने भखिारी, कतिने भूखे लोग एक रोटी के टुकड़े और आश्रय की तलाश में लाव्रा आए! और इसलएि, सभी की मदद करने के लएि उत्सुक , सम्मानति फादर ने मठ की चक्की के लएि दो बैल खरीदे। आज के 'अग्रदूत ' भी अपने लएि कुछ बैल खरीद लें ! लोगों को रोटी खलिाने के लएि, संत अथानासयिस को लाव्रा में एक बेकरी स्थापति करनी पड़ी — उस युग के मानकों के अनुसार एक आधुनकि बेकरी। बाइज़ेन्टाइन सम्राटों ने मठों को संपत्ति और भूमि प्रदान की, क्योंकि उन दनिों मठ धर्मार्थ संस्थानों के रूप में भी काम करते थे। मठों की स्थापना लोगों की आध्यात्मकि और भौतकि रूप से मदद करने के लएि की गई थी। इसीलएि सम्राटों ने उन्हें उपहार दएि।

हमें यह समझना चाहएि कि सब कुछ नष्ट हो जाएगा, और हम ऋणी होकर ईश्वर के सामने खड़े होंगे। हमारे लएि, भक्षिुओं के रूप में , आज लोगों द्वारा फेंकी जाने वाली चीज़ों का नहीं , बल्कि उन चीज़ों का उपयोग करना उचति होगा जन्हिें अतीत में धनी लोग अवांछति मानकर कूड़े के ढेरों पर फेंक दयिा करते थे। दो बातों को याद रखो: पहली, कि हम मरेंगे ; और दूसरी , कि हम शायद प्राकृतकि कारणों से नहीं मरेंगे। आपको एक हसिक मृत्यु के लएि तैयार रहना चाहएि। यदि आप इन दो बातों को ध्यान में रखें , तो अन्य सभी मामले —आध्यात्मकि और कसिी भी अन्य संबंध में —ठीक चलेंगे , और फरि सब कुछ अपने स्वाभावकि क्रम में हो जाएगा।

वंचना लोगों के लएि बहुत सहायक है

— गेरोन्डा , आज लोग इतनी पीड़ा क्यों सहते हैं ?

— क्योंकि वे कड़ी मेहनत से कतराते हैं। आराम—यही वह है जो लोगों को बीमारी और पीड़ा देता है। सुवधिा के इस युग में , लोग सुस्त हो गए हैं। और नरमी और लाड़ -प्यार अपने साथ कई बीमारयिाँ ले आए हैं। लोग पहले गेहूँ की मड़ाई में कतिनी मेहनत करते थे ! कतिनी कड़ी मेहनत थी वह — फरि भी उस समय की रोटी कतिनी मीठी लगती थी! क्या कभी कोई रोटी का टुकड़ा

---

[110] एक वशिेष रूप से डज़िाइन कयिा गया केरोसनि का दीया जो बहुत तेज रोशनी देता है। – अनुवादक का नोट।

[111] आदरणीय आर्सेनियस महान का जन्म लगभग 354 में रोम में हुआ था। वह अपनी बुद्धि और सद्गुणों के लएि प्रसद्धि थे। उन्हें 'राजाओं के पति' कहा जाता था क्योंकि सम्राट थयिोडोसयिस ने अपने दो बेटों के पालन-पोषण का काम उन्हें सौंपा था। 394 में , एक दैवीय आह्वान के बाद, वे मस्रि के रेगस्तिान में चले गए। महलों में अपने पूर्व जीवन के बावजूद , एक भक्षिु के रूप में वे असाधारण कठोरता और तपस्या के लएि वख्यिात थे।

[112] माउंट अथोस के पूजनीय अथानासयिस (†1000) – अथोस के पवत्रि पर्वत पर महान लाव्रा के संस्थापक , पवत्रि पर्वत पर सामुदायकि संन्यासवाद के पति, एक अनुग्रह -पूर्ण तपस्वी जन्हिें अपने जीवनकाल में और मृत्यु के बाद भी चमत्कार करने का वरदान प्राप्त था। – अनुवादक की टप्पिणी।

कहीं फेंका हुआ देखा था? जब लोग गिरी हुई रोटी का टुकड़ा देखते थे, तो उसे उठाकर चूमते थे। जो लोग कब्जे के समय में रहे हैं, वे एक अतिरिक्त रोटी का टुकड़ा देखकर उसे सावधानी से अलग रख देते हैं। हालाँकि, बाकी लोग अपनी अतिरिक्त रोटी फेंक देते हैं —उन्हें इस बात का एहसास नहीं होता कि यह किस कीमत पर मिली है। वे रोटी की कद्र नहीं करते —वे पूरी-पूरी रोटियाँ कूड़ेदान में फेंक देते हैं। ईश्वर लोगों पर अपनी कृपा बरसाता है, फिर भी ज्यादातर लोग जवाब में 'हे ईश्वर, तेरा ही गुणगान हो' तक नहीं कहते। आजकल, सब कुछ लोगों को आसानी से, बिना किसी मेहनत के मिल जाता है।

तंगहाली लोगों के लिए बहुत सहायक होती है। किसी चीज़ की कमी का अनुभव करके, किसी चीज़ से वंचित होकर, लोग उस चीज़ के मूल्य को पहचानने में सक्षम हो जाते हैं जिसे उन्होंने खो दिया है। और जो लोग मसीह के प्रेम के लिए जानबूझकर, विचारपूर्वक और नम्रता से स्वयं को किसी चीज़ से वंचित करते हैं, वे आध्यात्मिक आनंद का अनुभव करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई कहे : 'अमुक व्यक्ति बीमार है, और इसलिए आज मैं कोई पानी नहीं पियूँगा। मेरे ईश्वर, मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं कर सकता।' और यदि कोई व्यक्ति ऐसा करे, तो ईश्वर उनकी प्यास पानी से नहीं, बल्कि एक मीठे, ताज़गी भरे पेय से बुझाएगा — दिव्य सांत्वना।

जो लोग कष्ट सह रहे हैं, वे उनके प्रति दिखाई गई सबसे छोटी सी दयालुता के लिए भी गहरी कृतज्ञता महसूस करते हैं। जबकि अमीर माता-पिता के बिगड़ैल बच्चे से कोई भी चीज़ कभी संतुष्ट नहीं होता — भले ही उसकी माँ और पिता उसकी हर इच्छा पूरी कर दें। ऐसे बच्चे के पास सब कुछ हो सकता है और फिर भी वह पीड़ित हो सकता है, अपना आपा खो सकता है, और बेचैन हो सकता है। जबकि कुछ दुर्भाग्यशाली बच्चे उन्हें दी गई थोड़ी सी मदद के लिए भी अपार कृतज्ञता महसूस करते हैं। यदि कोई दयालु व्यक्ति माउंट अथोस की उनकी यात्रा का खर्च उठाता है, तो वे कैसे उस व्यक्ति और मसीह दोनों का धन्यवाद करते हैं! फिर भी कई अमीर बच्चों से आप सुनते हैं : 'हमारे पास सब कुछ है; हमारे पास सब कुछ क्यों है?' कुछ भी कमी न होते हुए भी, वे ईश्वर का धन्यवाद करने और गरीबों की मदद करने के बजाय शिकायत करते हैं। यह सबसे बड़ी कृतघ्नता है। उन्हें भौतिक रूप से किसी चीज़ की कमी नहीं है, और इसीलिए वे अपने भीतर एक खालीपन महसूस करते हैं। माता-पिता अपने बच्चों को सब कुछ थाली में परोस देते हैं, और इसके कारण, बच्चे उनसे विद्रोह कर देते हैं, पीठ पर सिर्फ एक rucksack लेकर घर छोड़ देते हैं और दुनिया में भटकते रहते हैं। उनके माता-पिता उन्हें पैसे भी देते हैं ताकि वे घर फोन करके कह सकें कि वे ठीक हैं, लेकिन उन्हें अपने माता-पिता की बातों की कोई परवाह नहीं होती। फिर माता-पिता उन्हें ढूंढने लगते हैं। एक लड़के के पास सब कुछ था, लेकिन उसे किसी भी चीज़ से कोई खुशी नहीं मिली। और इसलिए, बस थोड़ा अनुभव करने के लिए, वह घर से निकल गया और ट्रेनों में सोया, जबकि वह एक अच्छे परिवार से आता था। जबकि, अगर उसके पास कोई नौकरी होती और वह अपनी मेहनत की कमाई से अपना गुज़ारा करता, तो उसकी मेहनत का कोई मतलब होता, और उसे खुद शांति मिलती और वह ईश्वर का धन्यवाद करता।

आजकल, ज्यादातर लोग कठिनाइयों का अनुभव नहीं करते हैं। और यही वजह है कि उनमें प्यार की कमी है। अगर कोई व्यक्ति खुद काम नहीं करता है, तो वह दूसरों की मेहनत की कद्र नहीं कर सकता। थोड़ा-बहुत काम ढूँढना, कुछ पैसे कमाना और फिर कठिनाइयों की तलाश में निकल पड़ना बहुत आसान है - इसमें क्या फायदा? उदाहरण के लिए, स्वीडनवासियों को ही लें, जिन्हें जीने के लिए आवश्यक हर चीज़ के लिए सरकारी सहायता मिलती है और इसलिए वे काम नहीं करते —[आलस्य के कारण] वे सड़कों पर इधर-उधर घूमते रहते हैं। उनका सारा श्रम

व्यर्थ जाता है ; वे अंदर से बेचैन रहते हैं क्योंकि वे आध्यात्मिक मार्ग से भटक गए हैं। वे जीवन में उद्देश्यहीन रूप से घूमते हैं , ठीक वैसे ही जैसे एक पहिया जो अपनी धुरी से उतर गया हो सड़क पर लुढ़कता रहता है — जब तक कि वे खाई में नहीं गिर जाते।

सुख -सुविधाओं की भरमार व्यक्ति को बेकार बना देती है

आजकल, लोग सुंदरता के लिए प्रयास करते हैं और उससे मोहित हो जाते हैं। यह यूरोपीय लोगों के हाथों में खेलता है [113] — वे अपने स्क्रूड्राइवरों से लगातार छेड़छाड़ करते रहते हैं , कुछ नया बनाते रहते हैं — सुंदर और कथित तौर पर अधिक व्यावहारिक — ताकि लोगों को एक उंगली तक हिलाने की ज़रूरत न पड़े। पहले के दिनों में , पारंपरिक औजारों के साथ काम करने से लोग वास्तव में खुद ही मजबूत हो जाते थे। लेकिन आज की मशीनों और गैजेट्स के साथ काम करने के बाद, आपको फिजियोथेरेपी और मालिश का सहारा लेना पड़ता है। ज़रा सोचिए – अब डॉक्टर ही मालिश कर रहे हैं ! आजकल, आप ऐसे बढ़ई देखते हैं जिनके पेट ऐसे ही बाहर निकले होते हैं ! लेकिन क्या आपने पुराने दिनों में कभी किसी मोटे पेट वाले बढ़ई को देखा है ? एक बढ़ई जो पूरे दिन दरारी से लकड़ी घिसता रहता हो, उसका पेट कैसे निकल सकता है ?

जब सुविधाएँ अत्यधिक हो जाती हैं , तो वे एक व्यक्ति को काम का नहीं छोड़ देतीं। एक व्यक्ति आलसी हो जाता है। हो सकता है कि वह अपने हाथ से कुछ पलट सके , लेकिन वह कहता है : 'नहीं , मैं बटन दबाकर इसे खुद पलटने देता हूँ !' अगर किसी व्यक्ति को हर चीज़ आसान होने की आदत पड़ जाए, तो वह चाहता है कि सब कुछ आसान हो। आजकल लोग कम से कम काम करके बहुत सारा पैसा कमाना चाहते हैं। और अगर वे बिना काम किए भी बच निकल सकें , तो और भी अच्छी बात है ! यह मानसिकता हमारे आध्यात्मिक जीवन में भी घुस आई है — हम बिना किसी प्रयास के पवित्र होना चाहते हैं।

और यही वजह है कि ज़्यादातर लोग अपनी आसान ज़िंदगी के कारण इतने कमज़ोर हो गए हैं। अगर कोई युद्ध छिड़ जाता है , तो इतने बिगड़े हुए लोग उसे कैसे सहन कर पाएंगे ? अतीत में , लोग, कम से कम, कड़े होते थे और कठिनाइयों को सहन कर सकते थे —यहां तक कि बच्चे भी। लेकिन अब—यह विटामिन बी, सी और डी, और 'मर्सिडीज ' लिमोज़ीन के अलावा और कुछ नहीं है — लोग अब इसके बिना नहीं रह सकते। उदाहरण के लिए, किसी भी कमजोर बच्चे को लें —अगर वह काम करे , तो उसकी मांसपेशियां मजबूत हो जाएंगी। कई माता-पिता आते हैं और मुझसे अपने बच्चों के लिए प्रार्थना करने को कहते हैं , यह कहते हुए कि वे लकवाग्रस्त हैं। लेकिन असल में , वे लकवाग्रस्त नहीं हैं ; बस उनके पैरों में कुछ कमजोरी है। माता-पिता ऐसे बच्चे को बस खिलाते ही रहते हैं , जबकि वह बस बैठता ही रहता है। लेकिन वह जितना अधिक बैठता है , उसके पैरों की मांसपेशियाँ उतनी ही कमजोर होती जाती हैं। और फिर माता-पिता बच्चे को व्हीलचेयर में बिठा देते हैं और मुझसे कहते हैं : 'हमारे लिए प्रार्थना करें , मेरा बच्चा लकवाग्रस्त है। ' लेकिन असल में लकवाग्रस्त कौन है — बच्चा या माता-पिता? मैं ऐसे माता-पिता को सलाह देता हूँ कि वे अपने बच्चे को कुछ हल्का खिलाएँ जिससे उसका वजन न बढ़े , और उसे थोड़ा -थोड़ा करके चलने के लिए प्रोत्साहित करें। धीरे -धीरे , इन बच्चों का वजन कम हो जाता है , उनकी हरकतें अधिक से अधिक स्वाभाविक हो जाती हैं , और फिर, आपको पता भी नहीं

---

[113] जब यूरोपीय और पश्चिम की बात करते हैं , तो वृद्ध अमेरिका और पश्चिमी यूरोप के लोगों की निंदा नहीं करते , बल्कि उन देशों में प्रचलित अधर्मी और तर्कवादी भावना की निंदा करना चाहते हैं।

चलता, वे फुटबॉल भी खेलने लगते हैं ! जहाँ तक उन बच्चों का सवाल है जो वास्तव में लकवाग्रस्त हैं , और जन्हिें हम मानवीय रूप से मदद नहीं कर सकते , उनकी मदद ईश्वर करेगा। कोनट्सिा में एक छोटा लड़का था जो बहुत बेचैन था और एक बारूदी सुरंग से घायल हो गया था। उसकी टांग इतनी मुड़ी हुई थी कि वह उसे सीधा नहीं कर सकता था। हालाँकि, इस वकिलांगता ने उसे शांत नहीं कयिा। अपनी चंचलता के कारण, वह लगातार अपनी लंगड़ी टांग हलिाता रहता था; उसकी टेंडन खचि गईं , और उसकी टांग स्वस्थ हो गई। और बाद में वह जेरवास की यूनटि में प्रतरिोधयिों में भी शामलि हो गया।[114]

और जब साइटकिा ने मेरी टांग को मरोड़ दयिा,[115] तो मैंने अपनी माला लेकर धीरे -धीरे इधर-उधर टहलते हुए प्रार्थना की, और मेरी टांग मजबूत हो गई। हलिना-डुलना अक्सर भला करता है। अगर मैं बीमार पड़ जाऊं और दो-तीन दनि बाद भी बीमारी ठीक न हो, जसिसे मैं हलि-डुल भी न सकूँ , तो मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ : "हे ईश्वर , बस मुझे थोड़ा उठने और जहाँ मैं पड़ा हूँ वहाँ से हलिने में मदद कर दो, फरि मैं खुद संभल जाऊँगा। मैं जाकर कुछ लकड़ियाँ काटूँगा। " अगर मैं लेटा ही रहूँगा तो मुझे और भी बुरा लगेगा। इसलिए मैं खुद को संभालता हूँ और, भले ही मुझे जुकाम हो, खुद को उठाकर लकड़ियाँ काटने जाता हूँ। मैं अच्छी तरह से गर्म कपड़े पहनता हूँ , पसीना बहाता हूँ , और सारी सर्दी नकिल जाती है। आप सोचेंगे कि क्या मुझे यह नहीं पता कि बस्तिर पर लेटना ज्यादा आरामदायक होता है ! लेकनि मैं खुद को उठाने के लिए मजबूर करता हूँ और—कौन जाने यह सब कहाँ चला जाता है ! जब मैं मेहमानों से मलिता हूँ , तो मुझे पहले से पता होता है कि पेड़ के तने पर बैठने से मेरा पूरा शरीर सुन्न हो जाएगा। बेशक , मैं पेड़ के तने पर एक चटाई बछिा सकता हूँ , लेकनि फरि मुझे दूसरों के लिए भी कुछ बछिानी होंगी , और मैं इतनी सारी चटाइयाँ कहाँ से लाऊँगा ? इसीलिए, रात में , मैं एक घंटा घूमते हुए और अपनी माला से प्रार्थना करते हुए बताता हूँ। फरि मैं कुछ देर के लिए अपने पैर फैला लेता हूँ ताकि उनमें खून जमा न हो जाए — मुझे इससे भी समस्या है। अगर मैं खुद पर ही छोड़ दयिा जाऊँ , तो मुझे देखभाल की ज़रूरत पड़ेगी। जबकि अब [इसके वपिरीत] मैं दूसरों की सेवा कर रहा हूँ। क्या आप समझ रहे हैं कि मेरा क्या मतलब है ? इसलिए बस्तिर पर लेटने में कोई आनंद न ले ; इसमें कोई फायदा नहीं है।

— जेरोंडा , आराम और शारीरकि सुवधिाएँ हर परस्थितिि में व्यक्ति के लिए हानकिारक हैं ?

— कभी-कभी ये आवश्यक होते हैं। उदाहरण के लिए, अगर आपको दर्द हो — तो फरि, लकड़ी के तख्तों पर न बैठें , बल्कि कसिी नरम चीज़ पर बैठें। लेकनि 'नरम' का मतलब मखमल नहीं है। बस नीचे एक साधारण कपड़ा बछिा लें। हालांकि, अगर आपके पास हम्मित है , तो नीचे कुछ भी न रखें।

— जेरोंडा , कुछ लोग ऐसे होते हैं जनिके बारे में लोग कहते हैं : 'वह एक कठोर बूढ़ा आदमी है। '

— हाँ , ऐसे लोग हैं। माउंट अथोस पर, मेरे कालीवा से ज्यादा दूर नहीं , एक साइप्रस का भक्षिु रहता है — एल्डर जोसेफ , मूल रूप से करपासयिा के रहने वाले।[116] एल्डर की उम्र एक सौ छह साल है ,[117] और वे अपना ख्याल खुद रखते हैं। क्या आपको आज के धर्मनरिपेक्ष दुनयिा में ऐसा मलिेगा ? आजकल के कुछ पेंशनभोगी तो चल भी नहीं सकते ; उनके पैर कमजोर पड़ रहे हैं , और बैठे -बैठे वे ढीले -ढाले हो जाते हैं और कसिी काम के नहीं रहते। फरि भी अगर उन्हें कसिी तरह के काम में व्यस्त रखा जाए, तो उन्हें उससे अपार लाभ होगा। एक बार, एल्डर जोसेफ को वाटोपेदी मठ ले जाया गया था। उन्होंने उसके सारे कपड़े धोए, उसे नहलाया, और उसकी भरपूर देखभाल की। लेकनि उसने उनसे कहा: 'जैसे ही मैं यहाँ पहुँचा , मैं बीमार पड़ गया। और यह सब तुम्हारी ही वजह से है। मुझे मरने के लिए मेरे आश्रम वापस ले जाओ।' इसके अलावा कोई चारा नहीं था; उन्हें उसे वापस ले जाना पड़ा। एक दनि मैं उससे मलिने गया। 'ठीक है ,' मैंने कहा, 'मैंने सुना है कि आप मठ चले गए हैं। ' 'हाँ ,' उन्होंने जवाब दयिा, 'यह सही है। वे कार से आए, मुझे वाटोपेदी ले गए, मुझे नहलाया, मुझे साफ़ कयिा, ने मेरी देखभाल की, लेकनि मैं बीमार पड़ गया और मैंने उनसे कहा: "मुझे वापस ले जाओ।" मैं वापस लौटी ही थी कि मैं फरि से ठीक हो गई!" अब वह खुद नहीं देख सकते , लेकनि वे जपमाला बुनते हैं। एक बार मैंने उन्हें कुछ सूंघी भेजी , और वे सचमुच नाराज़ हो गए: "क्या एल्डर पैसयिोस मुझे सच में क्षयरोगी समझते हैं , जो मुझे सूंघी भेज रहे हैं ?" ज़रा सोचिए — वह बीन्स , मटर, वगैरह खाता है — वह इतना स्वस्थ है कि आप सोचेंगे कि वह कोई जवान लड़का है। वह दो छड़ियों के सहारे चलता है , और फरि भी जड़ी -बूटियाँ इकट्ठा करने में कामयाब रहता है , जन्हिें वह उबालकर खाता है। वह अपने सब्जी के खेत में प्याज उगाता है ! वह अपने कपड़े धोने और बाल धोने के लिए खुद पानी लाता है ! और फरि वह दव्यि सेवा का संचालन भी करते हैं , स्वयं भजन संहति पढ़ते हैं , अपने मठ के नयिम का पालन करते हैं , और यीशु प्रार्थना करते हैं। उन्होंने छत की परत बदलने के लिए दो छत बनाने

---

[114] नेपोलयिन ज़र्वस (1891–1957) – 'राष्ट्रीय ग्रीक लोकतांत्रकि संघ ' नामक फासीवाद-वरिोधी आंदोलन के नेता , जसिने एपरिस और ग्रीस के कुछ अन्य क्षेत्रों में नाज़ियों के खलिाफ लड़ाई लड़ी। – अनुवादक की टप्पिणी।

[115] सयिाटकि नस की सूजन। – अनुवादक की टप्पिणी।

[116] साइप्रस का एक शहर। – अनुवादक की टप्पिणी।

[117] नवंबर 1990 में

वालों को काम पर रखा और, अपनी बैसाखी हाथ में लेकर , यह देखने के लिए सीढ़ी से चढ़ गए कि वे काम कैसे कर रहे हैं। छत बनाने वालों ने उनसे कहा, "नीचे आ जाइए।" 'बिल्कुल नहीं ,' वह जवाब देता है , 'मैं ऊपर चढ़कर देखूंगा कि आप छत कैसे बना रहे हैं। ' बेशक , वह बहुत कष्ट सहता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि उसे कैसी खुशी होती है ? उसका दिल एक पक्षी की तरह ऊँचा उड़ जाता है ! दूसरे भिक्षु चुपके से उसके कपड़े ले जाकर धो देते हैं। एक बार मैंने उनसे पूछा , "आप अपनी चोगा-पोशाक का क्या करते हैं ?" वे कहते हैं , "वे अक्सर उन्हें धोने ले जाते हैं —मेरी जानकारी के बिना। लेकिन मैं उन्हें खुद भी धोता हूँ : मैं उन्हें एक खाई में डालता हूँ , उन पर पानी डालता हूँ , और फिर ऊपर से एक 'वेज ' (कुल्हाड़ी की नोक) से अच्छी -खासी पिटाई कर देता हूँ !"[118] कुछ ही दिनों में वे बिल्कुल नए जैसे हो जाते हैं !" देखो , उसे ईश्वर में कितना भरोसा है ! दूसरों के पास वह सब कुछ है जिसकी उनके दिल को चाहत है , फिर भी वे डर और इसी तरह की चीजों से पीड़ित रहते हैं। वह, हालांकि , चिंता से बीमार पड़ गया, लेकिन जैसे ही उसे शांति मिली, वह ठीक हो गया।

आसान जीवन किसी व्यक्ति के लिए अच्छा नहीं होता। एक भिक्षु के लिए आराम की कोई जगह नहीं है ; सुलभता मरुभूमि को अपमानित करती है। हो सकता है कि तुम्हें अपने पूर्व जीवन ने बिगाड़ दिया हो, लेकिन अगर तुम स्वस्थ हो, तो तुम्हें खुद को कठोर बनाना होगा। अन्यथा , तुम कोई भिक्षु नहीं हो।

अध्याय 3.
अपने जीवन को सरल बनाने की आवश्यकता पर, मानसिक चिंता से मुक्ति पाने के लिए

दुनियावी सफलता आत्मा में दुनियावी चिंता लाती है

जितना अधिक लोग एक प्राकृतिक , सरल जीवन से भटकते हैं और विलासिता में समृद्धि प्राप्त करते हैं , उनकी आंतरिक चिंता उतनी ही बढ़ती जाती है।

और क्योंकि वे ईश्वर से दिन-प्रतिदिन दूर होते जा रहे हैं , उन्हें कहीं भी शांति नहीं मिलती। इसीलिए लोग एक मशीन की ड्राइव बेल्ट की तरह 'पागल पहिये ' के चारों ओर बेचैन होकर घूमते रहते हैं। [119] वे पहले से ही चंद्रमा के चारों ओर घूम रहे हैं , क्योंकि पूरी पृथ्वी उनकी महान बेचैनी को समाहित नहीं कर सकती।

एक बेफिक्र सांसारिक जीवन और सांसारिक सफलता आत्मा में सांसारिक चिंता लाती है। बाहरी शिक्षा , आंतरिक चिंता के साथ मिलकर, हर दिन सैकड़ों लोगों को (यहाँ तक कि छोटे बच्चों को भी जो अपना मानसिक शांति खो चुके हैं) मनोविश्लेषण और मनोचिकित्सकों के पास ले जाती है। और अधिक से अधिक मनोरोग अस्पताल बनाए जा रहे हैं , और मनोचिकित्सकों के लिए और प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं , जबकि इनमें से कई मनोचिकित्सक न तो ईश्वर में विश्वास करते हैं और न ही आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। तो फिर, ये

---

[118] एल्डर जोसेफ 'क्लीन ' नामक वाशिंग पाउडर का उल्लेख कर रहे थे।

[119] पहले के दिनों में , विनिर्माण में , 'पागल पहिया' (mad wheel) एक ऐसे पहिये के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द था जो काम नहीं कर रहा होता, जिस पर ड्राइव बेल्ट लगा दी जाती थी ताकि मोटर बंद किए बिना मशीन को रोका जा सके।

लोग—जो स्वयं ही आंतरकि चंता से भरे हुए हैं —अन्य आत्माओं की मदद कैसे कर सकते हैं ? एक ऐसा व्यक्ति जो ईश्वर और मृत्यु के बाद के सच्चे , शाश्वत जीवन में वश्विास नहीं रखता, उसे वास्तव में कैसे सांत्वना मलि सकती है ? यदि कोई व्यक्ति सच्चे जीवन के गहरे अर्थ को समझ जाता है , तो उसकी आत्मा से सारी चंताएँ दूर हो जाती हैं , उसे दव्यि सांत्वना मलिती है , और वह ठीक हो जाता है। यदि किसी मनोरोग अस्पताल में मरीजों को अब्बा इसाक द सीरयिन की रचनाएँ ज़ोर से पढ़कर सुनाई जाएँ , तो जो मरीज ईश्वर में वश्विास रखते हैं , वे स्वस्थ हो जाएँगे , क्योंकि जीवन का गहरा अर्थ उनके सामने प्रकट हो जाएगा।

किसी भी कीमत पर — शांतदिायक दवाओं और योग जैसी वभिन्नि प्रथाओं की मदद से — लोग शांति पाने का प्रयास करते हैं , लेकनि वे उस सच्ची शांति की तलाश नहीं करते जो उन लोगों को मलिती है जन्हिोंने स्वयं को नम्र बनाया है और जो उन्हें दव्यि सांत्वना प्रदान करती है। बस सोचए कि दूसरे देशों से यहाँ आने वाले ये सभी पर्यटक कतिनी यातना सह रहे हैं —जलती धूप में , गर्मी और धूल में , शोर और हलचल के बीच, सड़कों पर भटक रहे हैं ! कतिना बोझ, कतिनी आंतरकि बेचैनी है जो उनके आत्माओं पर हावी है और उन्हें सताती है , यदि वे उस सब को जो उन्हें सहना पड़ता है , आराम मानते हैं ! इन लोगों की आत्माओं पर उनका अपना 'अहंकार ' कतिना भारी पड़ रहा होगा, क्योंकि वे सोचते हैं कि वे इतनी पीड़ा सहते हुए आराम कर रहे हैं !

यदि हम किसी व्यक्ति को तीव्र मानसकि पीड़ा , कष्ट और दुख से ग्रस्त देखें , जबकि उसके पास मन की हर इच्छा पूरी करने के लिए सब कुछ हो, तो हमें यह समझ लेना चाहए कि उसके पास ईश्वर नहीं है। आखरिकार, लोग अपनी संपत्ति के कारण भी दुखी होते हैं। क्योंकि भौतकि वस्तुएँ उन्हें भीतर से खालीपन का एहसास कराती हैं , और वे और भी अधकि पीड़ति होते हैं। मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ — जनिके पास सब कुछ है , फरि भी जनिके कोई संतान नहीं है और जो पीड़ति हैं। उनके लिए सोना एक बोझ है , चलना एक बोझ है ; वे जो कुछ भी करते हैं , वह उनके लिए एक यातना है। "तो फरि," मैंने ऐसे ही एक व्यक्ति से कहा, "चूंकि आपके पास खाली समय है , तो अपने आध्यात्मकि जीवन को समर्पति करें। "प्रार्थना करो,[120] सुसमाचार पढ़ो। " — "मैं नहीं कर सकता।" — "ठीक है , फरि कुछ दयालु काम करो — अस्पताल जाओ, किसी बीमार से मलिो।" — "मैं वहाँ क्यों जाऊँ ," वह कहता है , "और इससे क्या फायदा होगा?" — "तो फरि पड़ोस में किसी गरीब की मदद कर दो।" — "नहीं — वह भी मेरा काम नहीं है। " खाली समय हो, कई घर हों , जीवन की सभी सुख -सुवधिाएँ हों , और फरि भी यातना झेलनी पड़े ! और क्या आप जानते हैं कि उसके जैसे कतिने लोग हैं ? वे वहाँ खुद को सताते रहते हैं —जब तक कि वे पागल नहीं हो जाते। यह कतिना भयानक है ! और उन सभी में सबसे अधकि पीड़ति और दुखी वे लोग हैं जो काम नहीं करते , बल्कि अपनी संपत्ति की आय पर जीते हैं। जनिमें से , कम से कम, काम तो करते हैं , उनका जीवन थोड़ा आसान होता है।

आजकल की ज़दिगी , अपनी इस कभी न खत्म होने वाली दौड़ -भाग के साथ, एक जीती-जागती नर्क है

लोग हमेशा कहीं न कहीं भाग-दौड़ में लगे रहते हैं। उन्हें किसी खास समय पर एक जगह, तो किसी दूसरे समय पर दूसरी जगह, फरि किसी तीसरे जगह होना होता है ... यह सुनश्चिति करने के लिए कि वे जो करना है उसे भूल न जाएं , लोगों को सब कुछ लखिने के लिए मजबूर होना पड़ता है। यह अच्छी बात है कि इस सब भाग-दौड़ के बीच, वे अपना नाम तो नहीं भूल गए! वे खुद को भी नहीं जानते। और वे खुद को पहचाने भी कैसे —क्या आप सचमुच एक दर्पण की तरह मटमैले पानी में अपना प्रतबिंबि देख सकते हैं ? ईश्वर मुझे क्षमा करे , लेकनि दुनिया एक सच्चे पागलखाने में बदल गई है। लोग किसी दूसरे तरह के जीवन के बारे में नहीं सोचते —वे केवल और अधकि भौतकि वस्तुओं की तलाश में रहते हैं। और इसीलिए उन्हें कोई शांति नहीं मलिती और वे लगातार कहीं न कहीं भागते रहते हैं।

सौभाग्य से , जीवन का एक और भी प्रकार है। लोगों ने अपनी सांसारकि ज़दिगी ऐसी बना ली है कि अगर उन्हें यहाँ हमेशा के लिए रहना पड़े , तो इससे बड़ी कोई यातना नहीं हो सकती। अगर वे अपने दलिों में इस चंता के साथ आठ सौ या नौ सौ साल जएिँ —जैसा कि नूह के दनिों में था,[121] —

---

[120] घंटे (पहला, तीसरा, छठा, नौवां) – एक अलग संक्षप्ति धार्मकि अनुष्ठान सेवा जो दैनकि धार्मकि अनुष्ठान चक्र का हस्सिा है। – अनुवादक की टप्पिणी।

[121] उत्पत्ति 5 देखें।

तो उनका जीवन एक लंबी , नरकीय यातना होगी। उन दिनों , लोग साधारण जीवन जीते थे। और उनकी आयु इतनी लंबी थी ताकि परंपरा संरक्षित रह सके। लेकिन अब जो हो रहा है उसका वर्णन भजन संहिता में किया गया है : 'हमारे दिनों की संख्या सत्तर वर्ष है , या यदि हम बलवान हों तो अस्सी ; फिर भी उनका श्रम और रोग केवल भार ही हैं। '[122] और सत्तर साल किसी के बच्चों को अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए बस पर्याप्त समय है — यह बिल्कुल सही बैठता है।

एक बार, अमेरिका का एक डॉक्टर मेरी झोपड़ी में आया। उसने मुझे वहाँ के जीवन के बारे में बताया। वहाँ के लोग मशीनों में बदल गए हैं —वे अपना पूरा दिन काम में लगा देते हैं। परिवार के हर सदस्य के पास अपनी कार होनी चाहिए। इसके अलावा, यह सुनिश्चित करने के लिए कि घर पर हर कोई आराम महसूस करे , वहाँ चार टेलीविज़न होने चाहिए। तो फिर काम करते -करते अपनी हड्डीयाँ तक घिस डालो, ढेर सारा पैसा कमाओ, और बाद में यह कहने के लिए कि तुम सुखी और अमीर हो। लेकिन इस सब का सुख से क्या लेना -देना है ? ऐसी जिंदगी , जो चिंता और कभी न खत्म होने वाली दौड़ से भरी हो, सुख नहीं बल्कि नारकीय यातना है। तुम ऐसी चिंता से भरी जिंदगी क्यों चाहोगे ? मैं ऐसी ज़िंदगी नहीं चाहूँगा , भले ही पूरी दुनिया का यही नसीब हो। अगर भगवान इन लोगों से कहें : 'मैं तुम्हें तुम्हारी ज़िंदगी के लिए सज़ा नहीं दूँगा , लेकिन मैं तुम्हें हमेशा के लिए ऐसे ही जीने दूँगा ,' तो यह मेरे लिए एक बड़ी यातना होगी।

इसीलिए कई लोग, ऐसी परिस्थितियों में जीवन नहीं सहन कर पाते हुए , शहर छोड़ देते हैं और बिना किसी दिशा या उद्देश्य के निकल पड़ते हैं — बस दूर जाने के लिए। वे समूहों में इकट्ठा होते हैं और जंगली इलाकों में रहते हैं — कुछ शारीरिक फिटनेस पर ध्यान केंद्रित करते हैं , तो कुछ अन्य चीजों पर। मुझे बताया गया है कि उनमें से कुछ दौड़ने जाते हैं , जबकि अन्य पहाड़ों की ओर बढ़ते हैं और 6,000 मीटर की ऊंचाई तक चढ़ते हैं। पहले वे अपनी सांस रोकते हैं , फिर कुछ देर के लिए सामान्य रूप से सांस लेते हैं , फिर एक और गहरी सांस लेते हैं ... वे ऐसी ही बकवास करते हैं ! यह दर्शाता है कि उनके दिलों पर चिंता का एक भारी बोझ है , और उनके दिल किसी तरह का निकास खोज रहे हैं। मैंने ऐसे ही एक व्यक्ति से कहा: 'तुम एक गड्ढा खोद रहे हो, उसे और गहरा और गहरा कर रहे हो, फिर इस गड्ढे और उसकी गहराई पर हैरान हो रहे हो, और फिर... आप उसमें गिर जाते हैं और नीचे गिरते चले जाते हैं। जबकि हम [सिर्फ एक गड्ढा नहीं खोद रहे , बल्कि] एक खदान खोद रहे हैं और खनिज खोज रहे हैं। हमारे तपस्या में एक अर्थ है , क्योंकि यह किसी उच्चतर चीज़ के लिए की जाती है। "

आत्मा की चिंता शैतान से आती है

— गेरोन्डा , जो गृहस्थ जीवन जीते हैं , वे काम में थक जाते हैं और शाम को घर लौटने पर, वेस्पर्स (शाम की प्रार्थना) करने की शक्ति नहीं रखते। और यह उन्हें दुख पहुँचाता है।

— यदि वे देर शाम घर लौटते हैं और थके हुए हैं , तो उन्हें कभी भी मानसिक चिंता के साथ खुद पर ज़बरदस्ती नहीं करनी चाहिए। मनुष्य को हमेशा प्यार से खुद से कहना चाहिए: 'यदि आप संपूर्ण संध्या प्रार्थनाएँ नहीं पढ़ सकते , तो आधी या एक तिहाई पढ़ें। ' और अगली बार, दिन के दौरान खुद को बहुत ज़्यादा थकाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। इंसान को जितना संभव हो सके प्रेम से प्रयास करना चाहिए और हर चीज़ में ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए। और ईश्वर अपना काम करेंगे। मन हमेशा ईश्वर के करीब होना चाहिए। यह सबसे उत्तम कर्म है।

— गेरोन्डा , ईश्वर की दृष्टि में अत्यधिक तपस्या का क्या मूल्य है ?

---

[122] भजन संहिता 89:10।

—यदि इसे प्रेम से किया जाए, तो व्यक्ति और ईश्वर दोनों प्रसन्न होते हैं —ईश्वर अपने प्रेममय बच्चे पर प्रसन्न होते हैं। यदि कोई व्यक्ति प्रेम के लिए अपने शरीर को कष्ट देता है, तो यह उसके हृदय में मधु भर देता है। लेकिन यदि वे स्वार्थ के लिए अपने शरीर को कष्ट देते हैं, तो यह उन्हें पीड़ा देता है। एक व्यक्ति, जो स्वार्थ के लिए तपस्या करता था और आत्मा में परेशान होकर स्वयं को कष्ट देता था, ने एक बार कहा: 'हे मेरे मसीह! वह द्वार जिसे आपने बनाया है, बहुत संकरा है! मैं उनसे गुज़र नहीं सकता।' लेकिन अगर उसने अपना तपस्या-मार्ग विनम्रता से अपनाया होता, तो ये द्वार उसके लिए इतने संकरे नहीं होते। जो लोग स्वार्थ के लिए उपवास, जागरण और अन्य तपस्या-कर्म करते हैं, वे बिना किसी आध्यात्मिक लाभ के खुद को ही पीड़ा देते हैं, क्योंकि वे राक्षसों के बजाय हवा से ही लड़ रहे होते हैं। राक्षसी प्रलोभनों को दूर करने के बजाय, वे उन्हें और भी बड़ी संख्या में स्वीकार करते हैं और—परिणामस्वरूप —अपने तप में कई कठिनाइयों का सामना करते हैं, और ऐसा महसूस करते हैं जैसे वे आंतरिक कलह से दम घुट रहे हों। जबकि जो लोग तपस्या को गंभीरता से, बड़ी विनम्रता और ईश्वर में गहरे विश्वास के साथ करते हैं, उनके हृदय आनंदित होते हैं और उनकी आत्मा ऊँचाई पर उठती है।

आध्यात्मिक जीवन के लिए ध्यान की आवश्यकता होती है। जब आध्यात्मिक लोग अहंकार के लिए कुछ भी करते हैं, तो उनके आत्मा में एक शून्यता रह जाती है। उनका हृदय न तो भरता है, और न ही वे ऊँचा उठते हैं। जितना अधिक वे अपनी अहंकार में लिप्त होते हैं, उतनी ही अधिक उनकी आंतरिक रिक्तता बढ़ जाती है, और वे उतना ही अधिक पीड़ित होते हैं। जहाँ मानसिक चिंता और निराशा होती है, वहाँ एक दैवीय आध्यात्मिक जीवन होता है। अपनी आत्मा को किसी भी चीज़ से परेशान न होने दें। मानसिक चिंता शैतान से आती है। जब आप मानसिक चिंता देखते हैं, तो जान लें कि शैतान ने अपनी पूँछ से वहाँ हलचल मचाई है। शैतान हमारे रास्ते में नहीं आता। यदि कोई व्यक्ति किसी चीज़ की ओर झुकाव रखता है, तो शैतान उन्हें उसी दिशा में धकेलता है, ताकि उन्हें थका सके और बहका सके। उदाहरण के लिए, वह एक संवेदनशील व्यक्ति को अत्यधिक संवेदनशील बना देता है। यदि कोई तपस्वी प्रणाम करने के लिए इच्छुक है, तो शैतान भी उसे उसकी शक्ति से अधिक प्रणाम करने के लिए उकसाता है। और यदि आपकी शक्ति सीमित है, तो पहले एक तरह की घबराहट होने लगती है, क्योंकि आप देखते हैं कि आपकी शक्ति पर्याप्त नहीं है। फिर शैतान आपको मानसिक संकट की स्थिति में लाता है, जिसमें पहले तो निराशा की एक हल्की सी भावना होती है, और फिर वह इस स्थिति को और अधिक तीव्र करता जाता है ... मुझे अपने मठवासी जीवन की शुरुआत याद है। कुछ समय के लिए, जैसे ही मैं सोने के लिए लेटता, प्रलोभी मुझसे कहता: 'क्या, तुम सो रहे हो? उठो! कितने लोग पीड़ित हैं, कितनों को मदद की ज़रूरत है!..' मैं उठता और जितनी हो सके उतनी बार प्रणाम करता। जैसे ही मैं फिर से लेटता, वह फिर से शुरू कर देता: 'लोग पीड़ित हैं, और तुम सो रहे हो? उठो!" —और मैं फिर से उठ जाता। यह उस हद तक पहुँच गया कि एक बार मैंने कहा: "आह, कितना अच्छा होता अगर मेरे पैर काट दिए जाते! तब मेरे पास प्रणाम न करने का एक जायज़ कारण होता।" एक लेंट (ईसाई उपवास) के दौरान, ऐसी परीक्षा का सामना करते हुए, मैं बड़ी मुश्किल से उसे सहन कर पाया, क्योंकि मैं खुद पर अपनी क्षमता से भी अधिक कठिनाई थोपना चाहता था।

यदि, तपस्या करते समय, हमें आंतरिक कष्ट महसूस हो, तो हमें यह समझ जाना चाहिए कि हम इसे ईश्वर के मार्ग पर नहीं कर रहे हैं। ईश्वर कोई तानाशाह नहीं है जो हमें दम घोंटने की कोशिश करता हो। सभी को अपनी क्षमता के अनुसार, प्रेम के साथ तपस्या करनी चाहिए। हमें अपने भीतर प्रेम को विकसित करना चाहिए ताकि ईश्वर के प्रति हमारा प्रेम बढ़ सके। तब एक

व्यक्ति उसी प्रेम से तपस्या के प्रयास के लिए प्रेरित होगा, और उसकी तपस्या स्वयं — अर्थात् प्रणाम , उपवास और इसी तरह की अन्य बातें —उसके प्रेम का प्रवाह ही होगी। और फिर वह आध्यात्मिक साहस के साथ आगे बढ़ेगा।

परिणामस्वरूप , विकृत पांडित्य के साथ प्रयास करने की कोई आवश्यकता नहीं है , केवल बाद में यह पता चलता है कि विचारों से लड़ते हुए , व्यक्ति आध्यात्मिक चिंता से दम घुटने लगता है। व्यक्ति को अपने संघर्ष को सरल बनाना चाहिए और अपनी आशा स्वयं में नहीं , बल्कि मसीह में रखनी चाहिए। मसीह ही सर्व प्रेम , सर्व सद्गुण और सर्व सांत्वना हैं। वह कभी किसी व्यक्ति को घुटन नहीं देता। उसके पास प्रचुर मात्रा में आध्यात्मिक ऑक्सीजन है —दिव्य सांत्वना। सूक्ष्म आध्यात्मिक श्रम एक बात है , लेकिन दर्दनाक शास्त्रार्थ , जो बाहरी करतब दिखाने की मूर्खतापूर्ण बाध्यता के माध्यम से , एक व्यक्ति को मानसिक पीड़ा से घुटन देता है और दर्द से उसका सिर फाड़ देता है , वह बिल्कुल दूसरी बात है।

— जेरोंडा , अगर कोई व्यक्ति स्वभाव से ही गहरा विचारक है और उसके विचारों का सिर फटा जा रहा है तो क्या होगा? उसे किसी विशेष समस्या से निपटने के लिए ऐसा क्या तरीका अपनाना चाहिए कि वह खुद को थका न दे ?

— यदि कोई व्यक्ति सरलता से व्यवहार करता है , तो वह खुद को थका नहीं पाएगा। लेकिन यदि स्वार्थ की थोड़ी सी भी भावना आ जाए, तो यह डरते हुए कि कहीं कोई गलती न हो जाए, वे खुद पर बहुत ज़ोर डालते हैं और थक जाते हैं। भले ही वे कोई गलती कर भी दें — खैर , उन्हें थोड़ी डाँट -फटकार पड़ेगी ; इसमें कुछ भी भयानक नहीं है। आप जिस मानसिक स्थिति के बारे में पूछ रहे हैं , वह उदाहरण के लिए, एक न्यायाधीश के मामले में उचित हो सकती है , जो लगातार जटिल मामलों का सामना करते हुए , इस बात से डरता है कि वह कोई गलत फैसला दे सकता है और निर्दोष लोगों को सज़ा हो सकती है। हालांकि , आध्यात्मिक जीवन में , एक सिरदर्द तब पैदा होता है जब कोई व्यक्ति , जो एक जिम्मेदार पद पर है , यह नहीं जानता कि कैसे कार्य करे , क्योंकि उन्हें एक ऐसा निर्णय लेना होता है जिससे किसी को किसी न किसी तरह से नुकसान होगा, फिर भी यदि वे वह निर्णय नहीं लेते हैं , तो यह दूसरे लोगों के प्रति अनुचित होगा। ऐसे व्यक्ति का अंतरात्मा लगातार तनाव की स्थिति में रहता है। बहन, यह ऐसा ही होता है। जहाँ तक आपकी बात है , आध्यात्मिक रूप से परिश्रम करने में सावधान रहें —अपने मन से नहीं , बल्कि अपने हृदय से। और ईश्वर में विनम्र विश्वास के बिना कोई भी आध्यात्मिक प्रयास न करें। अन्यथा , आप चिंतित होंगे , , मानसिक रूप से खुद को थका देंगे , और अपनी आत्मा में अस्वस्थ महसूस करेंगे। आंतरिक बेचैनी आमतौर पर अविश्वास से उत्पन्न होती है , लेकिन कोई व्यक्ति गर्व के कारण भी ऐसी स्थिति का अनुभव कर सकता है।

संन्यास जीवन में सादगी बहुत सहायक है

— ...क्या आप देखती हैं कि उन साधारण ग्रे कंबलों से आपका बैठकखाना कितना आरामदायक हो गया है ? अब यह थोड़ा सा मठ जैसा दिखता है।

— गेरोना , एक भिक्षु को कैसे पता चलेगा कि मठ के लिए क्या उपयुक्त है और क्या नहीं ?

— किसी को यह प्रश्न स्वयं से पूछकर शुरुआत करनी चाहिए: 'मैं कौन हूँ , और मैं जिस जीवन को जीता हूँ उसमें मेरे कर्तव्य क्या हैं ?' खाकी रंग सेना की शोभा बढ़ाता है। काला रंग मठ की शोभा बढ़ाता है। यदि सेना को काले कपड़े पहनाए जाएँ , और मठों को छलावरण (कैमफ्लॉज) में , तो यह न तो सेना के और न ही संन्यासी जीवन के अनुकूल होगा। क्या आप

कल्पना कर सकते हैं कि अगर आप अभी नर्सों की तरह सफेद कोट पहन लें ? तो क्या आप फिर भी नर्स ही रहेंगी या नहीं ? खैर , बस यही बात है ... और अगर नर्सें सिर्फ अपनी ही उपस्थिति से मरीजों को निराश करने के लिए काले चोगा पहन लें ! तब मरीज कहेंगे , 'ऐसा लगता है कि हमारे दिन गिने -चुने हैं , लेकिन वे हमें सीधे -सीधे नहीं बता रहे हैं। ' देखिए , पोशाक में ऐसा बदलाव अनुचित होगा। क्या हम सच में ऐसा करेंगे ? कोई वस्तु सचमुच सुंदर हो सकती है , लेकिन वह साधु जीवन के अनुकूल नहीं है। उदाहरण के लिए, मखमल एक सुंदर कपड़ा है , लेकिन अगर मैं मखमल का चोगा पहनूँ , तो यह सम्मान के बजाय अपमान होगा। मठ में कुछ भी लाल या रंगीन का उपयोग न करें। यह उचित नहीं है।

— तो फिर, गेरोना , ऐसा लगता है कि सब कुछ रंगहीन और स्वादहीन होना चाहिए।

— आध्यात्मिक स्वाद तो ठीक उसी समय प्रकट होगा! हालाँकि , यह बात समझनी होगी। लोगों को अभी तक उस आनंद का एहसास नहीं हुआ है जो सादगी लाती है। मेरे कालीन में , मैं झाड़ू को पानी से गीला करके कोनों से कालिख-भरी मकड़ी के जालों को झाड़ देता हूँ। और मैं यह काम साल में सिर्फ एक बार करता हूँ। आपको यकीन नहीं आएगा कि गीली झाड़ू छत पर कितनी खूबसूरत काली-सफेद धारियाँ छोड़ती है ! असली पैटर्न ! जब लोग मेरी छत देखते हैं , तो उन्हें लगता है कि मैंने उसे जानबूझकर ऐसे ही रंगवाया है ! और आप जानते हैं कि इससे मुझे कितनी खुशी होती है !

मैं ऐसे संन्यासियों को जानता हूँ जिनका आनंद आध्यात्मिक जीवन में नहीं , बल्कि सांसारिक चीजों में था। उन्होंने कभी वह आनंद नहीं जाना जो सादगी लाती है। सादगी संन्यासी जीवन में बहुत मददगार होती है। एक संन्यासी के पास केवल वही चीजें होनी चाहिए जो उसके लिए आवश्यक हों और जो उसके अनुकूल हों। उसे केवल उन्हीं चीज़ों तक सीमित रहना चाहिए जो उसके जीवन को थोड़ा आसान बनाती हैं , और अधिक - सांसारिक चीज़ों - के लिए प्रयास न करें। उदाहरण के लिए, एक सैनिक की कंबल ठंड से बचने के लिए काफी है - लेस या रंगीन कंबल की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है। इस तरह, सादगी और आध्यात्मिक साहस आता है।

एक भिक्षु के पास बहुत सारी संपत्ति लाकर आप उसे बर्बाद कर देते हैं। जबकि यदि कोई व्यक्ति खुद को [अनावश्यक] संपत्ति से मुक्त कर लेता है , तो इससे उसकी शक्ति वापस आ जाती है। और यदि कोई भिक्षु अपने लिए संपत्ति इकट्ठा करता है , तो वह खुद को बर्बाद कर लेता है। जब लोग मुझे चीजें भेजते हैं , तो मुझे एक बोझ महसूस होता है और मैं उनसे छुटकारा पाना चाहता हूँ। मेरी कोठरी में कोई भी फालतू चीज़ होने से मुझे ऐसा महसूस होता है जैसे मैंने एक बहुत छोटा सा कुरता पहन रखा हो। और अगर इन चीज़ों को देने के लिए कोई नहीं है , तो, मेरी राय में , इन्हें फेंक देना बेहतर है। लेकिन जैसे ही मैं इन्हें दे देता हूँ , मुझे राहत और मुक्ति का एहसास होता है। एक बार, एक परिचित मुझसे मिलने आया और कहा: 'गेरोंडा , फलाने ने मुझे ये चीजें आपको देने के लिए दी हैं। और उसने यह भी कहा कि आप प्रार्थना करें कि उसकी चिंता उससे दूर हो जाए।" — "तो वह उससे दूर होकर मुझ पर आ जाएगी?" मैंने जवाब दिया। "तुम बेहतर करोगे कि ये चीजें वापस ले जाओ और चले जाओ। मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ : लोगों के घरों में जाकर उपहार बाँटना मेरी पहुँच से बाहर है। "[123]

जो सुख -सुविधाएँ लोग भोगते हैं , वे एक संन्यासी के किसी काम नहीं आतीं ; बल्कि , वे उसे दास बना देती हैं। एक संन्यासी को अपनी ज़रूरतों को कम करने और अपने जीवन को सरल

---

[123] एल्डर पैसियोस उनके पास लाई गई वस्तुओं को उन अन्य भिक्षुओं में बाँट देते थे जिन्हें उनकी आवश्यकता होती थी।

बनाने का प्रयास करना चाहिए; अन्यथा , वह कभी मुक्त नहीं हो पाएगा। स्वच्छता एक बात है , लेकिन अत्यधिक आभूषण -प्रयोग बिल्कुल दूसरी बात है। यदि कोई एक ही वस्तु का कई कामों के लिए उपयोग करता है , तो इससे उसकी इच्छाओं पर काफी हद तक अंकुश लगता है। माउंट सिनाई पर मेरे पास सिर्फ़ एक टिन का डिब्बा था — मैं उसका इस्तेमाल चाय और दलिया दोनों बनाने के लिए करता था। और आपको क्या लगता है , एक व्यक्ति को जीने के लिए वास्तव में क्या चाहिए? पुराने दिनों में , रेगिस्तान में लोग सिर्फ़ खजूर खाकर ही जीते थे। वे आग नहीं जलाते थे और न ही उन्हें किसी ईंधन की ज़रूरत पड़ती थी। हाल ही में मैंने एक कंडेंस्ड मिल्क का टिन लिया, उसका ऊपरी हिस्सा काट दिया और उसमें हैंडल जैसा कुछ लगा दिया। आप ऐसे टिन में उन सभी कॉफ़ी पॉट्स से बेहतर कॉफ़ी या चाय बना सकते हैं ! आप बस इसे स्पिरिट बर्नर पर रख दें और पानी तुरंत उबल जाता है। आखिरकार, जब तक कॉफ़ी पॉट गर्म होता है , तब तक आप बहुत सारा स्पिरिट खर्च कर चुके होते हैं। लेकिन अगर आप टिन के नीचे स्पिरिट में भीगी हुई रुई की एक गोली रख दें , तो लीजिए: कॉफ़ी तैयार है। मेरे पास लालटेन भी नहीं है। मैं अपनी रातें मोमबत्ती की रोशनी में बिताता हूँ।

आम तौर पर, सादगी बहुत मददगार होती है। अपने सामान को साधारण और टिकाऊ रखें। यहाँ तक कि आम लोग भी हर उस चीज़ का सम्मान करते हैं जो विनम्र और साधारण हो। और यह सब एक भिक्षु के लिए बहुत मददगार होता है। ये चीजें हमें गरीबी, पीड़ा और संन्यासी जीवन को याद रखने में मदद करती हैं। जब राजा जॉर्ज माउंट अथोस पर ग्रेट लावरा गए,[124] तो पादरियों ने एक चांदी की ट्रे निकाली और उस पर उन्हें जलपान परोसा। लेकिन राजा ने जैसे ही वह ट्रे देखी , कहा: 'मुझे आपसे कुछ अलग की उम्मीद थी—लकड़ी की कोई ट्रे। मैं ऐसी महंगी ट्रे से तंग आ चुका हूँ। '

तुमने अभी तक सादगी की इस मिठास का स्वाद नहीं चखा है। सादगी एक व्यक्ति की ताकत बहाल करती है। देखो , धागे के एक रोल से तुम कितना अद्भुत कोट हुक बना सकते हो। यह एक बहुत ही काम की चीज़ है। और फिर भी आप अपनी चोगा उस कमजोर सी कील पर टाँगने के लिए जद्दोजहद करते हैं। अगर प्लास्टर झरने लगे , तो हर बार जब आप चोगा कील से उतारेंगे , तो आपको उसे झाड़कर साफ करना पड़ेगा। दीवार में कुछ बड़े कील क्यों नहीं ठोक देते ? यह आपके लिए कहीं ज़्यादा सुविधाजनक होगा।

ऐसी दीवार — और एक भी कील नहीं ! या फिर आप जाकर एक लकड़ी का कोट रैक लगा सकते हैं। लेकिन फिर आपको उसे रगड़कर साफ़ करना होगा और उस पर से धूल उड़ाना होगी। आपको चीज़ों को सरल बनाना चाहिए और समय बचाना चाहिए, लेकिन इसके बजाय आप उसे बर्बाद कर रहे हैं। आप पूर्णता के लिए प्रयास कर रहे हैं और अपने लिए जीवन को कठिन बना रहे हैं। आध्यात्मिक जीवन में पूर्णता के लिए प्रयास करें। अपनी पूरी क्षमता बाहरी कलाओं में नहीं , बल्कि आत्मा को संवारने की कला में समर्पित करें। अपनी दिन-रात आत्मा को परिपूर्ण बनाने में लगाएँ। सुंदरता के प्रति अपने प्रेम को आत्मा के कार्य की ओर मोड़कर , आप अपने छोटे से आध्यात्मिक मंदिर की सुंदरता में आनंदित होंगे।

— गेरोना , कुछ लोग कहते हैं कि सबसे शानदार वस्तुएँ मठों में रखी गई थीं और उन्हीं की बदौलत दुनिया में संस्कृति का संरक्षण हुआ है।

— शायद वे कीमती बर्तन , आभूषण और इसी तरह की चीजों का जिक्र कर रहे हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि ऐसी अधिकांश कीमती चीजें कब मठों में केंद्रित हुईं ?

---

[124] जॉर्ज द्वितीय (1890–1947) – 1922 से 1929 और 1935 से 1947 तक ग्रीस के राजा।

कॉन्स्टेंटिनोपल के पतन के बाद।[125] पहले, ये सभी खजाने महलों में रखे जाते थे, लेकिन फिर इन्हें सुरक्षा के लिए मठों को सौंपना शुरू कर दिया गया। उदाहरण के लिए, रानी मारो[126] ने धीरे-धीरे सुल्तान से विभिन्न खजाने छीनकर मठों को दान कर दिए। या फिर लोग, अपनी मृत्युशय्या पर होते हुए और अपनी कीमती चीज़ों के खो जाने की आशंका से, उन्हें मठों को दान कर देते थे। ऐसा नहीं था कि मठों ने खजाने पर कब्जा करने की कोशिश की, बल्कि मालकिों ने ही, यह महसूस करते हुए कि ये वस्तुएँ मठ में सुरक्षित रहेंगी, उन्हें वहीं दान कर दिया। और अमीरों ने पवित्र पर्वत के मठों में विभिन्न दान दिए ताकि लोगों को खिलाने के लिए पर्याप्त हो। आखिरकार, उन दिनों बुजुर्गों के लिए कोई देखभाल केंद्र, कोई अनाथालय, कोई ''मनोरोग अस्पताल, या कोई अन्य धर्मार्थ संस्थान नहीं थे। मठों को बहुत सारी जमीन भी दान में दी गई ताकि वे ज़रूरतमंद आम लोगों की मदद कर सकें। दूसरे शब्दों में, उन कठिन वर्षों के दौरान, लोग आगे की सोच पाए: उन्होंने दुर्भाग्यशाली लोगों को भौतिक सहायता प्रदान की ताकि वे बाद में उन्हें आध्यात्मिक रूप से मदद कर सकें। जब गरीब लोग मठों में आते थे, तो उन्हें आशीर्वाद के रूप में वित्तीय सहायता दी जाती थी, और तब बेसहारा लोग अपने बेटे या बेटी का विवाह करा पाते थे। दूसरे शब्दों में, मठों ने गरीबों की मदद करने के लिए अपनी संपत्ति अर्जित की। और उन्होंने इसी उद्देश्य के लिए बड़ी इमारतें बनाईं। क्या आप जानते हैं कि कब्जे के दौरान मठों ने कितने लोगों की मदद की? बहुत सारे। उस समय कई गृहस्थों का उपनाम 'काराकाला' भी था, क्योंकि अगर किसी का घर मेहमाननवाज़ होता, तो वे कहते थे कि यह ठीक काराकाला मठ जैसा है।[127] और संतों के सम्मान में भव्य संरक्षक भोज मठों में आयोजित किए जाते थे ताकि गरीब कुछ मछली खा सकें, आनंद ले सकें, और साथ ही आध्यात्मिक सहायता प्राप्त कर सकें। और आजकल संरक्षक भोजों पर उत्सव क्यों मनाए जाते हैं? जिनकी कोई कमी नहीं है, वे एकत्रित होकर मछली खाते हैं। और किस उद्देश्य से?

विलासी सांसारिकता संन्यासियों को भ्रष्ट करती है

— गेरोना, चर्च को सजाने की कितनी अनुमति है?

— आज के समय में, सब कुछ जितना सरल होगा — यहाँ तक कि चर्च में भी — उतना ही अधिक लाभ हमें उससे मिलता है, क्योंकि हम अब बाइज़ेन्टियम में नहीं रहते।

— खैर, उदाहरण के लिए आइकनोस्टैस लें — इसके लिए हमें किस तरह की सजावट चुननी चाहिए?

— निश्चित रूप से मठ जैसा! और क्या? सब कुछ यथासंभव सादा और सरल हो। पूज्य पाचोमियस[128] ने चर्च में एक स्तंभ को टेढ़ा कर दिया ताकि लोग उनके हाथों के काम की

---

[125] 1453 में

[126] रानी मारो (1418–1487) – सर्बियाई तानाशाह जॉर्ज ब्रान्कोविच (1375–1456) की बेटी, जो माउंट अथोस पर स्थित सेंट पॉल मठ के दूसरे संस्थापक थे। मारो की शादी सुल्तान मुराद से हुई थी – जो कॉन्स्टेंटिनोपल के विजेता सुल्तान मेहमद के पिता थे। कॉन्स्टेंटिनोपल के पतन के बाद, रानी मारो ने मठ ऑफ़ सेंट पॉल को मगियों के कीमती उपहार, कई पवित्र अवशेष और ईश्वर के संतों के अवशेष दान कर दिए।

[127] माउंट अथोस के बीस सामुदायिक मठों में से एक।

[128] आदरणीय पाचोमियस महान का जन्म लगभग 280 ईस्वी में थेबाइड (उपरी मिस्र) में हुआ था। अपनी सैन्य सेवा पूरी करने के बाद, वह एक परित्यक्त मूर्तिपूजक मंदिर में बस गए और तपस्या का

प्रशंसा न करें। क्या आपको वह कहानी याद है ? अपने मठ में , पूज्य ने बड़ी सावधानी से ईंट के स्तंभों वाला एक चर्च बनाया। चर्च को इतना सुंदर बनता देख , आदरणीय पादरी प्रसन्न हुए , लेकिन फिर उन्होंने सोचा कि अपने ही हाथों के सुंदर काम में आनंद लेना ईश्वर की इच्छा के अनुरूप नहीं है। इसलिए उन्होंने स्तंभों के चारों ओर रस्सियाँ बाँधीं और प्रार्थना करने के बाद, भाइयों को उन पर झुककर खींचने का आदेश दिया — ताकि स्तंभ टेढ़े हो जाएँ।

माउंट अथोस पर अपनी कोठरी में , हर साल मैं शीट धातु काटकर छत और खिड़कियों की मरम्मत करता हूँ। दोनों जगह से पानी रिसने लगा है , और दरारों से हवा आती है। इसलिए मैं और भी पैच लगाता रहता हूँ —जो शीट धातु , तख्तों और पॉलीथीन से बने होते हैं। आप मुझसे पूछ सकते हैं , 'तो आप डबल-ग्लेज़ वाली खिड़कियाँ क्यों नहीं लगाते ?' क्या आपको लगता है कि मुझे यह एहसास नहीं है कि यह संभव है ? आखिरकार, मैं एक बढ़ई हूँ , और अगर मैं चाहूँ तो तीन फ्रेम वाली खिड़कियाँ भी बना सकता हूँ। लेकिन तब साधु -संन्यासी भावना खो जाएगी। मेरी कोठरी की दीवार जर्जर हालत में है। मैं मरम्मत में मदद के लिए किसी को कह सकता था, लेकिन मैं जैसा हूँ वैसा ही खुश हूँ। जब दूसरे लोग इतनी ज़रूरत में हैं तो मैं एक दीवार की मरम्मत पर इतने पैसे खर्च करने की हिम्मत कैसे कर सकता हूँ ? इससे मुझे कोई फायदा नहीं होगा। अगर संयोग से मेरे पास पाँच सौ ड्राक्मा बच जाएँ , तो मैं उन्हें क्रॉस और आइकन खरीदने में खर्च करूँगा और किसी पीड़ित आत्मा को दे दूँगा , ताकि उन्हें उनसे सांत्वना मिल सके। मुझे देने में आनंद आता है। और भले ही मुझे खुद उस पैसे की ज़रूरत हो, मैं उसे अपने लिए खर्च नहीं करूँगा।

[129]एक बार जब कोई व्यक्ति आध्यात्मिक जीवन जीना शुरू कर देता है , तो वह कभी संतुष्ट नहीं होता। इसी तरह, कोई व्यक्ति सुंदरता के पीछे भागना शुरू कर दे तो वह भी कभी संतुष्ट नहीं होता। क्या आप जानते हैं कि हमें अब कैसे जीना चाहिए? हमें सुंदर इमारतों की चिंता को त्याग देना चाहिए, केवल बुनियादी जरूरतों से काम चलाना चाहिए, और दूसरों की बदकिस्मती के लिए खुद को समर्पित कर देना चाहिए — अगर आपके पास देने के लिए और कुछ नहीं है तो प्रार्थना के माध्यम से उनकी मदद करें , और अगर आप उन्हें भौतिक रूप से मदद कर सकते हैं तो दान के माध्यम से करें। इसलिए प्रार्थना की ओर रुख करें , और जहाँ तक काम की बात है , केवल वही करें जो बिल्कुल आवश्यक हो। यहाँ हम जो कुछ भी करते हैं वह अल्पकालिक है। और क्या यह सब कुछ करने के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित करना उचित है , यह जानते हुए कि दूसरे बड़ी मुश्किल से अपना गुज़ारा कर रहे हैं और भूख से मर रहे हैं ? साधारण आवास और विनम्र संपत्तियाँ भिक्षुओं को मानसिक रूप से पवित्र पिताओं की गुफाओं और साधारण आश्रमों [130] में ले जाती हैं , जिससे भिक्षुओं को आध्यात्मिक लाभ मिलता है। जबकि हिर सांसारिक चीज़ भिक्षुओं को दुनिया की याद दिलाती है और उन्हें दिल से सांसारिक बना देती है। हाल ही में , नाइट्रिया में [131] , खुदाई की गई और सबसे शुरुआती मठवासी कोठरियाँ मिलीं — जो स्वभाव से वास्तव में तपस्वी थीं। बाद में , एक बाद की अवधि की मठवासी कोठरियाँ मिलीं — जिनका स्वरूप पहले से ही कुछ अधिक सांसारिक था। अंत में , सबसे नवीनतम मठवासी आवास पाए गए, जो उस समय के अमीरों के बैठक कक्षों जैसे थे — दीवारें विभिन्न फ्रेम वाली पेंटिंग्स , पैटर्न आदि से सुसज्जित थीं। यह सब मठाधीशों पर ईश्वर का क्रोध लाया, और उनके आवासों को दुष्टों द्वारा लूट लिया गया और नष्ट कर दिया गया।

मसीह का जन्म एक तबेले में हुआ था। यदि सांसारिक चीजें हमें आराम देती हैं , तो मसीह, जो किसी को भी अस्वीकार नहीं करते , हमें आसानी से अस्वीकार कर देंगे। वे कहेंगे : 'मेरे पास कुछ भी नहीं था। क्या सुसमाचार में इन सभी [दुनियावी चीज़ों] के बारे में कहीं कुछ कहा गया है ? क्या तुमने मुझमें ऐसा कुछ देखा है ? तुम न तो दुनियादार हो और न ही संन्यासी। मैं तुम्हारा क्या करूँ , तुम्हें कहाँ रखूँ ?.."

जो चीजें सुंदर और परिपूर्ण हैं , वे सांसारिक हैं। वे लोगों को कोई आध्यात्मिक आराम नहीं देतीं। आखिरकार, सभी दीवारें धूल में मिल जाएँगी। लेकिन आत्मा … एक आत्मा पूरी दुनिया से भी अधिक कीमती है। और हम आत्मा के लिए क्या कर रहे हैं ? आइए हम अपना आध्यात्मिक कार्य शुरू करें ; आइए हम इसमें सच्ची रुचि लें। मसीह हमसे यह

जीवन जीने लगे। एक आध्यात्मिक गुरु की आवश्यकता महसूस करते हुए , वह थेबियन संन्यासी , आदरणीय पलामोन के पास गए, और उन्हें शिष्य के रूप में स्वीकार कर लिया गया। लगभग 320 ईस्वी में , एक दैवीय दर्शन के बाद, आदरणीय पाचोमियस ने ऊपरी थेबाइड में टावेनियोट्स का पहला मठ स्थापित किया। कुल मिलाकर, रेवरेंड ने पुरुषों के लिए नौ और महिलाओं के लिए दो मठों की स्थापना की, जिसमें कुल लगभग 7,000 भिक्षु थे। उन्हें दिव्य वरदानों से सम्मानित किया गया था। 346 में प्रभु में उनका निधन हो गया।

[129] 1986 में दिया गया।

[130] एस्केतिरियन (ग्रीक : Ἀσκητήριον) – एक एकांत साधु निवास, तपस्या के प्रयासों का स्थान। – अनुवादक की टिप्पणी।

[131] नट्रिया – उत्तर -पश्चिमी मिस्र में एक पहाड़ और उससे सटा हुआ रेगिस्तान। सेंट मकारियस द ग्रेट (4वीं शताब्दी) के समय से , यह मठवासी तपस्या के लिए एक पसंदीदा स्थान रहा है। – अनुवादक की टिप्पणी।

हसिाब लेंगे कि हमने लोगों की आध्यात्मकि रूप से कैसे मदद की और हमने क्या आध्यात्मकि कार्य कयिा है। वह यह भी नहीं पूछेंगे कि हमने कसि तरह की दीवारें बनाई हैं। हमसे हमारी आध्यात्मकि प्रगति का हसिाब लयिा जाएगा।

मैं चाहता हूँ कि आप मेरी बात समझें : मैं यह नहीं कह रहा कि हमें निर्माण और इसी तरह की गतविधियिों में नहीं लगना चाहिए, या कि इमारतें अव्यवस्थति रूप से खड़ी की जानी चाहिए। नहीं। लेकनि आध्यात्मकिता को पहले आना चाहिए, और फरि, आध्यात्मकि ववेिक के मार्गदर्शन में , बाकी सब कुछ।

अपने जीवन को सरल बनाएं

"जो महलों में रहते हैं और जीवन की सभी अच्छी चीजों का आनंद लेते हैं , वे कतिने भाग्यशाली हैं ," इस दुनयिा के लोग कहते हैं। हालाँकि , धन्य हैं वे जनि्होंने अपने जीवन को सरल बनाया है , इस सांसारकि 'प्रगति' की जकड़न से खुद को मुक्त कयिा है —अनेक सुवधिाओं से जो अनेक कठनिाइयों से जुड़ी हैं —और वर्तमान युग के भयानक मानसकि कष्ट से खुद को मुक्त कयिा है। यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन को सरल नहीं बनाता है , तो वह कष्ट भोगेगा। जबकि, इसे सरल बनाकर, वह इस मानसकि पीड़ा से भी मुक्त हो जाएगा।

एक बार, सनिाई पर्वत पर, एक जर्मन आगंतुक ने एक बहुत ही होशयिार बेदुइन लड़के से कहा: 'तुम एक होशयिार बच्चा हो और पढ़ाई करने में सक्षम हो।' — 'और फरि क्या ?' — लड़के ने उससे पूछा। 'फरि तुम एक इंजीनयिर बन जाओगे। ' — 'और फरि?' — 'फरि तुम एक कार मरम्मत की कार्यशाला खोलोगे। ' — 'और फरि?' — 'फरि तुम उसका वसि्तार करोगे। ' — "और फरि क्या ?" — "फरि तुम दूसरे मैकेनकिों को काम पर रखोगे — एक बड़ी कार्यबल तैयार करोगे। " — "तो, फरि क्या ," लड़के ने कहा, "पहले मुझे एक सरिदर्द होगा, फरि मैं उसमें एक और जोड़ दूंगा , और फरि एक और?" क्या यह जैसा अब है वैसा ही बेहतर नहीं है — एक साफ़ दमिाग़ रखना?" सरिदर्द , ज़्यादातर , ठीक ऐसे ही वचिारों से होता है : 'हम एक काम करेंगे , फरि दूसरा .' लेकनि अगर कसिी के वचिार आध्यात्मकि होते , तो वह आध्यात्मकि शांति का अनुभव करता और सरिदर्द से पीड़ति नहीं होता.

आजकल, सांसारकि लोगों से बातचीत में , मैं भी सादगी के महत्व पर जोर देता हूँ। क्योंकि वे जो कुछ भी करते हैं , उसका अधकिांश अनावश्यक होता है , और वे आंतरकि चंति में डूबे रहते हैं। मैं लोगों से सादगी और तपस्या के बारे में बात करता हूँ ; मैं हमेशा आग्रह करता रहता हूँ : 'अपने जीवन को सरल बनाओ ताकि तुम्हारी आंतरकि चंति दूर हो जाए।' और अधकिांश तलाक़ों की शुरुआत ठीक इसी से होती है। लोगों के पास बहुत काम है ; उन्हें इतना कुछ करना होता है कि उनके सरि चकराने लगते हैं। पति और माता दोनों काम करते हैं , जबकि बच्चे बनिा देखरेख के रह जाते हैं। थकान, तनावग्रस्त नसें — छोटी सी बात पर भी बड़ी लड़ाई हो जाती है , और तलाक अपने आप हो जाता है। लोग पहले ही उस बदिु पर पहुँच चुके हैं। हालाँकि , अपने जीवन को सरल बनाकर, वे ऊर्जा और आनंद से भर जाएँगे। हाँ , मानसकि चंति पूर्ण वनिाश है।

एक बार, मैं एक बहुत ही शानदार घर में पहुँच गया। हमारी बातचीत के दौरान, मेज़बानों ने मुझसे कहा: 'हम तो स्वर्ग में ही रह रहे हैं , फरि भी दूसरे लोग इतनी ज़रूरतों में हैं। ' 'आप तो नर्क में रह रहे हैं ,' मैंने जवाब दयिा। ' 'सचमुच , इसी रात तेरी आत्मा मुझसे ले ली जाएगी,'[132] — प्रभु ने उस मूर्ख धनी मनुष्य से कहा। यदि मसीह मुझसे पूछते , 'मैं तुम्हें

[132] लूका 12:20.

कहाँ रखूँ — किसी कालकोठरी में या इस जैसे घर में ?' — तो मैं उत्तर देता , 'किसी उदास कालकोठरी में। ' क्योंकि एक कालकोठरी मेरे लिए फायदेमंद होगी। यह मुझे मसीह, पवित्र शहीदों , और उन तपस्वियों की याद दिलाएगी जो 'पृथ्वी की गहराइयों में ' छिपे थे ,[133] यह मुझे मठ के जीवन की याद दिलाएगी। एक कालकोठरी कुछ हद तक मेरी अपनी कोठरी जैसी होगी, और मैं इसमें आनंदित होऊँगा। लेकिन आपका घर मुझे किस बात की याद दिलाएगा, और मुझे उससे क्या लाभ होगा? इसीलिए कुछ सांसारिक बैठक कक्षों से ही नहीं , बल्कि एक खूबसूरती से सुसज्जित मठ की कोठरी से भी ज़्यादा , कालकोठरियाँ मुझे सांत्वना देती हैं। इस तरह के घर में रहने की तुलना में जेल में रहना हज़ार गुना बेहतर है। "

[134]एक अन्य अवसर पर, मैं एथेंस में अपने एक दोस्त के यहाँ ठहरा था, और उसने मुझसे कई बच्चों के एक पिता से मिलने को कहा, लेकिन केवल भोर तक, क्योंकि उसके पास किसी अन्य समय में समय नहीं था। यह आदमी आया—प्रसन्न और निरंतर ईश्वर का धन्यवाद करते हुए। वह विनम्रता और सादगी से परिपूर्ण था, और उसने मुझसे अपने परिवार के लिए प्रार्थना करने को कहा। यह भाई अड़तीस वर्ष का था और उसके सात बच्चे थे। उनके बच्चे , उनकी पत्नी , और साथ में उनके माता-पिता — कुल मिलाकर ग्यारह लोग। वे सभी एक ही कमरे में ठुसे हुए थे। अपनी विशिष्ट सादगी के साथ, उन्होंने समझाया: 'हम सभी खड़े होकर कमरे में समा सकते हैं , लेकिन जब हम सोने जाते हैं , तो पर्याप्त जगह नहीं होती — यह थोड़ा तंग है। लेकिन अब, ईश्वर की कृपा से , हमने रसोई के लिए एक झोपड़ी -सी बना ली है और चीजें थोड़ी आसान हो गई हैं। आखिरकार, पादर जी, हमारे सिर पर एक छत तो है — जबकि वहाँ दूसरे लोग पूरी तरह से खुले आसमान के नीचे रहते हैं। " वह पिरियस, एथेंस में एक इस्त्री करने वाले के रूप में काम करता था, लेकिन एथेंस में रहता था, और समय पर काम पर पहुँचने के लिए, वह भोर से पहले घर से निकल जाता था। लंबा समय खड़े रहने और ओवरटाइम काम करने से , उसे वेरिकोज़ वेन्स हो गए, जिससे उसकी टाँगों में असुविधा होती थी। लेकिन अपने परिवार के प्रति उसके गहरे प्यार ने इस आदमी को अपने दर्द और तकलीफों को भूलने पर मजबूर कर दिया। इससे भी बढ़कर , वह लगातार खुद को कोसता रहता था, यह कहते हुए कि उसमें प्यार की कमी है , कि वह एक ईसाई के अनुरूप अच्छे काम नहीं करता था, और वह अपनी पत्नी द्वारा किए गए अच्छे कामों के लिए उसकी पर्याप्त प्रशंसा नहीं कर सकता था: वह न केवल बच्चों की, बल्कि अपने ससुर और सास की भी देखभाल करती थी, बुज़ुर्ग पड़ोसियों की देखभाल करती, उनके घरों की सफ़ाई करती और यहाँ तक कि उनके लिए सूप भी पकाती थीं ! इस अच्छे पारिवारिक व्यक्ति का चेहरा ईश्वर की कृपा से दमकता था। उसके भीतर मसीह थे और वह आनंद से भरपूर था। और जिस छोटे से कमरे में वे रहते थे , वह भी स्वर्गीय आनंद से भरपूर था। जिनके भीतर मसीह नहीं है , वे आंतरिक कलह से भर जाएंगे। वे एक जोड़े के रूप में भी ग्यारह कमरों में भी नहीं समाएंगे , जबकि यहाँ , मसीह के साथ ग्यारह आत्माएँ सिर्फ एक कमरे में समा गए।

चाहे लोगों के पास कितनी भी जगह हो — यहाँ तक कि आध्यात्मिक लोगों के पास भी — फिर भी उनके पास जगह की कमी रहेगी , क्योंकि उनके भीतर मसीह के लिए पर्याप्त स्थान नहीं था; क्योंकि वह पूरी तरह से उनके भीतर समा नहीं सकते थे। अगर फारस में रहने वाली महिलाएँ आज कई मठों में मौजूद ऐश्वर्य को देखतीं , तो वे चिल्ला उठतीं : 'ईश्वर स्वर्ग से आग बरसाकर हमें जला देगा ! ईश्वर ने हमें त्याग दिया है !' फारस की महिलाएँ अपना काम बहुत ही जल्दी निपटा लेती थीं। वे सुबह -सुबह बकरियों को बाहर छोड़ देतीं , फिर घर की सफाई करतीं , फिर चैपल

---

[133] इब्रानियों 11:38.

[134] ग्रीस का मुख्य बंदरगाह। – अनुवादक की टिप्पणी।

जातीं या कहीं गुफाओं में इकट्ठा होतीं , और जो थोड़ा पढ़ सकती थी, वह उस दिन के संत का जीवन पढ़ती। फिर वे यीशु के नाम की प्रार्थना में झुकना शुरू कर देतीं। लेकिन इसके अलावा, वे काम भी करती थीं और थक भी जाती थीं। एक महिला को पूरे घर के लिए सब कुछ सिलना आना चाहिए था। और वे हाथ से सिलाई करती थीं। हाथ से चलने वाली सिलाई मशीनें शहर में भी दुर्लभ थीं , गाँव में तो और भी कम। वे भाग्यशाली थीं अगर पूरे फरासी में एक सिलाई मशीन होती। वे पुरुषों के लिए भी कपड़े सिलती थीं — बहुत आरामदायक — और मोज़े बुनती थीं। वे सब कुछ स्वाद और प्यार से करती थीं , फिर भी उनके पास समय बच जाता था, क्योंकि उनका जीवन सरल था। फ़रासी के लोग तुच्छ बातों की चिंता नहीं करते थे। वे एक संन्यासी आनंद का अनुभव करते थे। और अगर, मान लीजिए, आप देखें कि बिस्तर पर कंबल टेढ़ा -मेढ़ा पड़ा है और आप उनसे कहें , 'कंबल को सीधा कर दो,' तो आपको जवाब में सुनाई देगा , 'क्या इससे आपकी प्रार्थना में कोई बाधा आती है ?'

आज, लोग इस मठवासी आनंद से अपरिचित हैं। लोग मानते हैं कि उन्हें कठिनाइयाँ सहनी या कष्ट झेलना नहीं चाहिए। लेकिन अगर लोग संतों की तरह थोड़ा और सोचते , अगर वे अधिक साधारण जीवन जीते , तो वे शांति में होते। अब वे पीड़ित हैं। उनकी आत्मा चिंता और निराशा से भरी है : 'फलाने ने दो ऊँची इमारतें बना ली हैं !' — या 'फलाने ने पाँच विदेशी भाषाएँ सीख ली हैं !' — या इसी तरह की कोई बात। 'और मैं ,' वे कहते हैं , 'मेरे पास अपना फ्लैट भी नहीं है , और मैं एक भी विदेशी भाषा नहीं जानता!' बस, अब तो मेरा काम खत्म हो गया!" या कोई और जो कार का मालिक है , खुद को सताने लगता है : "किसी और की कार मेरी कार से बेहतर है। मुझे भी वैसी ही एक खरीदनी चाहिए।" वे अपने लिए एक नई कार खरीदते हैं , लेकिन उससे भी उन्हें कोई खुशी नहीं मिलती — आखिरकार, किसी और के पास उससे भी बेहतर कार है। वह अपने लिए भी वैसी ही एक कार खरीद लेता है , लेकिन फिर उसे पता चलता है कि दूसरों के पास अपने हवाई जहाज हैं , और वह फिर से कष्ट में पड़ जाता है। इसका कोई अंत नहीं है। इस बीच, एक और व्यक्ति , जिसके पास कार भी नहीं है , ईश्वर की स्तुति करता है और आनंदित होता है। वह कहता है , 'ईश्वर की कृपा है !' 'तो क्या हुआ अगर मेरे पास कार नहीं है ? आखिर मेरे पैर मजबूत हैं और मैं चल सकता हूँ। और कितने लोगों के पैर कट गए हैं , और वे अपनी देखभाल नहीं कर सकते , टहलने नहीं जा सकते , उन्हें किसी की देखभाल की ज़रूरत है !... लेकिन मेरे अपने पैर हैं !" अपनी ओर से , एक लंगड़ा आदमी कहता है : 'और उन लोगों का क्या जो दोनों पैर खो चुके हैं ?' — और वह भी आनंदित होता है।

अकृतज्ञता और अतृप्ति एक बड़ी बुराई है। भौतिक चीजों का गुलाम व्यक्ति हमेशा चिंता और आंतरिक कलह का गुलाम होता है , क्योंकि वे या तो इस डर से कांपते रहते हैं कि उनकी संपत्ति उनसे छीन ली जाएगी, या अपने जीवन के लिए डरते हैं। एक बार, एथेंस का एक अमीर आदमी मेरे पास आया और कहा: 'फादर, मैं अपने बच्चों से जुड़ाव खो चुका हूँ। मैंने अपने बच्चों को खो दिया है। ' — 'आपके कितने बच्चे हैं ?' मैंने पूछा। 'दो,' उसने जवाब दिया। 'मैंने उन्हें हर चीज़ में से सबसे बेहतरीन देकर पाला है। उन्हें जो कुछ भी चाहिए था, वह सब था। मैंने तो उनके लिए एक-एक कार भी खरीदी है। ' फिर हमारी बातचीत से यह स्पष्ट हो गया कि उसके पास अपनी कार थी, उसकी पत्नी के पास उसकी, और उसके हर बच्चे के पास अपनी-अपनी कार थी। 'तुम अजीब इंसान हो,' मैंने उससे कहा, 'अपनी समस्याओं को हल करने के बजाय, तुमने उन्हें और भी बदतर बना दिया है। अब आपको उन सभी कारों के लिए एक बहुत बड़े गैराज की ज़रूरत है , और उन्हें ठीक कराने के लिए आपको चार गुना ज़्यादा पैसे खर्च करने पड़ते हैं , और तो और, आप, आपकी पत्नी और आपके बच्चे , सभी को किसी भी पल दुर्घटना का खतरा है। लेकिन अगर आपने अपनी ज़िंदगी को सरल बना लिया होता, तो आपका परिवार एक-दूसरे के करीब

होता, आप सब एक-दूसरे को समझते , और आपको ये सारी समस्याएँ नहीं होतीं। तुम्हारे साथ जो हो रहा है , उसका दोष तुम्हारे बच्चों पर नहीं , बल्कि खुद तुम पर है। यह तुम्हारी गलती है कि तुमने उन्हें अलग तरह से नहीं पाला।" एक परिवार – चार कारें , एक गैराज , अपना खुद का मैकेनिक और बाकी सब कुछ ! क्या निश्चित रूप से एक व्यक्ति थोड़ी जल्दी कहीं नहीं जा सकता, और कोई दूसरा थोड़ी देर बाद? यह सारी सुविधाएँ कठिनाइयाँ पैदा करती हैं।

एक और अवसर पर, एक परिवार का मुखिया —इस बार पाँच सदस्यों का परिवार—मेरी झोपड़ी पर मुझसे मिलने आया और कहा: "पिताजी, हमारे पास एक कार है , लेकिन मैं दो और खरीदने का सोच रहा हूँ। इससे हमारे लिए चीजें आसान हो जाएँगी। " मैंने उससे पूछा , "क्या आपने इस पर विचार किया है कि आपके लिए चीजें कितनी और अधिक कठिन हो जाएँगी ?" 'आप एक कार किसी गली में छोड़ सकते हैं , लेकिन तीन कारें कहाँ पार्क करेंगे ? आपको एक गैराज और ईंधन के लिए जगह चाहिए होगी। एक जोखिम के बजाय, आपको तीन जोखिमों का सामना करना पड़ेगा। तुम्हारे लिए एक ही कार से काम चलाना और अपने खर्च कम रखना बेहतर होगा। इस तरह, तुम्हारे पास बच्चों की देखभाल करने का समय होगा, और तुम्हारा मन शांत रहेगा। सादगी ही कुंजी है। " — "हाँ ," उसने कहा, "लेकिन मैंने तो इसके बारे में सोचा भी नहीं था।"

— गेरोन्डा , एक आदमी ने हमें बताया कि कैसे वह दो बार अपनी कार का चोरी-रोधी अलार्म बंद नहीं कर सका। एक बार इसलिए क्योंकि एक मक्खी कार के अंदर चली गई थी, और दूसरी बार इसलिए क्योंकि उसने खुद ही अपनी कार में चोरी-रोधी प्रणाली का उपयोग करने के निर्देशों का उल्लंघन कर दिया था।

— ये लोग शहीद का जीवन जीते हैं क्योंकि वे अपना जीवन सरल नहीं बनाते। अधिकांश सुविधाओं में असुविधाएँ भी शामिल होती हैं। सांसारिक लोग बहुत सी चीजों से दम घुटते हैं। उन्होंने अपनी ज़िंदगी को अनगिनत सुविधाओं से भरकर उसे मुश्किल बना दिया है। यदि आप अपना जीवन सरल नहीं बनाते हैं , तो एक सुविधा भी कई सारी समस्याओं को जन्म दे देती है।

बचपन में , हम धागे के कनस्तर के सिरे काटकर, उसके बीच में एक लकड़ी की छड़ी डाल देते थे , और एक ऐसा अद्भुत खेल बना लेते थे जो हमें सच्ची खुशी देता था। छोटे बच्चे एक खिलौना कार में अपने पिता से कहीं ज़्यादा आनंद लेते हैं , जितना कि वे एक बिल्कुल नई 'मर्सिडीज़ ' में लेते हैं। किसी भी छोटी लड़की से पूछें : 'तुम्हें उपहार में क्या चाहिए — एक गुड़िया या एक बड़ा बहुमंजिला मकान?' आप देखेंगे , वह जवाब देगी : 'एक गुड़िया। ' यहाँ तक कि छोटे बच्चे भी अंततः दुनिया की क्षणभंगुरता को समझने लगते हैं।

— जेरोंडा , सादगी और सहजता से मिलने वाली खुशी को समझने में सबसे अधिक क्या मदद करता है ?

— जीवन के गहरेतम अर्थ की समझ। "पहले परमेश्वर के राज्य की खोज करो..."[135] सरलता और हर चीज़ के प्रति सही दृष्टिकोण यहीं से शुरू होता है।

अध्याय 4.
बाहरी शोर और आंतरिक मौन पर

[135] मत्ती 6:33.

लोगों ने प्रकृति की शांति भंग कर दी है

आजकल लोग अपनी सुविधा के लिए जिन तकनीकी उपकरणों का उपयोग करते हैं, उनमें से अधिकांश शोर पैदा करते हैं। अफसोस, अपने शोर से लोगों ने शांतिपूर्ण प्रकृति को पागल कर दिया है; इस सारी तकनीक के साथ, उन्होंने इसे बदला भी है और नष्ट भी किया है। और पहले कितनी शांति हुआ करती थी! मनुष्य कितना बदलता है, और वह अपने आस-पास की हर चीज़ को कितना बदल देता है — यह महसूस किए बिना भी।

आजकल, हर कोई शोर में जीने का आदी हो गया है। कई आधुनिक बच्चे रॉक संगीत सुनते हुए पढ़ना पसंद करते हैं। दूसरे शब्दों में, वे शांत में पढ़ने के बजाय संगीत के साथ पढ़ना पसंद करते हैं। यह उनकी बेचैनी को शांत करता है, क्योंकि वह बेचैनी उनके भीतर ही होती है। शोर हर जगह सुना जा सकता है। बस सुनिए !... क्या आप वह लगातार 'वू -वू ... वू -वू !' की आवाज़ सुन सकते हैं ? वे तख्तों को आरी से काट रहे हैं — 'वू -वू ...', उन्हें रेत की मशीन से घिस रहे हैं — 'वू -वू ...' भी, पेड़ों पर स्प्रे कर रहे हैं — फिर से 'वू -वू '। और फिर वे और भी ज्यादा शोर मचाने के लिए — हवाई जहाज़ों की तरह — दूसरे स्प्रेयरों का आविष्कार करेंगे, और वे कहेंगे : 'ये स्प्रेयर बेहतर हैं क्योंकि ये पेड़ों पर नीचे से नहीं बल्कि ऊपर से छिड़काव करते हैं, और एक भी कली बिना छिड़के नहीं रहती।' वे ऐसे ही स्प्रेयरों की तलाश में निकल पड़ेंगे और उनसे बहुत खुश होंगे। एक व्यक्ति कीलों के लिए एक ही छेद ड्रिल करना चाहता है और फिर से किसी तरह की 'वू -वू मशीन' चालू कर देता है। क्यों ? क्या मोर्टार में पानी ठोकने के लिए? और फिर भी वह इससे बहुत खुश है और, आश्चर्यजनक रूप से, इस पर गर्व भी करता है ! ताज़ी हवा की एक झलक पाने के लिए, वे एक इलेक्ट्रिक पंखा खरीदते हैं और उसकी गूँज सुनते हैं। पुराने दिनों में, जब गर्मी लगती थी, तो वे अपने हाथों से पंखा करते थे, लेकिन अब वे ताज़ी हवा की एक झलक के लिए अपने ही कानों को नुकसान पहुँचा रहे हैं। और समुद्र में भी, वे आजकल बहुत शोर मचाते हैं। कभी-कभी, पाल वाले जहाज चुपचाप समुद्र में तैरा करते थे, लेकिन अब तो सबसे छोटी मोटरबोट भी खड़खड़ाती हुई चलती है। जल्द ही, ज्यादातर लोग हवाई जहाजों में पृथ्वी का चक्कर लगाते होंगे ! और क्या आप जानते हैं कि इसका नतीजा क्या होगा? पृथ्वी तो कम से कम कुछ शोर को सोख लेती है, लेकिन हवा में, ईश्वर न करे, एक बड़ा कोलाहल मच जाएगा!...

लोगों ने तो रेगिस्तान के पवित्र स्थानों को भी नष्ट कर दिया है

हमारे युग की बेचैन, सांसारिक आत्मा ने अपनी तथाकथित सभ्यता के साथ उन पवित्र मरुस्थलीय स्थानों को भी नष्ट कर दिया है जो शांति लाते हैं और आत्माओं को पवित्र करते हैं। एक बेचैन व्यक्ति को कभी शांति नहीं मिलती। लोगों ने कहीं भी कोई शांत जगह नहीं छोड़ी है। यहां तक कि पवित्र भूमि को भी—उन्होंने अब उसे क्या बना दिया है ! और फोटिनी तपस्वी के जीवन में [136], यह उल्लेख है कि उस रेगिस्तान में जहाँ वह कभी रहती थी, बाद में कई

---

[136] संन्यासिनी फोतिनी का जन्म 1860 में दमिश्क (सीरिया) में एक ग्रीक परिवार में हुआ था। लगभग 1884 में, वह ट्रांसजॉर्डन के रेगिस्तान में चली गईं। 1915 में, प्रथम विश्व युद्ध के कारण, उन्हें यरूशलेम जाने के लिए मजबूर होना पड़ा, जहाँ वे तब तक रहीं जब तक कि शांति बहाल नहीं हो गई। बाद में वे मृत सागर के पश्चिम में रेगिस्तान में बस गईं, जहाँ वे अपनी मृत्यु तक एक तपस्वी के रूप में रहीं। तपस्वी के जीवन का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है:

कयिोस्क बनाए गए और स्नैक बार खोले गए। उन गुफाओं और कोठरयिों में जहाँ कभी इतने सारे भक्षिु और संत रहते थे , अंग्रेजों ने सॉफ्ट ड्रकि बेचना शुरू कर दयिा है। बस, अब कोई रेगस्तिान नहीं बचा! उसे घरों , रेडयिो , दुकानों , होटलों , हवाई अड्डों से भर दयिा गया है !... हम उस समय को देखने के लिए जीवति रहे हैं जसिके बारे में एटोलयिा के संत कोस्मास ने कहा था:[137] "वह समय आएगा जब, उन्हीं जगहों पर जहाँ अब युवा अपनी बंदूकें लटकाते हैं , जप्सिी अपने संगीत वाद्ययंत्र लटकाएंगे। " मेरा मतलब यह है कि हमने भी यह देखा है : जहाँ कभी संन्यासी मेहनत करते थे , जहाँ उनकी मालाएँ लटकती थीं — अब वहाँ रेडयिो ज़ोर से बजते हैं और सॉफ्ट ड्रकि में झाग नकिलते हैं !... हाँ , ऐसा लगता है कि कुछ और वर्षों में , इन सबकी और ज़रूरत नहीं पड़ेगी। वास्तव में , जो हो रहा है , उससे यह नष्किर्ष नकिाला जा सकता है कि जीवन समाप्त होने को है। जीवन का अंत और इस दुनयिा का अंत नकिट आ रहा है।

— गेरोना , क्या पवत्रि पर्वत पर अब भी कहीं कोई शांत जगह बची है ?

— अब तो पवत्रि पर्वत पर भी कोई शांत जगह बची है क्या ! आखरिकार, वे अथोस के जंगलों से होकर लगातार और भी ज्यादा सड़कें बना रहे हैं। हर तरफ़ गाड़ियाँ गड़गड़ा रही हैं। यहाँ तक कि जो सबसे सुनसान और शांत जगहों पर रहते हैं , उन्होंने भी अपने लिए गाड़ियाँ खरीद ली हैं। मुझे समझ नहीं आता—ये लोग रेगस्तिान में आखरि ढूंढ क्या रहे हैं ? आर्सेनयिस महान, रेगस्तिान में हल्की हवा में सरसराहट करती घासों को सुनकर , पूछा : 'यह शोर क्या है ? क्या यह भूकंप है ?'[138] काश पवत्रि पति अब देख पाते कि क्या हो रहा है ! अतीत में , सामुदायकि मठों में , भक्षिु अपने कर्तव्यों से बहुत थक जाते थे। वशिेष रूप से भोजन कक्ष का परचिारक और अतथिसित्कार करने वाला। उन्हें बर्तन धोने और तांबे के बर्तनों को पॉलशि करना पड़ता था। लेकनि आज यह सब आसान है , क्योंकि अब भक्षिुओं के पास हर तरह का आधुनकि उपकरण है — जनिमें से अधकिांश बहुत शोर करते हैं। मुझे याद है कि मठ में हम झरने से पानी लाते थे और एक वचि का उपयोग करके , उसे वशिेष कंटेनरों में धीरे -धीरे चौथी मंजलि तक ऊपर उठाते थे। लेकनि अब, पानी पंप से ऊपर भेजा जाता है , और आप लगातार उसकी खड़खड़ाहट सुन सकते हैं। दीवारें हलिती हैं , खड़िकयिाँ खड़कती हैं। वे कम से कम कसिी तरह का साइलेंसर तो लगा ही सकते थे। गृहयुद्ध के दौरान सेना में , मैं अपनी रेडयिो बैटरी चार्ज करते समय एक साइलेंसर का इस्तेमाल करता था ताकि दूसरी तरफ का दुश्मन कुछ भी न सुन सके।

एक बार, एक मठ के कुछ भक्षिु मेरी कोठरी में मुझसे मलिने आए थे। वे बहुत ज़ोर से बात कर रहे थे। 'शांत हो जाओ,' मैंने उनमें से एक से कहा, 'तुम्हारी आवाज़ बहुत दूर तक सुनाई दे रही है। ' वह चल्लिाता रहा। 'कृपया धीरे बोलिए,' मैंने उससे फरि कहा। उसने जवाब दयिा, 'मुझे माफ़ करना, गेरोन्डा , हम अपने मठ में ऐसे ही चल्लिाने के आदी हैं। हमारे यहाँ एक जनरेटर चल रहा है , इसलिए हमें ज़ोर से बात करनी पड़ती है — वरना हम एक-दूसरे की आवाज़ नहीं सुन सकते। ' क्या आप समझ रहे हैं कि मेरा क्या मतलब है ? यीशु की प्रार्थना का जाप करने और धीरे से बात करने के बजाय, वे जनरेटर चालू कर देते हैं और अंत में चल्लिाने लगते हैं ! कुछ कशिोर अपनी मोटरसाइकलिों से साइलेंसर हटा देते हैं ताकि वे ऐसा शोर मचा सकें जो मीलों तक सुना जा सके ... यह शर्म की बात है कि आज उसी भावना का मठवासी जीवन में भी धीरे -धीरे प्रवेश हो रहा है। हाँ , हम उसी ओर बढ़ रहे हैं – शोर भक्षिुओं को आनंद देता है।

आज सुबह मैं एक नन को देख रहा था। वह बलि्कुल एक अंतरक्षि यात्री जैसी दखि रही थी। सरि पर चौड़ी कनिारी वाली पुआल की टोपी, चेहरे पर रेस्परिेटर और हाथ में पेट्रोल -चालति घास काटने वाली मशीन लिए, वह ढलान से नीचे उतर रही थी और खुद को नहिार रही थी। चाँद से लौटने पर अंतरक्षि यात्री भी इतने घमंडी नहीं थे ! थोड़ी देर बाद, मैंने अचानक सुना : 'ट्रा -टा-टा-टा!..' मैंने देखा तो वह उसी घास काटने वाली मशीन से घास काट रही थी – और इतनी तेज़ आवाज़ में कि

आर्चमिैंड्राइट इओआकेम स्पेट्सएिरसि। तपस्वनिी फोटनिी। सेंट अनार्गरिोई का पवत्रि झोपड़ी , न्यू स्केट , माउंट अथोस, 1994।

[137] पवत्रि शहीद और प्रेरतिों के समान कोस्मास ऑफ़ एटोलीया (1779; उनकी शहादत की स्मृति 24 अगस्त को)। उन्होंने एथोस के पवत्रि पर्वत पर काफी समय तक परश्रिम कयिा। अपनी दव्यि पुकार के बाद, वह दुनयिा में नकिल पड़े और तुर्की के शासन के अधीन ग्रीस के शहरों और गांवों में सुसमाचार का प्रचार करते हुए यात्रा की। उन्होंने सुसमाचार का उपदेश दयिा, स्कूल स्थापति कएि, और यूनानयिों के इस्लामीकरण का वरिोध कयिा। उन्होंने कई चमत्कार कएि और संपूर्ण मानवता के भवष्यि के बारे में कई भवष्यिवाणयिाँ छोड़ीं। उन्हें आधुनकि युग के एक महान भवष्यिवक्ता के रूप में सही माने जाते हैं। यहूदयिों द्वारा तुर्की के पशा के सामने उनकी बदनामी की गई और उन्होंने शहीद की मृत्यु प्राप्त की। देखें : द लाइफ़ एंड प्रॉफसीज़ ऑफ़ कॉस्मस ऑफ़ एटोलाइया। – मॉस्को : होली माउंटेन , 2007। – अनुवादक की टप्पिणी।

[138] देखें : द एंशयिंट पैटरिकिॉन। मॉस्को , 1899। पृ . 21।

उस शोर से बचने के लिए कहीं छिपने की जगह नहीं बची थी। उसका काम खत्म होते ही, मठ का एक कर्मचारी एक और भी ज्यादा शोर करने वाली मशीन लेकर आ गया — ज़मीन जोतने के लिए। वह इधर-उधर, बार-बार चकचक करता हुआ दौड़ रहा था! फिर उसने अपनी पेट्रोल -चालित हल छोड़ दी और एक और मशीन उठा ली — ज़मीन जुताई करने के लिए। अपनी इस कड़वी किस्मत में हमने क्या -क्या नहीं झेला है !..

— और फिर भी, गेरोन्डा , चूँकि यह सारी मशीनरी चीजों को आसान बनाने के लिए ही है ...

— ओह, तुम्हें पता है कि जीवन को आसान बनाने के लिए कितनी सारी मशीनें हैं !... जहाँ तक हो सके , गड़गड़ाने वाली, खड़खड़ाने वाली किसी भी चीज़ से बचो; शोर से बचो। यह सारा शोर हमें मठ से बाहर निकाल देता है। तो फिर, नीचे द्वार पर 'हेसकैस्टरियम ' (Hesychasterium) लिखा हुआ बोर्ड क्यों लटका है ?[139] तुम्हें तो 'नोइसैस्टरियम ' (Noisasterium) या 'रेस्टलेसनस्टिरियम ' (Restlessnessterium) जैसा कुछ लिखना चाहिए! अगर एक मठ में शांति ही नहीं है तो उसका क्या फायदा? देखो , जहाँ तक हो सके , उन सभी चीजों को सीमित करने की कोशिश करो जिनके बारे में हम अभी बात कर रहे हैं। तुमने अभी तक यह अनुभव नहीं किया कि मौन कितना मधुर होता है। यदि तुम इसे समझ लेते , तो तुम न केवल मेरी बात बल्कि कुछ अन्य बातों को भी बेहतर ढंग से समझ पाते। यदि तुमने मौन के मधुर आध्यात्मिक फलों का स्वाद चखा होता, तो निस्संदेह तुम दयालुतापूर्वक चिंतित होते और आध्यात्मिक जीवन के पवित्र मौन के लिए और अधिक उत्साहपूर्वक प्रयास करते।

मौन एक रहस्यमयी प्रार्थना है

इस सारी शोरगुल वाली तकनीक के साथ, भिक्षु प्रार्थना और संन्यासी जीवन के लिए आवश्यकताओं को स्वयं से दूर कर देता है। इसलिए, एक भिक्षु को, यथासंभव , शोरगुल वाली तकनीक का उपयोग न करने का प्रयास करना चाहिए। जिस चीज़ को लोग सुविधाजनक मानते हैं , वह आम तौर पर, एक भिक्षु को अपना लक्ष्य प्राप्त करने में मदद नहीं करती है। ऐसी अवस्था में , भिक्षु उस चीज़ को प्राप्त नहीं कर सकता जिसके लिए उसने अपनी यात्रा शुरू की थी।

मौन एक महान चीज़ है। मौन रहने से , एक व्यक्ति पहले से ही प्रार्थना कर रहा होता है — वास्तव में प्रार्थना किए बिना भी। मौन एक रहस्यमयी प्रार्थना है , और यह प्रार्थना में बहुत सहायता करता है , ठीक वैसे ही जैसे हर सांस किसी व्यक्ति को लाभ पहुंचाती है।[140] जो कोई भी मौन में रहते हुए आध्यात्मिक कार्य में संलग्न रहता है , वह बाद में प्रार्थना में डूब जाता है। क्या आप जानते हैं कि डूब जाने का क्या अर्थ है ? एक बच्चा जो अपनी माँ की गोद में चुप हो गया हो, कुछ नहीं बोलता। वह पहले से ही उससे एक हो चुका है , उसके साथ एकात्मता में है। इसलिए, यदि कोई मठ पुरातात्विक स्थलों से दूर , दुनिया के कोलाहल और लोगों की भीड़ से दूर स्थित हो, तो यह अत्यंत लाभदायक है।

बाहरी मौन, दुनिया से अलग और विवेकपूर्ण तपस्या और अखंड प्रार्थना के साथ संयुक्त , बहुत जल्दी संन्यासी को आंतरिक मौन — यानी मन की शांति — भी प्रदान करता है। यह आंतरिक मौन सूक्ष्म आध्यात्मिक कार्य के लिए एक आवश्यक पूर्वापेक्षा है। और

---

[139] हेसकैस्टेरियन (ग्रीक : ἡσυχαστήριον) – एक विशेष प्रकार का मठ। इसका नाम 'ἡσυχία' – अर्थात् मौन – शब्द से लिया गया है। – अनुवादक की टिप्पणी।

[140] धन्य एल्डर पैसियोस द्वारा दिए गए उदाहरण की उपयुक्तता शारीरिक आंकड़ों से पुष्ट होती है। सूक्ष्म , निरंतर पसीना और त्वचा का श्वसन वे तंत्र हैं जिनके द्वारा मानव शरीर के तापमान को नियंत्रित किया जाता है। यदि किसी व्यक्ति के शरीर की पूरी सतह को किसी इन्सुलेटिंग सामग्री से ढक दिया जाए, जिससे उसे त्वचा श्वसन से वंचित कर दिया जाए, तो इसके परिणाम तुरंत स्पष्ट नहीं होंगे ; हालाँकि, कुछ समय बाद, शरीर के तापमान के संतुलन में व्यवधान शरीर के महत्वपूर्ण कार्यों में गंभीर गड़बड़ी पैदा कर देगा। प्रार्थना और मौन के साथ उपमा सीधी है। रहस्यमयी , अनकही प्रार्थना – मौन – एक व्यक्ति को स्वस्थ आध्यात्मिक अवस्था में बने रहने में सूक्ष्म लेकिन लगातार मदद करती है। मौन की कमी एक ईसाई को – और विशेष रूप से एक भिक्षु को – ऐसे आध्यात्मिक परिणामों की ओर ले जाती है जो पहली नज़र में तो अदृश्य होते हैं , लेकिन फिर भी विनाशकारी होते हैं। – अनुवादक की टिप्पणी।

फरि बाहरी व्यवधान व्यक्ति को परेशान करना बंद कर देते हैं , क्योंकि , वास्तव में , केवल उनका शरीर पृथ्वी पर है , जबकि उनका मन स्वर्ग में वास करता है।

शोर सुनाई देता है या नहीं , यह स्वयं व्यक्ति पर निर्भर करता है

— गेरोना , अगर ड्यूटी के दौरान शोर हो, या हस्तशिल्प के लिए किसी शोर करने वाली मशीन की आवश्यकता हो, तो क्या करना चाहिए?

— जब हस्तशिल्प में शोर हो, तो शांत स्तोत्र -गायन बहुत मदद करता है। यदि आप यीशु की प्रार्थना का जाप नहीं कर सकते , तो चर्च का कोई भजन गाएँ। धैर्य की आवश्यकता है। जहाज पर, जब मैं माउंट अथोस से यात्रा करता हूँ या लौटता हूँ , तो बहुत शोर हो सकता है। मैं कहीं किसी कोने में बैठ जाता हूँ ताकि मुझे कोई परेशान न करे , सोने का नाटक करता हूँ , अपनी आँखें बंद कर लेता हूँ — और गाना शुरू कर देता हूँ। मैं क्या -क्या गाता हूँ ! 'यह वास्तव में उचित है ' के कितने ही अलग-अलग संस्करण , कितने ही 'हे पवित्र ईश्वर '। और जहाज के इंजन की गूँज भजन गाने के लिए एकदम उपयुक्त होती है। इंजन 'स्वर बनाए रखता है '[141] — पापैनकिोलॉ के 'इट इज़ ट्रूली मीट' और नीलेव्स के 'होली गॉड' के साथ पूरी तरह से सुर में। [142] यह इतनी अच्छी तरह से गुनगुनाता है कि यह लगभग किसी भी चीज़ के अनुकूल है ! मैं मन ही मन गाता हूँ , फरि भी मेरा दिल भी गाने में शामिल हो जाता है।

और फरि भी मुझे लगता है कि जो चीज़ हमें चिंता देती है , वह बाहरी शोर उतना नहीं है , जितना कि किसी चीज़ में [आंतरिक] व्यस्तता है। बाहरी शोर सुनना या न सुनना आप पर निर्भर करता है , जबकि [आंतरिक] व्यस्तता से बचना आसान नहीं है। इसका आधार मन है। आँखें देख सकती हैं और फरि भी न देख सकती हैं। जब मैं प्रार्थना करता हूँ , तो मैं किसी चीज़ को देख सकता हूँ लेकिन उसे देख नहीं पाता। मैं कहीं चल सकता हूँ लेकिन कुछ भी महसूस नहीं कर पाता। यदि किसी व्यक्ति को शोर के बीच यीशु की प्रार्थना [143] का अभ्यास करना मुश्किल लगता है , तो इसका मतलब है कि उसका मन ईश्वर के प्रति समर्पित नहीं है। एक व्यक्ति को दिव्य विरक्ति की अवस्था प्राप्त करनी चाहिए ताकि वह आंतरिक मौन में जी सके , और प्रार्थना के दौरान शोर उसे परेशान न करे। [तब] एक व्यक्ति उस दैवीय निर्लिप्तता की अवस्था को प्राप्त करता है , जिसमें वे अब शोर नहीं सुनते , या इसे केवल तभी सुनते हैं जब वे चाहें — या, अधिक सटीक रूप से , जब उनका मन स्वर्ग से नीचे आता है। यदि कोई व्यक्ति आध्यात्मिक कार्य में संलग्न रहता है और लगन से प्रयास करता है , तो वह इस अवस्था को प्राप्त कर लेगा। तब वह जब चाहे कुछ सुन सकेगा या न सुन सकेगा।

---

[141] आइसोस (ग्रीक ἴσος – समान, बराबर, alike से) – बाइज़ेंटाइन चर्च के गायन में सबसे निचली, 'मूल ' आवाज़। – अनुवादक की टिप्पणी।

[142] चरालाम्पोस पापानिकोलाउ – 19वीं सदी के अंत से 20वीं सदी की शुरुआत तक के बाइज़ेंटाइन संगीत के एक गायक और संगीतकार , जो ग्रीक शहर कावाला के थे। नीलेव्स कामारादोस – 19वीं सदी के मध्य के एक कॉन्स्टेंटिनोपोलिटन गायक, बाइज़ेंटाइन संगीत के संगीतकार और सिद्धांतकार। – अनुवादक की टिप्पणी।

[143] मठों की शब्दावली में , 'εὐχή' शब्द का अर्थ कुछ शब्दों से मिलकर बनी एक संक्षिप्त प्रार्थना से है , जिसे प्रार्थना माला के साथ प्रार्थना करते समय कई बार दोहराया जाता है। आमतौर पर यह यीशु की प्रार्थना होती है : 'हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र , मुझ पर दया करो,' लेकिन इसके अलावा, 'εὐχή' का अर्थ परमेश्वर की परम पवित्र माता को की जाने वाली प्रार्थना से भी हो सकता है : 'हे परमेश्वर की परम पवित्र माता, मुझे पापी को बचाओ,' संतों को: 'हे संत (नाम), मेरे लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें ,' पवित्र क्रूस को, स्वर्गदूतों को, या दिवंगतों की आत्मा की शांति के लिए, बीमारों के स्वास्थ्य के लिए, आदि इसी प्रकार की प्रार्थना। इस शब्द का अनुवाद संदर्भ के अनुसार 'यीशु की प्रार्थना ', 'माला की माणियों से प्रार्थना ', 'प्रार्थना ', 'लिटनी' आदि किया जा सकता है। वर्तमान पाठ में 'प्रार्थना करना' का अर्थ इस प्रकार की प्रार्थना करना है। – अनुवादक की टिप्पणी।

एक बार, सेना में सेवा करते समय, मैंने अपने एक साथी सैनिक —जो एक भक्तिमय व्यक्ति था—से एक निश्चित स्थान पर मिलने की व्यवस्था की। "लेकिन ," उसने आपत्ति जताई, "मेरे कान के ठीक बगल में एक लाउडस्पीकर तेज आवाज़ में बज रहा है। " "कि कोई लाउडस्पीकर सुनता है या नहीं ," मैंने जवाब दिया, "यह व्यक्ति स्वयं पर निर्भर करता है। " क्या हम वास्तव में वह सुनते हैं जो हमारे चारों ओर हो रहा है , जब हमारा मन किसी और चीज़ में व्यस्त हो? मुझे याद है कि माउंट अथोस पर, मेरे कालीवा के सामने , वे चेनसॉ से पेड़ काट रहे थे —उन्होंने एक पूरी पहाड़ी को नंगा कर दिया था। तो, जब मैं पढ़ रहा था या प्रार्थना कर रहा था और उसमें पूरी तरह से डूबा हुआ था, तो मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दिया। लेकिन जब मैंने अपने आध्यात्मिक कार्यों को बंद किया, तो मैं फिर से सब कुछ सुनने लगा।

हम दूसरों की चुप्पी का सम्मान करें

अगर हम स्वयं शोर के कारण नहीं हैं , तो कोई हानि नहीं होती — ईश्वर सब कुछ देखता है। लेकिन बात अलग है अगर शोर हमसे उत्पन्न हो। इसलिए हमें लगातार सतर्क रहना चाहिए कि हम दूसरों को परेशान न करें। अगर कोई स्वयं प्रार्थना नहीं करना चाहता, तो कम से कम दूसरों को परेशान न करे। एक बार जब आपको यह एहसास हो जाएगा कि आपका शोर प्रार्थना कर रहे किसी व्यक्ति को कितना नुकसान पहुँचाता है , तो आप बहुत सावधान हो जाएँगे। क्योंकि जब तक आप यह महसूस नहीं करते कि मौन आपके लिए व्यक्तिगत रूप से आवश्यक है , और सामान्य रूप से सभी की मदद करता है — और इसका पालन मजबूरी में या सिर पर लाठी ताने हुए करने के बजाय, दिल से , प्रेम के साथ किया जाना चाहिए — तब तक मौन का कोई अच्छा परिणाम नहीं निकलेगा। यदि कोई व्यक्ति तनाव महसूस करते हुए , केवल अनुशासन के नियमों का पालन करते हुए चुप्पी साधे , खुद से कहता रहे : 'अब मुझे इस तरफ से चलना चाहिए ताकि किसी को परेशान न करूँ , और अब मुझे चुपके से गुजरना चाहिए...', तो यह एक सच्ची यातना है। लक्ष्य यह है कि दिल से , आनंद के साथ काम किया जाए, और मौन इसलिए बनाए रखा जाए क्योंकि कोई प्रार्थना कर रहा है , कोई ईश्वर के साथ एकाकार हो रहा है। पहले मामले और दूसरे मामले में मौन बनाए रखने में कितना अंतर है ! जो कुछ भी व्यक्ति दिल से करता है , वह उसे आनंद देता है और उसकी मदद करता है। यदि कोई मौन को एक आवश्यकता के रूप में पहचानता है और उस क्षण प्रार्थना कर रहे लोगों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करता है , तो श्रद्धा की भावना उत्पन्न होती है। और दूसरों का सम्मान करके , एक व्यक्ति स्वयं का सम्मान करता है , और फिर वह स्वयं को पहले नहीं रखता, क्योंकि उसमें आत्म -प्रेम नहीं , बल्कि दूसरों के प्रति प्रेम होता है। एक को स्वयं को दूसरे की जगह रखना चाहिए; एक को इस प्रकार चिंतन करना चाहिए: 'अगर मैं इस व्यक्ति की जगह होता, तो मैं कैसे व्यवहार किए जाने की इच्छा रखता? आखिरकार, अगर मैं थका हुआ या प्रार्थना कर रहा होता, तो क्या मुझे ऐसे दरवाज़ा बंद करना पसंद आता?' यदि कोई स्वयं को दूसरे की जगह रखता है , तो बहुत कुछ बदल जाता है।

और सामुदायिक मठों में कितनी अद्भुत व्यवस्था हुआ करती थी!... शांति ! घड़ी हर पंद्रह मिनट पर बजती थी ताकि सभी भिक्षुओं को यीशु प्रार्थना का पाठ करने की आवश्यकता याद रहे। यदि कोई प्रार्थना से भटक जाता, तो हर पंद्रह मिनट पर बजती घड़ी की आवाज़ उन्हें वापस प्रार्थना में ला देती। घड़ी की घंटी बजना बहुत फायदेमंद था। पादरी प्रार्थना कहते थे , और मठ में सन्नाटा —एक गहरी शांति —छाई रहती थी। उस स्व्यातोगोर्स्क के सामुदायिक मठ में जहाँ मैं कुछ समय के लिए रहा, भाईचारे के साठ सदस्य थे। फिर भी ऐसा आभास होता था कि मठ में केवल एक ही हेसिकैस्ट रहता था। हर कोई यीशु की प्रार्थना का अभ्यास कर रहा था।

चर्च में , अधकिांश लोग मानसकि प्रार्थना का अभ्यास कर रहे थे —केवल कुछ ही गा रहे थे। और उनके कर्तव्यों के दौरान भी यही स्थति थी। हर तरफ़ सन्नाटा छाया रहता था। कोई ज़ोर से नहीं बोलता था, कोई चल्लिाता नहीं था; हर कोई अपने -अपने कर्तव्यों का पालन करता था। हर कोई बनिा आवाज़ के चलता था—बल्कुिल छोटे मेमनों की तरह। मठ में जो कुछ भी कयिा जाता था, वह हमेशा बनिा आवाज़ के कयिा जाता था। आजकल के मठों में जो चलन आ गया है , उसका वहाँ कोई अंश नहीं था: 'कर्तव्यों का समय', 'मौन का समय'... शायद वे 'शांत घंटा ' भी शुरू कर देंगे ! अतीत में , हर कोई अपने सौंपे गए कर्तव्य के अनुसार अपना समय व्यवस्थति करता था।

यदहिम चाहते हैं कयिह धन्य मरुभूम —अपनी पवत्रि सूनापन और मधुर शांत के साथ— हमारी मदद करे , ताकहिम भी शांत पा सकें , अपने जुनून से मुक्त हो सकें , और परम पवत्रि ईश्वर के और करीब आ सकें , तो हमें भी इसे प्रेम करना चाहिए और इसके प्रत श्रद्धा से पेश आना चाहिए। हमें सावधान रहना चाहिए कहिम पवत्रि मरुभूम को अपने भावुक 'स्व ' के अनुरूप न ढालें। यह एक बड़ी अधर्म है —यह ठीक वैसा ही है जैसे पवत्रि गोलगोथा में पूजा करने जाते समय पॉप गीत गाना।

शोर का इलाज अच्छे वचिार हैं

दुर्भाग्य से , आजकल लोग तुच्छ कार्यों के लिए भी शोर करने वाली मशीनों का उपयोग करते हैं। इसलिए, यदआिप कुछ समय के लिए शोरगुल वाले वातावरण में खुद को पाते हैं , तो आपको अपने भीतर अच्छे वचिारों को वकिसति करना चाहिए। आप लोगों को यह या वह शोर करने वाली मशीन चालू न करने के लिए मजबूर नहीं कर सकते। इसके बजाय, तुरंत खुद एक अच्छा वचिार क्रयिा में लाएं। उदाहरण के लिए, आप एक स्प्रेयर की गड़गड़ाहट सुनते हैं , और यह आपको ऊपर से उड़ रहे हेलीकॉप्टर की आवाज़ की याद दलिाता है। अपने आप से सोचें : "हो सकता है कि बहनों में से कोई एक गंभीर रूप से बीमार पड़ गई हो और उसे अस्पताल ले जाने के लिए एक हेलीकॉप्टर आया हो। कल्पना कीजिए कतिब आप कतिने परेशान हो जाते !" लेकनि अब, ईश्वर की कृपा है , हम सभी स्वस्थ हैं। " इसके लिए बुद्धमिानी और सूझबूझ की आवश्यकता होती है — एक सकारात्मक वचिार को अपनाने की कला। उदाहरण के लिए, आप कंक्रीट मक्सिर की गूँज , एक होइस्ट के चलने , या कोई अन्य शोर सुनते हैं। कहें : "तेरी ही स्तुत है , हे ईश्वर , कि कोई बम वस्फिोट नहीं हो रहे हैं , कि इमारतें नहीं गरि रही हैं ! इसके वपिरीत—लोग शांत से रह रहे हैं और अपने घर बना रहे हैं। "

— लेकनि गेरोन्डा , अगर कसिी की नसें तन जाएँ तो क्या होगा? फरि क्या ?

— आपकी नसें तन गई हैं ? यह आखरि मतलब क्या है ? शायद आपके वचिार तन गए हैं ? एक अच्छे वचिार से बेहतर कुछ नहीं है। एक सांसारकि व्यक्त ने एक शांत जगह पर अपने लिए एक घर बनाया। समय बीतता गया, और उसके घर के एक तरफ उन्होंने एक गैराज बनाया, दूसरी तरफ उन्होंने एक मोटरवे बनाया, और तीसरी तरफ उन्होंने एक डस्किो वाला बार खोल दयिा। आधी रात तक गूँजते ढोल सुनो। बेचारे आदमी की नींद उड़ गई; वह कानों में प्लग लगाकर सोने लगा, और गोलयिाँ तक लेने लगा। थोड़ा और ऐसा होता, और उसका दमिाग़ खराब हो जाता। वह पवत्रि पहाड़ पर आया, मुझे खोजा और मुझसे कहने लगा: 'मामला यह है , गेरोन्डा , हमें बल्कुिल भी शांत नहीं मलि रही है। मुझे क्या करना चाहिए? मैं एक और घर बनाने के बारे में सोच रहा हूँ। ' 'इसमें एक अच्छा वचिार डालो,' मैंने उससे कहा। 'बस सोचो: अगर युद्ध चल रहा होता और गैराज में टैंकों की मरम्मत हो रही होती, और एम्बुलेंस घायलों को पास के अस्पताल ले जा रही होती, और तुम्हें कहा जाता: "जहाँ हो वहीं रुको। हम तुम्हारी जान की गारंटी देते हैं ; हम तुम्हें

छूएँगे नहीं। आप अपना घर सुरक्षित रूप से छोड़ सकते हैं, लेकिन आपको केवल इन इमारतों की परिधि के भीतर ही रहना होगा, क्योंकि गोलियाँ यहाँ तक नहीं पहुँचेंगी। 'या वे कह सकते हैं: 'अपने घर से सिर बाहर मत निकालो, और कोई तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाएगा। 'क्या यह आपके लिए काफी नहीं होगा? क्या आप ऐसी परिस्थितियों को एक वास्तविक आशीर्वाद नहीं मानेंगे? तो अब खुद से कहो: 'तेरी स्तुति हो, हे ईश्वर, कि कोई युद्ध नहीं है, कि लोग जीवित और सुरक्षित हैं और अपने कामकाज में लगे हुए हैं। गैराज में कोई टैंक नहीं है; लोग वहां अपनी कारों की मरम्मत कर रहे हैं। तेरी स्तुति हो, हे ईश्वर, कि कोई अस्पताल नहीं है, कोई घायल नहीं है, और युद्ध से आने वाली कोई अन्य पीड़ा नहीं है। मोटरवे पर टैंकों की कतारें नहीं हैं, बल्कि कारों का एक बहाव है जो तेज़ी से गुज़र रहा है—लोग काम पर जल्दी जा रहे हैं। "यदि आप इस तरह से एक अच्छे विचार को अमल में लाते हैं, तो ईश्वर की स्तुति अपने आप होगी।" उस गरीब आदमी को एहसास हुआ कि सबसे महत्वपूर्ण बात उसकी परिस्थितियों के प्रति सही दृष्टिकोण रखना था, और वह शांति का अनुभव करते हुए वहाँ से चला गया। धीरे-धीरे, उसने अपने चारों ओर की प्रलोभनों का सामना अच्छे विचारों से करना शुरू कर दिया; फिर उसने अपनी गोलियाँ फेंक दीं और बिना किसी परेशानी के सो गया। क्या आप देख सकते हैं कि कैसे एक अच्छा विचार किसी व्यक्ति को सही रास्ते पर ला सकता है?

और एक बार मैं बस से कहीं जा रहा था। कंडक्टर ने रेडियो तेज़ आवाज़ में बजा रखा था। हमारे साथी यात्रियों में कई युवा विश्वासी थे। उन्होंने कंडक्टर से कहा कि बस में एक भिक्षु हैं, और बार-बार उससे रेडियो बंद करने का इशारा किया। उन्होंने एक बार कहा, दो बार कहा—लेकिन उसने कोई ध्यान नहीं दिया; बल्कि, उसने वॉल्यूम और भी बढ़ा दिया। मैंने उन लड़कों से कहा, "इसे रहने दो, मुझे इससे कोई परेशानी नहीं है। मैं चर्च के भजन गा रहा हूँ, और रेडियो भी मेरे साथ गा रहा है—उसी सुर में।"[144] लेकिन मन ही मन मैंने खुद से कहा: "अगर, ईश्वर न करे, मोटरवे पर कहीं कोई दुर्घटना हो जाए और घायल लोगों को हमारी बस में चढ़ा दिया जाए—एक का पैर टूटा हो, दूसरे के सिर पर चोट लगी हो—तो मैं ऐसी दृश्य कैसे सहन कर पाऊँगा? तेरा महिमा हो, हे ईश्वर, कि लोग जीवित और स्वस्थ हैं!" देखो, वे तो भजन भी गा रहे हैं!" और इस तरह मैं आगे बढ़ता गया, अपने मन में आध्यात्मिक भजन गुनगुनाते हुए। यह एक अद्भुत यात्रा थी!

मैं आपको एक और उदाहरण देता हूँ ताकि आप देख सकें कि एक अच्छा विचार व्यक्ति को कैसे सही रास्ते पर ला सकता है—चाहे जो भी हो रहा हो। मैं अपने एक परिचित के साथ यरूशलेम में था। हमारी यात्रा किसी स्थानीय त्योहार के साथ मेल खा रही थी। भीड़ जश्न मना रही थी और बिना रुके चिल्ला रही थी: 'अल्ला ... आह!' यह वाकई एक अजीब हाल था—ईश्वर न करे! शोर, हलचल, उद्गार! वे पूरी शान से जश्न मना रहे थे—'खुशी के नारों के साथ!'[145] बस, शब्दों को समझना असंभव था। यह पूरी रात चलता रहा। मेरा दोस्त काफी घबरा गया, खिड़की की चौखट पर बैठ गया, और सारी रात एक पल के लिए भी नहीं सोया। जहाँ तक मेरी बात है, एक अच्छे विचार को अमल में लाने के बाद, मैं बच्चे की तरह सोया: मुझे मिस्र से यहूदियों के प्रस्थान की याद आ गई,[146] और इससे मुझे एक तरह की कोमल भावना भी महसूस हुई।

---

[144] टिप्पणी 142 देखें।

[145] देखें भजन संहिता 150:5।

[146] निर्गमन 13–15 देखें।

तो आपको भी अच्छे विचारों से किसी भी प्रलोभन से बचना चाहिए। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कोई दरवाज़ा ज़ोर से बंद करता है। अपने आप से कहिए: 'अगर, ईश्वर न करे, बहनों में से किसी को कुछ हो गया होता—मान लीजिए वह गिरकर अपना पैर तोड़ लेती—क्या मैं सच में सो पाती? लेकिन अब दरवाज़ा ज़ोर से बंद हो गया है – खैर, मुझे लगता है कि बहन का इसमें कोई हाथ होगा।" हालाँकि, अगर कोई नन जज करना शुरू कर दे और कहे: "ज़रा देखो तो यह कितनी भुलक्कड़ है! देखो, दरवाज़े ज़ोर से बंद कर रही है! क्या शर्म की बात है!" – क्या वह बाद में सच में शांति से रह पाएगी? जैसे ही वह ऐसे विचारों को पालती है, उसकी 'तंगलाश्का' चीजों को भड़काना शुरू कर देगी। या, उदाहरण के लिए, कोई बहन रात में किसी की अलार्म घड़ी को लंबे समय तक बजते हुए सुन सकती है। यह बजती है — फिर रुक जाती है; बजती है — फिर से रुक जाती है। यदि कोई नन, किसी और की अलार्म घड़ी से जागने पर, मन ही मन सोचे: 'जाहिर है, यह बहन पूरी तरह थकी हुई है; वह उठ भी नहीं पा रही है। उसके लिए बेहतर होगा कि वह उठे और आधे घंटे बाद अपनी सेल की दिनचर्या शुरू करे,' तो उसे अचानक जगाए जाने पर न तो चिड़चिड़ाहट होगी और न ही कष्ट। हालाँकि, अगर वह अपने बारे में सोचती है, 'देखो मैं यहाँ हूँ, मुझे तरह-तरह के दूसरे लोगों की अलार्म घड़ियाँ जगा रही हैं!' — तो वह कह सकती है: 'यह क्या बकवास है?! ये मुझे एक पल का भी चैन नहीं देते!' इसीलिए एक ही दयालु विचार किसी व्यक्ति की किसी भी अन्य उपलब्धि से अधिक मदद करता है।

हमें आंतरिक स्थिरता विकसित करनी चाहिए

लक्ष्य यह है कि व्यक्ति आध्यात्मिक संघर्ष के लिए हर चीज़ से लाभ उठाए। हमें आंतरिक शांति प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। अपने प्रयासों में एक धर्मपरायण विचार को शामिल करके, हमें शोर से भी लाभ उठाना चाहिए। सबसे आवश्यक बात यह है कि जो हो रहा है उसके प्रति हमारा दृष्टिकोण सही हो। हमें हर चीज़ का मुकाबला अच्छे विचारों से करना चाहिए। यदि हम शोर के बीच आंतरिक शांति प्राप्त कर सकें, तो यह काफी मूल्यवान है। और यदि कोई बाहरी हलचल के बीच आंतरिक शांति प्राप्त करने में असमर्थ रहा है, तो वह बाहरी रूप से शांत माहौल में भी शांति नहीं पाएगा। जब किसी व्यक्ति को आंतरिक शांति मिलती है, तो उसके भीतर सब कुछ शांत हो जाता है और कुछ भी उसे परेशान नहीं करता। हालाँकि, यदि कोई बाहरी शांति प्राप्त करने के लिए एक शांत वातावरण में जाने की कोशिश करता है, तो वहाँ पहुँचकर वह एक लाठी उठा लेगा और दिन में टिड्डियों और रात में सियारों को भगाएगा, ताकि वे उसे परेशान न करें। दूसरे शब्दों में, वह उस चीज़ को भगा रहा होगा जिसे शैतान ने उसके लिए इकट्ठा किया है। आपको और क्या उम्मीद थी? आप क्या सोचते हैं कि शैतान क्या करता है?

वह हर संभव तरीके से हमें रोकने की कोशिश करता है — जब तक कि वह हमें पूरी तरह से घुटनों पर नहीं ला देता।

एक आश्रम में दो वृद्ध भिक्षु रहते थे। उन्होंने अपने लिए गर्दन में घंटी बाँधे एक गधा खरीदा। लेकिन पास में रहने वाले एक युवा भिक्षु को मौन जीवन का शौक था। वह घंटी की आवाज से परेशान था, और उसका दावा था कि स्केटे के भिक्षुओं को गधे रखने की मनाही थी, और अपनी बात साबित करने के लिए उसने हर संभव कैननिकि नियम का हवाला दिया जो उसे मिल सका! दूसरे आश्रम के संन्यासियों ने कहा कि घंटी से उन्हें कोई परेशानी नहीं होती। मैंने उस युवा हेसिकैस्ट से कहा, "सुनो, आखिरकार, ये बूढ़े संन्यासी तो तुम और मुझे तरह-तरह की मांगों से परेशान नहीं कर रहे हैं; वे गधे की मदद से अपना काम चलाते हैं। क्या यह हमारे लिए काफी नहीं है? क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि अगर गधे के पास घंटी न होती और वह खो

जाता तो? आखरिकार, हमें ही उसे खोजने जाना पड़ता ! और फरि भी हम शकियत करते हैं ?" अच्छे इरादों के बनि, हर चीज़ से आध्यात्मकि लाभ प्राप्त कएि बनि, हम तब भी तरक्की नहीं करेंगे , भले ही हम संतों के साथ रहें। उदाहरण के लएि, मैं खुद को एक सैन्य इकाई में पाया। तो फरि—सैनकिों की तुरही की आवाज़ मेरे मठ की घंटी का काम करेगी , और स्वचालति राइफल मुझे शैतान के खलिाफ आध्यात्मकि हथयिार की याद दलिाएगी। हालाँकि , यदि हम हर चीज़ से आध्यात्मकि लाभ नहीं उठाते हैं , तो एक घंटी भी हमें कष्ट देगी। या तो हम हर चीज़ से लाभ उठाते हैं , या शैतान इसका फायदा उठाएगा। एक बेचैन व्यक्ति अपने बेचैन 'स्व ' को रेगस्तिान में भी साथ लेकर जाएगा। पहले , आत्मा को बाहरी हलचल के बीच भी आंतरकि स्थरिता प्राप्त करनी चाहएि। इसे प्राप्त करने के बाद, वह स्थरिता की तलाश में दुनयिा को छोड़ने पर भी स्थरि रह सकेगी।

अध्याय 5.
अत्यधकि चंति एक व्यक्ति को ईश्वर से कैसे दूर करती है

हम कई चीज़ों से चपिके न रहें

आजकल लोग सरल जीवन नहीं जीते हैं। इसीलएि उनका ध्यान इतनी आसानी से भटक जाता है। वे बहुत अधकि काम अपने ऊपर ले लेते हैं और चंताओं के सागर में डूब जाते हैं। जहाँ तक मेरा सवाल है , मैं पहले एक या दो काम पूरे करता हूँ —और तभी मैं दूसरों के बारे में सोचता हूँ। मैं एक साथ कभी कई काम नहीं करता। इस समय, मैं सर्फि एक ही चीज़ के बारे में सोच रहा हूँ। पहला काम खत्म करने के बाद, मैं दूसरे पर वचिार करना शुरू करता हूँ। क्योंकि अगर मैं पहला काम खत्म कएि बनि दूसरा काम शुरू कर दूँ तो मुझे कोई शांति नहीं मलिती। बहुत सारे काम एक साथ करने से , एक व्यक्ति अपना आपा खो देता है। इन सभी कामों के बारे में [एक ही समय में] सर्फि सोचना भी सज़ोफ्रेनयिा का कारण बनने के लएि काफी है।

एक बार, मानसकि वकिार से पीड़ति एक युवक मेरे आश्रम में आया। उसने मुझे आश्वासन दयिा कि वह कसिी तरह की आनुवंशकि संवेदनशीलता से पीड़ति था जो उसे अपने माता-पति से वरिासत में मलिी थी। मैंने उससे कहा, 'तुम आखरि कसि बारे में बात कर रहे हो—आनुवंशकिता ?' 'सबसे पहले , तुम्हें आराम की ज़रूरत है। फरि अपनी पढ़ाई पूरी करो। उसके बाद, अपनी सैन्य सेवा करो, और फरि नौकरी ढूँढ़ने की कोशशि करो।' उस बेचारे लड़के ने सुना और अपना रास्ता खोज लयिा। इसी तरह, लोग खुद को खोजते हैं।

—गेरोन्डा , मैं भी काम से जल्दी थक जाता हूँ। मुझे समझ नहीं आता कि इसका कारण क्या है।

'तुम्हारे अंदर धैर्य की कमी है। और तुम्हारी अधीरता का कारण यह है कि तुम बहुत ज़्यादा काम अपने ऊपर ले लेते हो। तुम बहुत ज़्यादा जगहों पर अपना हाथ आज़माते हो और खुद को थका देते हो। और इससे घबराहट होती है , क्योंकि तुम महत्वाकांक्षी हो और अपने काम की बहुत परवाह करते हो।'

जब मैं एक सामुदायकि मठ में रहता था, तो मैं बढ़ईगीरी की कार्यशाला में अपने कर्तव्य नभिाता था। प्रभारी वरषि्ठ बढ़ई एक और बढ़ई थे —एक वृद्ध भकि्षु , फादर इसडिोर। उस बेचारे आदमी में धैर्य का एक कण भी नहीं था। वह एक खड़िकी बनाना शुरू करता, फरि घबरा जाता, खड़िकी को छोड़ देता और दरवाज़ा बनाने के लएि दौड़ पड़ता ; फरि वह फरि से घबरा जाता, दरवाज़ा

छोड़ देता और छत की छत बनाने लग जाता—और इस तरह वह सब कुछ आधा-अधूरा छोड़ देता , कभी कुछ भी पूरा नहीं करता। वह कुछ तख्तियाँ खो देता , दूसरों को उल्टा काट देता ... यही कारण है कि कोई व्यक्ति खुद को हड्डी -पसली कर लेता है और कुछ भी हासिल नहीं कर पाता।

फिर वे लोग हैं जिनकी ऊर्जा सीमित होती है ; वे एक या दो से अधिक कार्य नहीं संभाल सकते। फिर भी वे बहुत अधिक काम अपने ऊपर ले लेते हैं , कई तरह की चिंताओं में शामिल हो जाते हैं , और अंत में कुछ भी ठीक से नहीं कर पाते , और दूसरों को अपनी बातों और चिंताओं में खींच लेते हैं। हमें यथासंभव एक या दो कार्यों से अधिक हाथ में न लेने , उन्हें ठीक से अंत तक पूरा करने , और केवल तभी, एक स्पष्ट और ताज़े मन के साथ, कुछ और हाथ में लेने का प्रयास करना चाहिए। क्योंकि यदि आपका मन विचलित है , तो आप आध्यात्मिक जीवन कैसे जी सकते हैं ? आप मसीह को कैसे याद कर सकते हैं ?

अपना दिल भौतिक चीजों को न दें

— गेरोना , जब आप कहते हैं , 'अपने हाथ-पैरों को अपने काम के लिए समर्पित करो, लेकिन अपना दिल उस पर मत लगाओ', तो आपका क्या मतलब है ?

— मेरा मतलब यह है कि आप अपना दिल भौतिक चीजों को न दें। ऐसे लोग हैं जो खुद को पूरी तरह से भौतिक चीजों को समर्पित कर देते हैं। वे सारा दिन इस चिंता में बिताते हैं कि किसी न किसी काम को कैसे पूरा करें , जबकि वे ईश्वर के बारे में बिल्कुल भी नहीं सोचते। आइए हम खुद इस जाल में न फँसें। अपने हाथों से काम करो, अपने पैरों से काम करो, लेकिन अपने मन को ईश्वर से भटकने न दो; अपनी पूरी सत्ता , अपनी सारी आंतरिक क्षमता और अपने हृदय को सांसारिक चीजों के लिए समर्पित न करो। अन्यथा , व्यक्ति मूर्तिपूजक बन जाता है। जहाँ तक संभव हो, अपने हृदय को अपने काम को न दें। उसे अपने हाथ दें ; उसे अपना मन दें। अपना हृदय तुच्छ और निरर्थक चीजों को न दें। अन्यथा , फिर वह मसीह में कैसे आनंदित होगा? जब हृदय मसीह में होता है , तो कार्य पवित्र हो जाता है। और व्यक्ति स्वयं तब शक्ति की आंतरिक आध्यात्मिक ताजगी को बनाए रखता है और सच्चा आनंद अनुभव करता है। अपने हृदय का सही उपयोग करें ; इसे व्यर्थ में बर्बाद न करें।

यदि हृदय छोटी-छोटी बातों पर बरबाद हो जाता है , तो बाद में उस बात पर शोक करने की शक्ति नहीं रहेगी जिसके लिए वास्तव में शोक करना चाहिए। मैं अपना हृदय कैंसर से पीड़ित लोगों को, दर्द में पड़े लोगों को दे दूँगा ; मैं उन बच्चों के लिए चिंता करूँगा जो खतरे में हैं। मैं क्रॉस का चिह्न बनाता हूँ और ईश्वर से उन्हें ज्ञान देने के लिए प्रार्थना करता हूँ। और जब मेरे पास आगंतुक आते हैं , तो मेरा ध्यान दूसरे व्यक्ति के दर्द और उनके प्रति मेरे प्रेम पर केंद्रित होता है। मैं अपने दर्द पर ध्यान नहीं देता। इस तरह, सब कुछ [जो गौण महत्व का है] भूल जाता है ; यानी, मन किसी और दिशा में मुड़ जाता है।

— गेरोन्डा , क्या किसी भी तरह के काम में , अपना मन और हृदय उस पर न लगाना संभव है ?

— यदि काम सरल हो, तो यह सुनिश्चित करने में मदद मिलती है कि मन उसमें डूब न जाए। यदि काम जटिल हो, यानी बहुआयामी हो, तो एक निश्चित हद तक मानसिक संलग्नता उचित है। हालाँकि , काम ने दिल पर कब्ज़ा नहीं करना चाहिए।

— और काम दिल पर कैसे हावी हो जाता है ?

— किस माध्यम से ? एक दवा के माध्यम से। प्रलोभी हृदय को सुला देता है और स्वार्थ के माध्यम से उस पर कब्ज़ा कर लेता है। लेकिन यदि हृदय ईश्वर को समर्पित हो जाए, तो मन ईश्वर में स्थित रहता है , जबकि मस्तिष्क कार्य में व्यस्त रहता है।

— और 'बेफ़िक्र ' शब्द से हमारा ठीक-ठीक क्या मतलब है ?

— जब आप काम कर रहे हों , तो मसीह को न भूलें। काम आनंद से करें , लेकिन आपका मन और हृदय ईश्वर में रहे। तब आप थकेंगे नहीं , और आप अपने आध्यात्मिक कर्तव्यों को पूरा कर पाएंगे।

मन की शांति और प्रार्थना के साथ किया गया कार्य पवित्र हो जाता है

— एल्डर , क्या यह बेहतर नहीं होगा कि काम धीरे -धीरे किया जाए — ताकि व्यक्ति शांति की अवस्था में बना रहे ?

— यह बेहतर है। क्योंकि यदि कोई व्यक्ति शांति में परिश्रम करता है , तो वह उस शांति को बनाए रखता है और पूरे दिन को पवित्र करता है। दुर्भाग्य से , हमें अभी तक यह एहसास नहीं हुआ है कि जल्दबाजी में कोई भी काम करने से हम घबरा जाते हैं। और घबराहट की स्थिति में किया गया काम पवित्र नहीं होता है। किसी को बहुत सारा काम करने का लक्ष्य नहीं रखना चाहिए, ताकि इस प्रक्रिया में वह चिंता में डूब जाए। यह एक दैवीय अवस्था है।

शांति और प्रार्थना के साथ किए गए हस्तशिल्प स्वयं पवित्र होते हैं और उनका उपयोग करने वाले लोगों को भी पवित्र करते हैं। इसी कारण से , गृहस्थों के अनुरोध पर, संन्यासियों का उनके लिए आशीर्वाद स्वरूप कोई हस्तशिल्प देना उचित है। इसके विपरीत, जल्दबाजी और चिंता के साथ किए गए हस्तशिल्प इस दैवीय अवस्था को दूसरों में संचारित करते हैं। जल्दबाजी और चिंता में काम करना बहुत सांसारिक लोगों का एक विशिष्ट लक्षण है। हस्तशिल्प में लगे भिक्षुओं की बेचैन आत्माएँ दूसरों को आशीर्वाद नहीं , बल्कि बेचैनी देती हैं। एक व्यक्ति की मानसिक स्थिति उनके द्वारा बनाए गए हस्तशिल्प को कितनी गहराई से प्रभावित करती है ! यहाँ तक कि लिकड़ी के टुकड़ों के साथ काम करते समय भी। यह एक भयानक बात है ! काम का परिणाम उस मानसिक स्थिति पर निर्भर करता है जिसमें व्यक्ति उसे करते समय था। यदि कोई व्यक्ति घबराया हुआ , क्रोधित हो या अपशब्द का प्रयोग करे , तो उसकी मेहनत का परिणाम अपवित्र रहता है। जबकि, यदि काम करते समय वे चर्च का भजन गाते हैं या प्रार्थना करते हैं , तो उनका काम पवित्र हो जाता है। एक परिणाम दैवीय बनता है , जबकि दूसरा दैत्यीय।

सम्मान के साथ कार्य करके और प्रार्थना के साथ परिश्रम करके , आप हमेशा खुद को पवित्र करते हैं और आप जो कुछ भी करते हैं वह पवित्र हो जाता है। ईश्वर पर अपना मन केंद्रित करके , एक व्यक्ति अपने काम, अपनी कारीगरी को पवित्र करता है। मान लीजिए, उदाहरण के लिए, मैं एक डिब्बा चिपका रहा हूँ और यीशु की प्रार्थना का जाप कर रहा हूँ — मैं प्रार्थना करते हुए एक ही समय में ईश्वर की महिमा के लिए काम कर रहा हूँ। मेरा उद्देश्य अपने काम को जल्दबाजी में पूरा करना, बक्सों का एक ढेर लगाना, और फिर चिंता से खुद को पीड़ित करना नहीं है। यह एक दैवीय अवस्था है। हम मठ में इसके लिए नहीं आए हैं , बल्कि खुद को पवित्र करने और अपने काम को पवित्र करने के लिए आए हैं। कभी-कभी, क्योंकि हम यह भूल जाते हैं , आपको ऐसा महसूस होता है जैसे आप किसी धर्मनिरपेक्ष संस्थान के एक परिश्रमी कर्मचारी हों — क्योंकि , काम पूरा करने की अपनी जल्दबाज़ी में , आप मसीह को अपने साथ ले जाना भूल जाते हैं। इसके विपरीत, जब आप प्रार्थना के साथ अपने काम में लगते हैं , तो आप खुद को मसीह के सेवक के रूप में महसूस करते हैं। और इसलिए अपने काम में यीशु की प्रार्थना का प्रयोग करें , ताकि आप स्वयं और आपका काम दोनों पवित्र हो सकें।

क्या आप जानते हैं कि ईश्वर किसी व्यक्ति को कैसे आशीर्वाद देते हैं ? क्या आप जानते हैं कि वह हम पर कितनी और किस प्रकार की आशीर्वादें प्रदान करते हैं ?

— गेरोन्डा , अगर कोई व्यक्ति बौद्धिक कार्य , जैसे कि अनुवाद , में लगा हुआ है तो क्या होगा? कोई ऐसा प्रार्थना कैसे कर सकता है कि किया जा रहा कार्य पवित्र हो जाए?

— यदि आपका मन ईश्वर में लगा हो, तो आपका कार्य पवित्र हो जाता है , भले ही वह बौद्धिक क्यों न हो, क्योंकि आप एक दिव्य वातावरण में जी रहे हैं — भले ही आप काम करते समय प्रार्थना न कर पाएं। यदि कोई व्यक्ति आध्यात्मिक अवस्था में होता है , तो इससे उसे बहुत मदद मिलती है। वे तर्क के माध्यम से अर्थ खोजने का प्रयास नहीं करते , बल्कि , जैसे ही वे प्रबुद्ध होते हैं , वे इसे दिव्य प्रकाश द्वारा समझ जाते हैं।

— लेकिन अगर मैं ऐसी आध्यात्मिक अवस्था में नहीं हूँ , फिर भी मुझे इस तरह का काम करना है , तो मैं क्या करूँ ?

— तो इसे जारी रखें , लेकिन साथ ही प्रार्थना करें , ईश्वर से आप पर ज्ञान की रोशनी डालने के लिए कहें। जहाँ तक संभव हो, यह सुनिश्चित करने का प्रयास करें कि जिन किताबों का आप अनुवाद कर रहे हैं , उनके दैवीय अर्थ आपको व्यक्तिगत रूप से मदद करें। और श्रद्धा के साथ काम करें। हर एक या दो घंटे में , कुछ मिनटों के लिए ब्रेक लें और यीशु की प्रार्थना करें।

— गेरोन्डा , अनुवाद का काम आम तौर पर बहुत ध्यान भटकाने वाला होता है। व्यक्ति को लगातार शब्दकोशों को खंगालना पड़ता है , टीकाएँ पढ़नी पड़ती हैं ...

— लेकिन मैंने तुम्हें पहले भी कहा है : अनुवाद में सबसे ज़्यादा मदद व्यक्तिगत आध्यात्मिक अनुभव और शुद्ध विचारों से होती है , जो एक व्यक्ति को अनुग्रह का पात्र बनाते हैं। तब दिव्य अर्थों का रूपांतरण सटीक होता है और वह दिव्य प्रबोधन से उत्पन्न होता है , न कि तर्क , शब्दकोश या स्याहीदान से। मेरा मतलब यह है कि मनुष्य को उस चीज़ में खुद को स्थापित करना चाहिए जो प्राथमिक है — यानी, दैवीय — न कि उस चीज़ में जो द्वितीयक है — यानी, मानवीय।

दूसरों की अत्यधिक चिंता के कारण, एक व्यक्ति ईश्वर को भूल जाता है

— गेरोन्डा , क्या चिंता हमेशा व्यक्ति को ईश्वर से दूर ले जाती है ?

— जो मैं आपसे कहने जा रहा हूँ , उसे सुनो : जब कोई पिता खेल में मग्न बच्चे के पास जाता है और उसे प्यार से सहलाता है , तो खेल में डूबा बच्चा इस पर ध्यान भी नहीं देता। वह अपने पिता के स्नेह को तभी महसूस करेगा जब वह एक पल के लिए खेल से अपना मन हटाएगा। इसी तरह, जब हम किसी तरह की चिंता में व्यस्त रहते हैं , तो हम ईश्वर के प्रेम को महसूस नहीं कर सकते। हम महसूस नहीं कर पाते कि ईश्वर हमें क्या देते हैं। ध्यान दो: अपनी कीमती ऊर्जा अनावश्यक फालतू की चिंता और व्यर्थ के मामलों पर बर्बाद मत करो, जो एक दिन धूल में मिल जाएँगे। अनावश्यक और व्यर्थ बातों को लेकर चिंता और फिक्रमंद होकर, आप न केवल अपने शरीर को थकाते हैं , बल्कि अपने मन को भी व्यर्थ में भटकाते हैं ; और फिर, प्रार्थना के दौरान, आप ईश्वर को थकान और उबासी अर्पित करते हैं —ठीक वैसे ही जैसे काइन ने बलिदान अर्पित किया था।[147] तो, इसका यह परिणाम निकलता है कि आपकी भी आंतरिक स्थिति

[147] उत्पत्ति 4:3–7 देखें।

'काइन-सी' होगी, जो चिंता और आहों से भरी होगी, और जिसे आपके बगल में मौजूद तांगलाश्का और भड़काएगी।

आइए हम अपनी ताकत के मूल को व्यर्थ में बर्बाद न करें, अन्यथा ईश्वर के लिए केवल खोखले आवरण और छलिके ही बचेंगे। किसी भी चीज़ में व्यस्त रहने से हृदय की सारी आंतरिक शक्ति निचुड़ जाती है और मसीह के लिए कुछ भी नहीं बचता। यदि आप देखें कि आपका मन लगातार भटक रहा है और चिंता, फिक्र और इसी तरह की बातों में खो रहा है, तो आपको यह एहसास होना चाहिए कि आप उस रास्ते से भटक गए हैं जहाँ आपको होना चाहिए, और इस बात को लेकर चिंतित होना चाहिए कि आपने खुद को ईश्वर से दूर कर लिया है। यह महसूस करें कि आप ईश्वर की तुलना में अपने कामों के अधिक करीब हो गए हैं, सृष्टिकर्ता की तुलना में सृष्टि के अधिक करीब।

दुर्भाग्य से, यह असामान्य नहीं है कि अच्छी तरह से किए गए काम से मिलने वाली सांसारिक खुशी एक भिक्षु को भी धोखा दे देती है। बेशक, मनुष्य को अच्छा करने के लिए बनाया गया है, क्योंकि उसका स्रष्टा अच्छा है। लेकिन एक भिक्षु स्वयं को एक मनुष्य से एक देवदूत में बदलने का प्रयास करता है। इसलिए, आध्यात्मिक रूप से परिश्रम करने के लिए, उसे भौतिक उद्देश्यों के लिए अपने काम को केवल अत्यंत आवश्यक तक सीमित करना चाहिए। तब उसकी खुशी उन आध्यात्मिक फलों से उपजेगी जिन्हें उसने संवारा है; यह आध्यात्मिक हो जाएगी, और भिक्षु न केवल स्वयं को पोषित करेगा बल्कि दूसरों को भी प्रचुर मात्रा में पोषित करेगा।

इतनी सारी चिंताओं और फिक्रों के बीच लोग ईश्वर को भूल जाते हैं। फादर टिकॉन[148] अपनी विशिष्ट शैली में कहा करते थे: "फिरौन ने इस्राएलियों को भरपूर काम और भरपूर भोजन दिया ताकि वे ईश्वर को भूल जाएँ।"[149] हमारे युग में शैतान ने लोगों को भौतिक चीज़ों और सांसारिक चिंताओं में पूरी तरह से बाँध लिया है। [वह लोगों को] कड़ी मेहनत करने और बहुत कुछ खाने की शिक्षा देता है — ताकि वे ईश्वर को भूल जाएँ और इस प्रकार आत्मा के पवित्रिकरण के लिए उन्हें प्रदान की गई स्वतंत्रता का उपयोग करने में असमर्थ, या यूँ कहें कि अनिच्छुक, हो जाएँ। लेकिन सौभाग्य से — शैतान की इच्छा के विपरीत — इस [भाग-दौड़] से कुछ अच्छा भी निकलता है — लोगों को पाप करने के लिए उतना समय नहीं मिलता जितना वे चाहते हैं।

बहुत अधिक काम और सांसारिक चिंताएँ एक भिक्षु को सांसारिक बना देती हैं

जो व्यक्ति आध्यात्मिक जीवन जीना चाहता है, और विशेष रूप से एक भिक्षु, उसके लिए कुछ प्रकार की गतिविधियों, कार्यों और जिम्मेदारियों से दूरी बनाए रखना अच्छा है — यानी, वे जो उसे उसके आध्यात्मिक लक्ष्य से भटकाती हैं। किसी को भी अनंत कार्यों की बहुलता को नहीं अपनाना चाहिए, क्योंकि ऐसे कार्य कभी समाप्त नहीं होते। और यदि कोई भिक्षु अपने ऊपर आंतरिक कार्य करना नहीं सीखता, तो वह लगातार बाहरी कार्यों की ओर मुड़ेगा। जो लोग अनंत कार्यों को पूरा करने का प्रयास करते हैं, वे अपना जीवन आध्यात्मिक कमियों के साथ समाप्त करते हैं। अपने जीवन के अंत में वे पश्चाताप करते हैं, लेकिन तब तक इसका उन्हें कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि उनका 'पासपोर्ट' पहले ही उन्हें दे दिया गया होता है। किसी भी स्थिति में, अपने कर्तव्यों से कम से कम थोड़ी देर की राहत आवश्यक है।

जब कई परिश्रम कम हो जाते हैं, तो स्वाभाविक रूप से शारीरिक ऊर्जा का नवीनीकरण और आंतरिक कार्य की प्यास जागृत होगी — ऐसा कार्य जो थकाता नहीं है, बल्कि एक व्यक्ति की शक्ति को पुनर्स्थापित करता है। तब आत्मा भी प्रचुर मात्रा में आध्यात्मिक ऑक्सीजन लेगी। आध्यात्मिक प्रयास से होने वाली थकान किसी की शक्ति को कम नहीं करती, बल्कि उसे पुनर्स्थापित करती है, क्योंकि यह प्रयास व्यक्ति को ऊँचा उठाता है और उसे स्नेहपूर्वक प्रेम करने वाले पिता के करीब लाता है, जिससे उनकी आत्मा भी आनंदित होती है।

शारीरिक थकान, जब वह आध्यात्मिक अर्थ से रहित हो या, यूँ कहें कि जब वह बिना किसी आध्यात्मिक आवश्यकता के होती है जो उसे उचित ठहरा सके, तो वह व्यक्ति को कड़वा बना

---

[148] देखें एल्डर पैसियोस। द होली माउंटेन फादर्स एंड स्टोरीज़ फ्रॉम द होली माउंटेन। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लाव्रा, 2001। पृ. 13–39।

[149] तुलना करें निर्गमन 1:13–14।

देती है। यहाँ तक कि सबसे शांत छोटा घोड़ा भी, अगर उससे ज़्यादा काम लिया जाए, तो लात मारने लगता है —यानी, उसमें एक बुरी आदत पड़ जाती है , भले ही उसमें पहले वह आदत न थी और उम्र के साथ वह और समझदार हो गया हो।

आध्यात्मिकता को प्राथमिकता देने के लिए, कुछ कार्यों को अलग रखना उचित हो सकता है। अत्यधिक काम और अत्यधिक चिंता संन्यासी को सांसारिक बना देती हैं , और उसकी आध्यात्मिक अनुभूति की क्षमता सांसारिक हो जाती है। वह पहले से ही इस दुनिया के आदमी के रूप में रहता है —जिसमें सभी मानसिक बेचैनी और सांसारिक चिंताएँ शामिल हैं। संक्षेप में कहें तो, निरंतर चिंता , बेचैनी और दुर्भाग्य के कारण, वह इसी जीवन में आंशिक रूप से नरक की यातनाओं का अनुभव कर रहा है। लेकिन जब एक भिक्षु भौतिक चीजों के बारे में नहीं , बल्कि अपने और सभी लोगों के मोक्ष के बारे में चिंतित होता है , तो वह ईश्वर को अपना शासक और लोगों को अपना सेवक बनाता है।

क्या आपको आदरणीय जेरोंटियस और उनके नवसिखुआ की कहानी याद है ?[150] आदरणीय जेरोंटियस ने परमेश्वर की अति पवित्र माता से थोड़ा पानी माँगा — इतना कि वह और उनका नवसिखुआ पी सकें। ईश्वर की माता ने , एक दयालु माँ की तरह, उनके आश्रम के पास चट्टान में एक दरार कर दी और वहाँ से पानी निकाला—एक पवित्र झरना—ताकि उनके पास पीने के लिए कुछ हो। समय बीतता गया, और आदरणीय के शिष्य ने बरामदे बनाना शुरू कर दिए, फिर मिट्टी लाई, बाग़ और सब्ज़ियों के बगीचे लगाए, और इतनी सारी सांसारिक जिम्मेदारियाँ लेने के बाद, उसने अपने आध्यात्मिक कर्तव्यों की उपेक्षा कर दी। और चूँकि पानी पर्याप्त नहीं था, उसने एक छेनी उठाई और चट्टान में छेद को चौड़ा करना शुरू कर दिया—ताकि झरने से अधिक पानी निकल सके। तब ईश्वर की माता ने पानी को वापस खींच लिया, जिससे वह सेल से बहुत नीचे किसी अन्य स्थान पर बहने लगा, और उससे कहा: 'यदि तुम सब्जी के बागों की देखभाल करना चाहते हो और भटकना चाहते हो, तो दूर से पानी लाओ।'

जहाँ बहुत परेशानी होती है , वहाँ बहुत आध्यात्मिक हस्तक्षेप होता है

— गेरोना , क्या आपको वह कोठरी छोड़ने का अफ़सोस नहीं हुआ , जिसकी मरम्मत में आपकी इतनी मेहनत लगी थी, और किसी दूसरे स्थान पर जाने का?

— जब से मैं वहाँ से आया हूँ , इसका मतलब है कि ऐसा करने का कोई गंभीर कारण था।

— और जहाँ भी आप गए, क्या आपने केवल बुनियादी ज़रूरतों तक ही खुद को सीमित रखा?

— हाँ , मैंने यहाँ जीवन के लिए केवल बुनियादी ज़रूरतों तक ही खुद को सीमित रखा, ताकि मैं स्वर्गीय क्षेत्र , यानी स्वर्ग के लिए आवश्यक कार्य कर सकूँ। सांसारिक मामलों में खो जाने से , एक व्यक्ति उस मार्ग से भटक जाता है जो उसे स्वर्ग तक ले जाता है। पहले आप एक काम करते हैं , फिर आप कुछ और करना चाहते हैं ... यदि आप इस चक्र में फँस जाते हैं , तो बस — आप खो जाते हैं। जब कोई व्यक्ति सांसारिक मामलों में खो जाता है , तो वह स्वर्गीय चीज़ों को खो देता है। और जैसे स्वर्गीय चीज़ों का कोई अंत नहीं है , वैसे ही सांसारिक चीज़ों का भी कोई अंत नहीं है। या तो आप यहाँ खो जाएँगे , या वहाँ 'खो' जाएँगे। क्या आप जानते हैं कि स्वर्ग के राज्य में वहाँ 'खो' जाने का क्या मतलब है ! ओह, मैं यीशु की प्रार्थना का अभ्यास करता था और उसमें डूब जाता था! क्या आपने कभी प्रार्थना में खुद को डुबोया नहीं है ?

बहुत सारे कामों , थकान और परेशानियों , और खासकर जल्दबाजी में उलझे रहने से हमें कोई मदद नहीं मिलती। यह सब संयम को पृष्ठभूमि में धकेल देता है और आत्मा को कठोर बना देता है। एक व्यक्ति न केवल प्रार्थना करने में , बल्कि सोचने में भी असमर्थ हो जाता है।

वे समझदारी से काम नहीं कर पाते और अंततः गलत काम कर बैठते हैं।

इसलिए, सावधान रहें : अपने समय को व्यर्थ में बर्बाद न करें , जिससे आपके आध्यात्मिक जीवन को कोई लाभ न हो। अन्यथा , आप एक ऐसे मोड़ पर पहुँच जाएँगे जहाँ आप गहराई से कड़वे हो जाएँगे और अब अपने आध्यात्मिक कर्तव्यों को पूरा नहीं कर पाएँगे।

---

[150] देखें एल्डर पैसियोस। द फादर्स ऑफ माउंट अथोस एंड स्टोरीज़ फ्रॉम माउंट अथोस। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लाव्रा , 2001। पृ . 140–141.

आप काम या बातचीत में लगे रहना चाहेंगे — या, खुद को 'व्यस्त ' रखने के लिए, आप अपने लिए समस्याएँ पैदा कर लेंगे। जब हम यीशु की प्रार्थना और अपने आध्यात्मिक कर्तव्यों को त्याग देते हैं , तो शत्रु हमारी आध्यात्मिक ऊँचाइयों पर कब्ज़ा कर लेता है और शरीर तथा हमारे विचारों के माध्यम से हम पर युद्ध छेड़ता है। वह हमारी सभी शक्तियों —मानसिक और शारीरिक—को बेकार कर देता है ; वह ईश्वर के साथ हमारे मिलन को तोड़ देता है , जिसके परिणामस्वरूप हमारी आत्मा वासनाओं की दासता में पड़ जाती है।

फादर टिखॉन संतों से कहा करते थे कि सांसारिक चिंताओं से मुक्त होने के लिए श्रमिकों की तरह काम करने और सांसारिक लोगों की तरह खाने के बजाय, एक तपस्वी जीवन जीना चाहिए। क्योंकि एक संन्यासी का ध्येय प्रणाम , उपवास और प्रार्थना है —न केवल अपने लिए, बल्कि पूरी दुनिया के लिए—जीवितों और दिवंगतों दोनों के लिए। जहाँ तक काम की बात है , वह न्यूनतम होना चाहिए और केवल अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए किया जाना चाहिए, ताकि किसी पर बोझ न बने।

— गेरोना , क्या सांसारिक चिंताएँ हमेशा आध्यात्मिक जीवन में बाधा डालती हैं ?

— यदि आप आज्ञाकारिता के कारण आवश्यक कार्यों में लगे हुए हैं ,[151] तो इससे आपको कोई हानि नहीं होगी। यदि आपके प्रयास , जो आपको सौंपी गई आज्ञाकारिता को पूरा करने में या किसी बहन की मदद करने में हैं , [आज्ञाकारिता] की सीमाओं से आगे नहीं बढ़ते हैं , तो आप प्रार्थना के लिए उत्सुक रहेंगे , और दूसरों की मदद करना आपके लिए फलदायी साबित होगा। लेकिन यदि कोई व्यक्ति अपनी मर्जी से [आज्ञा के दायरे] से बाहर चला जाता है , उन्हें सौंपे गए कार्य पर अतिरिक्त बोझ डालता है , और अनावश्यक चीजों में खुद को व्यस्त कर लेता है , तो उसका मन विचलित हो जाता है और वह ईश्वर से दूर हो जाता है। और यदि किसी व्यक्ति का मन ईश्वर में नहीं है , तो वह दिव्य आनंद का अनुभव कैसे कर सकता है ? दिल आसानी से ठंडा पड़ जाता है। अगर मैं पूरा दिन लोगों से मिलते हुए बिताऊँ , तो भले ही यह एक आध्यात्मिक कार्य हो, रात को जब मैं प्रार्थना के लिए उठता हूँ , तो मेरा दिल एक अलग ही हालत में होता है — दिन भर प्रार्थना करने के समय जैसा नहीं होता। मेरा दिमाग लोगों से सुनी हुई कई बातों से भर जाता है , और उन सब को एक तरफ रखना आसान नहीं होता। जहाँ तक संभव हो, दिन के दौरान यीशु की प्रार्थना का जाप करें और चुपचाप एक चर्च का भजन गुनगुनाएँ।

आध्यात्मिक पठन का एक छोटा सा समय भी बहुत सहायक होता है —विशेषकर प्रार्थना से पहले। यह आत्मा को गहराई से तृप्त करता है और दिन भर मन पर छाई रहने वाली चिंताओं को दूर कर देता है। और जब आत्मा मुक्त होकर आध्यात्मिक , दिव्य वातावरण में पहुँच जाती है , तो मन अपने काम में विचलित नहीं होता। सुसमाचार या पिता की पुस्तक (पिता की पुस्तक में छोटे लेकिन प्रभावशाली अध्याय हैं) से कोई अंश पढ़ने के बाद, मन आध्यात्मिक क्षेत्र में चला जाता है और फिर वहाँ से भटकता नहीं है। आखिरकार, मन एक बेचैन बच्चे की तरह है जो एक जगह पर शांत नहीं बैठ सकता—यह इधर-उधर दौड़ता रहता है। लेकिन उसे एक मीठा टॉफ़ी दे दो, और वह कहीं नहीं जाएगा।

चिंता और फिक्र से मुक्ति आंतरिक शांति और आध्यात्मिक प्रगति लाती है। फिक्रें संन्यासी को ईश्वर से दूर कर देती हैं। जहाँ बहुत सारी चिंताएँ होती हैं , वहाँ बहुत अधिक आध्यात्मिक हस्तक्षेप होता है जो आध्यात्मिक रेडियो स्टेशनों के संकेतों को दबा देता है। यदि कोई संन्यासी आध्यात्मिक जीवन नहीं जीता है तो उसके पास कोई बहाना नहीं है। उन दुर्भाग्यशाली गृहस्थों को देखें , जो इतनी चिंताओं से बोझिल हैं , फिर भी वे अपनी पूरी कोशिश करते हैं। एक भिक्षु को ऐसी कोई चिंता नहीं होती। उसे किराए, कर्ज , या यह सोचने की ज़रूरत नहीं होती कि उसके पास नौकरी है या नहीं। उसका आध्यात्मिक पिता पास ही होता है , और मठ में ही चर्च होता है : प्रार्थनाएँ , अभिषेक , सेवाएँ , पूजा -विधि... वह चिंताओं से मुक्त है और केवल एक देवदूत बनने में ही लगा रहता है — उसके सामने कोई और लक्ष्य नहीं है। जबकि एक गृहस्थ की कितनी सारी चिंताएँ होती हैं ! वह अपने बच्चों का पालन-पोषण करने , अन्य मामलों में लगा रहता है — और साथ ही अपने आत्मा के उद्धार के लिए संघर्ष भी कर रहा होता है। जैसा कि एल्डर ट्रिफॉन कहा करते थे :[152] "क्या एक भिक्षु जागरण करना चाहता है ? वह ऐसा कर सकता है। क्या वह उपवास करना चाहता है ? वह वह भी कर सकता है। उसके न तो पत्नी है और न ही बच्चे। लेकिन एक गृहस्थ ये सब कुछ नहीं कर सकता। आखिरकार, उसके बच्चे हैं। एक को जूतों की ज़रूरत है , दूसरे को कपड़ों की, तीसरे को कुछ और चाहिए।"

---

[151] समकालीन रूसी मठवासी शब्दावली में , 'आज्ञा ' शब्द , 'अपनी इच्छा का अधीन होना' (ग्रीक : ὑπακοή) के अलावा, एक मठवासी को सौंपी गई विशेष सेवा (ग्रीक : διακόνημα) को भी दर्शा सकता है। इस मामले में , इस शब्द का उपयोग पहले अर्थ में किया गया है। – अनुवादक की टिप्पणी

[152] एल्डर त्रिफोन के लिए, देखें : एल्डर पैसियस। द फादर्स ऑफ माउंट अथोस एंड स्टोरीज़ फ्रॉम माउंट अथोस। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लाव्रा , 2001। पृ . 120–125।

हमें स्वर्ग के राज्य की खोज करनी चाहिए

सबसे बढ़कर , हमें परमेश्वर के राज्य की खोज करनी चाहिए। यही हमारी चिंता होनी चाहिए, और बाकी सब कुछ हमारे लिए प्रदान कर दिया जाएगा।[153] यदि कोई व्यक्ति इस जीवन में खुद को खो देता है , तो वह अपने दिए गए समय को बर्बाद कर देता है , उसे व्यर्थ गँवा देता है। यदि वह खुद को नहीं खोता है और आने वाले जीवन के लिए तैयारी करता है , तो उसका सांसारिक जीवन सार्थक होता है। यदि कोई आने वाले जीवन के बारे में सोचता है , तो बहुत कुछ बदल जाता है। लेकिन जब कोई केवल इस बात के बारे में सोचता है कि यहाँ स्वयं को यथासंभव आरामदायक कैसे बनाया जाए, तो वह थक जाता है , स्वयं को थाम नहीं पाता, और अनंतकालीन यातना की ओर बढ़ता है।

धैर्यहीन बेचैनी और सांसारिक मामलों में जुनूनी व्यस्तता से संक्रमित न होने का ध्यान रखें : 'अब हमें एक काम करना है , फिर दूसरा ...', क्योंकि ऐसी अवस्था में अर्मगेडॉन आप पर हावी हो जाएगा।[154] केवल धैर्यहीन बेचैनी , निर्माण परियोजनाओं , नवीनीकरण और अन्य ऐसे मामलों के संबंध में , पहले से ही राक्षसों का काम है। अपना ध्यान मसीह की ओर लगाओ, अन्यथा मसीह के साथ जीवन का केवल बाहरी दिखावा ही तुम्हारे पास रहेगा , जबकि तुम्हारे भीतर सारी सांसारिक चालाकियाँ बनी रहेंगी — और मुझे डर है कि वही दुर्भाग्य तुम पर भी आ पड़ेगा जो पवित्र कुँवारियों पर आया था।

बुद्धिमान कुँवारियाँ [155] केवल अच्छे कर्म ही नहीं करतीं , बल्कि सच्ची परवाह भी दिखातीं — उन्होंने अपनी आँखें बंद नहीं कीं ; वे उदासीन नहीं थीं। मूर्ख कुँवारियाँ उदासीन थीं और जागने का प्रयास नहीं करतीं। इसीलिए प्रभु ने कहा: 'जागरत रहो।'[156] वे कुँवारियाँ थीं — लेकिन मूर्ख , बिना समझ के। यदि कोई कन्या जन्म से ही विवेकहीन हो, तो उसके लिए यह ईश्वर की ओर से एक वरदान है। वह बिना किसी परीक्षा का सामना किए अगले जीवन में प्रवेश कर जाती है। हालांकि , यदि उसके पास विवेक है लेकिन वह मूर्खतापूर्वक जीवन जीती है , तो न्याय के दिन उसके पास कोई बचाव नहीं होगा।

और सुसमाचार में बताई गई मार्था और मरियम की कहानी का क्या ? क्या आप देखती हैं कि कैसे मार्था की व्यस्तता ने उसे एक तरह से लापरवाही से व्यवहार करने पर मजबूर कर दिया? ऐसा लगता है कि मरियम भी शुरू में उसकी मदद कर रही थी, लेकिन जब उसने देखा कि मार्था की तैयारी पूरी करने का कोई इरादा नहीं है , तो वह उसे छोड़कर चली गई। मरियम ने सोचा, 'मैं सलाद और केक के लिए अपने मसीह को कैसे खो सकती हूँ ?' कोई यह सोच सकता है कि मसीह उनके पास सिर्फ़ मार्था के स्वादिष्ट व्यंजन खाने के लिए आए थे ! और यही बात मार्था को सचमुच चुभी , और उसने कहा: "प्रभु , क्या आपको परवाह नहीं कि मेरी एकलौती बहन ने मुझे अकेले सेवा करने के लिए छोड़ दिया है ?"[157]

इसलिए हमें सावधान रहना चाहिए कि हमारे साथ भी वैसा ही न हो जैसा मार्था के साथ हुआ। आइए हम प्रार्थना करें कि हम अच्छी मरियम बनें।

---

[153] मत्ती 6:33 और लूका 12:13 देखें।

[154] प्रकाशितवाक्य 16:16 देखें।

[155] मत्ती 25:1–13 देखें।

[156] मत्ती 25:13.

[157] लूका 10:40.

भाग 3.
ईश्वर की आत्मा और इस संसार की आत्मा पर

"एक सच्चे व्यक्ति की आंतरिक पवित्रता उनके बाहरी स्वरूप को सुशोभित करती है "

अध्याय 1.
दुनियावी शिक्षा और ज्ञान पर

एक बुद्धिमान व्यक्ति वह है जिसने स्वयं को शुद्ध किया है

ईश्वरीय मामलों में नहीं बल्कि चालाकी में अपना मन तराशकर, एक व्यक्ति स्वयं को शैतान के हवाले कर देता है। लेकिन उस स्थिति में , उनके लिए अपना होश-हवास ही खो देना बेहतर होगा, ताकि न्याय के दिन उनके लिए परिस्थितियाँ अनुकूल हों।

— गेरोन्डा , सादगी चालाकी से अलग है ?

— हाँ , जैसे एक लोमड़ी भेड़िये से अलग होती है। एक भेड़िया , जब कुछ चुराना चाहता है , तो वह बहादुरी से जाकर जो चाहता है उसे ले लेता है। दूसरी ओर, एक लोमड़ी अपनी चालाकी से जो चाहती है उसे प्राप्त करने की कोशिश करेगी।

— और क्या कोई व्यक्ति , जेरोंडा , चालाकी को बुद्धिमत्ता समझने की गलती कर सकता है ?

— हाँ , वे ऐसा कर सकते हैं , लेकिन — अपने भीतर देखने पर — उन्हें एहसास होगा कि चालाकी क्या है और मानसिक तीक्ष्णता क्या है। आखिरकार, उनके पास विवेक का मार्गदर्शन है। पवित्र आत्मा के वरदान क्या हैं ? प्रेम , आनंद , शांति और इसी तरह के। [158] क्या इनमें से कोई गुण उसमें है ? इन गुणों के बिना, एक व्यक्ति के भीतर कुछ शैतानी पनपता है —एक टंगलाश्का की विशिष्ट विशेषताएँ।

एक बुद्धिमान व्यक्ति वह है जिसने स्वयं को शुद्ध किया है , जिसने स्वयं को वासनाओं से मुक्त किया है। वास्तव में बुद्धिमान वह है जिसने अपने मन को भी पवित्र किया है। यदि मन पवित्र नहीं है , तो उसकी तीक्ष्णता का कोई उपयोग नहीं है। उदाहरण के लिए पत्रकारों और राजनेताओं को लें —वे , आखिरकार, बुद्धिमान लोग हैं , फिर भी उनमें से कई, पवित्र मन के अभाव में , अपनी बुद्धिमत्तापूर्ण टिप्पणियों के साथ-साथ बकवास भी करते हैं। वे अपनी महान बुद्धि के कारण ही भयानक बकवास बोलते हैं ! यदि कोई व्यक्ति अपनी बुद्धि का सही उपयोग नहीं करता है , तो शैतान उसका उपयोग करेगा। यदि कोई व्यक्ति अपनी बुद्धि की तीक्ष्णता का उपयोग भलाई के लिए नहीं करता है , तो शैतान इसका उपयोग बुराई के लिए करेगा।

— तो, अपने तीव्र दिमाग का अच्छा उपयोग न करके , क्या कोई व्यक्ति इस प्रकार शैतान को कार्य करने का अधिकार दे देता है ?

---

[158] गलातियों 5:22–23 देखें।

— यदि किसी व्यक्ति ने अपने तीव्र बुद्धि का उपयोग अच्छे कर्मों के लिए नहीं किया है, तो शक्ति स्वतः ही शैतान को मिल जाती है। आध्यात्मिक रूप से काम करने में विफल होकर, एक व्यक्ति अच्छाई को विकृत कर देता है। और फिर बुराई शैतान नहीं करता, बल्कि स्वयं वही व्यक्ति करता है। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति चतुर हो सकता है, लेकिन वह अपने दिमाग का उपयोग नहीं करता, और इसके बजाय आलसी बनना चुनता है। लेकिन चूँकि वह अपने दिमाग का उपयोग नहीं करता, तो चतुर होने का क्या फायदा?

— क्या वासनाओं के अधीन एक बुद्धिमान व्यक्ति में सही निर्णय लेने की क्षमता हो सकती है?

— सबसे पहले, उन्हें अपनी ही बुद्धि पर भरोसा न करने के लिए सावधान रहना चाहिए। अपनी ही बुद्धि पर भरोसा करके, एक आध्यात्मिक व्यक्ति भ्रम में पड़ जाता है, जबकि एक सांसारिक व्यक्ति पागल हो जाता है। किसी को अपने ही विचारों पर भरोसा नहीं करना चाहिए। किसी को प्रश्न पूछने और सलाह लेने चाहिए; किसी को अपने मन को पवित्र करना चाहिए। वास्तव में, एक व्यक्ति को अपनी हर चीज़ को पवित्र करना चाहिए। एक पवित्र, तीक्ष्ण मन सही निर्णय प्राप्त करने में सहायता करता है। एक बुद्धिमान व्यक्ति जिसने खुद को पवित्र नहीं किया है, उसमें आध्यात्मिक विवेक की कमी होगी। और एक व्यक्ति जो स्वाभाविक रूप से भोला-भाला है, वह किसी भ्रमित व्यक्ति को संत समझने की गलती कर सकता है, या किसी के स्त्री-सुलभ लाड़-प्यार को श्रद्धा समझ सकता है। जबकि एक शुद्ध, बुद्धिमान व्यक्ति अत्यधिक सूक्ष्मदर्शी बन जाता है।

— गेरोन्डा, एक तीक्ष्ण बुद्धि कैसे शुद्ध होती है?

— इसे शुद्ध करने के लिए, एक व्यक्ति को दुष्ट के 'संदेशों' को स्वीकार नहीं करना चाहिए और दुष्ट विचारों को मन में नहीं रखना चाहिए, बल्कि सभी चीजों में दया और सादगी से काम करना चाहिए। इस तरह, आध्यात्मिक स्पष्टता और दिव्य ज्ञान प्राप्त होता है। फिर एक व्यक्ति लोगों के दिलों में झाँकता है और मानवीय निष्कर्ष पर नहीं पहुँचता।

— जेरोंडा, विवेक का ज्ञान से कोई संबंध है?

— विवेक दिव्य प्रबोधन से उत्पन्न होता है। कोई पवित्र पिताओं की पुस्तकें पढ़ सकता है, कुछ मामलों पर सही ज्ञान रख सकता है, तपस्या कर सकता है और प्रार्थना कर सकता है; फिर भी विवेक दिव्य प्रबोधन से ही उत्पन्न होता है। यह एक अलग ही स्तर की घटना है।

— जेरोंडा, क्या पुराने ज़माने के लोग बेहतर थे?

— ऐसा नहीं है कि वे बेहतर थे; बस बात यह है कि पुराने समय के लोगों में सादगी और अच्छे इरादे थे। आज, लोग हर चीज़ को चालाकी से देखते हैं, क्योंकि वे हर चीज़ को तर्क से मापते हैं। यूरोपीय भावना ने बहुत नुकसान पहुँचाया है। ठीक यही भावना है जिसने लोगों को भ्रष्ट कर दिया है। अगर यह भावना न होती, तो आज लोगों की आध्यात्मिक स्थिति अद्भुत होती, क्योंकि, चाहे अच्छा हो या बुरा, अब हर कोई शिक्षित है और उनके साथ पारस्परिक समझ तक पहुंचना संभव होता। लेकिन आधुनिक लोगों को नास्तिकता और ये सभी शैतानी सिद्धांत सिखाए गए हैं, और इस तरह उन्हें अयोग्य बना दिया गया है, इसलिए उनके साथ पारस्परिक समझ तक पहुंचना असंभव हो गया है। पहले के दिनों में, आप किसी व्यक्ति के साथ पारस्परिक समझ नहीं बना सकते थे यदि उसमें न तो धर्मपरायणता थी और न ही शिक्षा। मुझे याद है कि कैसे, एक अवसर पर, एक भिक्षु ने, पवित्रीकृत उपहारों की लीटर्जी के दौरान 'और पवित्र एक, हमारे पिता ग्रेगरी, रोम के पोप'[159] शब्द सुनकर, यह निर्णय लिया कि रोम के पोप का स्मरण किया जा रहा है और वह भटक गया। "'मुझे उम्मीद नहीं थी,' उन्होंने कहा, 'मुझे सचमुच उम्मीद नहीं थी कि आप

पापवादी बन जाएंगे !' यह कहकर वे चर्च से चले गए। देखिए अज्ञानता किस ओर ले जाती है ! अज्ञानता एक भयानक चीज़ है। और सबसे बड़ा बुरा काम वे करते हैं जिनमें श्रद्धा मन में भ्रम के साथ मिलती है। विषय के सार को समझे बिना, वे समस्याएँ पैदा करते हैं।

दिव्य प्रबोधन के बिना ज्ञान एक आपदा है

यदि लोग अपने तर्क को 'धीमा' कर दें , तो न केवल उनका मन स्पष्ट होगा, बल्कि दैवी कृपा भी आसानी से उनके करीब आ सकती है। प्रबोधन के बिना ज्ञान एक आपदा है। एक व्यक्ति आध्यात्मिक आत्म -संस्कार और आध्यात्मिक प्रयास के माध्यम से ईश्वर द्वारा प्रबुद्ध होता है। उनके पास दिव्य प्रबुद्धता और अपने विचारों के बजाय ईश्वर में जीवन जीने का अनुभव होता है। इसलिए, वे दूर तक देख सकते हैं। एक निकट दृष्टि वाला व्यक्ति पास की चीज़ें तो अच्छी तरह देख सकता है , लेकिन दूर की वस्तुओं को नहीं देख सकता। और यहाँ तक कि किसी ऐसे व्यक्ति के लिए भी जो निकट दृष्टि वाला नहीं है —भले ही वह थोड़ी दूर की वस्तुओं को देख सकता हो—यह, आखिरकार, कोई बड़ी उपलब्धि नहीं है। एक व्यक्ति के पास केवल दो शारीरिक आँखें होती हैं , जबकि उसकी कई आध्यात्मिक आँखें होती हैं।

जो मसीह से मुँह मोड़ते हैं , वे स्वयं को दिव्य ज्ञान से वंचित कर लेते हैं , क्योंकि , मूर्खों की तरह, वे सूर्य के प्रकाश से मुँह मोड़कर ऐसी जगह चले जाते हैं जहाँ सूर्य की किरणें नहीं पहुँचतीं। परिणामस्वरूप , वे आध्यात्मिक रूप से ठंडे और बीमार हो जाते हैं। यदि कोई व्यक्ति स्वयं को शुद्ध नहीं करता है , यदि दिव्य प्रबोधन उन्हें प्राप्त नहीं होता है , तो उनका [मानवीय] ज्ञान , चाहे वह कितना भी सही क्यों न हो, तर्कवाद और कुछ नहीं है। यह निष्कर्ष है जिस पर मैं पहुँचा हूँ। और यदि दिव्य प्रबोधन समाप्त हो जाए, तो लोगों के कहने और लिखने में कोई भी लाभ नहीं रहेगा। भजन संहिता दिव्य प्रेरणा से लिखी गई थी, और बस देखिए कि इसके अर्थ कितने गहरे हैं ! सभी [समकालीन] धर्मशास्त्रियों और भाषाविदों को इकट्ठा कर लें , यदि आप चाहें , और आप देखेंगे : वे इतनी गहराई वाला एक भी भजन रच नहीं सकते थे। राजा दाऊद एक विद्वान व्यक्ति नहीं थे , फिर भी यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि परमेश्वर की आत्मा ने उनकी कैसे अगुवाई की।

और आज चर्च में उथल-पुथल मची हुई है क्योंकि दिव्य प्रकाश नहीं है , और हर कोई अपनी मनमर्जी से निर्णय लेता और काम करता है। फिर 'मानवीय तत्व ' बीच में आ जाता है , वासनाएँ जाग उठती हैं , और यहीं पर शैतान को अपनी चाल चलने का मौका मिल जाता है। इसीलिए जो लोग अपनी ही वासनाओं के वश में हैं , उन्हें सत्ता की चाह नहीं करनी चाहिए।

— तो, गेरोन्डा , क्या लोगों को गंभीरता से दिव्य प्रबोधन की तलाश करनी चाहिए?

— हाँ , क्योंकि अन्यथा वे जो समाधान प्रस्तावित करते हैं , वे केवल उनके अपने तर्क का ही उत्पाद होते हैं। और फिर भ्रम उत्पन्न होता है। सम्मेलन , बैठकें ... और यह अफ़सोस की बात है कि जो लोग ऐसी चीज़ों में लगे रहते हैं , वे सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से खुद को जान ही नहीं पाए हैं। आखिरकार, दुनिया के सारे ज्ञान से भी अधिक मूल्यवान है केवल स्वयं को जानना। एक व्यक्ति जो विनम्रता से खुद को जानता है , उसे दूसरे भी पहचानते हैं। अगर कुछ [बकवास करने वाले] खुद को जान लेते , तो अपनी दयनीय स्थिति देखकर वे अपनी ज़बान खोलने की हिम्मत भी नहीं करते।

एक बार एक आदमी शिकायत कर रहा था कि, जैसा उसने कहा, विदेशों में विभिन्न सम्मेलनों और अन्य कार्यक्रमों में ऑर्थोडॉक्स ईसाई धर्म का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक भी ऑर्थोडॉक्स ईसाई नहीं था। वह बार-बार बोलता रहा—इतना अतिशयोक्ति कर रहा था कि यह बस

अवशि्वसनीय था। "जब ईशि्वर ," मैंने उससे कहा, "ने नबी इलयिाह से पूछा : 'हे एलयिा, तू होरेब पर्वत पर यहाँ क्या कर रहा है ?'[159] — नबी ने उत्तर दयिा कि वह अकेला ही बचा है। तब ईशि्वर ने उससे कहा: 'सात हजार ऐसे हैं जन्हिोंने बाल के सामने घुटने नहीं टेके। ' सात हजार ने आस्था बनाए रखी थी, फरि भी नबी एलयिा ने कहा: 'मैं अकेला ही बचा हूँ !' और अब आप एक ऐसे समय में नरिाशाजनक तस्वीर पेश कर रहे हैं जब इतने सारे वशि्वासी हैं ! क्या हमारा सर्वशक्तमिान वास्तव में चर्च के गुंबद पर चत्रिति सर्वशक्तमिान जैसा है , जो भूकंप से दरार पड़ सकती है , और फरि हम सोचते हैं कि इसे गरिाने से बचाने के लिए क्या करें , और इसे सहारा देने के लिए मरम्मत करने वालों को बुलाते हैं ?" — "वहाँ , अमेरकिा में ," उसने जवाब दयिा, "आप एक गेंद घुमा सकते हैं और एक भी इंसान दखिाई नहीं देगा। " — "लेकनि ऐसा कैसे हो सकता है ," मैंने आपत्ति जताई, "जब मैं अमेरकिा से इतने सारे वशि्वासयिों को जानता हूँ !" — "हाँ ," उसने कहा, "यह बलि्कुल सच है। लेकनि कैथोलकि तो बहुत चालाक शैतान हैं ! वे हमेशा हम पर हावी होने की कोशशि करते रहते हैं !" — "लेकनि कैथोलकि ," मैंने जवाब दयिा, "खुद ही पोपशाही से घृणा करने लगे हैं और अब ऑर्थोडॉक्सी की ओर लौट रहे हैं। जब पैट्रआर्क दमित्रि[160] ने अमेरकिा का दौरा कयिा, तो क्या यह खुद कैथोलकि ही नहीं थे जन्हिोंने चलि्लाकर कहा था: 'पैट्रआर्क एक सच्चे ईसाई हैं , लेकनि पोप एक मुनाफाखोर है '? क्या कैथोलकिों ने यह नाराज़गी से नहीं कहा था? और फरि भी आप मुझसे इस बात पर ज़ोर देते रहते हैं कि कैथोलकि चालाकी से ऑर्थोडॉक्सी में घुसपैठ करके उसे भ्रष्ट करने की कोशशि कर रहे हैं , और इसी तरह की हर तरह की बातें। तो आपकी नज़र में ईशि्वर कहाँ हैं ? क्या शैतान सचमुच वही कर सकता है जो वह चाहे ?"

दुर्भाग्य से , पश्चमिी तर्कवाद ने पूर्वी ऑर्थोडॉक्स धर्मगुरुओं को भी प्रभावति कयिा है। और इसलिए वे मसीह की पूर्वी ऑर्थोडॉक्स चर्च में केवल शरीर से हैं , जबकि उनका पूरा अस्तत्वि पश्चमि में ही बना हुआ है , जो उनके अनुसार , दुनयिा पर सर्वोच्च शासन करता है। लेकनि अगर वे पश्चमि को आध्यात्मकि रूप से , पूर्व के प्रकाश , मसीह के प्रकाश से देखें , तो वे पश्चमि के आध्यात्मकि पतन को देखेंगे , जो धीरे -धीरे ज्ञान के सूर्य —मसीह— के प्रकाश को खो रहा है और गहरे अंधकार में डूब रहा है। इसके बजाय, वे सम्मेलनों में इकट्ठा होते हैं और उन वषियों पर अंतहीन चर्चा करते हैं जनि पर चर्चा करना भी उचति नहीं है —ऐसे वषिय जनि पर पवत्रि पतिाओं ने भी इतने वर्षों में चर्चा नहीं की है।[161] ये सभी कार्य दुष्ट से उत्पन्न होते हैं। इनका उद्देश्य वशि्वासयिों के मन को भ्रमति करना और उन्हें बहकाना है , कुछ को वधिर्म और दूसरों को संप्रदायकि वभिाजन की ओर धकेलना है। इस तरह, शैतान को नए ठकिाने मलिते हैं। हाय रे , हाय रे , हाय रे , ये लोग वशि्वासयिों को सताते हैं और उनके सरि बकवास से भर देते हैं।

और यह सब कहाँ से शुरू होता है ? यह तब शुरू होता है जब कोई व्यक्ति , बनिा आध्यात्मकि कार्य में संलग्न हुए , यह कल्पना करता है कि वह एक आध्यात्मकि व्यक्ति है , और फरि बकवास बोलने लगता है। एक बच्चा , जसिमें मन की स्वाभावकि पवत्रिता और थोड़ा ज्ञान होता है , आपको समझदारी भरी बातें कहेगा। इसके वपिरीत, एक अत्यधकि शक्षिति व्यक्ति जसिका मन उसने स्वीकार कए हुए दैवीय प्रभाव से धूमलि हो गया है , सबसे घनिौनी धर्मनदिा करेगा।

जो कोई भी ईशि्वर से अलग रहते हुए नरिंतर ज्ञान से अपने मन को तराशता है , वह अंततः अपने मन को एक दोधारी तलवार बना लेता है। और फरि, एक धार से वह स्वयं को घायल कर लेता है , जबकि दूसरी से —अपने तर्कसंगत , नर्विवाद मानवीय नर्णियों के माध्यम से —वह दूसरों को आहत करता है। मानवीय ज्ञान तब लाभदायक होता है जब उसे पवत्रि कयिा जाता है और वह दव्यि बन जाता है। अन्यथा , यह केवल मानवीय चालाकी, तर्कवाद , सांसारकि तर्क है। बनिा दव्यि कृपा वाला मन अपने आप में एक बनिा चुंबकीकृत लोहे की छड़ की तरह है जो धातु की वस्तुओं को इस उम्मीद में मारती है कि वे उससे चपिक जाएँगी। लेकनि वे चपिकती नहीं हैं ; वे केवल इसके प्रहारों से वकिृत हो जाती हैं।

आजकल के लोग ऐसे ही हैं। वे हर चीज़ को शुष्क तर्कशीलता के दृष्टकिोण से देखते हैं। यह तर्कशीलता एक वास्तवकि आपदा है , क्योंकि कहा जाता है कि 'मन घमंड करता है '।[162] यदि किसी व्यक्ति में दव्यि प्रबोधन की कमी हो, तो ज्ञान नरिर्थक है ; यह वनिाश लाता है।

---

[159] देखें 3 राजा 19:13–18।

[160] दमित्रियिोस – 1972 से 1991 तक सार्वभौमकि पैट्रआर्क – अनुवादक का नोट।

[161] एल्डर पैसयिोस उन धर्मशास्त्रीय सम्मेलनों का उल्लेख कर रहे हैं जनिमें उन मुद्दों पर चर्चा की जाती है जनि पर चर्च का एक नशि्चति पैट्रस्टिकि (पतिा-परंपरागत) दृष्टकिोण है , साथ ही उन मुद्दों पर भी जनि पर बलि्कुल भी चर्चा की आवश्यकता नहीं है।

[162] 1 कुरन्थियिों 8:1।

वज्ञिान को आध्यात्मकि जीवन पर लागू कयिा जाना चाहिए

सभी बुराइयाँ बुद्धि से शुरू होती हैं जब वह केवल वज्ञिान के इर्द-गर्दि घूमती है और ईश्वर से पूरी तरह से अलग हो जाती है। इसीलिए ऐसे लोग आंतरकि शांति और संतुलन नहीं पा सकते। जबकि, यदि लोगों का मन ईश्वर के इर्द-गर्दि घूमता है, तो वे वज्ञिान का उपयोग आंतरकि आत्म-सुधार और दुनिया के भले के लिए करते हैं, क्योंकि उस स्थिति में उनकी बुद्धि पवित्र हो जाती है।

— तो, गेरोन्डा, क्या कोई यह कह सकता है कि विज्ञिान लोगों के लिए किसी काम का नहीं है?

— वज्ञिान बहुत लाभदायक है, लेकिन यह बहुत भ्रम भी लाता है। मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ जो, यद्यपि पर्याप्त शिक्षित नहीं थे, उनमें विद्वानों की तुलना में अधिक मानसिक स्पष्टता थी। जो लोग, ईश्वर की कृपा से, वज्ञिान द्वारा उनके मन में डाले गए भ्रम से अपने मन को शुद्ध करते हैं, उनके पास अधिक साधन उपलब्ध होंगे। और यदि ये उपकरण— ज्ञान —पवित्र नहीं हैं, तो उनका उपयोग केवल सांसारिक, न कि आध्यात्मिक, कार्यों के लिए किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति भलाई के लिए सच्ची चिंता विकसित करता है, तो ज्ञान शीघ्र ही पवित्र हो जाता है। जो लोग अपनी आंतरिक शिक्षा —आत्मा की शिक्षा —को प्राथमिकता देते हैं, और जो अपनी बाहरी शिक्षा का उपयोग अपने आंतरिक विकास को आगे बढ़ाने के लिए भी करते हैं, वे आध्यात्मिक रूप से शीघ्र ही रूपांतरित हो जाते हैं। और यदि वे केवल सिद्धांतवादी ही नहीं बल्कि (आध्यात्मिक मामलों में) आचरण करने वाले भी हैं, तो दुनिया के लिए उनकी मदद बहुत बड़ी होती है, क्योंकि वे लोगों को नारकीय यातना की घुटन से निकालकर जन्नत की खुशी में ले जाते हैं। ईश्वर के ऐसे लोग अक्सर अन्य विद्वानों से कम योग्य हो सकते हैं, लेकिन दुनिया के लिए उनकी मदद कहीं अधिक होती है। ऐसा व्यक्ति कई आध्यात्मिक वरदानों से धन्य होता है, न कि कागज़ के बेकार टुकड़ों (यानी, डिग्रियों) के ढेर से। दुनिया पाप से भरी है, और बहुत प्रार्थना और व्यक्तिगत आध्यात्मिक अनुभव की आवश्यकता है। बहुत सी लिखावट कागज़ी धन की तरह है, जिसका मूल्य इस बात पर निर्भर करता है कि उसे क्या समर्थन देता है। परिणामस्वरूप, सभी को अपनी ही आत्मा की खदान में परिश्रम करना चाहिए।

मुझे याद है कि एस्फिग्मेन मठ में एक वृद्ध भिक्षु थे जो इतने सरल स्वभाव के थे कि वे एसेन्शन को भी एक संत मानते थे। वे अपनी माला से एसेन्शन से प्रार्थना करते और कहते: 'हे ईश्वर के पवित्र, हमारे लिए ईश्वर से प्रार्थना करो!' एक अवसर पर, मठ के भिक्षापात्र गृह में एक भिक्षु बीमार पड़ गया, और उस भोले-भाले भिक्षु के पास उसे खिलाने के लिए कुछ भी नहीं था। तो वह जल्दी से सीढ़ियाँ उतरकर भूतल पर गया, समुद्र की ओर खुलने वाली एक खिड़की खोली, अपनी बाहें बाहर निकालकर पुकारा: 'हे मेरे संत अनालिप्सिआ,[163], मेरे भाई के लिए एक मछली दे दो!' और देखो! तुरंत, एक विशाल मछली सीधे समुद्र से कूदकर उसके हाथों में आ गिरी! इसे देखने वाला हर कोई आश्चर्य से स्तब्ध रह गया। लेकिन वह साधारण आदमी बस उन पर मुस्कुराया, मानो कह रहा हो, 'इसमें अजीब क्या है?' फिर भी हम जानते हैं कि एक संत का स्मरण कब किया जाता है, दूसरे ने कब कष्ट सहे, आरोहण कब, कहाँ और कैसे हुआ, और अपने इस सारे ज्ञान के साथ भी हम एक छोटी सी मछली के लिए भी प्रार्थना नहीं कर सकते! ऐसी ही हैं आध्यात्मिक जीवन की 'अजीब बातें', और ये 'अजीब बातें' उस बुद्धिजीवी वर्ग की तर्कशक्ति की पहुँच से परे हैं जो ईश्वर को नहीं बल्कि अपने 'स्व' को आश्रय

[163] ग्रीक में, 'उत्तोलन' (Ἀνάληψη) शब्द स्त्रीलिंग है। – अनुवादक की टिप्पणी।

देता है। ये उनकी समझ से परे हैं क्योंकि ऐसा बुद्धजिीवी वर्ग बांझ सांसारकि ज्ञान का धनी होता है , क्योंकि वह सांसारकि आध्यात्मकि रोग से ग्रस्त है और उसमें पवत्रि आत्मा का अभाव है।

पवत्रि आत्मा प्रौद्योगकिी के माध्यम से अवतरति नहीं होता

बुद्धि से बोला गया एक शब्द आत्मा को परविर्तति नहीं करता, क्योंकि वह देह का है। आत्मा परमेश्वर के वचन से परविर्तति होती है , जो पवत्रि आत्मा से उत्पन्न हुआ है , जसिमें दविय ऊर्जा होती है। पवत्रि आत्मा प्रौद्योगकिी के माध्यम से नहीं उतरता; इसलिए, धर्मशास्त्र का एक बांझ वैज्ञानकि आत्मा से कोई लेना -देना नहीं है। पवत्रि आत्मा अपनी इच्छा से अवतरति होते हैं — बशर्ते कि उन्हें कसिी व्यक्ति में आवश्यक आध्यात्मकि पूर्वापेक्षाएँ मलिें। और आध्यात्मकि पूर्वापेक्षा यह है कि एक व्यक्ति अपने आध्यात्मकि परपिथों को जंग से साफ़ करे और एक अच्छा चालक बने — ताकि दविय प्रबोधन की आध्यात्मकि धारा को ग्रहण कर सके। इस प्रकार , एक व्यक्ति एक आध्यात्मकि वदि्वान , एक धर्मशास्त्री बनता है। 'धर्मशास्त्री ' से मेरा तात्पर्य उन लोगों से है जनिकी धर्मशास्त्र की नींव धर्मशास्त्रीय ज्ञान की ठोस नींव पर टकिी हो और जनिकी धर्मशास्त्रीय डग्रिी का वास्तवकि मूल्य हो, न कि उन लोगों से जनिके पास एक बेकार का कागज़ का टुकड़ा हो—एक ऐसी धर्मशास्त्रीय डग्रिी जो उस कब्जे के युग के सस्ते कागज़ी नोट जैसी हो जसिका कसिी काम का नहीं था।

लोग अक्सर एक या दो वदिेशी भाषाएँ सीखने में अपनी मानसकि ऊर्जा खर्च करते हुए सालों बति देते हैं। हमारे युग में , लगभग सभी लोग वदिेशी भाषाएँ जानते हैं , लेकनि चूँकि इन भाषाओं का पवत्रि पेंटेकोस्ट की भाषाओं से कोई लेना -देना नहीं है , हम सभी बबीलोनयिन भ्रमों में सबसे बड़े भ्रम का अनुभव कर रहे हैं। सबसे बड़ी बुराई इस तथ्य में नहिति है कि, शुष्क , तर्कसंगत धर्मशास्त्र में लगे रहने से , हम अपने ही तर्क को पवत्रि आत्मा समझने की गलती कर बैठते हैं। इसे 'ब्रेनोलॉजी ' कहा जाता है , जसिसे बाबेल की मीनार का उदय होता है। जबकि धर्मशास्त्र में कई भाषाएँ और अनुग्रह से परपिूर्ण वरदानों की भीड़ है , फरि भी ये सभी भाषाएँ एक-दूसरे के साथ सामंजस्य में हैं , क्योंकि उनका एक ही स्वामी है — पेंटेकोस्ट का पवत्रि आत्मा —और ये भाषाएँ अग्नमिय हैं।

— गेरोन्डा , पेंटेकोस्ट के लिए एक स्टचिैरा में कहा गया है : 'पवत्रि आत्मा सभी चीज़ें प्रदान करता है ...'

— हाँ , वह प्रदान करते हैं , लेकनि केवल उन पर जो इसे ग्रहण करने में सक्षम हैं। वह उस पर कैसे प्रदान कर सकता है जो ग्रहण करने में असमर्थ है ? एक वनिम्र व्यक्ति के शब्द , जो उनके व्यक्तगित अनुभव पर आधारति हैं और उनके हृदय की गहराई से पीड़ा से उत्पन्न हुए हैं , एक शकि्षति व्यक्ति की जीभ से एक के बाद एक लुढ़कने वाले सुंदर शब्दों के ढेर से कहीं अधकि मूल्यवान हैं , जो सीख-समझ से तराशी गई है। ऐसी वाणी लोगों की आत्माओं को नहीं छूती , क्योंकि यह देह की है , न कि पेंटेकोस्ट पर पवत्रि आत्मा की अग्नमिय जीभ की।

हमें ज्ञान को पवत्रि करना चाहिए

ज्ञान एक अच्छी चीज़ है , और शकि्षा भी। लेकनि अगर ज्ञान और शकि्षा को पवत्रि नहीं कयिा गया, तो वे कसिी भी काम के नहीं रहेंगे और वनिाश की ओर ले जाएँगे। एक बार, कतिाबों से

लदे कई छात्र मेरे कलविा आए और बोले : 'गेरोना , हम पुराने नयिम के बारे में बात करने आए हैं। ' क्या ईश्वर ज्ञान की अनुमतिं नहीं देते ?" "कैसा ज्ञान ?" मैंने पूछा। "तर्क से प्राप्त ज्ञान ?" "हाँ ," उन्होंने उत्तर दयिा। "लेकनि यह ज्ञान ," मैंने कहा, "तुम्हें केवल चंद्रमा तक ही ले जाएगा। यह आपको ईश्वर तक नहीं उठाती है। " बुद्धि की शक्तयिाँ , जो अरबों की लागत से एक व्यक्तिं को चंद्रमा तक ले जाती हैं , एक अच्छी चीज़ हैं , लेकनि उनसे कहीं बेहतर वे आध्यात्मकि शक्तयिाँ हैं जो बहुत कम 'ईंधन '—एक सूखी रोटी के एक टुकड़े —से एक व्यक्तिं को ईश्वर तक—उसके ध्येय तक—उठाती हैं। एक बार मैंने अपने आश्रम में मलिने आए एक अमेरकिी से पूछा : 'एक महान राष्ट्र होकर आपने क्या हासलि कयिा है ?' — 'हम,' उसने जवाब दयिा, 'चंद्रमा पर गए हैं। ' — 'और क्या ,' मैंने पूछा , 'यह दूर है ?' — 'खैर , मान लीजए पचास लाख कलिोमीटर,' उसने जवाब दयिा। मैंने कहा, 'और वहाँ उड़ने में आपने कतिने करोड़ों खर्च कए?' — '1950 से आज तक, हमने इस पर इतना खर्च कयिा है कि डॉलर की पूरी नदयिाँ बही गई हैं ,' अमेरकिी ने जवाब दयिा। "लेकनि ईश्वर का क्या ," मैं पूछता हूँ , "क्या आप उनके पास तक नहीं पहुँचे ? क्या ईश्वर दूर हैं या नहीं ?" — "ईश्वर ," वह कहता है , "बहुत दूर हैं !" — "देखए ," मैं जवाब देता हूँ , "और हम उनके पास एक सूखी रोटी के टुकड़े पर पहुँच जाते हैं !.."

प्राकृतकि ज्ञान हमें आध्यात्मकि ज्ञान प्राप्त करने में मदद करता है। हालाँकि, प्राकृतकि ज्ञान से आगे बढ़े बनिा, कोई व्यक्तिं अपनी प्राकृतकि अवस्था से परे नहीं जाता और स्वर्ग में नहीं पहुँचता। अर्थात् , वह पृथ्वी के स्वर्ग को नहीं छोड़ता , उस बगीचे को जसिे फरात और टग्रिसि के जल से सचिा जाता है ; वह प्रकृतिं और जानवरों की सुंदरता में आनंदति होता है , लेकनि स्वर्गदूतों और संतों के साथ आनंदति होने के लए स्वर्गीय स्वर्ग में नहीं जाता। स्वर्गीय एडेन के बगीचे में प्रवेश करने के लए, उस बगीचे के स्वामी पर वश्विास होना चाहए; उससे प्रेम करने के लए, व्यक्तिं को अपनी पापी प्रकृतिं को स्वीकार करना चाहए और स्वयं को नम्र बनाना चाहए; उसे जानने के लए, व्यक्तिं को प्रार्थना में उससे संवाद करना चाहए और उसकी महमिा करनी चाहए — जब वह हमारी मदद करता है और जब वह हमें आज़माता है।

— गेरोना , क्या प्रणाम , उपवास, तपस्या और इसी तरह की चीज़ों की ओर आकर्षति व्यक्तिं के लए धर्मशास्त्रीय और धर्म -सम्बंधी पुस्तकों का अध्ययन करना आवश्यक है ?

— यदि किसी व्यक्तिं को बुनयिादी शक्षिा प्राप्त है , तो धर्मशास्त्र का ज्ञान एक ऐसा उपकरण है जो उसकी मदद करता है। हालाँकि, किसी को दूसरों की मदद करने के लए या कुछ बुद्धमिानी भरा कहने में सक्षम होने के लए ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास नहीं करना चाहए। नहीं , [धर्मशास्त्र के क्षेत्र में] ज्ञान स्वयं की सहायता के लए प्राप्त कयिा जाना चाहए। यदि कोई व्यक्तिं अपनी ईश्वर -प्रदत्त प्रतभिाओं को पवत्रि करने का प्रयास करता है , तो अनुग्रह आता है , जो बदले में उस व्यक्तिं को स्वयं पवत्रि करता है। और वहाँ , अनुग्रह में , धर्मशास्त्र और धर्मतत्त्व दोनों नहिति हैं , क्योंकि इस मामले में व्यक्तिं व्यक्तगित अनुभव के माध्यम से ईश्वर के संस्कारों का अनुभव करता है। और कोई व्यक्तिं एक साधारण व्यक्तिं हो सकता है , जो ईश्वर द्वारा दए गए से संतुष्ट है , और अधकि सीखने की कोई इच्छा नहीं रखता।

— और यदि, एक मठ में रहते हुए भी, हम सांसारकि ज्ञान की इच्छा रखते हैं , तो इसका क्या मतलब है ?

— इसका मतलब है कि हममें समझ की कमी है। 'तुम सत्य को जानोगे , और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। '[164] जब कोई व्यक्ति स्वयं को नम्र करता है और प्रबुद्ध होता है , तो उसकी बौद्धिक क्षमताएँ और उसकी तर्कशक्ति की शक्ति दोनों ही पवित्र हो जाती हैं। तर्क की ऊर्जा , पवित्र होने से पहले , सांसारिक होती है। यदि कोई अनपढ़ व्यक्ति स्वार्थी ढंग से धर्मसिद्धान्तों की व्याख्या करता है और प्रकाशन , पवित्र पितिओं और इसी तरह की कितिबों को पढ़ता है , तो वह भ्रमित हो जाता है और अंततः अविश्वास में पड़ जाता है। वह स्वार्थ के साथ इस ओर बढ़ता है , और इसलिए ईश्वर की कृपा उससे दूर हो जाती है। देखिए : विनम्रता हर चीज़ में मदद करती है ; यही विनम्रता है जो ताकत देती है। मेरी सबसे बुद्धिमानी भरी योजना या मुझे मिला सबसे बुद्धिमानी भरा समाधान भी सबसे बड़ी मूर्खता बन जाता है , यदि उनमें स्वार्थ मौजूद है। जबकि विनम्रता ही सच्ची बुद्धिमानी है। इसलिए, किसी के प्रयासों के साथ ईश्वर के प्रति प्रेम और महान विनम्रता का होना चाहिए। अन्यथा , लाभकारी होने के बजाय, वे विपरीत परिणाम लाएँगे। एक व्यक्ति का मन भ्रमित हो जाता है , और उसके बाद वे धर्मनिंदा करते हैं , क्योंकि उन्होंने यह कार्य स्वार्थी होकर शुरू किया है। उन्होंने जो हाथ में लिया है वह उनकी शक्ति से परे है। एक शिक्षित व्यक्ति के लिए भी, यदि वह धर्मसिद्धान्तों की व्याख्या करना चाहता है , तो उसके भटकने का खतरा होता है। तो, एक अनपढ़ व्यक्ति के लिए यह खतरा कितना बड़ा है , जो उचित आध्यात्मिक अवस्था में हुए बिना ही पवित्र पुरखों की आत्मा में प्रवेश करना चाहता है ! क्योंकि अगर वह थोड़ा भी उस अवस्था में होता, तो वह खुद को इस खतरे में नहीं डालता; वह कहता: 'अगर मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत है , तो ईश्वर मुझे ज्ञान देंगे। मैं बस वही करूँगा जो मैं समझता हूँ। आखिरकार, वह भी बहुत कुछ है !'

— तो, गेरोन्डा , यदि कोई सुसमाचार की गलत व्याख्या करता है , तो क्या इसका मतलब है कि उनमें विनम्रता और श्रद्धा की कमी है ?

— हाँ। क्योंकि अगर विनम्रता नहीं है , तो वे जो व्याख्याएँ प्रस्तुत करते हैं , वे मन, तर्क से उत्पन्न व्याख्याएँ होती हैं। ऐसी व्याख्याओं में कोई दैवीय प्रबोधन नहीं होता।

— यदि कोई व्यक्ति किसी विशेष सिद्धांत या पवित्र धर्मग्रंथ के किसी अंश को नहीं समझता है , तो क्या उसके लिए उसे फिलहाल छोड़ देना बेहतर है ?

— हाँ , आपको खुद से कहना होता है : 'यहाँ कोई गहरा अर्थ छिपा है , लेकिन मैं उसे नहीं समझता।' ऐसी ही परिस्थितियों में मैं भी यही किया करता था। जब मैं जवान था और सुसमाचार पढ़ रहा था, और कोई ऐसा अंश आता था जिसे मैं नहीं समझता था, तो मैं उसका अर्थ निकालने की कोशिश नहीं करता था। मैं सोचता था: 'यहाँ कोई गहरा अर्थ छिपा है , लेकिन मैं उसे नहीं समझता।' और फिर, जब समय सही होता था, तो मुझे पता चलता था कि व्याख्या स्वाभाविक रूप से आ गई। लेकिन मैं फिर भी कहता था: 'मैं किसी और से पूछता हूँ कि इस अंश की व्याख्या कैसे की जाती है। ' और ऐसा हुआ कि मैंने उस अंश को ठीक पवित्र पितिओं की सामान्य रूप से स्वीकृत व्याख्याओं के अनुरूप ही समझा। क्योंकि अगर कोई सुसमाचार की [अपने दम पर] व्याख्या करने की कोशिश करता है , और खासकर उसे समझे बिना, तो यह निर्लज्जता है। इसलिए, पवित्र धर्मग्रंथ और पवित्र पितिओं को पढ़ते समय, आपने जो पढ़ा है , उसकी व्याख्या केवल तर्क के आधार पर न करें , बल्कि इस प्रक्रिया में अच्छे विचारों को लाएँ — जब तक कि दिव्य प्रबोधन प्राप्त न हो जाए, और तब कठिन अंश अपने आप स्पष्ट हो जाएगा।

---

[164] यूहन्ना 8:32.

— और क्या कोई व्यक्ति, उच्च आध्यात्मिक अवस्था प्राप्त करके, किसी विशेष अंश को और गहराई से समझ सकता है?

— इतनी 'गहराई से' नहीं। एक ही दिव्य अर्थ के भीतर, कई दिव्य अर्थ छिपे होते हैं। उनमें से कुछ उसे तुरंत समझ में आ सकते हैं, जबकि अन्य बाद में। कोई व्यक्ति बहुत कुछ पढ़ सकता है और बहुत कुछ सीख सकता है, फिर भी सुसमाचार के अर्थ में प्रवेश करने में पूरी तरह से असमर्थ हो सकता है। दूसरा, हालांकि, बहुत कम पढ़ सकता है, फिर भी उसमें विनम्रता और तपस्वी भावना हो सकती है; और इसलिए ईश्वर उसे ज्ञान प्रदान करता है, और वह सुसमाचार के अर्थ को समझ जाता है। कोई व्यक्ति जो अधिक पढ़ना चाहता है, वह घमंड के लिए या केवल आनंद के लिए ऐसा कर सकता है। यह ठीक वैसा ही है जैसे कोई आदमी कुश्ती का मैच देखता है और पहलवान कैसे लड़ रहे हैं, इस पर कोई ध्यान नहीं देता — ताकि उसे खुद पहलवान बनने में मदद मिल सके — और वह बार-बार अपनी घड़ी की ओर देखता रहता है, ताकि वह अगले कुश्ती टूर्नामेंट के लिए देर न हो जाए। और इस तरह, वह खुद पहलवान नहीं बनता, बल्कि एक दर्शक ही बना रहता है।

— गेरोन्डा, लोग अक्सर एक शिक्षित व्यक्ति के बारे में कहते हैं: 'यह एक प्रबुद्ध व्यक्ति है।' क्या यह वास्तव में हमेशा सच होता है?

— जब हम 'एक प्रबुद्ध व्यक्ति' कहते हैं, तो हमारा मतलब किसी ऐसे व्यक्ति से होता है जो आध्यात्मिक रूप से प्रबुद्ध, आध्यात्मिक रूप से परिपक्व हो। मैंने देखा है कि जैसे एक अनपढ़ व्यक्ति बहुत घमंडी और बहुत विनम्र दोनों हो सकता है, वैसे ही एक शिक्षित व्यक्ति भी बहुत घमंडी और बहुत विनम्र दोनों हो सकता है। दूसरे शब्दों में, पूरी नींव आंतरिक प्रबुद्धता में निहित है। यही बात बेसिल द ग्रेट कहते हैं: 'सबसे महत्वपूर्ण बात है कि कोई व्यक्ति उच्च पद पर हो और विनम्र मन रखता हो।' कोई व्यक्ति जो किसी महत्वपूर्ण पद पर है और उसमें थोड़ा घमंड है, वह एक तरह से सही है। लेकिन उच्च पद पर न होते हुए भी घमंड करने वाले व्यक्ति के लिए कोई औचित्य नहीं है। पूरी नींव आत्म-प्रबुद्धता, आंतरिक प्रबुद्धता में निहित है। यदि कोई व्यक्ति प्रबुद्ध, शिक्षित है और साथ ही विनम्र बुद्धि का भी धनी है, तो वह सर्वोत्तम है। हालाँकि, उस व्यक्ति के लिए कोई बहाना नहीं है, जिसने थोड़ी सी शिक्षा प्राप्त करके ही आत्म-महत्व की भावना से भर लिया है।

'मन घमंड करता है'

अधिकांश मामलों में, बाहरी शिक्षा फायदे से ज्यादा नुकसान करती है — क्योंकि यह व्यक्ति में बहुत बड़ा अहंकार, अपने बारे में एक 'महान विचार' को बढ़ावा देती है। और फिर यह विचार एक बाधा बन जाता है जो ईश्वर की कृपा को उसके करीब आने से रोकती है। जबकि यदि कोई व्यक्ति घमंड को—अपने बारे में उस झूठे विचार को—त्याग देता है, तो हमारे शुभ और उदार पिता उसे अपने दिव्य विचारों से समृद्ध करते हैं। हालाँकि, यदि कोई दुर्भाग्यशाली व्यक्ति अपने बारे में एक बड़ा विचार पालता है और अपने मन में इस विचार से चिपका रहता है, तो वह एक मेंढक के बच्चे, महज मांस की तरह ही रहता है, और ईश्वर की कृपा — पवित्र आत्मा — से अनजान रहता है। दूसरे शब्दों में, यह खतरा है कि बहुत सारा ज्ञान उनके सिर को 'फुला देगा', और उसे एक गुब्बारे में बदल देगा। और फिर, व्यक्ति को या तो हवा में एक गुब्बारे की तरह फटने (स्किज़ोफ्रेनिया से) या जमीन पर गिरने (घमंड से) — और चकनाचूर हो जाने का खतरा होता है। इसलिए, ज्ञान को ईश्वर के भय के बाद आना चाहिए और कर्म के साथ-साथ चलना चाहिए — ताकि संतुलन बना रहे। केवल ज्ञान हानिकारक है।

जब स्वार्थ के वश में आकर, मैं केवल प्रशंसा पाने के लिए कुछ कहता हूँ , क्योंकि मैंने दूसरों से बेहतर कुछ सोचा है , तो आध्यात्मिक नियम काम में आते हैं — मुझे होश में लाने के लिए। हालाँकि , इस तरह का स्वार्थी आत्म -प्रचार व्यक्ति के लिए हानिकारक है। पलक जो आँख में चली जाए, वह थोड़ी जलन पैदा करती है। लेकिन , अगर वह बार-बार आँख में जाती रहे , तो इससे गंभीर सूजन हो जाती है। तो यहाँ भी ऐसा ही है —आध्यात्मिक सूजन उत्पन्न होती है। यदि किसी व्यक्ति में बौद्धिक क्षमता की कमी नहीं है और वह किसी विशेष कार्य को आसानी से कर सकता है , तो उसे दिन-रात ईश्वर के सामने नतमस्तक होना चाहिए, और उन्हें एक मन देने के लिए धन्यवाद देना चाहिए, जिससे वह बिना थके अपना काम कर सके। ईश्वर का धन्यवाद न करना—यह कैसे संभव हो सकता है ?!

— गेरोन्डा , अगर कोई व्यक्ति महसूस करता है कि वह किसी भी चीज़ से नहीं निपट सकता तो क्या होगा?

— तब शैतान उसे दूसरी 'तरफ़ ' से बहकाता है। एक बार, एक ऊँट से पूछा गया: 'तुम्हें कौन सा रास्ता पसंद है — चढ़ाई वाला या ढलान वाला?' 'अरे , समतल ज़मीन आखिर गई कहाँ ?' ऊँट ने जवाब दिया।

जिनके पास बिल्कुल भी कोई कारण नहीं है , वे बेहतर स्थिति में हैं। दूसरी ओर, हमें कारण दिया गया है ताकि हम, तर्कशील लोग, बेहतर स्थिति में हो सकें , लेकिन सवाल यह है : हम इसका उपयोग कैसे करते हैं ? इसके लिए हमसे हिसाब लिया जाएगा। ईश्वर ने कितनी बुद्धिमानी से सब कुछ व्यवस्थित किया है ! जिनके पास तर्क नहीं है , वे आनंदित रहते हैं और आने वाले जीवन में बेहतर स्थिति में होंगे , जबकि जो बहुत चतुर हैं , वे पीड़ित होते हैं।

— गेरोन्डा , क्या बौद्धिक अक्षमता वाले लोग आने वाले जीवन में असुविधा में रहेंगे ?

— अंततः , 'अत्यधिक बुद्धिमान ' और 'कम बुद्धिमान ' दोनों ही धूल में मिल जाएँगे। मन तो स्वर्ग में ही निवास करेगा। स्वर्ग में , पवित्र धर्मशास्त्री इस जीवन में बौद्धिक रूप से अक्षम रहे लोगों की तुलना में ईश्वर के ज्ञान के संबंध में अधिक अनुकूल स्थिति में नहीं होंगे। यह भी संभव है कि धर्मी ईश्वर बाद वालों को कुछ और प्रदान करें , क्योंकि इस जीवन में उन्हें बहुत कुछ से वंचित रखा गया था।

आइए हम अपने मन का सही उपयोग करें

— गेरोन्डा , तो फिर आप अक्सर यह क्यों कहते हैं कि शिक्षा मठवासी जीवन के लिए एक अच्छी पूर्व शर्त है ?

— देखिए : एक शिक्षित व्यक्ति पवित्र पिताओं की कोई रचना पढ़ सकता है और, थोड़ी सी मेहनत से — क्योंकि उसने जो पढ़ा है उसे समझ लिया है — तेजी से प्रगति कर सकता है। जबकि एक अनपढ़ व्यक्ति के लिए, यदि उसमें श्रद्धा की कमी है , तो प्रगति करना आसान नहीं है। एक अनपढ़ व्यक्ति को दिव्य घटनाओं और चमत्कारों का स्वयं अनुभव करने की आवश्यकता होती है , और केवल तभी वह अपने अनुभव के परिप्रेक्ष्य से जो कुछ भी पढ़ता है , उसे समझ सकता है। जबकि एक शिक्षित व्यक्ति के लिए, तीव्र प्रगति करने के लिए थोड़ी सी कोशिश ही काफी है —बशर्ते कि वह अपने दिमाग का इस्तेमाल करे और केवल सिद्धांत में ही उलझा न रहे , नहीं तो वह उसकी आध्यात्मिक वृद्धि को छीन लेगा। बेशक , मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि उन्हें अपनी बुद्धि के माध्यम से ईश्वर के रहस्यों को समझने का प्रयास करना चाहिए।

— तो, गेरोन्डा , क्या एक व्यक्ति को वासनाओं के खलिाफ संघर्ष में अपनी बुद्धि का उपयोग करने की आवश्यकता है ?

— केवल उसी में ही नहीं , बल्कि उससे भी आगे। एक व्यक्ति ईश्वर की कृपा देखता है , पूरे ब्रह्मांड को देखता है , और ईश्वर की महमिा करता है और धन्यवाद देता है। इस पर वचिार करें : आखरिकार, यह स्वयं अब्राहम ही थे जनि्होंने सबसे पहले ईश्वर को खोजा। फरि ईश्वर ने अब्राहम को खोजा।

— आपका क्या मतलब है ?

— अब्राहम के पतिा मूर्तपिूजक थे — वे मूर्तयिों की पूजा करते थे। लेकनि अब्राहम ने ब्रह्मांड का अवलोकन कयिा, और इस तथ्य ने कि लोग नरि्जीव मूर्तयिों की पूजा कर रहे थे , उसे हैरान कर दयिा। उसने गहराई से सोचना शुरू कयिा और कहा: 'यह नहीं हो सकता कि ये मूर्तयिाँ , लकड़ी के ये टुकड़े , देवता हों और इन्होंने इस दुनयिा को बनाया हो। तो फरि, इसे कसिने बनाया? कसिने स्वर्ग , तारों , सूर्य और बाकी सब कुछ बनाया? मुझे सच्चे ईश्वर को खोजना होगा। उसी पर मैं वशि्वास करूँगा , और उसी की मैं पूजा करूँगा। ' तब ईश्वर उसे प्रकट हुए और कहा: 'अपनी भूमि और अपने कुल से नकिल जा।'[165] ईश्वर ने अब्राहम को हेब्रोन ले जाया, और अब्राहम ईश्वर का प्रयि पुत्र बन गया।

एक शकि्षति व्यक्ति में श्रद्धा की कमी हो सकती है , लेकनि , चीजों को आसानी से समझने में सक्षम होने के कारण, थोड़ी नम्रता और थोड़ी मेहनत से , वे सफलता प्राप्त कर लेंगे। उदाहरण के लिए, जब हमने उस सग्निल कंपनी में रेडयिो ऑपरेटर के रूप में प्रशकि्षण शुरू कयिा जहाँ मैं अपनी सैन्य सेवा कर रहा था, तो कुछ कॉल साइन अंग्रेजी में थे। जो शकि्षति थे और अंग्रेज़ी जानते थे , उन्होंने उन्हें तुरंत सीख लयिा। हालाँकि , हम बाकी लोगों के लिए यह आसान नहीं था। और सद्धिांत के पाठों में भी, जो कि उतने कठनि नहीं थे , जनिके पास थोड़ी भी पूर्व जानकारी थी, उन्हें हमसे आसान लगा।

एक व्यक्ति को ईश्वर की कृपा को पहचानना चाहिए और यह समझना चाहिए कि उसे क्या दयिा गया है। ईश्वर ने हमें दमिाग क्यों दयिा? ताकि हम खुद का अन्वेषण , अध्ययन और चंतिन कर सकें। ईश्वर ने लोगों को दमिाग इसलिए नहीं दयिा कि वे एक देश से दूसरे देश तक यात्रा करने के और भी तेज़ साधन खोजने के लिए लगातार अपना दमिाग खपाते रहें। उन्होंने हमें एक दमिाग इसलिए दयिा है ताकि हम उसे सबसे ज़रूरी चीज़ों पर लगन से लगाएँ — अपनी पुकार के लक्ष्य , यानी ईश्वर , सच्चे स्वर्गीय स्वदेश , को प्राप्त करने पर।

परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों पर कतिनी आशीषें प्रदान कीं ! कतिने चह्नि , कतिने चमत्कार ! और फरि भी, जब मूसा , ईश्वर की दस आज्ञाओं से अंकति पट्टयिाँ लेकर , सनिाई पर्वत पर देरी से आ गए और तुरंत नीचे नहीं उतरे , तो लोगों ने [हारून] को अपना सोने का आभूषण दे दयिा ताकि वह उससे एक सोने का बछड़ा बना सकें और वे उसकी पूजा कर सकें। [166] लेकनि हमारे अपने युग में , लोगों के मन... बछड़े जैसी नहीं हैं ! इसलिए, एक शकि्षति व्यक्ति के पास यह समझने का कोई बहाना नहीं है कि क्या सही है और क्या गलत। ईश्वर ने हमें वविेक दयिा ताकि हम अपने स्रष्टा को खोज सकें। हालाँकि , यूरोपीय अपने वविेक का अति-उपयोग कर चुके हैं। अपने जीवन से ईश्वर को हटा देने के बाद, वे भ्रमति हो गए हैं और खाई की ओर बढ़ रहे हैं।

---

[165] उत्पत्ति 12:1.

[166] देखें नरि्गमन 32:1–6।

और कुछ , बुद्धि , तीव्र बुद्धि आदि—सफलता की सभी पूर्व शर्तें —होने के बावजूद , आप जो कहते हैं उस पर कोई ध्यान नहीं देते।

जैसे ही आप उन्हें कुछ बताना शुरू करते हैं , वे चिल्लाते हैं , 'समझ गया, समझ गया!' — और, आपको बीच में टोककर, वे खुद आपके विचार को पूरा करने के लिए दौड़ पड़ते हैं। बहुत ही चतुर युवा पवित्र पहाड़ पर आते हैं। जब आप उन्हें कुछ कहते हैं , तो आपको ऐसा लगता है कि वे जो सुना है , उसे तुरंत ही समझ लेते हैं। हालाँकि, क्योंकि वे लापरवाह होते हैं , वे नाक भौं चढ़ाते हैं , और जो कुछ उन्होंने 'तुरंत समझ लिया' था वह बस... उनसे उड़ जाता है। दूसरी ओर, अन्य लोग, भले ही उनका दिमाग इतना तेज न हो, जो उनसे कहा जाता है उसे श्रद्धापूर्वक सुनते हैं ; वे बीच में नहीं बोलते , वे अंत तक सुनते हैं , और जो उन्होंने सुना है वह उनके साथ रहता है। पहले वाले बहुत कुछ समझते हैं , चारों ओर से ज्ञान इकट्ठा करते हैं , खुद को उससे भर लेते हैं — और कुछ नहीं करते। वे ईश्वर द्वारा दी गई बुद्धि को बेकार कर देते हैं ; उनके सिर पुआल से भरे हुए हो जाते हैं। अहंकारी होने के कारण, वे ईश्वर की कृपा को स्वयं को प्रबुद्ध करने की अनुमति नहीं देते। जबकि बाद वाले , भले ही वे विशेष रूप से होशियार न हों , बहुत विनम्र होते हैं। इस तरह का व्यक्ति कहता है , 'आप जानते हैं , मैं तो बहुत ही मंदबुद्धि हूँ !' — और फिर पूछता है : 'आपने क्या कहा?' और ऐसे लोग जो उन्होंने सुना है , उसे व्यवहार में लाने की कोशिश करते हैं। इस प्रकार , वे अनुग्रह से भर जाते हैं और समृद्धि प्राप्त करते हैं। एक विनम्र व्यक्ति आमतौर पर बहुत कुछ जानता है , जबकि अहंकारी व्यक्ति को कोई ज्ञान नहीं होता — क्योंकि वह स्वयं को विनम्र नहीं बनाता और प्रश्न नहीं पूछता। परम पूजनीय आर्सेनियस महान बाइजेंटाइन साम्राज्य में सबसे विद्वान व्यक्ति थे। सम्राट थियोडोसियस महान ने उन्हें अपने दो बेटों —आर्काडियस और होनोरियस के शिक्षक के रूप में नियुक्त किया। हालाँकि, संन्यास का व्रत लेने और रेगिस्तान में बसने के बाद, वह अनपढ़ अबा मकारियस के पैरों में बैठ जाते और कहते : 'मुझे तो इस [साधारण व्यक्ति] की वर्णमाला भी नहीं आती।'[167]

— जेरोंडा , केवल तर्क के माध्यम से चीजों की जांच से कोई कैसे बच सकता है ?

— एक व्यक्ति को अपने तर्क का सही उपयोग करना चाहिए। तर्क की मदद से , उन्हें ईश्वर को खोजने के लिए ईश्वर की महानता का पता लगाने का प्रयास करना चाहिए, न कि अपने ही तर्क को ईश्वर बनाना चाहिए। बुद्धिमान लोगों को आध्यात्मिक रूप से उन्नत होना चाहिए। उनके लिए यह समझने के लिए कि क्या हो रहा है , किसी चीज़ पर एक नज़र डालना ही काफी है। अपनी बुद्धि का उपयोग करके , एक व्यक्ति अपने पड़ोसी की मदद कर सकता है — अन्यथा , वह उन्हें सता सकता है। मुझे आम लोगों के जीवन से ऐसे मामले पता हैं। मैं एक लड़के को जानता था। जब उसके पिता की मृत्यु हो गई, तो चार बच्चे रह गए थे। उसकी माँ ने दोबारा शादी कर ली, और बच्चों को न तो उसकी माँ से और न ही उनके सौतेले पिता से कोई प्यार मिला। जब यह दुर्भाग्यपूर्ण लड़का बड़ा हुआ , तो उसने एक किराने की दुकान खोली और काम करने लगा। एक दिन उसने सुना कि एक आदमी की मृत्यु हो गई है , जिससे उसके तीन बच्चे अनाथ हो गए हैं। उसे इन छोटे बच्चों के लिए सहानुभूति हुई , और उसने मृतक की विधवा से प्रस्ताव रखा: 'अगर आप चाहें , तो हम शादी कर लें ; हम भाई-बहन की तरह रहेंगे और इन बच्चों का पालन-पोषण करेंगे। ' वह मान गई। अब वे एक आध्यात्मिक जीवन जीते हैं , संतों के जीवन और

---

[167] देखें पवित्र और धन्य पिताओं के तपस्या की स्मरणीय कथाएँ। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लावरा , 1993। पृ . 18।

*डोब्रोतोल्युबिये * पढ़ते हैं , मठों में जाते हैं , और उनका एक आध्यात्मिक पिता है। इस व्यक्ति ने सही ढंग से विचार किया, सही काम किया, और दिव्य अनुग्रह प्राप्त किया। अन्यथा , टंगलाश्का ने उससे फुसफुसाया होता: 'तुम्हें बचपन में प्रताड़ित किया गया था, इसलिए अब तुम्हें इन बच्चों को प्रताड़ित करना चाहिए।' हालाँकि , इस आदमी ने अपने लिए बुराई से नहीं , बल्कि अच्छाई से 'बदला' लिया। कुछ लोग अपने दिमाग का इस्तेमाल अच्छाई के लिए करते हैं और कुछ दयालु चीज़ बनाते हैं। अन्य लोग इसका इस्तेमाल विनाश के लिए करते हैं , और टंगलाश्का इसमें भी उनकी मदद करता है।

हाबिल और काइन के मामले में , हम यही देखते हैं। [168] क्या परमेश्वर ने हाबिल को एक तरह की मिट्टी से और काइन को दूसरी तरह की मिट्टी से बनाया? नहीं। लेकिन हाबिल ने परमेश्वर द्वारा दिए गए मन का बुद्धिमानी से उपयोग किया। उसने सोचा, 'परमेश्वर ने मुझे भेड़ों का एक पूरा झुंड दिया है — तो निश्चित रूप से मैं उन्हें एक अकेला मेमना तो चढ़ा ही सकता हूँ ?' उसने सबसे अच्छा मेमना चुना , उसे ज़बिह किया और परमेश्वर को बलिदान के रूप में चढ़ा दिया। दूसरी ओर, काइन ने परमेश्वर को भूसी और चोकर के साथ गेहूँ चढ़ाया। एक ने बलिदान के लिए एक उत्तम मेमना चढ़ाया , जबकि दूसरे ने मकई के भुट्टों , तनों और अन्य थ्रेसिंग के कचरे के बेकार अवशेष चढ़ाए। ठीक है , अगर तुम एक मेमना नहीं चढ़ाना चाहते —तो कम से कम थोड़ी सी साफ़ गेहूँ तो ले आओ! लेकिन , दुर्भाग्य से , काइन ने तरह-तरह की गंदगी मिली गेहूँ ली और उसे वेदी पर जलाने लगा। एक की भेंट और दूसरे की भेंट में कितना अंतर था! हेबेल की भेंट परमेश्वर को भायी, और बाद में काइन हेबेल से ईर्ष्या करने लगा और उसे मार डाला। इस प्रकार , परमेश्वर ने हेबेल को उसकी सहन की हुई पीड़ा का फल दिया, जबकि उसका बड़ा भाई एक जंगली जानवर की तरह जंगलों में भटकता रहा। यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने हर व्यक्ति को स्वतंत्रता दी, लेकिन हेबेल ही था जिसने उस स्वतंत्रता का उपयोग भलाई के लिए किया।

अध्याय 2.
हमारे समय के तर्कवाद पर

आध्यात्मिक जीवन में सामान्य ज्ञान

— गेरोन्डा , आध्यात्मिक जीवन में सामान्य ज्ञान का क्या स्थान है ?

— किस तरह की सामान्य बुद्धि ? सांसारिक सामान्य बुद्धि ? आध्यात्मिक जीवन में उस तरह की सामान्य बुद्धि की कोई जगह नहीं है। [169] आध्यात्मिक जीवन में , स्वर्गदूत और संत आपकी खिड़की से प्रवेश करते हैं ; आप उन्हें देखते हैं , उनसे बात करते हैं , और फिर वे आपसे विदा हो जाते हैं। यदि, हालांकि , आप ऐसी घटनाओं का सामान्य बुद्धि का उपयोग करके विश्लेषण करने की कोशिश करते हैं , तो आप कुछ भी नहीं पायेंगे। दुर्भाग्य से , हमारे इस निरंतर बढ़ते ज्ञान के युग में , केवल सामान्य ज्ञान पर निर्भर रहने ने आस्था की नींव तक को हिला दिया है और लोगों की आत्माओं को संदेह और प्रश्नचिह्नों से भर दिया है। और इस प्रकार हमने स्वयं को चमत्कारों से वंचित कर लिया है —क्योंकि एक चमत्कार अनुभव किया जाता है , सामान्य ज्ञान द्वारा समझाया नहीं जाता। इसके विपरीत, ईश्वर में आस्था दिव्य शक्ति को पृथ्वी पर लाती है और सभी मानवीय तर्क को उलट देती है। आस्था चमत्कार करती है , मृतकों को जीवित कर देती है और विज्ञान को विस्मय में दंग कर देती है। बाहरी दृष्टि से

---

[168] उत्पत्ति 4:2–15 देखें।

[169] जब 'सामान्य ज्ञान ' के बारे में बात करते हुए और उसकी आलोचना करते हुए , एल्डर पैसियोस का तात्पर्य उस अनुग्रह -पूर्ण वरदान से नहीं है जिसे ईश्वर ने मानव जाति को सम्मानित किया है , बल्कि तर्कवाद से है , या, जैसा कि एल्डर स्वयं कहते हैं , 'अस्वस्थ समझ', अर्थात् 'समझ' जो ईश्वर में विश्वास से रहित है , जो दैवीय व्यवस्था को स्वीकार नहीं करता और चमत्कार की संभावना को खारिज कर देता है। – अनुवादक की टिप्पणी।

देखा जाए तो, आध्यात्मिक जीवन की सभी घटनाएं सामान्य ज्ञान से रहित प्रतीत होती हैं। जब तक कोई व्यक्ति अपनी सांसारिक तर्क -बुद्धि को त्यागकर एक आध्यात्मिक व्यक्ति नहीं बन जाता, तब तक उसके लिए ईश्वर के रहस्यों को समझना असंभव है , जो अजीब और तर्कहीन प्रतीत होते हैं। जो कोई भी यह मानता है कि वह बाहरी वैज्ञानिक सिद्धांतों के माध्यम से ईश्वर के रहस्यों को समझ सकता है , वह एक ऐसे मूर्ख के समान है जो दूरबीन से स्वर्ग देखना चाहता है।

यदि कोई सामान्य ज्ञान का उपयोग दिव्य क्षेत्र —रहस्यों और चमत्कारों —से संबंधित मामलों की जांच के लिए करना चाहे , तो यह बहुत नुकसान पहुँचाता है। कैथोलिक , अपनी 'सामान्य समझ' के साथ, इतना आगे बढ़ गए हैं कि उन्होंने दिव्य यूखरिस्त को एक रासायनिक प्रयोगशाला में विश्लेषण के लिए भेजा —यह देखने के लिए कि क्या यह वास्तव में मसीह का शरीर और रक्त है , जबकि संतों ने , केवल विश्वास द्वारा , अक्सर पवित्र रोटी पर देह और रक्त को देखा। जल्द ही वे संतों को उनकी पवित्रता की पुष्टि के लिए एक्स -रे तक भेज देंगे ! कैथोलिकों ने पवित्र आत्मा को दरकिनार कर दिया है , उनकी जगह अपने 'सामान्य ज्ञान ' को बिठा लिया है , और यहाँ तक कि सिफेद जादू का अभ्यास करने तक पहुँच गए हैं। एक ऐसे कैथोलिक से जो मेरे प्रति अनुकूल था (वह बेचारा रो रहा था), मैंने यह कहा: "हमारे बीच के मतभेदों में , निम्नलिखित बात विशेष रूप से महत्वपूर्ण है : आप तर्क पर भरोसा करते हैं — जबकि हम विश्वास पर भरोसा करते हैं। आपने तर्कवाद और, सामान्य रूप से , 'मानवीय कारक' को विकसित किया है। आप अपनी सामान्य समझ से , दिव्य शक्ति को सीमित करते हैं , क्योंकि आप ईश्वर की कृपा को सबसे आखिरी स्थान पर रख देते हैं। आप पवित्र जल में रासायनिक संरक्षक मिलाते हैं ताकि वह खराब न हो। हम खराब पानी में पवित्र जल मिलाते हैं , और वह खराब पानी अच्छा हो जाता है। हम पवित्र करने वाली कृपा में विश्वास करते हैं , और पवित्र जल को दो सौ या पाँच सौ साल तक रखा जा सकता है ; यह कभी खराब नहीं होता।"

— तो, गेरोन्डा , क्या कोई व्यक्ति ईश्वर की तुलना में तर्क और सामान्य ज्ञान को प्राथमिकता देता है ?

— शायद यह कहना बेहतर होगा कि तर्क नहीं , बल्कि अहंकार ? आखिरकार, असल में , जिसे सामान्य ज्ञान की हम अब बात कर रहे हैं , वह वास्तव में एक अस्वस्थ , भ्रष्ट भावना है। अहंकार भ्रष्ट तर्क है ; यह 'सामान्य ज्ञान ' है जिसमें स्वार्थ छिपा होता है और दुश्मन — शैतान —ने अपना घोंसला बना लिया है। जब इस तरह का 'सामान्य ज्ञान ' हमारे कार्यों में मिल जाता है , तो हम शैतान को [अपने ऊपर] शक्ति दे देते हैं।

— गेरोन्डा , यदि एक आध्यात्मिक व्यक्ति को प्रलोभन पर विजय प्राप्त करने की आवश्यकता है , तो क्या सामान्य ज्ञान के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए?

— इस मामले में , मनुष्य को वह करना चाहिए जो उसके वश में है , और जो उसके वश में नहीं है उसे ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अपनी बुद्धि से हर चीज़ को 'समझने ' के लिए लगातार प्रयास करते रहते हैं। जैसे कि वे लोग जो अपने मन में एक 'बुद्धिमानी भरी' प्रार्थना रचना करना चाहते हैं। ध्यान केंद्रित करने के लिए, वे अपने दिमाग पर ज़ोर डालते हैं , और फिर उनका सिर दर्द करने लगता है। अगर मैं हर दिन आने वाली समस्याओं को इसी तरह से देखूँ , तो मैं उनका सामना कैसे कर पाऊँगा ? लेकिन मैं जो मानवीय रूप से संभव है , वह करता हूँ , और बाकी के लिए मैं ईश्वर पर भरोसा करता हूँ। मैं कहता हूँ , "भगवान ही रास्ता दिखाएंगे और मुझे प्रकाश देंगे कि क्या करने की ज़रूरत है। " कई इस तरह की बातें करके शोक मनाने लगते हैं : "इस मामले से कैसे निपटें , उस मामले में क्या करें ,

तीसरे के साथ क्या करें ?" — और कोई भी छोटी सी बात उन्हें परेशान कर देती है। केवल तर्क से ही चीजों को सुलझाने की कोशिश करके , एक व्यक्ति केवल खुद को भ्रमित करता है। हर कार्रवाई से पहले , व्यक्ति को ईश्वर को कार्य करने देना चाहिए। ईश्वर पर भरोसा किए बिना कुछ भी नहीं करना चाहिए, क्योंकि उस स्थिति में व्यक्ति चिंतित हो जाता है , अपने मन को थका देता है और अपनी आत्मा में अस्वस्थ महसूस करता है।

— गेरोन्डा , आपने एक बार कहा था कि आप खुद को कभी ज़्यादा काम में नहीं लगाते। आप ऐसा कैसे करते हैं ?

— हाँ , मैं खुद पर ज़्यादा बोझ नहीं डालता, क्योंकि मैं जिन चीज़ों से निपटना होता है , उन्हें अपने तर्क से नहीं देखता। अगर मुझे सिरदर्द होता है , तो वह या तो जुकाम से होता है या रक्तचाप कम होने से। और ज़रा सोचिए कि मुझे कितनी समस्याओं से निपटना पड़ता है ! हर दिन लोग मुझसे सवाल और दुख लेकर आते हैं , और फिर मेरे विचार उन लोगों पर लौट जाते हैं जो मुझसे विभिन्न समस्याओं के साथ आए हैं , बीमारों पर, ज़रूरतमंदों पर। और फिर भी: अगर कोई बीमार व्यक्ति जो मुझसे मिलने आया था, ठीक हो जाता है , तो किसी कारणवश वे मुझे इसके बारे में नहीं बताते ताकि मैं थोड़ा खुश हो सकूँ। और मैं भी उन्हें अपने विचारों में बनाए रखता हूँ।

— गेरोन्डा , एक भिक्षु अपने विचारों को इस तरह कैसे व्यवस्थित कर सकता है कि वह तर्कशीलता से थका न हो?

— किसी को अपनी सोच को सांसारिक तर्क से नहीं , बल्कि आध्यात्मिक विवेक की मदद से व्यवस्थित करना चाहिए। एक को ट्यूनिंग नॉब को आध्यात्मिक आवृत्ति पर मोड़ना चाहिए। एक भिक्षु को आध्यात्मिक रूप से सोचना चाहिए और अपना मन आध्यात्मिक मामलों पर लगाना चाहिए। एक गृहस्थ में भी—यदि वह एक आध्यात्मिक व्यक्ति है —सांसारिक सामान्य ज्ञान की कोई जगह नहीं है। सांसारिक सामान्य ज्ञान एक अच्छे लेकिन अविश्वासी व्यक्ति के लिए उपयुक्त है।

— गेरोन्डा , 'आध्यात्मिक मामलों पर अपना मन केंद्रित करना' से आपका क्या अभिप्राय है ?

— अपने मन को आध्यात्मिक मामलों पर केंद्रित करना मतलब उन चीजों में आनंद न लेना जिनमें सांसारिक लोग आनंद लेते हैं , बल्कि इसके विपरीत में आनंद लेना है। उदाहरण के लिए, इस बात का आनंद लेना कि आपको एक पैसा भी लायक नहीं समझा जाता। हम आध्यात्मिक क्षेत्र में तभी आगे बढ़ेंगे जब हमारी आकांक्षाएं सांसारिक आकांक्षाओं के विपरीत होंगी। क्या आप पैसा चाहते हैं ? तो अपना बटुआ भी दे दें। क्या आप एक बिशप का पद चाहते हैं ? खुद को कटघरे में खड़ा कर लें।

— और हमारे पास सामान्य ज्ञान का कितना प्रतिशत है , गेरोन्डा ?

— तुम्हें कुछ 'पुर्जे ' ढीले करने होंगे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम उस प्रेम की चकरा देने वाली अवस्था तक पहुँचो जो दैवीय पागलपन है। अन्यथा , जो लोग लेम्बेटी ,[170] , लाए जाते हैं , वे तर्कवाद वाले ईसाइयों —यानी, घमंडी सामान्य ज्ञान —से बेहतर स्थिति में हैं।

[170] थेस्सालोनिकी में मनोरोग अस्पताल।

दुनियावी तर्कशीलता एक व्यक्ति को सताती है

— जेरोंडा, मुझे लगता है कि मेरा दिल पत्थर जैसा कठोर हो गया है। मैं अपनी इस कठोरता के बारे में क्या करूँ ?

— तुम्हारा दिल कठोर नहीं है, बल्कि एक 'सिर-दिल' है। तुम्हारा पूरा दिल तुम्हारे सिर में आ गया है, और अब केवल तुम्हारा सिर ही काम कर रहा है। लेकिन तुम्हारे पास अभी भी अपनी राह सुधारने का मौका है — तुम्हारा दिल अपनी सही जगह पर लौट सकता है।

— कैसे ?

— हर दिन थियोटोकारियन से एक कैनन पढ़ें।[171] यह आपके दिल को फिर से काम में लाने का सबसे अच्छा उपाय है। आपका दिल है, लेकिन यह तर्कशीलता से ढका हुआ है। आपने एक यूरोपीय टाइपिकॉन, एक यूरोपीय मानसिकता अपना ली है। हर चीज़ में, आप औपचारिक रूप से त्रुटिहीन होने का प्रयास करते हैं। अगर आप किसी यूरोपीय धर्मनिरपेक्ष संस्था में कर्मचारी होते, तो हर कोई आपको एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत करता। आप ठीक समय पर काम पर पहुँचते और अपने सौंपे गए कार्यों को त्रुटिहीन रूप से करते। आप सभी के लिए एक मानदंड होते। अगर आप अपने आध्यात्मिक जीवन में भी उसी निरंतरता को अपनाते, तो आप आध्यात्मिक रूप से बड़ी छलांग लगाते और जल्द ही स्वर्ग पहुँच जाते। लेकिन आप देखिए, यूरोपीय भावना, अपनी तर्कशीलता के साथ, एक व्यक्ति को ईश्वर की ओर नहीं, बल्कि कहीं चाँद पर ले जाती है। इस समय, आप ऐसा व्यवहार कर रहे हैं मानो आप किसी धर्मनिरपेक्ष संस्था में हों। हालाँकि, आध्यात्मिक जीवन में, सब कुछ अलग है। सरलता आवश्यक है। सरलता से व्यवहार करें और ईश्वर पर भरोसा रखें।

— गेरोना, कोई इस सादगी को कैसे प्राप्त करता है ?

— तुम्हें अपना छोटा सा दिमाग साफ़ करके उसे बहुत पुरानी बातों की बुद्धिमत्ता से भरने की ज़रूरत है ! पितामहों और पैट्रिकि की सादगी में डूब जाओ, ताकि तुम उस आध्यात्मिक शिक्षा को जान सको जो आत्मा को ऊपर उठाती है और उसकी शक्ति को पुनर्स्थापित करती है। तब कोई व्यक्ति कष्ट नहीं भोगेगा। तर्कशीलता एक व्यक्ति को सताती है। उदाहरण के लिए, मैं कहता हूँ : 'यह किया जाना चाहिए' — और मैं इसे करता हूँ, क्योंकि यह किया जाना चाहिए। यानी, मैं यह दिल से नहीं करता, बल्कि इसलिए करता हूँ क्योंकि मेरी तर्कशीलता मुझे ऐसा करने के लिए कहती है। और यह केवल तर्कशीलता ही नहीं है, बल्कि अच्छी परवरिश भी कहती है : 'दूसरों को रास्ता देना चाहिए।' हालाँकि, दिल यह नहीं कहता। लेकिन अगर मेरा दिल उमड़ता है और मैं प्यार से रास्ता देता हूँ, तो यह एक बिल्कुल अलग बात है। तब मुझे खुशी महसूस होगी।

हमारे 'स्व' को हमारे कर्मों में मौजूद नहीं होना चाहिए। हमें अपने लिए शांति की खोज नहीं करनी चाहिए। यह मसीह के आगमन में बाधा डालता है। हमें उस चीज़ के लिए प्रयास करना चाहिए जो किसी अन्य व्यक्ति को शांति प्रदान करे। सच्ची शांति किसी अन्य को शांति देने से ही जन्म लेती है। तब ईश्वर उस व्यक्ति में वास करता है, और वह व्यक्ति केवल मानव रहना बंद कर देता है, दिव्यता प्राप्त कर लेता है। अन्यथा, केवल तर्क ही कार्य करता है, और सब कुछ सांसारिक और मानवीय ही रहता है।

---

[171] थियोटोकारियन (ग्रीक : Θεοτοκάριον) परमेश्वर की अति पवित्र माता के सम्मान में लिटर्जिकल कैननों का एक संग्रह है, जिसे माउंट अथोस के पूजनीय निकोदेमस ने संकलित किया और पहली बार 1796 में प्रकाशित किया। इसमें विभिन्न कालखंडों के 22 स्तोत्रकारों द्वारा रचित 62 कैनन शामिल हैं। – अनुवादक की टिप्पणी।

दुनियावी सामान्य ज्ञान बुद्धि को थका देता है और शारीरिक शक्ति को समाप्त कर देता है : यह हृदय को संकुचित और सीमित करता है , जबकि आध्यात्मिक सामान्य ज्ञान हृदय का विस्तार करता है। यदि मन का बुद्धिमानी से उपयोग किया जाए, तो यह हृदय को छू सकता है और उसकी मदद कर सकता है। जब मन हृदय में प्रवेश करता है और उसका साथी बन जाता है , तो हमारे द्वारा किया गया हर कार्य केवल तर्कसंगत रहना बंद हो जाता है। सामान्य ज्ञान ईश्वर का एक उपहार है। हालाँकि , हमें इस सामान्य ज्ञान को पवित्र करने की आवश्यकता है।

— लेकिन मेरे पास, गेरोन्डा , कोई दिल नहीं है ...

— तुम्हारे पास दिल है ! लेकिन जैसे ही तुम्हारा दिल कुछ करना चाहता है , तुम्हारा दिमाग उसे चुप करा देता है। दिल से जुड़ी सामान्य बुद्धि प्राप्त करने की कोशिश करो, आस्था और प्रेम प्राप्त करो।

— लेकिन मैं उसे कैसे हासिल करूँ ?

— अपनी बुद्धि खोने के लिए, इससे शुरुआत करो: थिस्सलुनीकी में एक विरोध मार्च में नंगे पैर चलो! लोगों को कहने दो कि तुम पागल हो गए हो! तुम , मेरे प्रिय , हर चीज़ की गणना गणितीय सटीकता से करना चाहते हो। क्या तुम एक खगोलशास्त्री हो? खुद पर काम करने के लिए, तार्किक रूप से सोचना बंद करो।

— गेरोन्डा , कौन सी किताबें मुझे सांसारिक तर्कवाद से मुक्त करने में मदद करेंगी ?

— सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण , चर्च के पिता (पैट्रस) को पढ़ें : *द हिस्ट्री ऑफ द गॉड-लवर्स *, *द एवरगेटिनोस *, *[172] *—यानी सैद्धांतिक नहीं बल्कि व्यावहारिक पुस्तकें —ताकि सांसारिक तर्कवाद को पवित्रता की सरल, पितृसुलभ भावना से बाहर निकाला जा सके । और [केवल] उसके बाद ही आपको अब्बा इसाक को पढ़ना शुरू करना चाहिए — ताकि आप गलती से इस ईश्वर -प्रकाशित लेखक को एक दार्शनिक न समझ बैठें।

दुनियावी सामान्य ज्ञान आध्यात्मिक अनुभूति की क्षमता को विकृत करता है

पवित्र पिताओं ने सब कुछ एक आध्यात्मिक , दैवीय दृष्टि से देखा। पवित्र पिताओं के कार्य परमेश्वर की आत्मा द्वारा लिखे गए थे , और उसी परमेश्वर की आत्मा से पवित्र पिताओं ने पवित्र धर्मग्रंथों की व्याख्या की। आजकल, किसी को इस ईश्वर की आत्मा का मिलना दुर्लभ है , और इसीलिए लोग पवित्र पिताओं की रचनाओं को नहीं समझते। वे सब कुछ सांसारिक आँखों से देखते हैं ; वे और गहराई में नहीं देखते ; उनमें वह दूरदर्शिता नहीं है जो विश्वास और प्रेम प्रदान करते हैं। पूजनीय आर्सेनियस महान ने कभी भी उस पानी को नहीं बदला जिसमें वे अपने खजूर की टहनियों को भिगोते थे , और उसमें बहुत बदबू आती थी।[173] लेकिन हमें यह कैसे समझना चाहिए कि उस सड़े हुए पानी के पात्र से कितनी अद्भुत फव्वारा फूट रहा था! 'खैर , यह एक ऐसी बात है जिसे मैं बिल्कुल नहीं समझ सकता!' — कोई कह सकता है। इस तरह बोलने वाला व्यक्ति धैर्यपूर्वक इस पानी को और करीब से देखने को तैयार नहीं है कि क्या इसमें कुछ और है , बल्कि वह इसे इसलिए खारिज कर देता है क्योंकि वह समझ नहीं पाता।

जब तर्कशीलता हस्तक्षेप करती है , तो व्यक्ति न तो सुसमाचार को समझता है और न ही पवित्र पिताओं को। आध्यात्मिक अनुभूति की क्षमता विकृत हो जाती है , और वह व्यक्ति , अपनी तर्कशीलता से सुसमाचार और पवित्र पिताओं दोनों को तुच्छ समझकर, यहाँ तक कहने लगता है : "कितने वर्षों से लोग तपस्या , उपवास और अन्य कष्टों से व्यर्थ में खुद को

---

[172] 'ईश्वर -प्रेमियों का इतिहास' – सीरियाई तपस्वियों की जीवनियों का एक संग्रह , जिसे सिरिस के धन्य थियोडोरेट ने संकलित किया था। "एवरगेटिनोस " – चार खंडों में पैट्रिस्टिक (पिता-संतों की) शिक्षाओं का एक व्यवस्थित संग्रह , जिसे बाइज़ेंटाइन युग के दौरान कॉन्स्टेंटिनोपल के एवरगेटिस मठ के भिक्षु पॉल ने संकलित किया था और जिसे पहली बार 18वीं शताब्दी के अंत में माउंट अथोस के परम आदरणीय निकोडेमस द्वारा प्रकाशित किया गया था। – अनुवादक की टिप्पणी।

[173] "वरिष्ठों ने बाबा आर्सेनियस से पूछा , 'आप शाखाओं वाले पानी को क्यों नहीं बदलते – इसमें से बदबू आती है ?' उन्होंने उत्तर दिया, 'जिस धूप और इत्र का मैंने संसार में आनंद लिया, उसकी बदबू मुझे सहनी पड़ती है।' द एन्शियंट पैटेरिकॉन , मॉस्को , 1899. पृ . 45.

पीड़ा पहुँचा रहे हैं !' लेकिन ऐसा कहना ईश्वरनिंदा है। एक बार, केलियोट का एक भिक्षु कार से मेरे कालीवा में आया। 'मेरे बेटे ,' मैंने कहा, 'तुम्हें कार की ज़रूरत ही क्या है ? यह तो निश्चित रूप से तुम्हारे जीवन-यापन के अनुरूप नहीं है !' 'क्यों नहीं , गेरोन्डा ?' उसने आश्चर्य से पूछा। 'क्या सुसमाचार में यह नहीं कहा गया है : "उसे सौ गुना मिलेगा और वह अनंत जीवन का वारिस होगा?"[174] 'जब यह कहा जाता है "उसे सौ गुना मिलेगा ," मैंने उत्तर दिया, 'तो सुसमाचार उस चीज़ का उल्लेख कर रहा है जिसकी एक व्यक्ति को आवश्यकता होती है। लेकिन एक भिक्षु के लिए, इसके अलावा, प्रेरित पौलुस के अनुसार जीना उचित है : 'जैसे कि कुछ भी न हो, फिर भी सब कुछ का स्वामी हो।'[175] अर्थात् , एक भिक्षु के पास कुछ भी नहीं होता, लेकिन अपने सद्गुण के कारण, लोग अपनी संपत्ति उसे सौंपते हैं , और वह उसका प्रबंधन कर सकता है। शास्त्र का यह अर्थ नहीं है कि हम भिक्षुओं को अपने लिए धन संचित करना चाहिए!" क्या आप देख सकते हैं कि केवल तर्क के आधार पर कोई व्यक्ति कितनी गलत व्याख्याओं तक पहुँच सकता है ? हमेशा यह ध्यान रखें कि यदि कोई व्यक्ति स्वयं को शुद्ध नहीं करता, यदि उसे दिव्य ज्ञान प्राप्त नहीं होता, तो उसकी व्याख्याएँ केवल पूर्ण भ्रम ही होंगी।

मुझसे एक बार पूछा गया था: "ईश्वर की माता ने टिनोस द्वीप पर चमत्कार क्यों नहीं किया, और इटालियनों ने डॉर्मिशन के पर्व पर क्रूज़र 'एली' को क्यों उड़ा दिया?"[176] हालांकि , इस बुराई को होने देने से ईश्वर की माता ने एक बड़ा चमत्कार किया। 'एली' के विस्फोट ने ग्रीकों में आक्रोश भर दिया। ग्रीक लोगों ने महसूस किया कि इटालियनों के लिए कुछ भी पवित्र नहीं है , और इसलिए 'हुर्रे !' चिल्लाते हुए उन्होंने उन्हें अपनी भूमि से भगा दिया। और अगर इटालियनों ने यह अत्याचार नहीं किया होता, तो इटालियनों की अधर्मी प्रवृत्ति को समझने में असफल होकर, ग्रीक लोग कह सकते थे : 'आखिरकार, वे भी श्रद्धालु लोग हैं ; वे हमारे मित्र हैं। ' अब, हालाँकि , तर्कसंगत सोच वाले लोग आते हैं और कहते हैं : 'तो फिर ईश्वर की माता ने चमत्कार क्यों नहीं किया?' खैर , इस पर कोई क्या कह सकता है ? अन्य पूछते हैं : 'बाइबिल यह क्यों कहती है कि बेबीलोन की भट्ठी की लपटें , जिसमें तीन युवकों को फेंका गया था, , उनतीस कोहनों की ऊँचाई तक पहुँच गईं ?' क्या उन्होंने इसे किसी रूलर से मापा या कुछ और से ?' लेकिन पहले तो लौ की ऊँचाई सात कोहनों तक बढ़ी। फिर, बिना रुके , विभिन्न ज्वलनशील पदार्थ भट्टी में डाले गए ताकि वह सात गुना भड़क उठे। सात गुना सात बयालीस होता है , है ना? लेकिन क्या होगा अगर जो लोग ऐसे सवाल पूछते हैं , उन्हें खुद उसी भट्टी में डाल दिया जाए? इन लोगों में तर्कवाद दिखाई देता है , एक ऐसा तर्कवाद जो अर्थ से रहित है , और जो पूरी तरह से वास्तविकता से परे है। आज के कुछ धर्मशास्त्री उपरोक्त वर्णित जैसी 'समस्याओं ' से स्वयं को चिंतित करते हैं। उदाहरण के लिए, वे पूछते हैं : 'उन राक्षसों का क्या हुआ जो

---

[174] मत्ती 19:29.

[175] 2 कुरिन्थियों 6:10।

[176] 15 अगस्त 1940 को (नए कैलेंडर के अनुसार परमेश्वर की अतिपवित्र माता के निद्रोत्सव के पर्व पर), ग्रीक नौसेना का क्रूज़र 'एली', जो ग्रीक द्वीप टिनोस के बंदरगाह में लंगर डाले हुआ था, एक इतालवी पनडुब्बी द्वारा डुबो दिया गया। इतालवी पनडुब्बी ने 'एली' को उस समय टॉरपीडो किया जब ग्रीक नाविक परम पवित्र माता परमेश्वर को समर्पित समारोहों में भाग लेने के लिए जहाज से उतर रहे थे (टिनोस, ग्रीस में माता परमेश्वर की सबसे पूजनीय चमत्कारी प्रतिमाओं में से एक का घर है)। यह विश्वासघाती कृत्य इटली द्वारा ग्रीस पर युद्ध घोषित करने से ढाई महीने पहले किया गया था। 'एली' के डूबने के बाद, यह महसूस करते हुए कि इटली के साथ युद्ध अवश्यंभावी था, ग्रीकों ने अपने मातृभूमि की रक्षा के लिए गहन तैयारी शुरू कर दी। – अनुवादक की टिप्पणी।

सूअरों के झुंड में प्रवेश कर गए थे और समुद्र में डूब गए थे ?[177] क्या वे बच गए या डूब गए?' लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि ये दुष्टात्मा उस आदमी से बाहर आ गए। यह आपकी क्या चिंता है कि बाद में उनका क्या हुआ ! आपके लिए यह बेहतर होगा कि आप यह सुनिश्चित करें कि आप स्वयं पर किसी दुष्टात्मा का कब्ज़ा न होने दें , और इस बात पर अपना दिमाग़ न खपाएँ कि ये दुष्टात्मा अब कहाँ हैं।

— और कुछ , गेरोना , सुसमाचार को मानव सामान्य बुद्धि के साथ मेल कराने की कोशिश करते हैं। इस सामान्य बुद्धि का उपयोग करके वे सुसमाचार की बारीकी से जांच करते हैं और इसे समझ ही नहीं पाते।

— सुसमाचार को मानवीय सामान्य ज्ञान के साथ मेल करना असंभव है। सुसमाचार के केंद्र में प्रेम है। सामान्य ज्ञान के केंद्र में स्वार्थ है। सुसमाचार कहता है : 'यदि कोई तुम्हें एक मील चलने के लिए मजबूर करता है , तो दो मील चलो।'[178] क्या इसमें कोई सामान्य ज्ञान है ? बल्कि, यह तर्क की हानि को दर्शाता है। इसीलिए जो लोग सुसमाचार को सामान्य ज्ञान के साथ मिलाना चाहते हैं , वे एक गली के अंत में पहुँच जाते हैं। उदाहरण के लिए, कई संगठन हैं जो धर्मार्थ कार्यों में लगे हुए हैं। जब वे सुनते हैं कि कोई दिवालिया हो गया है , गरीबी में आ गया है और उसे पैसों की ज़रूरत है , तो वे कहते हैं : 'हम इस व्यक्ति की मदद करेंगे , लेकिन पहले हम यह सुनिश्चित करेंगे कि उन्हें वास्तव में ज़रूरत है। ' और इस तरह इस संगठन के दो या तीन प्रतिनिधि दिवालिया व्यक्ति के घर यह देखने के लिए जाते हैं कि क्या यह सच है कि उन्हें ज़रूरत है। वे आते हैं और देखते हैं , उदाहरण के लिए, एक शानदार साज-सज्जा वाला बैठक कक्ष। फिर वे कहते हैं : 'वाह, वाह, क्या आराम कुर्सियाँ , क्या साज-सज्जा ! अगर उसके पास ऐसा फर्नीचर है , तो उसे किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। ' और वे उस व्यक्ति को बिना किसी मदद के छोड़ देते हैं। हालाँकि, उन्हें यह एहसास नहीं होता कि उस बेचारी के पास खाने के लिए कुछ भी नहीं है। वे यह नहीं समझते कि किसी के बुरे समय में पड़ जाने का यह मतलब नहीं कि उसे तुरंत अपने कपड़े बदलकर भिखारी की फटी-पुरानी चादरें पहन लेनी चाहिए। और हम कैसे जानें —शायद यह फर्नीचर उसके घर में पीढ़ियों से है और उसे अभी तक इसे बेचने का समय ही नहीं मिला? या शायद किसी ने , उसके परिवार की ज़रूरत के बारे में जानकर, उन्हें यह आराम कुर्सियाँ और कुर्सियाँ उपहार में दी हों ? लोग तर्क और सामान्य ज्ञान के आधार पर निर्णय लेते हैं और फैसला करते हैं , और इसीलिए वे भ्रमित हो जाते हैं , और सुसमाचार उनके जीवन में प्रवेश नहीं करता है। लोग चीजों को सतही तौर पर देखते हैं और इसलिए सब कुछ अपनी तरह से व्याख्या करते हैं।

"बाहरी दिखावट से निर्णय न करो"[179]

— गेरोन्डा , मुझे लगता है कि मेरे निर्णय लेने की क्षमता , मेरी तर्कशीलता और सत्य के बारे में मानवीय धारणाएँ मेरे आध्यात्मिक विकास में बाधा डाल रही हैं।

— हाँ , बिल्कुल। वे आध्यात्मिक विकास में बाधा डालते हैं क्योंकि [उनके कारण] ईश्वर की कृपा चली जाती है। और उसके बाद, व्यक्ति दिव्य सहायता के बिना रह जाता है , गिर जाता है , और पूर्ण विफलता का शिकार हो जाता है। मानवीय निर्णय और न्याय , आमतौर पर, अन्यायपूर्ण होते हैं। ईश्वर की सच्चाई प्रेम , दीर्घ सहनशीलता और सहिष्णुता है। लेकिन आप हर चीज़ की जाँच मानव तर्क से करते हैं। इसी सूक्ष्मजीव से आपकी आध्यात्मिक बीमारी शुरू होती है। इस बीमारी का इलाज अच्छे विचार हैं। जब कोई व्यक्ति दयालुता से सोचता है —अर्थात् , अच्छे , 'धर्मपरायण ' विचार रखता है —तो उसके हृदय की क्षमता बढ़ जाती है। आप बहुत अधिक तर्क का उपयोग करते हैं , और इसलिए आपको अपने विचारों के प्रति बहुत सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आपके तर्क के माध्यम से आप जिन निष्कर्षों पर पहुँचते हैं , वे केवल मानवीय निष्कर्ष हैं। वे न तो आध्यात्मिक हैं और न ही पवित्र।

— गेरोन्डा , मैं बार-बार निर्णय पर क्यों पहुँच जाता हूँ ?

— आपका व्यक्तिगत तर्क आपकी कानूनी शिक्षा है। इसीलिए आप इस तरह से निर्णय लेते हैं। ज्ञान के कुछ क्षेत्र या पेशे अक्सर लोगों में एक सूखी तर्कशीलता को

---

[177] मत्ती 8:32 देखें।
[178] मत्ती 5:41 देखें।
[179] यूहन्ना 7:24।

बढ़ावा देते हैं। तर्कशीलता बुद्धजिीवयिों की एक बीमारी है। इसने उन्हें उनकी हड्डयिों के मज्जे तक प्रभावति कर दयिा है। और इसलएि, यद्यपि आपका एक दलि है , आपकी तर्कशीलता उस पर हावी हो जाती है।

कुछ लोग बहुत तर्कशील होते हैं , और वे स्वार्थी होकर नर्णिय लेते हैं —वे कसिी को भी खुद से श्रेष्ठ नहीं मानते। वे पूर्णता की मांग करते हैं —लेकनि खुद से नहीं , केवल दूसरों से। वे अपनी ही कमजोरी से संतुष्ट रहते हैं , फरि भी दूसरों की नदिा करते हैं। यह आश्चर्यजनक है ! ऐसे लोगों ने अपनी सार्वजनकि छवि खुद बनाई है ; यानी, उन्होंने एक तरह का बाहरी व्यक्तत्वि गढ़ा है —जो अंदर से पाखंड से भरा है। उनमें सादगी का नामो-नशिान तक नहीं है। यूरोपीय और ग्रीक (यहाँ 'ग्रीक ' से मेरा मतलब ऑर्थोडॉक्स भावना से है) के बीच का अंतर ठीक इसी बात में है। आप एक यूरोपीय को समझ नहीं सकते —कि उनसे कब या कैसे संपर्क कयिा जाए। एक नरिंतर "स्वागत है !" — और एक नकली सी मुस्कान। लेकनि एक ग्रीक को देखिए , और सब कुछ तुरंत स्पष्ट हो जाता है। अगर वह खुश है , तो वह इसे छपिाता नहीं है। अगर वह कसिी बात से परेशान है , तो वह भी स्पष्ट होता है। और यह देखकर कि कोई व्यक्ति कैसा महसूस कर रहा है , आप आसानी से उसके साथ संबंध बना सकते हैं।

— जेरोंडा , ऐसा क्यों है कि कुछ लोग दूसरों , उनके कर्मों और दुनयिा में होने वाली हर चीज़ का न्याय करते हैं — और वह भी बहुत जल्दबाज़ी में ?

— ऐसे मामलों में , एक व्यक्ति केवल तर्कशीलता से प्रेरति होता है ; अर्थात् , केवल उसका मस्तष्कि काम कर रहा होता है , और उस काम का परणिाम नर्णिय होता है। अच्छा होगा यदि ईश्वर एक स्क्रूड्राइवर लेकर उन लोगों के मस्तष्कि को थोड़ा 'ढीला' कर दे , जनिके पास यह बहुत अधकि है। जतिना अधकि मन मुक्त होता है , उतना ही व्यक्ति अनुग्रह से भर जाता है। 'मन' से मेरा तात्पर्य मानवीय नर्णिय , स्वार्थ और आत्मवशि्वास से है। हालाँकि , यदि कोई व्यक्ति यह महसूस करते हुए कि उसके नर्णिय गलत हैं , कहता है : 'नर्णिय करने की क्षमता जो मुझमें है , वह सांसारकि है ; उसमें दविय ज्ञान का अभाव है , और इसलएि मैं गलती करूँगा ; परणिामस्वरूप , मुझे इस क्षमता का उपयोग नहीं करना चाहए,' तो ईश्वर तुरंत उन्हें ज्ञान प्रदान करेंगे ; वे ववेक प्राप्त करेंगे और सत्य और असत्य के बीच अंतर करने में सक्षम होंगे।

परीक्षक बाहरी नर्णिय के माध्यम से बुद्धमिान लोगों को रास्ते से भटका देता है। यदि कसिी व्यक्ति में मानवीय स्वभाव है , तो वह मानवीय तरीके से नर्णिय लेता है और अपराध करता है। नर्णिय को दविय होने के लएि, मानवीय स्वभाव का गायब हो जाना आवश्यक है। सांसारकि नर्णिय एक त्रुटपिूर्ण नर्णिय है। कतिनी ही तरह के अन्याय होते हैं ! एक व्यक्ति कतिनी बार पाप में गरिता है ! इसलएि, आत्मा की रक्षा के लएि, अपने कार्यों में लगातार अच्छे वचिारों को शामलि करें।

हर व्यक्ति एक रहस्य है , और आप कैसे जान सकते हैं कि वह कसि तरह का व्यक्ति है ! एक बार, हम पवत्रि पर्वत पर एक कलवि में मसीह के गौरवशाली पुनरुत्थान का जश्न मना रहे थे। दैवीय पूजा के बाद, हम पनीर और एक ईस्टर अंडे के साथ अपना उपवास खोलने के लएि मेज पर बैठे। मेरे बगल में एक भक्षिु बैठा था—एक खच्चर चालक जो लकड़ी ढोने के लएि खच्चरों का इस्तेमाल करता था। मैंने देखा कि वह पनीर और अंडे को एक तरफ कर रहा था। मैंने कहा, 'लो, एक नविाला लो।' "ठीक है , ठीक है ," उसने जवाब दयिा, "मैं उपवास तोड़ता हूँ। " मैंने देखा – वह खा नहीं रहा था। "लो, खाओ," मैंने फरि कहा, "आखरि आज ईस्टर का दनि है !" "मुझे माफ कीजिए, गेरोन्डा ," उसने जवाब दयिा, "मैं उस दनि खाना नहीं खाता जब मैं पवत्रि

संस्कार ग्रहण करता हूँ। मैं आज दोपहर दो बजे अपना उपवास तोड़ूँगा। "वह एक दिन पहले से ही उपवास कर रहा था, और संप्रदाय ग्रहण करने वाले दिन ही उसने दोपहर में खाना खा लिया! क्या आप देख रहे हैं कि उसने श्रद्धा के लिए क्या किया? फिर भी, दूसरे लोग सोच सकते थे कि वह एक साधारण खच्चर चालक से ज्यादा कुछ नहीं था।

मनुष्य एक रहस्य है ! और यदि आपको दूसरों का न्याय करने के लिए मजबूर होना पड़ता है , तो खुद से पूछें : 'क्या मेरा न्याय दिव्य है , या यह पक्षपातपूर्ण है ?' दूसरे शब्दों में , क्या यह स्वार्थ से मुक्त है , या इसमें डूबा हुआ है ? अपने ही न्याय में भी अपने 'स्व ' पर भरोसा न करें। यदि कोई व्यक्ति न्याय करता है , तो उनमें बहुत स्वार्थ होता है। मुझे विभिन्न मामलों पर फैसला सुनाने के लिए मजबूर किया जाता है , और मैं ऐसा करने के लिए विवश हूँ , भले ही मैं न चाहूँ। मैं स्वार्थ या पक्षपात के बिना फैसला सुनाता हूँ , लेकिन , फिर भी, जब मैं बाद में प्रार्थना करने उठता हूँ , तो मुझे वह—खैर , कहिए—मधुरता महसूस नहीं होती जो मुझे उन दिनों में अनुभव होती है जब मैं फैसला नहीं सुनाता। और ऐसा इसलिए नहीं है कि मेरा अंतरात्मा मुझे किसी बात के लिए दोषी ठहराता है —नहीं , [बस] इसलिए कि मैंने एक इंसान के रूप में निर्णय लिया है। और अगर निर्णय गलत हो, या प्रतिवादियों के पक्ष में कोई शमनकारी परिस्थितियाँ हों , या न्यायाधीश यह आकलन करने में मानवीय मानदंडों को लागू करता है कि क्या हो रहा है , तो क्या कहा जा सकता है ? न्याय करना कोई तुच्छ मामला नहीं है। न्याय ईश्वर का काम है। यह कितना भयानक है ! और इस मामले में इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठा व्यक्ति सद्भावनापूर्ण है। मायने यह रखता है कि उनके न्याय का परिणाम क्या हुआ।

बहुत अधिक तर्क की आवश्यकता होती है। बेशक , हर व्यक्ति में तर्क करने की कुछ न कुछ क्षमता होती है , लेकिन दुर्भाग्य से , हम में से अधिकांश इस तर्क को अपने लिए नहीं , बल्कि अपने पड़ोसियों पर लागू करते हैं (ताकि वे किसी भी तरह से दूसरों की नजर में हमसे बेहतर न दिखें)। इस प्रकार हम अपनी तर्कशक्ति को दूसरों पर निर्णय लगाने , उनकी निंदा करने और उनसे बेहतर बनने की मांग करने से कलंकित करते हैं। हमें अपनी मांगें केवल अपने 'स्व ' से करनी चाहिए, जिसमें एक आध्यात्मिक प्रयास को पूरे मन से शुरू करने और अपनी वासनाओं को काटने का संकल्प नहीं है , ताकि हमारी आत्मा मुक्त हो सके और स्वर्ग में उड़ान भर सके।

अध्याय 3.
एक नई पीढ़ी

आत्म -बलिदान की भावना का क्षय

आज, अधिकांश लोग उस आनंद से अनजान हैं जो आत्म -त्याग लाता है। लोगों को कड़ी मेहनत पसंद नहीं है। आलस्य , एक आरामदायक जीवन की इच्छा , और भरपूर खाली समय उनके जीवन में समा गया है। आत्म -त्याग की भावना घट गई है। यदि लोग बिना प्रयास के कुछ प्राप्त कर लेते हैं , जिससे वे आरामदायक जीवन जी सकें , तो वे इसे एक उपलब्धि मानते हैं। यदि वे आसान जीवन प्राप्त करने में विफल रहते हैं तो वे निराश हो जाते हैं। लेकिन यदि वे हर चीज़ को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखें , तो वे इसी स्थिति में भी प्रसन्न होंगे , क्योंकि उस स्थिति में उन्हें एक वीरतापूर्ण कार्य करने का अनुकूल अवसर मिलता है।

आजकल, हर कोई — चाहे छोटा हो या बड़ा — एक आसान जीवन की तलाश में है। आध्यात्मकि लोग न्यूनतम प्रयास से पवत्रिता प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। सांसारकि लोग बनिा काम कएि अधकि से अधकि पैसा कमाने का प्रयास करते हैं। युवा लोग बनिा पढ़े अपनी परीक्षाएं पास करने , और कभी कैफे न छोड़ते हुए डग्रिी प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। और अगर कसिी कैफे में बैठकर ही वशि्ववद्यिालय को फोन करके अपने परीक्षा परणिाम पता करना संभव होता, तो वे बेहद प्रसन्न होते। हाँ , हाँ , बात इस कदर आ चुकी है ! कई युवा मेरे कालीवा में आते हैं और कहते हैं : 'मेरे लएि प्रार्थना करें कि मैं वशि्ववद्यिालय में दाखलिा पा लूँ। ' वे अपनी परीक्षाओं की तैयारी नहीं करते , फरि भी कहते हैं : 'भगवान मेरी मदद कर सकते हैं।मैं उन्हें सलाह देता हूँ , 'तैयार हो जाओ, और प्रार्थना के माध्यम से ईश्वर से मदद माँगो। ' वे हैरानी से पूछते हैं , 'लेकनि क्यों ? क्या ईश्वर बनिा कसिी तैयारी के मेरी मदद नहीं कर सकते ?' तो क्या इसका मतलब यह है कि ईश्वर आपकी आलस्य को आशीर्वाद देंगे ? यह ऐसा नहीं है। ईश्वर तब मदद करेगा जब कोई युवा पढ़ता है और अपनी पूरी कोशशि करता है , लेकनि पढ़ी हुई बात को अपनी याददाश्त में नहीं रख पाता। कुछ युवा जो पढ़ते हैं उसे याद नहीं रख पाते या समझ नहीं पाते , लेकनि फरि भी वे कोशशि करते हैं और कड़ी मेहनत करते हैं। ईश्वर ऐसे मेहनती छात्रों को बहुत होशयिार बनाने में मदद करेगा।

सौभाग्य से , कुछ अपवाद हैं। चल्कदिकी का एक युवा लड़का एक ही समय में तीन संकायों की प्रवेश परीक्षाओं में बैठा और उन सभी में उसे प्रवेश मलि गया![180] इसके अलावा, एक संकाय में उसके प्रवेश परीक्षा के परणिाम सबसे ऊँचे थे , जबकि दूसरे में वह दूसरे स्थान पर रहा। हालाँकि , इसके बावजूद , उस लड़के ने यह तय कयिा कि काम पर जाकर अपने पति का कुछ बोझ कम करना बेहतर होगा, जो परविार का भरण-पोषण करने के लएि खदानों में काम करते थे। इसलएि वह वशि्ववद्यिालय नहीं गया; इसके बजाय उसने नौकरी कर ली और घर में पैसे लाना शुरू कर दयिा। यह व्यक्ति मेरी आत्मा के लएि मरहम है। ऐसे युवकों की खातरि, मैं मरने और धूल में मलि जाने को तैयार हूँ। हालाँकि , ज्यादातर युवा इस दुनयिा के प्रभाव में आ गए हैं और इससे भ्रष्ट और बगिड़ गए हैं। उन्होंने केवल अपने आप में रुचि लेना , केवल अपने बारे में सोचना सीख लयिा है — वे अपने पड़ोसयिों के बारे में ज़रा भी नहीं सोचते। और आप उनकी जतिनी मदद करते हैं , वे उतने ही आलसी हो जाते हैं।

मैं देख सकता हूँ कि आज के युवा हर तरफ़ बखिरे हुए हैं। वे एक चीज़ की बात करते हैं , दूसरी करते हैं , और तीसरी से ऊब चुके होते हैं। लेकनि एक व्यक्ति का दलि कभी थकता या बूढ़ा नहीं होता। और वे ... उनके लएि भकि्षु बनना बहुत मुश्कलि है। शादी करना डरावना है। मजबूत -मजबूत लड़के पवत्रि पहाड़ पर आते हैं , चले जाते हैं , और फरि वापस लौट आते हैं। वे कहते हैं , "आह, लेकनि भकि्षु बनना बहुत मेहनत का काम है। हर रात भोर से पहले उठना। और वह भी सरि्फ एक-दो दनि के लएि नहीं , बल्कि हमेशा !" वे संसार में लौट जाते हैं , लेकनि वहाँ भी उन्हें घर जैसा नहीं लगता। वे कहते हैं , "मैं इस समाज में क्या करूँगा ? अगर मैं शादी करूँ तो कसि तरह के व्यक्ति के साथ अपना भाग्य जोड़ूँगा ? बस झंझट और चंता ही है। " वे एक बार फरि पवत्रि पहाड़ पर लौट आते हैं , लेकनि वहाँ थोड़ी देर रहने के बाद, वे फरि से कहते हैं : "यह मुश्कलि है !"

---

[180] पहले , ग्रीक वशि्ववद्यिालयों में , आवेदक एक साथ कई संकायों के लएि प्रवेश परीक्षा दे सकते थे। अब वे केवल एक ही दे सकते हैं।

आजकल के युवा नई कारों की तरह हैं , जनिके इंजन में ठंड के कारण तेल गाढ़ा हो गया है। इन कारों को स्टार्ट करने के लिए, तेल को गर्म होना पड़ता है — वरना कुछ भी काम नहीं करेगा। बेचारे युवा ! वे मेरे कलवि में मेरे पास आते हैं — सर्फि एक या दो नहीं , बल्कि उनकी एक पूरी भीड़ — और पूछते हैं : 'मुझे क्या करना चाहिए, फादर? मैं अपना समय कैसे व्यतीत करूँ ? मैं उदासी से घरि गया हूँ। " — "मेरे भाई, बस कोई काम ढूंढ लो," मैं कहता हूँ , और जवाब में सुनता हूँ : "मुद्दा यह नहीं है। मेरे पास पैसे हैं। मुझे इस काम की ज़रूरत क्या है ?" — "लेकनि प्रेरति पौलुस ," मैं फरि से कहता हूँ , "लखिते हैं : 'जो कोई काम नहीं करेगा , वह खाएगा भी नहीं। '[181] भले ही तुम्हें पैसों की कोई चंता न हो — खाने के लिए, तुम्हें काम तो करना ही होगा। काम एक व्यक्ति को अपने इंजन में तेल गर्म करने में मदद करता है। काम ही रचनात्मकता है। यह एक व्यक्ति को खुशी देता है और उसके दलि से बोझ, उसकी उदासी को दूर करता है। बस, यही है , मेरे अच्छे दोस्त ! कोई ऐसी नौकरी ढूंढो जसिमें तुम्हें थोड़ा भी आनंद आए, और काम शुरू कर दो। एक बार कोशशि तो करो और तुम देखोगे [कि सब कुछ कैसे बदल जाता है]!"

कुछ लड़के थक जाते हैं , लेकनि वही थकान उनकी ताकत को फरि से लौटा देती है। जवान लड़के मेरी झोपड़ी में आते हैं , आँगन में बैठते हैं और सर्फि बैठने से ही थक जाते हैं। दूसरे लोग, बहुत दयालुता से , बार-बार पूछते रहते हैं : 'मैं आपकी कैसे मदद कर सकता हूँ ? मैं आपके लिए क्या ला सकता हूँ ?' मैं कभी मदद नहीं माँगता। शाम को, मेहमानों के जाने के बाद, मैं एक टॉर्च जलाता हूँ और सब कुछ खुद करता हूँ : मैं लकड़ी लाता हूँ , सर्दयिों में दो चूल्हों में आग लगाता हूँ , और घर और आँगन की सफाई करता हूँ। कई मेहमान गंदगी छोड़ जाते हैं : वे कीचड़ अंदर ले आते हैं और अपने गंदे मोज़े आँगन में इधर-उधर छोड़ देते हैं। लोग मुझे पतले मोज़े भेजते हैं , और मैं उन्हें मेहमानों को दे देता हूँ — वे उन्हें पहन लेते हैं , लेकनि फरि अपने गंदे मोज़े कहीं भी फेंक देते हैं। मैं उन्हें एक नैपकनि भी देता हूँ ताकि वे उन्हें उसमें लपेट सकें , लेकनि वे सब कुछ वैसा ही छोड़ना पसंद करते हैं।

मैंने अपनी ज़िंदगी में तीन बार लोगों से मदद माँगी है। मैंने एक बार एक नौजवान से कहा था: 'मुझे कैरज़ि की दुकान से माचसि के दो डब्बि चाहिए।'[182] मेरे पास पहले से ही चार लाइटर थे , लेकनि मैंने उसे यह सर्फि उसे खुशी देने के लिए बताया। वह खुशी से चूर और हाँफता हुआ दौड़ता हुआ वापस आया, मुझे वे माचसिें लाकर दयिा, और उसकी थकान की जगह नई ताक़त आ गई, क्योंकि उसने त्याग के बाद मलिने वाली खुशी का स्वाद चखा था। इस बीच, दूसरा वहीं बैठा रहा और बस बैठ -बैठ कर थक गया। लोग आनंद का अनुभव करने का प्रयास करते हैं , लेकनि आनंद प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को स्वयं को बलदिान करना पड़ता है। आनंद बलदिान से उत्पन्न होता है। सच्चा आनंद प्रेम से आता है। और जब प्रेम का संवर्धन क होता है , तो व्यक्ति उत्सव मनाता है और आनंदति होता है। स्वार्थ और आत्म -प्रेम व्यक्ति के लिए यातना हैं ; यही उसे पीछे रोकता है।

एक बार, दो युवा अधकिारी पवत्रि पहाड़ पर आए और मुझसे बोले : "हम भक्षिु बनना चाहते हैं। " — "आप ऐसा क्यों करना चाहते हैं ?" मैंने पूछा। "आपको यह इच्छा कब से हुई ?" — "खैर ," उन्होंने जवाब दयिा, "यह इच्छा हमें अभी-अभी हुई है। हम एक दौरे पर पवत्रि पहाड़ पर आए हैं और अब हम हमेशा के लिए यहीं रहने का सोच रहे हैं। वहाँ धर्मनरिपेक्ष दुनयिा में , कौन जाने — शायद एक और युद्ध छड़ि जाए!" — "तुम्हें शर्म नहीं आती!" मैंने कहा। "'शायद

---

[181] 2 थस्सिलुनीकयिों 3:10.

[182] कैरीज़ – माउंट अथोस का प्रशासनकि केंद्र , जहाँ पवत्रि कनिोत, राज्यपाल का कार्यालय , पुलसि थाना, डाकघर, दुकानें आदि स्थति हैं – अनुवादक की टप्पिणी।

एक और युद्ध छड़ि जाए!' और तुम सेना छोड़ोगे कैसे ?" — "वे जवाब देते हैं , 'हम कोई न कोई बहाना ढूंढ लेंगे। ' वहाँ उन्हें क्या मलिेगा ? मानसकि रूप से बीमार होने का नाटक करेंगे या कुछ और सोच लेंगे ... खैर , मैं क्या कह सकता हूँ , वे नश्चिति रूप से कुछ न कुछ ढूंढ ही लेंगे ... मैंने उनसे कहा, 'अगर तुम इतने स्वार्थी कारणों से भकि्षु बन रहे हो, तो तुम शुरू से ही असफल हो।" फरि भी, अन्य लोगों के लिए, लंबे समय से शादी करने और परविार बसाने में कुछ भी बाधा नहीं रही है। लेकनि वे मेरे पास आते हैं और कहते हैं : 'मुझे आखरि शादी क्यों करनी चाहिए? क्या आप सचमुच ऐसे मुश्कलि समय में परविार शुरू कर सकते हैं और बच्चों का पालन-पोषण कर सकते हैं ?' — 'ठीक है ,' मैं कहता हूँ , 'क्या उत्पीड़न के समय में जीवन ठहर गया था? क्या कसिी ने काम नहीं कयिा या शादी नहीं की? शायद तुम बस परविार शुरू करने के लिए बहुत आलसी हो?" — "मैं ," वे जवाब देते हैं , "भकि्षु बनना चाहता हूँ। " — "लेकनि कारण तो तुम्हारी आलसयित है ! क्या तुम सच में एक अच्छे भकि्षु बनोगे ?" क्या आप इसे समझते हैं ? अगर कोई युवती नन बनना चाहती है , यह सोचकर: 'मैं सांसारकि दुनयिा में क्यों रहूँ , शादी क्यों करूँ , बच्चे क्यों पैदा करूँ ? यह एक झंझट है , एक सरिदर्द है। मेरे लिए कन्वेंट जाना बेहतर है। मैं जैसा कहा जाएगा वैसा करूँगी , बनिा कसिी भी जम्मिेदारी के , और अगर कभी डाँटा गया, तो मैं बस अपना सरि और नीचे झुका लूँगी। बस सांसारकि दुनयिा में अपना घर बसाने की कोशशि तो कर के देखो ! जबकि एक कॉन्वेंट में , तुम्हें जो कुछ भी चाहिए वह सब दयिा जाएगा: एक नजिी कोठरी, तैयार भोजन और इसी तरह की अन्य चीजें ..." — तो, अगर कोई युवती इस तरह से सोचती है , तो उसे पता होना चाहिए कि वह शुरू से ही असफल हो चुकी है। क्या यह तुम्हें अजीब लगता है ? हैरान मत हो; ऐसे लोग वाकई में मौजूद हैं। यह जान लो: एक मेहनती व्यक्ति कहीं भी सफल होगा। एक मेहनती गृहस्थ भकि्षु जीवन में सफल होगा, और एक मेहनती भकि्षु — यदि वह गृहस्थ जीवन का मार्ग चुने — तो वह भी सफल होगा।

एक युवक एक मठ में नवसखिया के रूप में गया, लेकनि उसने सरि मुंडवाने से इनकार कर दयिा। मैंने उससे पूछा , 'बेटा , तुम भकि्षु जीवन से क्यों कतरा रहे हो?' उसने जवाब दयिा, 'क्योंकि , भकि्षु का मुंडन मुझे एक सैनकि के हेलमेट की याद दलिाता है !' बस यह सुनिए ! वह भकि्षु की टोपी न पहनने के लिए ही भकि्षु नहीं बनना चाहता था! उसे वह हेलमेट की याद दलिाती थी! लेकनि क्या उसने कभी वह हेलमेट पहना भी था? अगर पहना भी था, तो वह सेना में प्रशकि्षण के दौरान कुछ ही बार रहा होगा — और उस पर भी सवाल उठाया जा सकता है ! और युद्ध में बारूद की गंध सूंघने का मौका उसे कहाँ मलिा होगा! एक हेलमेट , आप देखिए , उसे वही याद आता था! क्या आप समझ रहे हैं कि क्या हो रहा है ? लेकनि उसने संन्यास जीवन के बारे में क्या भूल गया? कृपया मुझे बताएं , कि अगर कोई आदमी अपने संन्यास जीवन की शुरुआत इस तरह से करे तो वह कैसा संन्यासी बनेगा ? अंत में , उस बेचारे का कहीं सरि मुंडवा दयिा गया, लेकनि उसने वह मोटी संन्यासी टोपी कभी नहीं पहनी।

एक बार, दो जवान लड़के मेरे आश्रम में आए, दोनों के बाल लगभग कमर तक लंबे थे। मैं उनके लंबे बाल काटना चाहता था, लेकनि उन्होंने मुझे ऐसा करने नहीं दयिा। मैं कहीं जाने की जल्दी में था, इसलिए मैं उनसे लंबी बातचीत नहीं कर सका — मैंने बस उन्हें कुछ खाने - पीने का सामान दे दयिा। और मेरे आँगन में एक बल्लिी घूम रही थी। उन लंबे बालों वाले लड़कों में से एक ने उसे देख लयिा और पूछा , 'क्या मैं बल्लिी ले जा सकता हूँ ?' मैंने कहा, 'हाँ , ले जाओ।' उसने बल्लिी को उठा लयिा, और मेरे यहाँ से वे इवर्सकी मठ की ओर चल पड़े — जो एक घंटे की पैदल दूरी पर था। बारशि होने लगी, लेकनि वह बल्लिी को कसकर पकड़े हुए मठ पहुँच गया, अतथिि गृह में गया और वहाँ रात बतिाने के लिए कहा। उन्होंने उससे कहा,

'बल्लियों को अंदर आने की अनुमति नहीं है ', और इस तरह वह बारिश में बाहर ही बैठने के लिए छोड़ दिया गया! पूरी रात! अगर उन्होंने उसे सेना में एक घंटे की पहरेदारी के लिए भेजा होता, तो वह कहता, 'ओह नहीं , मैं नहीं कर सकता!' लेकिन एक बल्ली के साथ पूरी रात बाहर बैठना — हाँ , वह यह कर सकता है !..

और एक और को सेना में भर्ती कर लिया गया, लेकिन वह भागकर पवित्र पहाड़ पर आ गया। वह मेरे कलिवा में आया और बोला, 'मैं भिक्षु बनना चाहता हूँ। ' — 'वापस जाओ,' मैंने कहा, 'सेना में , और अपनी की अवधि पूरी करो!' — 'सेना !' उसने जवाब दिया। 'सेना तुम्हारे अपने घर जैसी नहीं होती!' 'बहुत -बहुत धन्यवाद ,' मैंने कहा, 'मुझे यह बताने के लिए तुम होशियार लड़के हो। तो बात यह है ! मुझे पहले इसका एहसास भी नहीं हुआ था! अब मैं दूसरों को भी इसके बारे में बताऊँगा !' इस बीच, वह लड़का अपने परिवार वालों के लिए इस पूरे समय से लापता था। कुछ दिनों बाद, वह फिर से मुझसे मेरी झोपड़ी में मिलने आया। यह फोमिना सप्ताह था, सुबह -सुबह। वह कहता है , "मुझे तुम्हारी ज़रूरत है। " मैं पूछता हूँ , "तुम्हें क्या चाहिए?" "लाइटर्जी के दौरान तुम कहाँ थे ?" "कहीं नहीं ," वह जवाब देता है। मैंने कहा, "आज फोमिना सप्ताह है ; मठों में पूरी रात जागरण था, और तुम कहीं नहीं गए? और तुम भिक्षु बनना चाहते हो! तुमने आखिर रात कहाँ बिताई?" उसने कहा, "मैंने ," "रात एक होटल में बिताई। वहाँ शांति और सुकून है ; मठों में तो सारी रात बहुत शोर-शराबा रहता है !" — "तो फिर," मैंने पूछा , "अब तुम करने का इरादा क्या रखते हो?" — "मैं ," वह कहता है , "सोचता हूँ कि मैं माउंट सिनाई की ओर चल दूँगा , क्योंकि मुझे कठोर, तपस्वी जीवन आकर्षित करता है। " — "एक मिनट रुकिए ," मैंने कहा। मैं अपनी कोठरी में गया, किसी ने मुझे जो ईस्टर केक लाकर दिया था, वह ले आया, और उसके पास वापस गया। "लो," मैंने कहा, "यह लो! यह केक बहुत नरम है —ठीक उस कठोर, तपस्वी जीवन के लिए जिसके तुम इतने उत्सुक हो। इसे लो और जाओ!" आजकल के युवा ऐसे ही होते हैं। उन्हें खुद नहीं पता कि वे क्या चाहते हैं। वे थोड़ी सी भी असुविधा बर्दाश्त नहीं कर सकते। तो फिर, वे खुद को बलिदान कैसे कर पाएंगे ?

मुझे याद है , सेना में , अगर किसी खतरनाक मिशन पर जाने की ज़रूरत होती थी, तो बस यही सुनाई देता था: 'सर, मैं उसकी जगह जाऊँगा ! आखिर वह एक परिवार वाला आदमी है — अगर वह मारा गया, तो उसके बच्चे सड़कों पर आ जाएँगे !' सिपाही कमांडर से किसी और की जगह खतरनाक मिशन पर, मोर्चे पर जाने देने के लिए कहते थे। वे इस बात से खुश थे कि, भले ही वे मारे जाएँ , परिवार का कोई मुखिया बच जाएगा, और उसके बच्चे अनाथ नहीं होंगे। और अब? क्या आपको कभी कोई ऐसा मिलता है जो ऐसा बलिदान करने को तैयार हो? अगर मिलता भी है , तो वह बहुत ही दुर्लभ है। मुझे याद है एक बार जब हमारे पास पानी खत्म हो गया था। कमांडर को नक्शे पर पास में ही एक ऐसी जगह मिली जहाँ पानी था। लेकिन वहाँ विद्रोही छिपे हुए थे। तो उन्होंने कहा: 'पास में ही पानी है , लेकिन वहाँ जाना बहुत खतरनाक है और हमें कोई भी दीया नहीं जलाना चाहिए। कौन कुछ कैन्टीन भरने के लिए स्वेच्छा से जाएगा?' एक सैनिक कूदकर खड़ा हो गया: 'मैं जाता हूँ , कमांडर !' एक और कूदकर बोला: 'मैं !' उसके बाद तीसरा भी। दूसरे शब्दों में , हर किसी ने जाने के लिए स्वेच्छा से हाथ खड़ा कर दिया! बाहर घोर अँधेरा था; बिना किसी रोशनी के , यह भयानक था – यह सोचकर ही रोंगटे खड़े हो जाते थे। यहाँ तक कि कमांडर भी हैरान रह गया: 'तुम सब नहीं जा सकते !' मेरा मतलब यह है कि कोई भी अपने बारे में नहीं सोच रहा था। हम में से किसी ने भी कोई बहाना बनाने की कोशिश नहीं की, जैसे : 'सर, मेरी टांग में दर्द है ,' या 'मुझे सिरदर्द है ,' या 'मैं थका हुआ हूँ। ' हम सब पानी लेने जाना चाहते थे , और हमने इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया कि हमारी जान खतरे में थी।

आज का माहौल उदासीनता का है। साहस और आत्म -बलदिान पूरी तरह से अनुपस्थति हैं। आज की खामयिों भरी सोच के साथ, लोगों ने हर चीज़ को मापने की एक अलग प्रणाली अपना ली है। और इसे इस तरह से देखें : अतीत में , लोग स्वेच्छा से सेना में शामलि होते थे , लेकनि अब, सेवा नहीं करना चाहने पर, वे यह बताने वाला एक मेडकिल सर्टफिकिेट प्राप्त कर लेते हैं कि वे मानसकि रूप से बीमार हैं। वे सेना में शामलि होने से बचने के लिए हर संभव कोशशि करते हैं। क्या पहले कभी ऐसा कुछ हुआ है ? हमारी सेना में एक युवा लेफ्टनिेंट था, सर्फि तेईस साल का, लेकनि वह कतिना शानदार लड़का था! एक दनि उनके पतिा, जो एक सेवानवृित्त अधकिारी थे , ने उन्हें फोन कयिा और कहा कि उनका इरादा कसिी से कहने का है कि उस लड़के को मोर्चे से पीछे भेज दयिा जाए। जब उनके पतिा ने यह बात कही तो उस लेफ्टनिेंट ने कतिनी चीख लगाई! "पापा, आपको यह कहने की हम्मित कैसे हुई ? कायर ही पीछे बैठते हैं !" उस आदमी में इतनी असाधारण ईमानदारी, सच्चाई और साहस था कि वह हद से भी बढ़ जाता था — वह दूसरों से आगे बढ़कर हमले में कूद पड़ता था। उसकी ओवरकोट गोलयिों से छलनी हो गई थी, फरि भी वह बच गया। और जब उसे रज़िर्व में भेजा गया, तो वह उस ओवरकोट को अपने साथ एक यादगार के तौर पर ले गया।

असमझदारी भरा [माता-पतिा का] प्यार बच्चों को नकिम्मा बना देता है

मैंने देखा है कि आजकल के बच्चे , खासकर जो वशि्ववद्यिालय में पढ़ने जाते हैं , घर पर रहते हुए ही पहले से ही पटरी से उतर रहे हैं। हालांकि वे शुरुआत में अच्छे बच्चे होते हैं , लेकनि अंततः वे बेकार बन जाते हैं। वे कसिी भी बात पर दोबारा वचिार नहीं करते ; उनमें एक तरह की नर्मिमता होती है। वे अपने ही माता-पतिा द्वारा बर्बाद और बगिड़ जाते हैं , जो स्वयं कठनि समय से गुज़रे हैं और अब अपने बच्चों को कसिी भी तरह की कमी से बचाना चाहते हैं। माता-पतिा अपने बच्चों में ईश्वर के प्रति प्रेम नहीं भरते , ताकि वे अभावों में आनंद पा सकें। यह स्पष्ट है कि माता-पतिा यह सब सर्वोत्तम इरादों से करते हैं। हाँ , बच्चों को बेमतलब की कमी का सामना कराना बर्बरता है। लेकनि बच्चों में एक संन्यासी मानसकिता वकिसति करने में मदद करना—ताकि वे बाद में कसिी भी तरह की कमी का अनुभव करने में आनंद पा सकें —एक बहुत अच्छी बात है। जबकि अब, अपनी दयालुता —उनकी गलत सलाह वाली दयालुता — के कारण माता-पतिा खुद अपने छोटे बच्चों को सुस्ती की स्थति में धकेल रहे हैं। माता-पतिा अपने बच्चों को सब कुछ थाली में परोसकर उनके हाथों में दे देते हैं ; वे उनके लिए पानी तक ढाल देते हैं। वे उन्हें इसकी आदत डाल देते हैं। वे ऐसा इसलिए करते हैं ताकि बच्चे बनिा कसिी वचिलन के अपना होमवर्क कर सकें , लेकनि ऐसा करने से वे उन्हें — लड़के और लड़कयिों दोनों को — कामचोर बना देते हैं। क्योंकि बाद में , बच्चे हर समय सब कुछ परोसा हुआ चाहते हैं , न कि सर्फि़ जब वे अपना होमवर्क कर रहे हों। और यह बुराई माताओं से ही शुरू होती है : 'पढ़ो , मेरे बेटे , पढ़ो ! और मैं तुम्हारे मोज़े ले आती हूँ , मैं तुम्हारे पैर धो देती हूँ !' कुछ मीठा खाओ, एक कप कॉफी लो!" बच्चे कोई काम नहीं करते और इसलिए उन्हें यह एहसास ही नहीं होता कि उनकी माँ उनकी देखभाल करते हुए कतिनी थकी हुई हैं। और फरि यह सब शुरू हो जाता है : डस्पिोजेबल प्लेटें , डस्पिोजेबल कपड़े , [पज़्जिा की जगहें , मैकडॉनल्ड्स] — वे पज़्जिा का एक स्लाइस भी कागज में नहीं लपेट सकते ! और इस तरह बच्चे ऐसे लोग बनकर बड़े होते हैं जो पूरी तरह से बेकार होते हैं। फरि जीवन ही उनके लिए एक बोझ बन जाता है। जूते का फीता खुल जाता है : "मम्मी , मेरा फीता बांध दो!" और जब तक मम्मी उनके लिए इसे नहीं बांध देती , बच्चा खुले फीते के साथ घूमेगा और उस पर पैर रखेगा। ऐसे बच्चों से हम कसि तरह की सफलता की उम्मीद कर सकते हैं ? वे न तो पारविारकि जीवन के लिए

उपयुक्त हैं और न ही संन्यासी जीवन के लिए। इसीलिए मैं माताओं को सलाह देती हूँ : 'अपने बच्चों को दिन भर पढ़ने न दें। आखिरकार, वे बस पढ़ते ही रहते हैं और चीजों पर ज़्यादा सोचते हैं। उन्हें पंद्रह मिनट या आधे घंटे के लिए पढ़ाई से ब्रेक लेने दें — और कुछ घर का काम करने दें। इस तरह, उनका दिमाग कम से कम थोड़ा सा तो साफ हो जाएगा, और सामान्य स्थिति में लौट आएगा।"

आज के युवाओं की यह बुरी आदत मठ जीवन में भी घुस आई है। और अब आप मठ के कार्यालयों में सात तक भिक्षु -सचिव बैठे हुए देखते हैं — सभी युवा और शिक्षित — जबकि एक बुज़ुर्ग भिक्षु जो इस पद पर रहा करते थे , उनके बगल में बैठे होते हैं। अतीत में , मठों में केवल एक ही सचिव हुआ करता था। उनकी शिक्षा अक्सर माध्यमिक विद्यालय के दो साल तक ही सीमित होती थी, फिर भी वह अकेले ही सारा काम संभाल लेता था। लेकिन अब वे सात हैं , और वे सभी काम में इतने डूबे रहते हैं कि उन्हें मठ के नियमों का पालन करने का भी समय नहीं मिलता! फिर भी वे पुराने सचिव को जाने भी नहीं देते ; उसे उनके साथ बैठकर उनकी मदद करनी पड़ती है !..

अंधकार की शक्तियाँ युवाओं को बुराई की ओर ले जा रही हैं

आज, ये दुर्भाग्यपूर्ण बच्चे विभिन्न सिद्धांतों से भ्रष्ट हो रहे हैं। इसीलिए वे इतने उत्तेजित , इतने भ्रमित हैं। एक बच्चा एक काम करना चाहता है , लेकिन अंत में दूसरा कर बैठता है। वह एक रास्ते पर जाना चाहता है , लेकिन हमारे युग की भावना उसे दूसरे रास्ते पर ले जाती है। अंधकार की शक्तियों ने एक भयानक प्रचार अभियान छेड़ दिया है ; यही वे हैं जो उन युवाओं को, जिनमें सही निर्णय की क्षमता नहीं है , बुराई की ओर ले जाती हैं। कुछ स्कूल शिक्षक बच्चों से कहते हैं : 'स्वतंत्र व्यक्ति बनने के लिए, अपने माता-पिता का सम्मान न करो; उनकी आज्ञा का पालन न करो।' इस तरह, वे बच्चों की आत्मा को भ्रष्ट करते हैं। परिणामस्वरूप , बच्चे अपने माता-पिता और अपने शिक्षकों दोनों की अवज्ञा करते हैं। और उनकी कोई गलती नहीं है , क्योंकि उनका मानना है कि उन्हें ठीक इसी तरह व्यवहार करना चाहिए। राज्य इस में उनका समर्थन करता है ; उन्हें इस दिशा में धकेला जा रहा है। और जो लोग न तो अपने देश की परवाह करते हैं और न ही अपने परिवार की—जिनके लिए कुछ भी पवित्र नहीं है —वे अपने मकसद को पूरा करने के लिए ऐसे युवाओं का शोषण करते हैं। इस सब ने आज के युवाओं पर बहुत बुराई ला दी है। बहुत सारी बुराई ! यह अब उस बिंदु पर पहुँच गया है जहाँ युवा लोग सींग वाले शैतान को अपना नेता मानते हैं। शैतान की पूजा बहुत व्यापक हो गई है। कुछ डिस्को में , वे पूरी रात गाते हैं : "शैतान , हम तुम्हारी पूजा करते हैं ! हम मसीह को नहीं चाहते , तुम हमें सब कुछ दो!" कितना भयानक! क्या आप समझते हैं कि वह आप जैसे बेचारों को क्या देता है , और आपसे क्या छीन लेता है !..

यहाँ तक कि छोटे बच्चे भी पहले से ही कड़वे हो चुके हैं — कॉफ़ी और सिगरेट से। क्या आप उनके चेहरों पर एक दमकती हुई नज़र , ईश्वर की कृपा देख सकते हैं ? ओह, वह वास्तुकार कितना सही था जब उसने उन युवकों के एक समूह से कहा जिन्हें वह पवित्र पर्वत पर लाया था: 'हमारी आँखें एक मृत मछली की आँखों जैसी हैं। ' यह वास्तुकार अठारह से पच्चीस साल की उम्र के लड़कों के एक समूह के साथ अथोस आया था — उनमें लगभग दस थे। वह खुद कुछ समय पहले ही ईश्वर की ओर मुड़ चुका था, और इसलिए उसे उन युवाओं पर तरस आया जो विलासिता में जी रहे थे। उसने इन कुछ दुर्भाग्यशाली आत्माओं को अपने करीब खींचा था, उन्हें पवित्र पर्वत पर आने के लिए मनाया था, और खुद उनके सफर का खर्च उठाया था। वे

मेरे कालीवा की ओर जा रहे थे , और मैं भी संयोग से कहीं जा रहा था, इसलिए रास्ते में हमारी मुलाकात हो गई। मैंने उन्हें बताया कि मैं जा रहा हूँ , लेकिन सुझाव दिया कि हम वहीं जहाँ मिले थे , एक पल के लिए बैठ जाएँ। जैसे ही हम बैठे , युवाओं का एक और समूह दिखाई दिया, जो मेरे कालीवा की ओर जा रहा था। वे अफोनिया स्कूल के छात्र थे।[183] "बैठ जाओ," मैंने कहा, "और हमारे साथ शामिल हो जाओ।" वे भी बैठ गए। तभी वास्तुकार ने अपने छात्रों से कहा: "क्या तुम्हें कुछ ध्यान नहीं आता?" वे हैरान थे। "चलो," उसने उनसे कहा, "पहले एक-दूसरे के चेहरे देखो , और फिर इन बच्चों के चेहरे देखो। देखो उनकी आँखें कैसे चमक रही हैं ! और हमारी अपनी आँखों को देखो — वे तो एक मरे हुए मछली की आँखों जैसी हैं। " और यह सच था! जब मैंने ध्यान से देखा , तो मुझे एहसास हुआ कि उसने बिल्कुल सही कहा था: उनकी आँखें एक मरे हुए मछली की आँखों जैसी थीं। धुंधली , अस्वाभाविक ... लेकिन अफोनियादा के बच्चों की आँखें चमक रही थीं ! आखिरकार, अफोनियाडा में , शिष्य श्रद्धापूर्वक झुकते हैं और दैवीय सेवाओं में भाग लेते हैं। आँखें आत्मा का दर्पण होती हैं। इसीलिए मसीह ने कहा, 'आँख शरीर का दीपक है। '[184] कितने ही युवा पवित्र पहाड़ या अन्य मठों में आते हैं , भिक्षु बन जाते हैं , और, इस तथ्य के बावजूद कि मिठवासी जीवन, कह सकते हैं , कोई गुलाबों का बिस्तर नहीं है , वे इतनी खुशी से भर जाते हैं कि उनके चेहरे पर प्रकाश झलकता है। जबकि धर्मनिरपेक्ष दुनिया में , युवाओं के पास वह सब कुछ है जिसकी वे कामना कर सकते हैं , फिर भी वे पीड़ित हैं , नरकीय पीड़ा झेल रहे हैं।

हमारे चारों ओर विभिन्न दिशाओं से हवाएँ बहती हैं। पूर्व से — हिंदू धर्म और अन्य गूढ़ धर्म ; उत्तर से — साम्यवाद ; पश्चिम से — विभिन्न शिक्षाओं का एक पूरा समूह ; और दक्षिण से , अफ्रीकियों से — जादू -टोना, तंत्र -मंत्र और अन्य कई विनाशकारी हवाएँ। एक बार, इन हवाओं से त्रस्त एक युवा लड़का मेरे कालीवा में आया। मुझे एहसास हुआ कि उसकी माँ की प्रार्थनाओं ने ही उसे मेरे पास लाया था। हमने काफी देर तक बात की, और हमारी बातचीत के अंत में मैंने उससे कहा: 'सुनो , लड़के , किसी कन्फेशनर (पाप-स्वीकार करने वाले पादरी) को ढूंढो और पाप-स्वीकार करो। फिर उससे कहो कि वह तुम्हें पवित्र क्रिस्म (पवित्र तेल) से अभिषेक करे। यह तुम्हारी अब मदद करेगा , जब तुम अपने आध्यात्मिक जीवन में अपने पहले कदम रख रहे हो। तुम्हें पवित्र क्रिस्म से अभिषेक किया जाना चाहिए, क्योंकि तुमने मसीह का त्याग किया है। ' जब मैं उसे यह कह रहा था, तो वह बेचारा लड़का रो रहा था। 'मेरे लिए प्रार्थना करें , फादर,' उसने मुझसे विनती की, 'क्योंकि मैं खुद को इस दलदल से बाहर नहीं निकाल पा रहा हूँ। मेरा ब्रेनवॉश कर दिया गया है। मुझे एहसास है कि मेरी माँ की प्रार्थनाओं ने ही मुझे यहाँ लाया है। " एक माँ की प्रार्थनाएँ कितनी शक्तिशाली होती हैं ! बेचारे बच्चे ! वे इन सभी शिक्षाओं के जाल में फंस जाते हैं और किसी भी काम के लायक नहीं रह जाते। फिर उन पर डर और आंतरिक कलह हावी हो जाता है , और वे नशे और इसी तरह की चीजों में राहत तलाशते हैं। एक खाई से दूसरी खाई में। ईश्वर अपना हाथ बढ़ाए [और इस बुराई को रोके]।

— गेरोन्डा , क्या इन दुर्भाग्यपूर्ण आत्माओं को यह बताने का कोई फायदा है कि ऐसी शिक्षाएँ शैतानी हैं ?

---

[183] पैर की टिप्पणी 57 देखें।

[184] लूका 11:34.

— बलि्कुल है ! नशि्चति रूप से। लेकनि हमें उनके साथ इस बारे में कोमलता से बात करनी चाहए।

— और ऐसे युवा मसीह को कैसे जान सकते हैं ?

— वे मसीह को कैसे जान सकते हैं , यदि उन्होंने ऑर्थोडॉक्सी को जाने बनि ही, वे भारत की यात्रा करते हैं , वहाँ तरह-तरह के गुरुओं के पास जाते हैं , दो-तीन साल उनके साथ रहते हैं , वभिन्नि प्रकार की जादू -टोने से पागल हो जाते हैं , और फरि, वहाँ रहते हुए , यह सीखते हैं कि ऑर्थोडॉक्सी एक रहस्यमयी , आध्यात्मकि जीवन प्रदान करती है , और ई , अकल्पति प्रकाश को देखने , उच्चतम आध्यात्मकि अवस्थाओं का अनुभव करने और इसी तरह की इच्छाओं के साथ यहाँ आते हैं ? और अगर आप उनसे पूछें , 'आपने आखरिी बार पवत्रि सहभागति (Holy Communion) कब ग्रहण की थी?'—वे जवाब देते हैं , 'मुझे ठीक से याद नहीं ; शायद जब मैं छोटा था तो मेरी माँ ने मुझे सहभागति दी थी।'—'क्या आप कभी पापस्वीकृति (confession) के लिए गए हैं ?'—'यह सवाल मुझे दलिचस्प नहीं लगता।' लेकनि क्या वास्तव में इससे कुछ अच्छा होने की उम्मीद की जा सकती है ? वे ऑर्थोडॉक्सी के बारे में बलि्कुल कुछ नहीं जानते।

— गेरोन्डा , लेकनि हम उनकी मदद कैसे कर सकते हैं ?

— जब वे कह चुके हों कि 'चर्च का जमाना बीत गया है ', तो उनकी मदद क्या कर सकती है ? जैसे ही आप कसिी से ऐसा कुछ सुनते हैं , यह तुरंत स्पष्ट हो जाता है कि आप उनके साथ कसि तरह की समझ तक पहुँच सकते हैं ! हालाँकि , जो युवा अच्छी सोच रखते हैं , वे मदद स्वीकार करते हैं और चर्च के करीब आते हैं।

'बच्चों पर हाथ उठाने की हमि्मत मत करना!'

— जेरोंडा , उन छोटे बच्चों का क्या होगा जो अनुशासन के बनि बड़े होते हैं ?

— उनके मामले में कुछ वशिष परस्थितियिाँ हैं। जब उनके माता-पति बच्चे थे , तब उन्हें अनुशासन का उद्देश्य समझ में नहीं आया, और इसलिए अब वे अपने बच्चों को पूरी छूट दे देते हैं , जसिसे वे छोटे -छोटे गुंडे बन जाते हैं। आप उन्हें एक बात कहिए — वे आपको पाँच बातें सुना देंगे , और वह भी इतनी नर्लिज्जता से ! ऐसे बच्चे अपराधी भी बन सकते हैं। आजकल, बच्चों को पूरी तरह से आज़ाद छोड़ दयिा गया है। "आज़ादी !" "बच्चों पर हाथ उठाने की हमि्मत मत करना!" और बच्चे खुशी से झूम उठे हैं : वे कहते हैं , "ऐसी राजनीतकि व्यवस्था और कहाँ मलिेगी ?" दूसरे शब्दों में , कुछ लोग बच्चों को ऐसे बागी बनाना चाहते हैं जो न तो अपने माता-पति पर और न ही अपने शकि्षकों पर नर्भिर रहना चाहते हैं , और न ही कसिी की सुनना चाहते हैं। यह कुछ लोगों के हाथों में खेलता है ; ये वद्रिोही बच्चे उनकी योजनाओं को अंजाम देने में उनकी मदद करेंगे। आखरिकार, अगर बच्चों को [अब] वद्रिोही नहीं बनाया गया, तो आप बाद में उन्हें सब कुछ तबाह करने के लिए कैसे मजबूर करेंगे ? और अब आप देख सकते हैं कि कैसे ये बेचारे बच्चे पहले से ही लगभग उन्मत्त हो चुके हैं।

यदि आध्यात्मकि जीवन में स्वतंत्रता का सही उपयोग नहीं कयिा जाता है , तो सांसारकि जीवन में इसका उपयोग कैसे कयिा जा सकता है ? आप ऐसी स्वतंत्रता का क्या करेंगे ? ऐसी स्वतंत्रता एक आपदा है। इसीलिए आज हम जो देख रहे हैं वह राज्य के साथ हो रहा है। क्या लोग आज उन्हें दी गई स्वतंत्रता का उचति उपयोग कर सकते हैं ? स्वतंत्रता , यदि लोग इसका उपयोग सकारात्मक वकिास के लिए करने में असमर्थ हैं , तो यह एक आपदा है। सांसारकि वकिास, इस पापी स्वतंत्रता के साथ मलिकर, मानव जाति पर आध्यात्मकि दासता लाया है। आध्यात्मकि

स्वतंत्रता ईश्वर की इच्छा के प्रति आध्यात्मिक समर्पण है। लेकिन देखिए : आज्ञाकारिता ही स्वतंत्रता है ; फिर भी शत्रु , अपनी दुर्भावना में , इसे दासता के रूप में चित्रित करता है , और बच्चे —विशेषकर वे जो हमारे युग की विद्रोही भावना से विषाक्त हैं —विद्रोह करने लगते हैं। यह स्वाभाविक ही है , क्योंकि वे भी बीसवीं सदी की विभिन्न प्रणालियों से थक चुके हैं , जो दुर्भाग्य से , प्रकृति —ईश्वर की अद्भुत दुनिया —और लोगों —ईश्वर की रचनाओं —दोनों को लगातार विरूपित कर रही हैं। ये प्रणालियाँ लोगों की आत्माओं को चिंता से भर देती हैं और उन्हें आनंद से दूर ले जाकर ईश्वर से अलग कर देती हैं।

क्या आप जानते हैं कि जब हमें सेना से रिज़र्व में छुट्टी दी गई तो हमें क्या -क्या झेलना पड़ा ? अगर आज के युवा हमारी जगह होते , तो वे सब कुछ तहस-नहस कर देते ! यह 1950 की बात है। गृहयुद्ध अभी-अभी खत्म हुआ था। हम, विभिन्न भर्ती बैचों के सैनिक , एक साथ रिज़र्व में छुट्टी पा गए। एक ने साढ़े चार साल लड़ाई लड़ी थी, दूसरे ने चार साल, और तीसरे ने साढ़े तीन साल। और ज़रा सोचिए: युद्ध में इतनी पीड़ा झेलने के बाद, जब हम लारिसा[185] में पहुँचे और विमोचन केंद्रों पर पहुँचे , तो हमने पाया कि वे पहले से ही अन्य मोर्चे के दिग्गजों से भरे हुए थे। हमने होटलों में अपनी किस्मत आजमाई, लेकिन वहाँ भी उन्होंने हमें ठुकरा दिया। उन्होंने कहा, 'सैनिकों , हम आपको कैसे अंदर ले सकते हैं ! वे सारी कंबलें गंदी कर देंगे। ' फिर भी हमने रात के ठहरने के लिए पैसे देने की पेशकश की। मार्च का महीना था, और ठंड थी। सौभाग्य से , एक अधिकारी हमारी मदद के लिए आगे आए—भगवान उन्हें स्वस्थ रखें ! ऊ , रेलवे स्टेशन गए, यह पता लगाया कि ट्रेनें कब आती हैं , कब जाती हैं , और कब उनका मूवमेंट होता है , उन्होंने रेलवे अधिकारियों से बातचीत की, और उन्होंने हमें खाली डिब्बों में रात बिताने की इजाज़त दे दी। "रात के दौरान," अधिकारी ने हमें चेतावनी दी, "डिब्बे थोड़ा इधर-उधर हिलेंगे , आगे -पीछे सरकेंगे , लेकिन चिंता मत करो—वे कल सुबह एक निश्चित समय तक नहीं जाएँगे। " तो हमने पूरी रात आगे -पीछे सरकते हुए बिताई।

आखिरकार हम थेस्सालोनिकी पहुँचे। जो लोग पास में रहते थे , वे घर चले गए। जहाँ तक हमारी बात है , हम वितरण केंद्रों की ओर लौटे , लेकिन वे खचाखच भरे हुए थे। फिर से होटलों की ओर गए — और फिर से कोई फायदा नहीं हुआ। मुझे याद है कि मैंने एक होटल में पूछा था: 'बस मुझे रात भर बैठने के लिए एक कुर्सी दे दो, और मैं तुम्हें बिस्तर के दाम का दोगुना दे दूँगा !' — 'नहीं ,' उन्होंने जवाब दिया, 'हम नहीं कर सकते। ' उन्हें डर था कि कोई रात में उनके होटल में एक कुर्सी पर बैठे सैनिक को देख लेगा और शिकायत कर देगा। तो, पूरी रात सड़क पर अपने पैरों पर खड़े रहो और दीवार से सट जाओ! और इस तरह वे बेचारे सैनिक होटलों के पास, फुटपाथ पर, दीवारों से सटकर खड़े रहे। हर फुटपाथ पर सैनिक , जैसे परेड में हों। समझ रहे हैं ? अगर आज के युवा होते , तो वे लारिसा—और साथ में थेस्साली और मैसेडोनिया की भी मुखबिरी कर देते ![186] आखिरकार, आज भी बिना किसी मुश्किल के देखिए वे क्या कर रहे हैं ! वे तबाही मचा रहे हैं , स्कूलों और विश्ववविद्यालयों पर कब्जा कर रहे हैं। लेकिन उस समय उन गरीब लड़कों के दिमाग में यह बात कभी आई भी नहीं। बेशक , वे कटु थे , लेकिन उन्होंने कभी बदला लेने या किसी को नुकसान पहुँचाने का विचार भी नहीं किया। और फिर भी, युद्ध के दौरान, बर्फ में , उन्होंने कितनी पीड़ा झेली ! वे बेचारे लोग युद्ध में अपंग हो गए — क्या आत्म -बलिदान! — और अंत में उन्हें खुले आसमान तले एक रात बिताने का 'इनाम' मिला। एक आखिरी 'धन्यवाद !' तो मैं खुद को यह तुलना करते हुए पाता हूँ कि उस समय के युवा कैसे थे और अब वे कैसे हैं। पचास साल भी नहीं हुए हैं , और लोग इतने बदल गए हैं !..

आज के युवा एक चंचल जवान सांड की तरह हैं , जो चरागाह में चरते समय बँधा होता है। वह लगातार रस्सी खींचता रहता है , फिर उस खंभे को उखाड़ देता है जिससे वह बँधा होता है , दौड़ पड़ता है , लेकिन किसी चीज़ में उलझ जाता है , पूरी तरह उलझ जाता है , और अंततः जंगली जानवरों द्वारा खा लिया जाता है। आपको उन्हें काबू में रखना चाहिए और जब वे छोटे हों तो उन्हें अनुशासित रखना चाहिए। उदाहरण के लिए, आप एक छोटे बच्चे को बाड़ पर चढ़ते हुए देखते हैं और महसूस करते हैं कि वह गिर सकता है और खुद को चोट पहुँचा सकता है। आप उन पर चिल्लाते हैं : 'नहीं , नहीं !' — और साथ में सिर पर एक थप्पड़ भी रसीद कर देते हैं। अगली बार, बच्चा इस बात के बारे में नहीं सोचेगा कि वह खुद को मार सकता है , लेकिन उसे यह याद रहेगा कि उसे सिर पर एक और थप्पड़ लग सकता है , और वह अधिक सावधानी से व्यवहार करेगा। लेकिन आजकल, स्कूलों में शारीरिक दंड नहीं है , और न ही सेना में सैनिकों को लाठी से पीटा जाता है। इसीलिए युवा अपने माता-पिता और जनता को सताते हैं। पुराने दिनों में , प्रशिक्षण के दौरान कमांडर जितने सख्त होते थे , युद्ध में सैनिक उतनी ही अधिक बहादुरी दिखाते थे।

एक युवा को एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है। उसे इस मार्गदर्शक से परामर्श करना चाहिए और उसका पालन करना चाहिए — ताकि वह आध्यात्मिक आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ सके , खतरों , भय और बंद रास्तों

---

[185] मध्य ग्रीस का एक शहर। – अनुवादक की टिप्पणी।

[186] ग्रीस के क्षेत्र। – अनुवादक की टिप्पणी।

से बच सके। कोई व्यक्ति जितना बूढ़ा होता है, उतना ही अधिक समय तक वह जीता है, उतना ही अधिक वह अनुभव से समृद्ध होता है — अपने और दूसरों के अनुभव से। एक युवा में इस अनुभव की कमी होती है। एक वयस्क अपने अनुभव और दूसरों से लिए गए अनुभव, दोनों का उपयोग एक अनुभवहीन युवक को कुछ गलतियाँ करने से बचने में मदद करने के लिए करता है। यदि युवक अनुभवी लोगों की बात नहीं सुनता है, तो वह खुद पर प्रयोग करता है; लेकिन अपने मार्गदर्शकों की बात मानकर, वह ज्ञान में बढ़ता है।

एक बार, एक ईसाई भाईचारे के कुछ लड़के मेरे आश्रम में आए।[187] बड़ी आत्म-विश्वास के साथ, वे गला बैठने तक चिल्लाए: 'हमें किसी की ज़रूरत नहीं है! हम अपना रास्ता खुद खोज लेंगे!' कौन जाने वे ऐसे क्यों हो गए हैं? ऐसा लगता है कि वे बहुत अधिक दबाव में थे, और इसीलिए वे विद्रोह कर बैठे। वे जाने की तैयारी कर रहे थे, तो उन्होंने मुझसे पूछा कि आइवर्सकी मठ तक जाने वाली मुख्य सड़क कैसे मिलेगी। "हमें कहाँ जाना चाहिए?" उन्होंने पूछा। "ठीक है, भाइयो," मैंने उत्तर दिया, "तुमने कहा था कि तुम अपना रास्ता खुद खोज लोगे, तुम्हें किसी की ज़रूरत नहीं है। क्या यही बात आप अभी कह रहे थे? खैर, यह सड़क तो ठीक है: भले ही आप इस पर रास्ता भूल जाएं, थोड़ी मशक्कत के बाद आपको थोड़ा आगे कोई और मिल जाएगा, और वह आपको वापस इस पर आने का रास्ता बता देगा। लेकिन बिना मार्गदर्शक के, तुम खुद दूसरा मार्ग कैसे खोज पाओगे — वह जो स्वर्ग की ओर जाता है, जो स्वर्ग तक जाता है?" तब उनमें से एक ने कहा: "भाइयों, ऐसा लगता है कि पुजारी शायद सही है?"

युवाओं को पवित्रता की परीक्षा पास करनी होती है

आज कुछ छात्राएँ आईं और मुझसे कहा: 'कृपया प्रार्थना करें, गेरोन्डा, कि हम अपनी परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाएँ।' और मैंने जवाब दिया: 'मैं प्रार्थना करूँगा कि आप पवित्रता की परीक्षा में उत्तीर्ण हों। वह सबसे आवश्यक चीज़ है। उसके बाद, बाकी सब अपने आप ठीक हो जाएगा।' क्या मैंने उनसे ऐसा कहना सही किया, या नहीं? हाँ, अगर आज के युवाओं के चेहरों पर संकोच और पवित्रता स्पष्ट है, तो यह एक बहुत अच्छी बात है। एक वास्तव में बहुत बड़ी बात!

कभी-कभी कितनी दयनीय, टूटी-फूटी युवतियाँ मेरे पास आती हैं! वे जवान लड़कों के साथ अनियंत्रित पाप में जीती हैं, यह महसूस किए बिना कि जिन उद्देश्यों का वे पुरुष पीछा करते हैं वे अशुद्ध हैं। और इस तरह, ये दुर्भाग्यपूर्ण लड़कियाँ टूट जाती हैं। 'मुझे क्या करना चाहिए, फादर?' वे मुझसे पूछती हैं। मैं उनसे जवाब में कहता हूँ, 'एक शराबखाने का मालिक, भले ही वह एक शराबी के साथ घुल-मिलकर रहे, अपनी बेटी का विवाह उससे कभी नहीं करेगा। इन पापी रिश्तों को समाप्त कर दो। यदि जिनके साथ तुम पाप कर रहे हो, वे वास्तव में तुमसे प्यार करते हैं, तो वे इसे उचित रूप से सराहेंगे। हालाँकि, यदि वे तुम्हें छोड़ देते हैं, तो इसका मतलब होगा कि वे तुमसे प्यार नहीं करते, और तुमने अपना समय बर्बाद नहीं किया होगा।"

बुराई इस कम उम्र का फायदा उठाती है — एक ऐसा समय जब शरीर भी विद्रोह करता है — और इस कठिन दौर से गुजर रहे युवाओं को भटकाने की कोशिश करती है। उनका मन अभी भी अपरिपक्व होता है, वे बहुत अनुभवहीन होते हैं, और उनके पास कोई भी आध्यात्मिक संचित शक्ति नहीं होती। इसलिए, इस महत्वपूर्ण उम्र में एक युवा व्यक्ति को यह एहसास होना चाहिए कि उसे लगातार अपने बड़ों की सलाह की आवश्यकता है। उन्हें इस सलाह की आवश्यकता है ताकि वे

---

[187] 20वीं सदी के दूसरे भाग में, यूनानी चर्च पर तथाकथित चर्च-बाहरी संगठनों या भाईचारे की विचारधारा का प्रभुत्व था। इस विचारधारा के अनुसार, जो स्वभाव से प्रोटेस्टेंट थी, मठवाद को चर्च से एक अलग घटना माना जाता था। पवित्र पिताओं को, विशेष रूप से उन लोगों को जिन्होंने आध्यात्मिक जीवन की गहराइयों के बारे में लिखा था, भुला दिया गया। 1960 के दशक के मध्य और 1970 के दशक में, इस विचारधारा का प्रभाव कम होने लगा और पितृसत्तात्मक परंपरा की ओर वापसी शुरू हुई। – अनुवादक की टिप्पणी।

सांसारकि पतन की मीठी ढलान पर न फसिलें , जो बाद में उनकी आत्मा को चंता से भरने और उसे हमेशा के लिए ईश्वर से दूर करने की धमकी देती है।

मैं यह महसूस करता हूँ कि अपने युवा दनिों में , एक शारीरकि रूप से स्वस्थ युवक या युवती के लिए ऐसी आध्यात्मकि अवस्था में होना आसान नहीं है कि वह 'पुरुष लिंग और महलि लिंग ' के बीच कोई अंतर न करे। [188] यही कारण है कि आध्यात्मकि पिता सलाह देते हैं कि लड़कों को लड़कियों के साथ दोस्ती नहीं करनी चाहिए, चाहे बच्चे कितने भी आध्यात्मकि रूप से परपिक्व क्यों न हों , क्योंकि उनकी उम्र ही कठनिाइयाँ पैदा करती है , और प्रलोभक उनके युवा होने का फायदा उठाता है। इसलिए एक युवक के लिए यह बेहतर है कि अपनी आध्यात्मकि ववेकशीलता और पवित्रता की खातरि लड़कियाँ उसे मूर्ख समझें (या, एक लड़की के लिए, कि युवक उसे मूर्ख समझें), और इस प्रकार वह इस भारी क्रूस को उठाए। क्योंकि इस भारी क्रूस में ही परमेश्वर की सारी शक्ति और बुद्धि नहिति है , और तब वह युवक शमिशोन से भी अधकि बलवान[189] और अति बुद्धमिान सुलैमान से भी अधकि बुद्धमिान होगा।[190] सड़क पर चलते समय, एक युवा व्यक्ति के लिए यह अच्छा होगा कि वह प्रार्थना करे और इधर-उधर ताकता न फरि , भले ही कुछ रश्तिेदार या परचिति इसे गलत समझें और नाराज़ हो जाएँ , यह सोचकर कि वह उनसे घृणा करता है और इसलिए उसने उनसे बात न करने का वकिल्प चुना है। यह अपने आसपास की चीज़ों को जज्ञिासु दृष्टि से घूरने और दुनयिादार लोगों द्वारा भी गलत समझ लिए जाने से कहीं बेहतर है , जो हर चीज़ को कपटपूर्ण दृष्टि से देखते हैं। चर्च सेवा के बाद, एक युवक के लिए अपनी आध्यात्मकि समझ और चर्च में प्राप्त लाभ को बनाए रखने के लिए लोगों से दूर भाग जाना, महलिाओं के फर कॉलर (या, , एक युवती के लिए पुरुषों की टाई) की लापरवाही से प्रशंसा करने और शत्रु द्वारा उसके हृदय को चीरने पर आध्यात्मकि रूप से कटु हो जाने से हजार गुना बेहतर है।

यह सच है कि, दुर्भाग्य से , दुनिया क्षय की ओर बढ़ गई है। और जो व्यक्ति खुद को शुद्ध रखने का प्रयास करता है , वह जहाँ भी हो, कलंकति हो जाएगा। हालाँकि, अंतर यह है कि ईश्वर आधुनकि मनुष्य से उसी मानक की अपेक्षा नहीं रखेंगे जो उन्होंने प्राचीन काल में उस ईसाई से रखी थी जो अपनी पवित्रता बनाए रखना चाहता था। शांत दमिाग होना आवश्यक है ; एक युवक को वह सब कुछ करना चाहिए जो वह कर सकता है : प्रयास करे , और पाप के अवसरों से दूर रहे। अन्य सभी मामलों में , हमारे मसीह मदद करेंगे। आत्मा में प्रज्वलति होने वाला दैवीय उत्साह इतना प्रबल होता है कि उसमें हर दूसरी इच्छा और हर अश्लील छवि को जलाकर नष्ट करने की शक्ति होती है। जब यह आग कसिी व्यक्ति के भीतर प्रज्वलति होती है , तो वह उन दैवीय आनंदों का अनुभव करेगा जो कसिी भी अन्य सुख की तुलना में अतुलनीय हैं। जसिने इस स्वर्गीय मन्ना का स्वाद चखा है , उसके लिए कैरोब के पेड़ के जंगली फलों की मठिास बलि्कुल तुच्छ हो जाती है। इसलिए, युवक को दृढ़ता से बागडोर अपने हाथों में लेनी चाहिए, क्रॉस का चहि्न बनाना चाहिए, और डरना नहीं चाहिए। थोड़े संघर्ष के बाद, उसे भी स्वर्गीय आनंद प्राप्त होगा। परीक्षा के समय, साहस आवश्यक है , और ईश्वर उसे चमत्कारकि ढंग से मदद करेंगे।

एल्डर अगस्टीन [191] ने मुझे बताया कि कैसे एक नवसखिया के रूप में उन्होंने अपने देश रूस के एक मठ में प्रवेश कयिा। मठ के लगभग सभी भकि्षु वृद्ध थे , इसलिए उन्हें

---

[188] गलातयिों 3:8.

[189] न्यायायिों 15:14 और बाद के श्लोक देखें।

[190] देखें 3 राजा 3:9–12।

मछली पकड़ने में मठ के मछुआरे की मदद करने के लिए भेजा गया, क्योंकि मठ मछली पकड़कर अपना भरण-पोषण करता था। एक दिन, मछली पकड़ने वाले की बेटी उस नदी के किनारे आई जहाँ वे काम कर रहे थे और उसने अपने पिता से कहा कि उन्हें किसी ज़रूरी काम से तुरंत घर लौटना चाहिए। वह खुद उस नवसिखिए की मदद करने के लिए रुक गई। हालाँकि, वह गरीब लड़की एक शैतानी प्रलोभन का शिकार हो गई, और यह समझे बिना कि वह क्या कर रही है, उसने पापी इरादों के साथ खुद को उसकी बाहों में झोंक दिया। पहले तो एंथनी — क्योंकि दुनिया में ऑगस्टीन के पिता का यही नाम था — हैरान रह गए, क्योंकि यह सब बहुत अचानक हुआ था। लेकिन फिर उन्होंने क्रॉस का चिह्न बनाया और कहा: 'पाप करने से तो डूब मरना बेहतर है!' — और वे किनारे से कूदकर गहरी नदी में चले गए। लेकिन दयालु प्रभु ने, उस पवित्र युवक के महान उत्साह को देखकर, जिसने अपनी पवित्रता बनाए रखने की इच्छा में, संत मार्टिनियन ([192]) के कारनामे को दोहराया था, उसे पानी की सतह पर तैरते हुए रखा, ताकि वह गीला भी न हो। "मैं सिर के बल पानी में कूदा," बुजुर्ग ने मुझसे कहा, "लेकिन, इसके बावजूद, मुझे यह भी एहसास नहीं हुआ कि मैं पानी पर सीधा कैसे खड़ा था! मेरे कपड़े तक भी गीले नहीं हुए!" उसी क्षण, उन्होंने एक आंतरिक शांति और एक अकथनीय मिठास महसूस की, जिसने उस युवती के अश्लील व्यवहार से उत्पन्न सभी पापी विचारों और कामुक उत्तेजना को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। वह लड़की स्वयं, एंथनी को पानी की सतह पर खड़ा देखकर और इस महान चमत्कार से चकित होकर, अपने पाप पर पछताते हुए रो पड़ी।

हमारे आध्यात्मिक प्रयास में हमारी मदद करने के लिए मसीह हमसे कुछ बड़ा नहीं चाहते। वह हमसे केवल बहुत ही कम की उम्मीद करते हैं। एक युवक ने मुझे बताया कि जब वह पतमोस की तीर्थयात्रा पर था,[193] तो शैतान ने उसके लिए एक जाल बिछाया था। जब वह द्वीप के पार जा रहा था, तो एक महिला पर्यटक उस पर झपट पड़ी और उसे गले लगाना शुरू कर दिया। तब उस युवक ने उसे जोर से धक्का दिया और कहा: 'हे मेरे मसीह, मैं यहाँ पवित्र स्थल की पूजा करने आया हूँ, ऐसी गंदगी में लिप्त होने के लिए नहीं!' इसके बाद वह भाग गया। उस रात, अपने होटल के कमरे में प्रार्थना करते समय, उसने अनंत प्रकाश में मसीह को देखा। क्या आप देख रहे हैं कि उसे केवल प्रलोभन देने वाली को दूर धकेलने के लिए ही क्या मिला? कुछ लोग कई वर्षों तक परिश्रम करते हैं, कोई छोटे-मोटे कारनामे नहीं करते, और फिर भी यह देखना बाकी रहता है कि क्या उन्हें ऐसा कुछ मिलेगा। फिर भी इस पवित्र युवक ने केवल प्रलोभन का विरोध करने पर ही मसीह को देखा। स्वाभाविक रूप से, इस घटना ने उसे आध्यात्मिक रूप से बहुत मजबूत कर दिया। उसके बाद, उसने संतों को दो-तीन बार और देखा : संत मार्सेलस, संत राफेल और संत जॉर्ज। एक बार वह मेरे पास आया और उसने कहा: "मेरे लिए प्रार्थना करें, फादर, कि मैं संत जॉर्ज को फिर से देख सकूँ। मुझे कुछ सांत्वना चाहिए — इस दुनिया में कुछ भी मुझे सांत्वना नहीं देता।"

अब उसके कुछ साथियों को देखिए — वे किस हद तक जा सकते हैं! एक बार, एक युवक अपने चाचा के साथ मेरी कोठरी में आया और पूछा : "एक युवती के लिए प्रार्थना करें। कार दुर्घटना में उसकी रीढ़ की हड्डी टूट गई है। उसके पिता गाड़ी चला रहे थे; वे झपकी ले गए और किसी चीज़ से टकरा गए—वे मारे गए, और वह लकवाग्रस्त हो गई। रुको, मैं तुम्हें उसकी तस्वीर देता हूँ।" "नहीं, कोई ज़रूरत नहीं है," मैंने कहा। लेकिन वह सचमुच चाहता था कि मैं उसे देखूँ। खैर, फिर, उसकी ज़िद के आगे झुकते हुए, मैंने तस्वीर ले ली और देखा कि एक युवती फर्श पर पड़ी थी, दो लड़कों के बीच जो उसे दोनों तरफ से पकड़े हुए थे! मैंने उनमें से एक की ओर इशारा करते हुए उस युवक से पूछा, 'वह उसके लिए कौन है?' 'उसकी गर्लफ्रेंड,' उसने जवाब दिया। "और दूसरा? क्या वह उससे शादी करने वाला है?" "नहीं," वह कहता है, "वे बस एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं।" "बच्चों से गुस्सा मत करो," उसके चाचा मुझसे कहते हैं, "तुम क्या कर सकते हो? आजकल के युवा ऐसे ही होते हैं।" — "मैं प्रार्थना करूँगी," मैंने मन ही मन सोचा, "उसकी रीढ़ ठीक होने के लिए नहीं, बल्कि उसके दिमाग के ठीक होने के लिए—और तुम्हारे भी, हे नीच इंसान!" आखिर शर्म-लिहाज गया कहाँ? चाचा को अपने भतीजे को अच्छी-खासी डाँट लगानी चाहिए थी! 'आध्यात्मिक' युवा!... एक आध्यात्मिक पिता होने के बावजूद और फिर भी इस हालत में पहुँच जाना! भले ही तस्वीर में से कोई लड़का इस बेचारी लड़की से शादी करने की योजना बना रहा हो, फिर भी दो लड़कों के बीच किसी लड़की को इस तरह से दबाना अस्वीकार्य है! और आखिर उसने मुझे यह तस्वीर क्यों दिखाई? इस युवक ने यह भी नहीं सोचा कि यह गलत था। बेशक, इसका मुझ पर कोई असर नहीं पड़ेगा, लेकिन यह वाकई गलत है! ये युवा आगे चलकर किस तरह के परिवार बसाएंगे? ईश्वर उन्हें समझ दे कि वे होश में आ जाएं।

और अतीत में युवतियों ने कितनी आत्म-बलिदान से अपनी पवित्रता की रक्षा की! मुझे याद है कि युद्ध के दौरान हमारी कमान ने विभिन्न गांवों से खच्चरों के साथ नागरिकों को इकट्ठा किया और उन्हें सेना के लिए आपूर्ति ढोने के

---

[191] एल्डर अगस्टीन के बारे में और अधिक जानकारी के लिए देखें : एल्डर पैसियोस। द होली माउंटेन फादर्स एंड स्टोरीज़ फ्रॉम द होली माउंटेन। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लाव्रा, 2001। पृ. 76–83।

[192] देखें : संतों के जीवन। फरवरी, दिन 13. पूजनीय मार्टिनियन और पवित्र पत्नियों ज़ोई और फोटिनिया का जीवन।

[193] एजियन सागर में एक द्वीप। – अनुवादक की टिप्पणी।

लिए मजबूर किया। भारी बर्फबारी हुई , और ये लोग ऊँची ऊँचाई पर अलग-थलग पड़ गए। पुरुषों ने देवदार की टहनियाँ इकट्ठी कीं और बर्फ से लदी इन टहनियों के नीचे , जितना हो सके , ठंड से बचने के लिए आश्रय -सा कुछ बना लिया। वहाँ की महिलाएँ भी इन आश्रयों के नीचे शरण लेने को विवश थीं , अपने परिचित गाँव वालों से सुरक्षा की आशा में। एक दूर के गाँव से एक युवती और एक बूढ़ी महिला भी थीं। उन्हें भी इन देवदार की टहनियों वाले आश्रयों में से एक के नीचे शरण लेनी पड़ी। लेकिन समस्या यह है कि कुछ लोग इतने विश्वासघाती और कायर होते हैं कि उन्हें होश में लाने के लिए युद्ध भी काफी नहीं होता। वे अपने उन पड़ोसियों पर कोई दया नहीं करते जो अपंग हो रहे हैं या मारे जा रहे हैं , लेकिन पहली ही تصرف में वे पाप करने की भी कोशिश करते हैं , इस डर से कि उन्हें मार दिया जाएगा और जीवन के सुखों को भोगने का समय नहीं मिलेगा , जबकि इसके विपरीत, उन्हें पश्चाताप करना चाहिए — कम से कम खतरे के समय में। और इस प्रकार इन अविश्वासियों में से एक कायर, जो पश्चाताप करने के बारे में नहीं बल्कि पाप करने के बारे में सोचता था, खुद को उसी आश्रय के नीचे पाया जहाँ उस युवती और बूढ़ी महिला ने शरण ली थी। उसने उस युवती को इतनी घिनौनी तरह से परेशान करना शुरू कर दिया कि वह भागने के लिए मजबूर हो गई। वह अपनी कुँवारी इज़्ज़त खोने के बजाय ठंड से जमकर मरना या बर्फ में दबकर मरना बेहतर समझती थी। उस बेचारी बूढ़ी महिला ने , जब देखा कि वह युवती चली गई है और वापस नहीं आ रही है , तो वह उसके पीछे -पीछे चली गई और उसे सेंट जॉन द बैपटिस्ट के चैपल की छतरी के नीचे पाया, जो आधे घंटे की दूरी पर था। संत जॉन द बैपटिस्ट ने उस लड़की की रक्षा की, जिसने अपने सम्मान की रक्षा की थी, और उसे अपनी छोटी सी चैपल तक ले गए, जिसके बारे में उसे पता भी नहीं था। और उसके बाद संत जॉन द बैपटिस्ट ने क्या किया? उसके बाद, वह एक सैनिक के सपने में प्रकट हुए [194] और उसे जल्द से जल्द अपनी चैपल में आने का आदेश दिया। सैनिक तुरंत खड़ा हो गया और चैपल की ओर दौड़ पड़ा। उस रात बर्फबारी से रात रोशन थी, और उसे मोटे तौर पर अंदाज़ा था कि उसे कहाँ जाना है। ओह, उसकी आँखों के सामने क्या नज़ारा था! एक बूढ़ी औरत और एक जवान लड़की , बर्फ में घुटनों तक डूबी हुई , पहले से ही ठंड से नीली और अकड़ चुकी थीं। सैनिक उस छोटी सी चर्च का दरवाज़ा खोलने में कामयाब रहा; वे बेचारी महिलाएँ अंदर गईं और धीरे -धीरे होश में आने लगीं। सैनिक के पास गर्म कपड़ों के नाम पर एक मफलर के अलावा कुछ भी नहीं था, जो उसने बूढ़ी महिला को दे दिया, और दस्तानों का एक जोड़ा था, जो उसने उन दोनों को दे दिया, और उन्हें बारी-बारी से हाथ बदलने को कहा। बाद में , उस बदकिस्मत जोड़ी ने उसे उस प्रलोभन के बारे में बताया जिसने उन्हें इस चैपल तक लाया था। "खैर ," सैनिक ने लड़की से पूछा , "तुम रात में , बर्फ के ढेरों के बीच, कौन जाने कहाँ , भागने का फैसला कैसे कर पाई?" "वह," उसने जवाब दिया, "मैं बस इतना ही कर सकती थी। मैंने भरोसा किया कि बाकी काम में मसीह मेरी मदद करेंगे। " फिर सैनिक ने अनजाने में कहा: "बस, तुम्हारा दुख खत्म हो गया। तुम कल घर लौट जाओगी।" ये शब्द उसके मुँह से अपने आप, दर्द से निकल गए, न कि बिस उस बेचारी जोड़ी को सांत्वना देने के लिए। ओह, यह सुनकर वे कितने खुश हुए ! सिर्फ उन शब्दों को सुनकर ही उन्हें गर्माहट महसूस हुई। और वास्तव में , अगले दिन सुबह तक, पहाड़ी परिवहन कंपनी ने सड़क साफ कर ली थी और अपनी खच्चरों के साथ उस जगह पर पहुँच गई थी। फिर उन बेचारी महिलाओं को घर भेज दिया गया। हेलेस की ऐसी युवा बेटियाँ —जो दैवीय कृपा से वंचित नहीं , बल्कि उससे सुसज्जित हैं —उनकी प्रशंसा की जानी चाहिए और उन पर गर्व किया जाना चाहिए! लेकिन वह धूर्त — ईश्वर मुझे क्षमा करे — कमांडर के पास गया और उसने रिपोर्ट किया कि, जैसा उसने कहा, 'फलां -फलां सैनिक ने चैपल में घुसकर उसमें वाहन घुसा दिए थे ,' यानी, खच्चर ! 'नहीं ,' कमांडर ने जवाब दिया, 'मुझे विश्वास नहीं है ; वह ऐसा करने में अक्षम है !' अंत में , वह आदमी जेल पहुँच गया।

सच्चा प्यार युवाओं के सामने प्रकट होता है

— गेरोना , जो समाज को नष्ट करना चाहते थे , उन्होंने अपनी नज़र उसकी नींव , उसकी जड़ों — बच्चों — पर टिकाई। उन्होंने उन्हें भ्रष्ट कर दिया।

— यह सब ज्यादा समय तक नहीं टिकेगा। बुराई स्वयं अपना नाश करती है। रूस में उन्होंने सब कुछ नष्ट कर दिया, लेकिन देखो कि तीन पीढ़ियाँ बीत जाने के बाद अब वहाँ क्या हो रहा है ! ईश्वर लोगों को उनकी तक़दीर पर नहीं छोड़ता। और वह वर्तमान युग के युवाओं के पापों का न्याय अतीत के युवाओं , हमारे समय के युवाओं के पापों की तरह नहीं करेगा।

— गेरोन्डा , कभी-कभी ऐसा होता है कि सांसारिक जीवन जीने वाले युवा जब आस्था पर बातचीत होती है तो बहुत सही जवाब देते हैं। ऐसा क्यों होता है ?

---

[194] यह सैनिक आर्सेनियोस एज़नपिडिस थे – भावी धन्य एल्डर पैसियोस। वर्णित घटना 1944–1948 के गृहयुद्ध के दौरान हुई थी। – अनुवादक की टिप्पणी।

— इन युवाओं में एक अच्छा स्वभाव था, लेकिन वे खुद को नियंत्रित नहीं कर सके ; वे सांसारिक जीवन में बह गए। इसी अच्छे स्वभाव के कारण वे विश्वास के बारे में सही जवाब देते हैं। मेरा मतलब यह है : उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति किसी विशेष मार्ग का अनुसरण करना चाहता है , लेकिन ऐसा करने में असमर्थ है। हालाँकि, वे उन लोगों का सम्मान करते हैं जो वास्तव में उस मार्ग पर चल रहे हैं। ईश्वर ऐसे लोगों को नहीं छोड़ेंगे , क्योंकि उनमें कोई द्वेष नहीं होता। वह समय आएगा जब उन्हें आगे बढ़ने की शक्ति मिलेगी।

— गेरोना , जो युवा रास्ते से भटक गए हैं , उन तक पहुँचने का कोई रास्ता कैसे निकाला जा सकता है ?

— आपको उनके पास प्रेम से जाना चाहिए। यदि सच्चा , उदात्त प्रेम हो, तो वह तुरंत ही युवाओं को महसूस हो जाता है और उन्हें अपने वश में कर लेता है। युवा मेरे कालीवा में आते हैं — जैसे हज़ारों अलग-अलग खेतों से आई बेरियां , जिनकी अपनी-अपनी समस्याएं होती हैं। मैं उन्हें एक दयालु शब्द से अभिवादन करता हूँ , उन्हें खाने या पीने के लिए कुछ देता हूँ , उनसे बात करता हूँ , और हम जल्दी ही दोस्त बन जाते हैं। वे अपने दिल खोल देते हैं और, बदले में , मेरे लिए उनका प्यार स्वीकार कर लेते हैं। इनमें से कुछ बेचारे आत्माएँ इतनी वंचित हैं ! वे प्यार के लिए तरसते हैं। आप तुरंत देख सकते हैं कि उन्होंने न तो अपनी माँ से और न ही अपने पिता से कोई प्यार देखा है। उन्हें प्यार कभी काफी नहीं लगता। और यदि आप उनके प्रति करुणा महसूस करते हैं , यदि आप उनसे प्रेम करने लगते हैं , तो वे अपनी समस्याएँ भूल जाते हैं , नशे के बारे में भी भूल जाते हैं , वे अपनी बीमारियों से ठीक हो जाते हैं और परेशानी करना बंद कर देते हैं ; बाद में , वे पवित्र पर्वत पर भक्तिपूर्ण तीर्थयात्रियों के रूप में आते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि , किसी न किसी तरह, उन्हें ईश्वर के प्रेम का बोध होता है। और आप देख सकते हैं कि उनमें एक ऐसी कुलीनता है जो आपके दिल की दीवारें तोड़ देती है। वे आर्थिक रूप से जरूरतमंद हैं , लेकिन इसके बावजूद , वे दूसरों से वित्तीय सहायता स्वीकार नहीं करते ; वे काम ढूंढना , अपनी आजीविका कमाना और शाम को पढ़ाई करना पसंद करते हैं। ऐसे युवाओं की मदद करने लायक हैं। थेस्सालोनिकी में , रेलवे स्टेशन के पास, ऐसे घर हैं जहाँ कई अनाथ किशोर—लड़के और लड़कियाँ दोनों —एक साथ रहते हैं। उनमें से पंद्रह एक ही तीन-बेडरूम वाले कमरे में रहते थे। वे सभी टूटे हुए घरों से आते हैं। कुछ चोरी करते हैं , जबकि अन्य ऐसा करने के लिए खुद को तैयार नहीं कर पाते क्योंकि उनमें शराफत की भावना है। कितने सालों से मैं इन बच्चों तक पहुँचने , उनकी मदद करने की विनती कर रहा हूँ ! मैंने एक चैपल बनाने का अनुरोध किया था ताकि ये दुर्भाग्यपूर्ण आत्माएँ वहाँ इकट्ठा हो सकें। अब, रेलवे कर्मचारियों के संरक्षक संत , सेंट फिलिप द डीकन के सम्मान में स्टेशन पर एक छोटा चैपल खोला गया है।

खैर , मुझे एहसास हुआ कि अगर कोई व्यक्ति बचपन से ही अपने सामने आए अनुकूल अवसरों का उपयोग नहीं करता है , तो शैतान इसका फायदा उठाएगा। कहावत में 'जब लोहा गरम हो तब हथौड़ा मारो' क्यों कहा गया है ? क्योंकि पहले , लोहार आज की तरह लोहे को वेल्ड नहीं करते थे : ऑक्सीजन वेल्डिंग या इस तरह की कोई चीज़ मौजूद नहीं थी। लोहार लोहे को आग में डालते थे , उस पर बोरेक्स और ईओएल ([195]) मिले हुए गर्म पानी का छिड़काव करते थे , और आग से निकालते ही तुरंत लोहे के टुकड़ों को एक साथ जोड़ देते थे — जब वे लाल-लाल तपे होते और उन से चिंगारियाँ निकल रही होतीं। ऐसे लोहे के टुकड़े तुरंत ही एक साथ जुड़ जाते ; लेकिन अगर उन्हें ठंडा होने का समय मिल जाता, तो उससे कुछ भी नहीं बनता। मेरा मतलब यह है कि अगर कोई युवा व्यक्ति उन्हें दिए गए अनुकूल अवसरों के प्रति उदासीन रहता है , और फिर अन्य मामलों में खुद को व्यस्त कर लेता है , दूसरों का न्याय करने और उनकी निंदा करने लगता है — जिससे ईश्वर की कृपा उनसे दूर हो जाती है — तो उनके साथ भी वैसा ही होगा जैसा ठंडी हो चुकी लोहे के साथ होता है। जब तक दिव्य गर्माहट बनी रहती है , वह—बशर्ते कि वह सजग हो—समृद्धि प्राप्त करेगा। अतः , माता-पिता को, जब तक उनके बच्चे छोटे हैं , यथासंभव उनकी मदद करनी चाहिए। बच्चे खाली कैसेट टेप की तरह होते हैं। यदि उन पर मसीह की छवि अंकित हो जाती है , तो वे हमेशा उनके साथ रहेंगे। यदि ऐसा नहीं हुआ , तो बच्चों के लिए बड़े होकर बुराई की ओर भटकना आसान हो जाएगा। यदि किसी व्यक्ति को बचपन में आध्यात्मिक मार्गदर्शन मिला है , तो वह अपना रास्ता वापस खोज लेगा , भले ही वह बाद में रास्ते से भटक जाए। यदि किसी पेड़ पर अलसी का तेल लगाया जाए, तो वह सड़ता नहीं है। यदि बच्चों में थोड़ी भी श्रद्धा और ईश्वर का भय 'भर दिया जाए', तो यह उन्हें जीवन भर मदद करेगा।

अध्याय 4.
निर्मलता और अनादर पर

[195] सोडियम बोरेट। – अनुवादक की टिप्पणी।

अनौपचारकि भाषण श्रद्धा को दूर भगा देता है

— जेरोंडा , अनौपचारकि व्यवहार कहाँ से आता है ?

— पेरसि से ...[196] अनौपचारकि व्यवहार नरि्लज्जता है। यह ईश्वर के भय को दूर भगा देता है — ठीक वैसे ही जैसे हम छत्ते से मधुमक्खियों को भगाने के लिए धुआँ छोड़ते हैं।

— जेरोंडा , कोई व्यक्ति आकस्मकि व्यवहार से कैसे बच सकता है ?

— खुद को सबसे नीच समझो। बहुत नम्रता की आवश्यकता होती है। सबसे छोटी होने के नाते , सभी बहनों का सम्मान और आदर करो। अपने वचिार व्यक्त करते समय वनिम्र रहो, और सब कुछ जानने वाले का दखिावा मत करो। तब ईश्वर अपनी कृपा तुम पर करेंगे और तुम तरक्की करोगी। अहंकार एक नौसखिए का सबसे बड़ा दुश्मन है , क्योंकि यह श्रद्धा को दूर भगा देता है। आमतौर पर, अहंकार के बाद अवज्ञा होती है , फरि असंवेदनशीलता — पहले छोटे -मोटे पापों के प्रति ; धीरे -धीरे उन पापों की आदत पड़ जाने पर, एक व्यक्ति उन्हें स्वाभावकि मानने लगता है। लेकनि गहराई में , उन्हें कोई शांति नहीं मलिती—सरि्फ चंता होती है। न ही वे समझ पाते हैं कि उनके साथ क्या हो रहा है , क्योंकि बाहरी रूप से उनका दलि 'कठोर' हो जाता है और उन्हें अब यह एहसास नहीं होता कि वे सही रास्ते से भटक गए हैं।

— गेरोन्डा , घनष्ठिता और सादगी में क्या संबंध है ?

— सादगी एक चीज़ है , और लापरवाह ढंग दूसरा। सादगी में श्रद्धा और एक बचकानापन दोनों होता है। लापरवाह ढंग में अभद्रता होती है।

अक्सर , बेबाकी में भी नरि्लज्जता छपिी हो सकती है। यदि कोई व्यक्ति असावधान है , तो नरि्लज्जता अक्सर उनकी बेबाकी और सादगी के भीतर छपिी होती है। 'मेरा स्वभाव बेबाक है ' या 'मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ ,' वे नरि्लज्जता से कहते हैं , बनिा खुद इसके एहसास कए। हालाँकि , सादगी एक बात है , और नरि्लज्जता बलि्कुल दूसरी।

— गेरोन्डा , आध्यात्मकि वनिम्रता क्या है ?

— आध्यात्मकि वनिम्रता परमात्मा का भय है , शब्द के सर्वोत्तम अर्थ में। यह भय, यह संयम , एक व्यक्ति को आनंद देता है ; वे अपने हृदय में अमृत डालते हैं। आध्यात्मकि मधु ! कसिी भी शर्मीले छोटे लड़के को देखए — वह अपने पता का सम्मान करता है , ठीक से व्यवहार करता है और, अत्यधकि वनिम्रता के कारण, उन्हें देखने की हम्मित भी नहीं करता। जब वह उससे कुछ पूछना चाहता है , तो उसके चेहरे पर शर्म से लालमिा छा जाती है। ऐसे छोटे से लड़के को तो आइकॉनोस्टेस (प्रतमिा -पट्टी) में भी रख दयिा जा सकता है। लेकनि कोई दूसरा बच्चा सोचता है : 'वह तो बस मेरे पता हैं ' — और नरि्लज्जता से आराम से उनके सामने ढेर हो जाता है। और जब उसे कुछ चाहए होता है , तो वह माँग करता है — 'यह मुझे दो, उसे वहाँ रखो' — अपने पैर पटकते हुए और धमकयिाँ देते हुए।

एक अच्छे परविार में , बच्चे स्वतंत्र रूप से व्यवहार करते हैं। ऐसे परविार में , माता-पता का सम्मान होता है ; वहाँ सैन्य -शैली का अनुशासन या एक ही सुर में चलना नहीं होता। बच्चे अपने पता और माता को देखकर प्रसन्न होते हैं , और माता-पता अपने बच्चों को देखकर प्रसन्न होते हैं। 'प्यार में कोई शर्म नहीं होती,'[197] — अब्बा इसाक कहते हैं। प्यार में नडिरता होती है , शब्द के सर्वोत्तम अर्थ में। इस तरह के प्यार में दूसरों के

---

[196] एल्डर ने शब्दों के साथ एक उल्लेखनीय खेल कयिा है : παρρησία – स्पष्टवादता , साहस; Παρίσι – ग्रीक लप्यिंतरण में पेरसि। – अनुवादक की टप्पिणी।

[197] देखें हमारे पवत्रि पता अबा इसाक द सीरयिन के कार्य। तपस्या के वचन। सेरि्गेव पसाद, 1911। पृ . 528।

लिए श्रद्धा और सम्मान होता है ; दूसरे शब्दों में , यह भय पर विजय प्राप्त करता है। कुछ लोगों में संकोच और अनिश्चितता होती है , लेकिन साथ ही वे भय भी पालते हैं , क्योंकि उनका संकोच वास्तविक नहीं है। हालांकि , एक अन्य व्यक्ति में संकोच होता है लेकिन भय नहीं , क्योंकि उनका संकोच वास्तविक और आध्यात्मिक है। जब विनम्रता आध्यात्मिक होती है , तो व्यक्ति आनंदित महसूस करता है। उदाहरण के लिए, एक छोटा बच्चा अपने पिता और माता से निडर होकर प्यार करता है ; उसे इस बात का डर नहीं होता कि वे उसे मारेंगे। उसके पिता एक अधिकारी भी हो सकते हैं , फिर भी बच्चा उनकी टोपी छीन लेता है , उसे नीचे फेंक देता है और आनंदित होता है। उसमें एक प्रकार की सादगी है ; उसमें कोई निर्लज्जता नहीं है। आइए हम सादगी और निर्लज्जता के बीच एक रेखा खींचें। यदि सम्मान और विनम्रता गायब हो जाती है , तो हम असम्मानजनक व्यवहार , निर्लज्जता के साथ समाप्त हो जाएंगे। और फिर आप एक युवती को अपने बिस्तर पर लेटे हुए आदेश देते हुए सुन सकते हैं : 'मम्मी , मुझे एक गिलास पानी ला दो! और ध्यान रखना कि वह ठंडा हो! ... उफ़ , यह गर्म है ... मैंने तुम्हें कहा था: मुझे एक ठंडा गिलास ला दो!" यह यहीं से शुरू होता है और फिर इतना आगे बढ़ जाता है कि लोग पूछते हैं : "एक पत्नी को अपने पति से क्यों डरना चाहिए?"[198] फिर भी डर में श्रद्धा होती है , और श्रद्धा में प्रेम होता है। अगर मैं किसी चीज़ का सम्मान करता हूँ , तो मैं पहले से ही उससे प्यार करता हूँ , और जिसे मैं प्यार करता हूँ , उसका मैं सम्मान करता हूँ। एक पत्नी को अपने पति का सम्मान करना चाहिए। एक पति को अपनी पत्नी से प्यार करना चाहिए। लेकिन आज लोग सुसमाचार की व्याख्या पूरी तरह से उल्टा करते हैं और इसलिए सब कुछ बराबर मान लेते हैं , और परिणामस्वरूप परिवार टूट जाते हैं। पति कहता है , 'एक पत्नी को आज्ञाकारी होना चाहिए।' लेकिन अगर आपके पास प्यार नहीं है , तो आप एक बिल्ली को भी आज्ञा नहीं मनवा पाएंगे। अगर आपके पास प्यार नहीं है , तो व्यक्ति उदासीन रहता है , और आप उससे एक गिलास पानी लाने के लिए भी नहीं कह सकते। अपने पड़ोसी का सम्मान करके , एक व्यक्ति स्वयं का सम्मान करता है , फिर भी वह स्वयं को पहले नहीं रखता। दूसरों के प्रति सम्मान में आत्म -प्रेम होता है ; लेकिन यदि किसी व्यक्ति की चिंता स्वयं की ओर निर्देशित है , तो उसमें कोई आत्म -प्रेम नहीं होता।

वरिष्ठों का सम्मान

— गेरोना , कभी-कभी मैं अपने बड़ों के साथ असभ्य व्यवहार करता हूँ। मुझे एहसास है कि मैं बुरा व्यवहार कर रहा हूँ और मैं इस पाप को स्वीकार करता हूँ।

— चूँकि आप इसे महसूस करते हैं और इसका इकरार करते हैं , आप धीरे -धीरे स्वयं से घृणा करने लगेंगे —शब्द के सकारात्मक अर्थ में —और स्वयं को नम्र बनाएँगे। तब ईश्वर की कृपा मिलेगी , और आप इस बुरी आदत से मुक्त हो जाएँगे।

— लेकिन , जेरोंडा , मैं कभी-कभी अपनी बहनों से मज़ाक करती हूँ और स्नेह के कारण, अक्सर उन्हें चिढ़ाती हूँ। हालाँकि , मुझे डर है कि मैं हद से ज़्यादा आगे बढ़ जाऊँ और बहुत ज़्यादा घनिष्ठ हो जाऊँ।

— यह सही नहीं है , आखिरकार, आप सबसे छोटे हैं ! एक परिवार में , आमतौर पर बड़े बच्चे के साथ मज़ाक करते हैं और उनके साथ खेलते हैं , न कि इसका उल्टा। इससे बड़े और बच्चों दोनों को खुशी मिलती है। लेकिन किसी छोटे बच्चे का अपने दादा-दादी को चिढ़ाना उचित

[198] तुलना करें। इफिसियों 5:33.

नहीं है। कल्पना कीजिए कि कोई छोटा बच्चा अचानक बिना किसी वजह के अपने पिता पर कूद पड़े, उनकी कॉलर पकड़ ले और उन्हें गुदगुदी करने लगे! लेकिन जब कोई बड़ा शरारत से किसी बच्चे को चिमोटता है—तो वह एक बिल्कुल अलग मामला है। तब बच्चा, शब्द के सकारात्मक अर्थ में, बेफिक्र ढंग से व्यवहार करता है; बड़ा व्यक्ति बच्चे जैसा हो जाता है, और वे दोनों प्रसन्न होते हैं।

— जेरोंडा, कभी-कभी ऐसा होता है कि मेरा अंतरात्मा कहता है कि कुछ गलत हो रहा है; मैं अपने बड़ों के सामने अपनी राय व्यक्त करता हूँ, लेकिन वे इसे स्वीकार नहीं करते। क्या मुझे उनसे सहमत हो जाना चाहिए?

— नहीं, बुराई का साथ न दें। दयालुता और सत्य से बोलें, लेकिन सही तरीके से और विनम्रता से: 'शायद इसे इस तरह करना बेहतर होगा? मैं बस आपको एक विचार के रूप में यह सुझाव दे रहा हूँ।' या कहें: 'मेरे मन में यह विचार आया है।' इस तरह, आप एक चुंबक बन जाते हैं और ईश्वर की कृपा को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। कुछ लोग अपनी राय व्यक्त करने की चाहत से नहीं, बल्कि आदत से बेझिझक बोल पड़ते हैं। खैर, जो भी हो, छोटे को हर हाल में अपने बड़े का सम्मान करना चाहिए। लेकिन बड़े को भी, अगर मैं ऐसा कह सकता हूँ, तो उसका भी सम्मान किया जाना चाहिए। और भले ही उनमें कुछ कमियाँ हों, उनमें अभी भी अच्छाई होती है — कुछ अनुभव और इसी तरह की चीजें। जब आपसे पूछा जाए, तो अपने विचार विनम्रता और सम्मानपूर्वक व्यक्त करें, लेकिन साथ ही यह आंतरिक निश्चितता भी न रखें कि मामले बिल्कुल वैसे ही हैं जैसे आप कल्पना करते हैं। आखिरकार, हो सकता है कि कोई और कुछ ऐसा जानता हो जो आप नहीं जानते, या कुछ ऐसा जिस पर आपने विचार नहीं किया हो। यदि कोई व्यक्ति किसी विषय पर चर्चा सुनता है और, इससे संबंधित, उसके मन में कोई विचार आता है जो, उसकी राय में, अधिक सही है, तो उसे कहना चाहिए: 'मेरे मन में एक विचार आया है,' यदि वह अपने समकक्ष से बात कर रहा है। हालाँकि, यदि वे किसी बड़े से बात कर रहे हैं, तो उन्हें कहना चाहिए: 'मेरे मन में एक अपमानजनक विचार आया है।' क्योंकि दूसरों के मामलों में दखल देना अभद्रता है, भले ही व्यक्त की गई राय सही हो।

— और जब आप 'वरिष्ठों का सम्मान' कहते हैं, तो क्या आपका मतलब उम्र में बड़े लोगों से है या आध्यात्मिक परिपक्वता में बड़े लोगों से?

— मुख्य रूप से उम्र के हिसाब से। आखिरकार, इस पर विचार करें: जो व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से उन्नत है, वह अपने से बड़े लोगों के साथ सम्मान और श्रद्धा से व्यवहार करता है।

— गेरोन्डा, क्या यह स्वाभाविक है कि उम्र में छोटे लेकिन आध्यात्मिक रूप से उन्नत व्यक्ति का सम्मान, उम्र में बड़े लेकिन आध्यात्मिक रूप से कम उन्नत व्यक्ति से अधिक किया जाए?

— नहीं, प्रश्न को इस तरह रखना सही नहीं है। बड़ा व्यक्ति चाहे किसी भी अवस्था में हो, आपको उसकी उम्र के कारण उसके प्रति सम्मानपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। लोगों के प्रति सम्मानपूर्वक व्यवहार करें: जो बड़े हैं, उनकी उम्र के लिए; जो छोटे हैं, उनकी भक्ति के लिए। यदि सम्मान है, तो छोटा व्यक्ति बड़े व्यक्ति के प्रति सम्मान दिखाता है, और बड़ा व्यक्ति छोटे व्यक्ति के प्रति सम्मान दिखाता है। सम्मान में प्रेम निहित है। प्रेरित पौलुस कहते हैं, 'हर किसी को उनका हक़ दो: जिससे कर वसूलना हो, उससे कर वसूलो, जिससे सम्मान मिलना हो, उसे सम्मान दो' (*199*)।

— और अगर छोटे लोग अपने बड़ों से टिप्पणी करते हैं, तो क्या यह गलत है?

— यह नई पीढ़ी की वशिष्टिता है। लेकनि पवत्रि शास्त्र में लखिा है : 'अपने भाई को फटकार लगाओ।'[199] वहाँ यह नहीं लखिा है , 'अपने पति को फटकार लगाओ।' आज के युवा बनि यह महसूस कएि बहस करते हैं और वद्रिोह करते हैं। वे अपने व्यवहार को स्वाभावकि मानते हैं। वे बेधड़क बोलते हैं , और फरि कहते हैं : 'मैंने तो बस यूँ ही कह दयिा।' युवा इस संसार की आत्मा के प्रभाव में आ गए हैं — एक भ्रष्ट , गुंडा -जैसी आत्मा जो कसिी चीज़ का सम्मान या आदर नहीं करती। युवा लोग अपने बड़ों के प्रत अनादरपूर्ण व्यवहार करते हैं और उन्हें यह एहसास नहीं होता कयिह कतिना गलत है। जब कोई युवा , 'एक अलग पहचान बनाने ' के लिए, यह दावा करता है कबिड़ों का सम्मान करना अतीत की बात हो गई है , तो उससे कसिी अच्छे परणिाम की उम्मीद कैसे की जा सकती है ? बहुत सावधानी की आवश्यकता है। आधुनकि सांसारकि भावना युवाओं में यह वचिार भरती है : 'अपने माता-पति या शक्षिकों की बात मत सुनो। ' यही कारण है क आज के बच्चे बहुत कम उम्र से ही और भी बुरे होते जा रहे हैं। और जो बच्चे सबसे ज़्यादा बगिड़ जाते हैं , वे वे हैं जनिके माता-पति, यह न जानते हुए कवि उनके साथ क्या बुरा कर रहे हैं , अपने संतान की प्रशंसा करते हैं और जब वे नरि्लज्जता से बोलते हैं तो उन्हें कसिी तरह के बाल प्रतभिाशाली मानते हैं।

एक बार, एक पति अपने आठ या नौ साल के बेटे और उसी उम्र के अपने भतीजे के साथ मेरी झोपड़ी पर आया। मैंने एक लड़के को अपनी दाईं ओर और दूसरे को अपनी बाईं ओर बठिाया। उनके आने से ठीक पहले , मेरा एक जानने वाला कलाकार मुझसे मलिने आया था—एक बहुत अच्छा इंसान और अपने काम का माहरि, जो कसिी भी व्यक्त का स्केच एक ही मनिट में बना सकता था। मैंने उससे पूछा , "डायोनसियिस, तुम इन बच्चों का स्केच क्यों नहीं बनाते , ठीक वैसे जैसे हम अभी उनके साथ बैठे हैं ?" उसने जवाब दयिा, "मैं कोशशि तो करूँगा , लेकनि मुझे नहीं पता कमिैं कर पाऊँगा या नहीं , क्योंक वे बेचैन हो रहे हैं। " जैसे ही उसने कागज़ का एक पन्ना उठाया और चत्रि बनाना शुरू कयिा, बच्चों में से एक कूद पड़ा और उसे यह कहकर 'सम्मानति ' कयिा: 'चल, अब देखते हैं , ए बेवकूफ़ , तू वहाँ क्या खींचने वाला है !' और वहाँ बहुत सारे लोग भी मौजूद थे ! लेकनि वह युवक ज़रा भी घबड़ाया नहीं। 'आजकल बच्चे ऐसे ही होते हैं , पतिाजी,' उसने मुझसे कहा और चत्रि बनाता रहा। जहाँ तक मेरी बात है , तो मेरा सरि चकरा गया! और उस बच्चे के पति ने ऐसा बर्ताव कयिा मानो कुछ हुआ ही न हो! उनके बच्चे एक तीस साल के आदमी के साथ इतनी बदतमीजी कर रहे थे , जो ऊपर से उन्हें ही कागज़ पर बना भी रहा था! क्या घोर नरि्लज्जता और अनादर है ! और तो और भी बहुत कुछ है ! यह सब कतिना भयावह है ! अब ज़रा कल्पना कीजएि कअिगर इन बच्चों में से कोई एक भक्षिु बनना चाहता। ऐसे बच्चे के लिए एक सच्चा भक्षिु बनना बहुत मेहनत का काम होगा। माताएँ , अपने बच्चों पर नज़र रखने में वफिल होकर, उन्हें बर्बाद कर रही हैं। यह सब माताओं पर नरि्भर करता है। रूस में , अगर कुछ भी बदला है , तो वह केवल इसलिए है क्योंक माताओं ने गुप्त रूप से अपने वशि्वास और धार्मकिता को बनाए रखा और अपने बच्चों की मदद की। सौभाग्य से हमारे लिए, ईसाई परविारों में थोड़ी बहुत सच्चाई बची हुई है। अन्यथा , हम बर्बाद हो गए होते।

— गेरोन्डा , क्या इस तरह से पाले गए बच्चे बाद में यदवि चाहें तो बदल सकेंगे या भक्षिु बन सकेंगे ?

— यदि उन्हें एहसास हो जाए कि उन्होंने बुरा व्यवहार कयिा है , तो मसीह उनकी मदद करेंगे। दूसरे शब्दों में , यदि कोई व्यक्त वास्तवकि पश्चाताप की भावना से अभभिूत हो

---

[199] मत्ती 18:15.

जाता है , तो मामला नपिटा हुआ माना जा सकता है। लेकनि ऐसे बच्चे सुधार कैसे कर सकते हैं यदभिकि्षु बन जाने के बाद भी वे खुद को सही मानते हैं और मठाधीश या मठाधीशनी से कहते हैं : 'यह यहाँ कसि तरह का तानाशाह है ?' आजकल के ज़माने में आपने ऐसी बातें कहाँ देखी हैं ?!" कुछ मठाधीश तो मुझसे भी ऐसी बकवास कह देते हैं।

धीरे -धीरे , सम्मान पूरी तरह से खत्म होता जा रहा है। जवान लड़के मेरी कोठरी में आते हैं , और उनमें से ज्यादातर अपने पैर पसारकर बैठ जाते हैं , जबकि बुजुर्गों के बैठने के लिए कोई जगह नहीं होती। कुछ और, थोड़ी दूर कुछ खाली पेड़ की जड़ें देखकर , दो कदम चलकर उन्हें पास लाने और बैठने की भी झझिक करते हैं। मुझे ही उनके लिए उन पेड़ की जड़ के टुकड़ों को ढोकर लाना पड़ता है। और जब वे मुझे उन्हें ढोते हुए देखते हैं , तब भी वे आकर मुझसे उन्हें नहीं लेते। उन्हें पानी पीना होता है , लेकनि वे खुद कुछ मीटर चलकर पानी लाने की जहमत नहीं उठाते। मुझे खुद ही उनके लिए दूसरी मग लानी पड़ती है। सच में , यह मुझे हैरान करता है : तीस-तीस जवान लड़कों के झुंड आ जाते हैं , वे देखते हैं कि मैं लंगड़ाते हुए तुर्की delight का एक बड़ा डब्बिा , एक पानी का कैन और मग लेकर आ रहा हूँ ताकि मैं उन्हें पानी दे सकूँ , फरि भी उनमें से एक भी मेरी मदद करने के लिए उंगली तक नहीं उठाता। फरि भी मेजर -जनरल, जो बारूद की गंध से लथपथ है और ठीक उनके बगल में बैठा है , उठ खड़ा होता है और मेरी मदद के लिए दौड़ पड़ता है ! वे जवान लड़के सोचते हैं कि एथोस कलविा में भी एक वेटर उनके पास आकर सेवा करेगा — ठीक वैसे ही जैसे किसी रेस्तरां या होटल में होता है। लगभग पाँच या छह बार तो मैंने एक करतब भी कयिा: मैं बड़ी मुश्कलि से लंगड़ाते हुए पानी का डब्बा लेने जाता, उन्हें पानी लाकर उनके नाक के ठीक सामने ज़मीन पर ही गरिा देता ! मैं उनसे कहता, "दोस्तों , मैं तुम्हारे लिए पानी तो ला सकता हूँ , लेकनि उससे तुम्हारा कोई भला नहीं होगा!"

सार्वजनकि परविहन में , आप देखते हैं कि बच्चे बैठे होते हैं जबकि बुजुर्ग लोग खड़े रहते हैं। युवा लोग अपने पैर मोड़कर बैठते हैं , जबकि बड़े लोग बुजुर्गों को अपनी सीट देने के लिए खड़े हो जाते हैं। युवा अपनी सीटें नहीं छोड़ते। वे कहते हैं , 'इस सीट के लिए मैंने पैसे दिए हैं। ' वे वहाँ किसी पर ध्यान दिए बनिा बैठे रहते हैं। लेकनि पुराने दनिों में कतिनी अच्छी भावना हुआ करती थी! संकरी गलयिों के दोनों ओर महलिाएँ बैठती थीं , और जब कोई पुरोहति या कोई बुजुर्ग व्यक्ति गुजरता , तो वे खड़ी हो जाती थीं। और वे अपने बच्चों को भी ऐसा ही करना सखिाती थीं।

कतिनी बार मुझे गुस्सा आता है ! यह देखना पड़ता है कि कैसे बुजुर्ग , गरमिामय, सम्मानति लोग बातें कर रहे होते हैं , जबकि युवा दबंग बेझझिक बातचीत में दखल देते हैं , उसे बीच में काट देते हैं , तरह-तरह की बकवास करते हैं , और इसे एक उपलब्धि भी मानते हैं। मैं उन्हें रुकने का इशारा करता हूँ , लेकनि वे बलि्कुल भी ध्यान नहीं देते। इसे रोकने के लिए, उन्हें बेवकूफ बनाना पड़ता है — वरना वे अपनी मनमानी करते रहेंगे। किसी भी 'ओटेनकि ' या 'पेटेरकि ' में यह नहीं लखिा है कि युवाओं को अपने बड़ों से इस तरह बात करनी चाहिए। 'ओटेनकि ' में लखिा है : 'बड़े ने कहा,' न कि 'युवा ने कहा।' पहले के दनिों में , छोटे अपने बड़ों की उपस्थति में चुप रहते थे और ऐसा करने में प्रसन्न रहते थे। वे वहां भी नहीं बैठते थे जहां बड़ें बैठे होते थे। उस युग के युवा शर्मीलेपन , वनिम्रता और आदर के गुणों से परपिूर्ण थे ; अपने बड़ों से बात करते समय वे लजा उठते थे। और यदि उस समय का कोई भी बच्चा अपने माता-पति के प्रति असभ्य होता, तो वह शर्म के मारे बाजार में भी अपना चेहरा दखिाने की हम्मित नहीं करता! और पवत्रि पर्वत पर, यदि किसी भकि्षु की दाढ़ी अभी

सफेद नहीं हुई थी तो वह गंभीर सामूहकि गायन में भाग नहीं लेता था। लेकनि अब आप नवसखिुओं और नवप्रवेश के उम्मीदवारों को गायन मंडली में शामलि होते देख सकते हैं ... खैर , क्या कयिा जा सकता है ? लेकनि कम से कम उन्हें अपने बड़ों के प्रतिसम्मान और आदर से व्यवहार करना सखिाया जाए।

आपको शायद कुछ ऐसा भी सुनने को मलि सकता है : अथोनयिाडा का एक छात्र , जो बशिप के पद पर है , उस रेक्टर से कहता है : 'महाधर्माध्यक्ष रेक्टर , हम एक-दूसरे से बराबरी के तौर पर बात करेंगे। ' हाँ , हाँ , बात यहाँ तक आ पहुँची है ! और सबसे बुरी बात यह है कि बाद में यह नौसखिया यह नहीं समझ पाता कि इसमें क्या गलत था, और ज़िद पर अड़ा रहता है : 'तो मैंने ऐसा क्या कहा जो इतना बुरा था? मैं समझ नहीं पा रहा हूँ। " इसके बजाय कि वह महाधर्माध्यक्ष से पूछे : "क्षमा करें ; कृपया मुझे एक वचिार व्यक्त करने का आशीर्वाद दें ; लेकनि शायद जो मैं कहने जा रहा हूँ वह मूर्खतापूर्ण होगा," वह कशिोर यह घोषणा करता है , जैसे कि कुछ गलत ही न हो: "आपकी अपनी राय है , और मेरी अपनी।" क्या आप समझते हैं ? दुर्भाग्य से , यह भावना आध्यात्मकि जीवन और मठवाद में भी समा गई है। क्या आप सुनते हैं कि कैसे नवसखिए शकिायत करते हैं : 'मैंने इस बारे में एल्डर से बात की, लेकनि वह मुझे नहीं समझते। भले ही मैंने उसे बार-बार याद दलिाया है !" — "सुनो ," मैं कहता हूँ , "तुम बार-बार कहने की हम्मित कैसे कर सकते हो? आखरिकार, ऐसा कहकर तुम असल में यह कह रहे हो: 'एल्डर ने अपनी आदतें नहीं बदली हैं। ' — "अरे , क्या समस्या है ," वह जवाब देता है , "क्या मुझे अपनी राय व्यक्त करने की इजाज़त नहीं है ?" जब आप ऐसा कुछ सुनते हैं , तो आप बस फट ही पड़ते हैं। और तो और, वह आपसे पूछता है : "क्या , आप नाराज़ हैं ? खैर , मुझे माफ़ कर दीजिए।" तो अब मुझसे यह उम्मीद की जाती है कि मैं उसे उसकी कही बात के लिए नहीं , बल्कि इस बात के लिए माफ़ करूँ कि मेरा आपा क्यों खो गया!

लोग अब उस बदि पर पहुँच गए हैं जहाँ वे ईश्वर का भी न्याय करते हैं

— गेरोन्डा , क्या लोगों में हमेशा से हर कसिी और हर चीज़ को आँकने की यह प्रवृत्ति रही है , या यह केवल वर्तमान युवा पीढ़ी में उभरी है ?

— नहीं , यह पहले नहीं हुआ ; यह वर्तमान युग की आत्मा है। आजकल, आम लोगों को आंका जा रहा है , जैसे सभी राजनीतकि और धार्मकि हस्तयिों को, लेकनि यह पर्याप्त नहीं है — वे संतों को भी आंका जा रहा है और अब इतनी दूर तक जा चुके हैं कि ईश्वर को भी आंका जा रहा है। "ईश्वर ," ऐसे लोग कहते हैं , "ने ऐसा-वैसा नहीं करना चाहिए था। उसे ऐसा-वैसा करना चाहिए था, लेकनि उसने गलत काम कयिा।' क्या आप सुन रहे हैं कि वे क्या बकवास कर रहे हैं ? 'मेरे दोस्त , क्या तुम उसे बताएंगे कि क्या करना है ?' — 'क्यों नहीं ? मैं तो बस अपनी राय व्यक्त कर रहा हूँ ,' वह जवाब देता है , यह समझे बनिा कि यह कतिना नरि्लज्जतापूर्ण है। सांसारकि भावना ने बहुत कुछ अच्छा नष्ट कर दयिा है। बुराई वकिसति होती है और एक घृणति , भयानक अवस्था तक पहुँच जाती है ; यह ईश्वरनदिा की हद तक पहुँच जाती है। लोग ईश्वर का न्याय करते हैं , और उन्हें यह सोचकर भी कोई कष्ट नहीं होता कि यह उनके प्रति ईश्वरनदिा है। और उन लोगों में से कुछ हट्टे -कट्टे जवान, जनि पर ईश्वर ने कद-काठी में कोई कमी नहीं की है —यदि उनमें थोड़ी भी समझदारी हो—वे दूसरों के बारे में बोलने लगते हैं : 'यह कसि तरह का बौना है ? और यह कसि तरह का टेढ़ा -मेढ़ा आदमी है ? बस उस एक को देखो !'—और उनका कसिी का भी कोई लहिाज नहीं होता।

एक बार, एक आदमी मेरी झोपड़ी में आया और घोषणा की: 'फलाँ -फलाँ मामले में , ईश्वर को वैसा नहीं करना चाहिए था जैसा उन्होंने कयिा।' 'और क्या तुम ,' मैंने उससे पूछा , 'हवा में एक भी छोटा सा कंकड़ लटका कर रख सकते हो? आखरिकार, आकाश में जो तारे आप देखते हैं , वे सरि्फ चमकदार खलिौने वाली गेंदें नहीं हैं। वे वशिाल आकार के खगोलीय पडि हैं , जो चकरा देने वाली गतसिे तेज़ी से चल रहे हैं , फरि भी वे न तो एक-दूसरे से टकराते हैं और न ही अपनी कक्षा से भटकते हैं। — "खैर , मेरी राय में ," उसने मुझसे फरि कहा, "इसे अलग तरह से होना चाहिए था।" ज़रा सुनिए तो! क्या हम सच में ईश्वर का न्याय करेंगे ? तर्क -वतिर्क बहुत ज़्यादा हो गया है , और ईश्वर पर से भरोसा मटि गया है। और अगर आप ऐसे लोगों से कहें कि वे गलत हैं , तो वे जवाब देंगे : 'माफ़ कीजिए, लेकनि मैंने अपनी राय व्यक्त की है। क्या मुझे ऐसा करने का अधकिार नहीं है ?' ईश्वर को हमसे कतिनी बातें सहनी पड़ती हैं ! सौभाग्य से , वह हमें गंभीरता से नहीं लेते।

पुरानी वाचा हमें बताती है कि परमेश्वर ने इस्राएलयिों को सभी कनानयिों को बनिा कसिी अपवाद के उस भूमि से बाहर नकिालने की आज्ञा दी।[200] यदि परमेश्वर ने ऐसी आज्ञाएँ दीं , तो इसका अर्थ है कि उन्होंने कुछ पूर्वानुमान लगाया था। लेकनि इस्राएलयिों ने कहा: 'यह बहुत मानवीय नहीं है। आइए कनानयिों को अकेला छोड़ दें ; आइए उन्हें नष्ट न करें। ' हालाँकि , जैसे -जैसे समय बीतता गया, कनानी लोगों के भ्रष्ट प्रभाव में आकर वे अनैतकिता और मूर्तपिूजा में फँस गए, और अपने ही बच्चों को मूर्तयिों के सामने बलदिान करने लगे , जैसा कि भजन में वर्णति है।[201] ईश्वर जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं। फरि भी कुछ लोग नरि्लज्जतापूर्वक पूछते हैं : 'ईश्वर ने नरक की यातनाएँ क्यों रचीं ?' एक व्यक्ति नरि्णय करना शुरू कर देता है और, उस क्षण से , वह अपनी अच्छी आध्यात्मकि स्थति खो देता है। उनमें कुछ भी थोड़ा और गहराई से समझने के लिए ईश्वर की अनुग्रह की थोड़ी सी भी कमी होती है —यानी, यह समझने के लिए कि ईश्वर ने यह या वह क्यों बनाया। नरि्णय , अहंकार , स्वार्थ —यही इन सभी 'क्यों ?' और 'ऐसा कैसे ?' वाले प्रश्नों का सार है।

— गेरोन्डा , कुछ युवा पूछते हैं : 'मसीह को सूली पर क्यों चढ़ाया गया? क्या वह सूली पर चढ़ाए बनिा, कसिी और तरीके से दुनयिा को बचा नहीं सकते थे ?'

— फरि भी उन्होंने सलीब पर चढ़कर दुनयिा को बचाया, और लोग इससे प्रभावति नहीं होते ! अगर उन्होंने दुनयिा को कसिी और तरीके से बचाया होता तो कैसा होता? और कुछ कहते हैं : 'ईश्वर पति ने कसिी भी तरह से कष्ट नहीं सहे। यह पुत्र ही थे जनि्होंने स्वयं को बलदिान के रूप में अर्पति कयिा।" लेकनि , मेरी दृष्टि में , कोई भी पति अपने बच्चे को बलदिान करने की बजाय स्वयं को बलदिान करना पसंद करेगा। अपने बच्चे को स्वयं को बलदिान करते देखना एक पति के लिए स्वयं को बलदिान करने से कहीं अधकि पीड़ादायक होता है। लेकनि आप उन लोगों से क्या कह सकते हैं जो यह नहीं समझते कि प्रेम का क्या अर्थ है ?

और एक अन्य व्यक्ति ने मुझसे नम्निलखिति कहा: "आदम के दो बच्चे थे — हाबलि और काइन। तो काइन की पत्नी कहाँ से आई?" हालाँकि , पुराना नयिम पढ़ने पर पता चलता है कि सेथ के जन्म के बाद, आदम ने 'पुत्र और पुत्रयिाँ उत्पन्न कीं। '[202] और काइन ने अपने भाई की हत्या करने के बाद पहाड़ों में भाग गया।[203] उसे यह भी नहीं पता था कि जिस महलि को उसने अपनी पत्नी के रूप में लयिा था, वह उसकी बहन थी। ईश्वर ने लोगों को एक ही जाति और कबीले का बनाया, ताकि उनके बीच कोई द्वेष या अपराध न हो, ताकि वे कह सकें : 'हम एक ही माता-पति — आदम और हव्वा — के बच्चे हैं ,' और इससे मानवीय द्वेष पर अंकुश लगता। लेकनि , इसके बावजूद — आज लोगों के बीच जो द्वेष है , उसे देखो !

जब कुछ लोग मेरे कालीवा में आते हैं तो मैं कतिनी तकलीफ सहता हूँ ! अंत में [यह देखकर कि उनसे बातचीत जारी रखना बेकार है], मैं कहता हूँ : 'मुझे सरिदर्द है , और मेरे पास कोई एस्परिनि नहीं है। ' और जब वे जाते हैं , तो वे और भी अधकि परेशान हो जाते हैं और बुरा मान जाते हैं। वे बड़बड़ाते हैं , 'हम इतनी दूर से आए हैं , और वह कहता है कि उसे सरिदर्द है ,'

---

[200] देखें व्यवस्थाववरिण 7:2 आगे।

[201] भजन संहति 105:37 देखें : "और उन्होंने अपने पागलपन में अपने पुत्रों और पुत्रयिों को खा लयिा।"

[202] उत्पत्ति 5:4.

[203] उत्पत्ति 4:14–15 देखें।

यह समझे बिना कि मैं सरिदर्द की शिकायत क्यों कर रहा हूँ। और कुछ लोग सुझाव देते हैं : 'खैर , शायद हमें आपके लिए कुछ एस्परिन ले आनी चाहिए?'

निर्मलता दिव्य कृपा को दूर भगा देती है।

बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। अपमानजनक और विचारहीन व्यवहार दिव्य कृपा में बाधा है। दूसरों के प्रति सम्मान की कमी किसी व्यक्ति के निकट दिव्य कृपा आने में सबसे बड़ी बाधा है। बच्चे जितना अधिक सम्मान अपने माता-पिता, शिक्षकों और वास्तव में सामान्य रूप से अपने बड़ों के प्रति दिखाते हैं , उतनी ही अधिक दिव्य कृपा वे प्राप्त करते हैं। वे जितने अधिक अव्यवस्थित और अवज्ञाकारी होते हैं , दैवीय कृपा उनसे उतनी ही अधिक दूर हो जाती है। सांसारिक स्वतंत्रता ने न केवल श्रद्धा को, बल्कि बुनियादी सांसारिक शिष्टाचार को भी बाहर निकाल दिया है। कुछ लड़कों को अपने पिता पर चिल्लाने में कोई संकोच नहीं होता: "अरे , पापा! क्या आपके पास सिगरेट है ? मेरे पास खत्म हो गए हैं। " क्या अतीत में कभी कोई ऐसी बात सुन सकता था? भले ही कोई किशोर धूम्रपान करता हो, वह चोरी-छिपे करता था। लेकिन अब — जैसे कि यह कोई बड़ी बात ही न हो! तो फिर, बच्चे दिव्य कृपा से पूरी तरह से वंचित कैसे न हों ? आजकल, छोटी लड़कियाँ अपने माता-पिता के सामने ही अपने भाइयों को चर्च जाने पर खरी-खोटी सुनने के लिए सबसे अभद्र भाषा का उपयोग करती हैं , जबकि उनके पिता चुपचाप देखते रहते हैं। जब मैंने यह सुना तो मेरे रोंगटे खड़े हो गए। बाद में , जब मैं अकेली रह गई, तो मैं खुद से बात करने लगी।

एक सांसारिक वातावरण और सांसारिक माता-पिता बच्चों को बर्बाद कर देते हैं। वातावरण का बच्चों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। शर्म और दयालुता जैसे गुणों वाले बच्चे बहुत कम हैं। अधिकांश कड़वे और कठोर बच्चे इसलिए ऐसे हो जाते हैं क्योंकि वे निर्लज्जता से व्यवहार करते हैं। कई माता-पिता अपने बच्चों को मेरे पास लाते हैं और कहते हैं , 'फादर, मेरे बच्चे में एक राक्षस है। ' लेकिन मैं देख सकता हूँ कि इन बच्चों में कोई राक्षस नहीं है। ईश्वर न करे ! इतने सारे बच्चे नहीं हैं जिनके भीतर कोई राक्षस हो। बाकी सभी बाहरी राक्षसी प्रभाव के अधीन हैं। यानी, बच्चों के भीतर कोई राक्षस नहीं है ; यह उन्हें बाहर से नियंत्रित करता है। लेकिन बाहर से काम करते हुए भी, यह अपना काम कर ही लेता है। और यह सब कहाँ से शुरू होता है ? निर्लज्जता से। अपने बड़ों से निर्लज्जता से बात करके , बच्चे अपने ऊपर से ईश्वर की कृपा को दूर भगा देते हैं। और जब ईश्वर की कृपा चली जाती है , तो दुष्ट आत्माएँ आ जाती हैं , और बच्चे कटु हो जाते हैं और उत्पात मचाते हैं। इसके विपरीत, जो बच्चे श्रद्धावान और सम्मानजनक हैं , जो अपने माता-पिता, शिक्षकों और बड़ों की आज्ञा मानते हैं , उन्हें निरंतर ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है। ऐसे बच्चों पर ईश्वर की कृपा बनी रहती है। वे ईश्वर की कृपा से आच्छादित रहते हैं। ईश्वर के प्रति महान श्रद्धा , साथ ही अपने बड़ों के प्रति गहरी सम्मान , बच्चों की आत्मा में प्रचुर दैवी कृपा को आकर्षित करती है और उन्हें कृपा से इतना भर देती है कि कृपा का दैवी तेज उनमें से दूसरों पर चमकता है। ईश्वर की कृपा छोटे विद्रोहियों और दुष्ट बच्चों पर नहीं उतरती; यह उन बच्चों पर उतरती है जो प्रेममय , समझदार और श्रद्धावान होते हैं। जो बच्चे सम्मानजनक और विनम्र होते हैं , उन्हें पहचानना आसान होता है। उनकी आँखें चमकती हैं। और वे अपने माता-पिता और आम तौर पर अपने बड़ों के प्रति जितना अधिक सम्मान दिखाते हैं , उन्हें परमेश्वर की उतनी ही अधिक कृपा प्राप्त होती है। वे जितने अधिक अव्यवस्थित और अवज्ञाकारी होते हैं , परमेश्वर की कृपा उनसे उतनी ही अधिक दूर हो जाती है।

एक बच्चा जिसके दूसरों से कोई न कोई रंजिश हो, एक बच्चा जिसे कुछ भी पसंद न आए — 'यह सही नहीं है, वह सही नहीं है' — वह एक बागी बन जाएगा, वह शैतान बन जाएगा। आखिरकार, लूसिफर ने भी अपना सिंहासन परमेश्वर के सिंहासन से ऊपर रखना चाहा था। बस देखिए : जिन सभी बच्चों की मनमानी उनके माता-पिता द्वारा पूरी की जाती है, वे छोटे विद्रोही बन जाते हैं। और यदि बच्चे पश्चाताप नहीं करते, ताकि वे इस बुरी लहर से खुद को मुक्त कर सकें जो उन पर हावी हो रही है, और यदि वे निर्लज्जता से व्यवहार करना जारी रखते हैं, तो—भगवान न करे! — ईश्वर की कृपा उन पर दोगुनी तरह से छोड़ दी जाएगी। और वे यहां तक कर देते हैं कि वे ईश्वर के बारे में भी अनादरपूर्वक बोलते हैं, जिसके बाद वे पहले से ही दुष्ट आत्माओं के अधीन हो जाते हैं।

"अपने पिता और अपनी माता का सम्मान करो"[204]

आजकल के बच्चे किस हालत में आ गए हैं! वे एक भी शब्द बर्दाश्त नहीं कर सकते। और जहाँ तक डंडे खाने की बात है — तो भूल ही जाइए! बच्चे अनादरपूर्ण, बहुत स्वार्थी और नर्वस होते हैं। वे अपनी स्वतंत्रता का दुरुपयोग करते हैं। एक बच्चा अपने माता-पिता से कहता है: 'मैं तुम्हें पुलिस के पास ले जाऊँगा।' कुछ समय पहले, एक पंद्रह साल का लड़का ऐसी शरारत करने लगा कि उसके पिता ने उसे एक थप्पड़ मार दिया। फिर वह लड़का पुलिस के पास गया, अपने ही पिता के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई, और उस आदमी पर मुकदमा चलाया गया! मुकदमे के दौरान, पिता ने कहा: 'तुम मेरे खिलाफ एक अन्यायपूर्ण फैसला सुना रहे हो। आखिरकार, अगर मैंने अपने बेटे को वह थप्पड़ न मारा होता, तो वह जेल पहुंच जाता।' और दर्द तुम्हें नहीं, बल्कि मुझे होता।" यह कहने के बाद, उन्होंने उस युवा 'वादी' को पकड़ा, उसके गाल पर दो थप्पड़ मारे और कहा: "मुझे इन थप्पड़ों के लिए आज़माओ, न कि उस वाले के लिए। मुझे अभी जेल में डाल दो, क्योंकि मैंने उसे बिना किसी वजह के मारा है।"

मैं जो कहने की कोशिश कर रहा हूँ वह यह है कि बच्चे कितनी हद तक पहुँच गए हैं। यही उनका वर्तमान 'मानसिकता' है। पुराने दिनों में, माता-पिता हमें डाँटते थे, बेल्ट से मार सकते थे, लेकिन हमारी कोई बुराई नहीं होती थी। हम बेल्ट को स्नेह के एक रूप के रूप में ही लेते थे, बिना बहस किए, इस पर विचार किए बिना कि हमने कुछ गंभीर रूप से गलत किया है या नहीं। हम मानते थे कि किमरबंद भी हमारी भलाई के लिए ही था। हम जानते थे कि हमारे माता-पिता हमसे प्यार करते थे और कभी हमें सहलाते, कभी चूमते, कभी सिर पर एक थप्पड़ भी मारते थे, क्योंकि एक माता-पिता का थप्पड़, एक माता-पिता का सहलाना और एक माता-पिता का चूमना — यह सब, इसे कैसे कहूँ — यह सब प्यार से आता है। जब माता-पिता अपने बच्चों को मारते हैं, तो उनका अपना माता-पिता वाला दिल दुखता है, जबकि जिब बच्चों को उनके माता-पिता द्वारा मारा जाता है, तो केवल उनकी गाल ही दुखती है। तो, यह निष्कर्ष निकलता है कि दिल का दर्द एक थप्पड़ के दर्द से कहीं ज्यादा तीव्र होता है। एक माँ अपने बच्चों के साथ जो कुछ भी करती है — चाहे वह उन्हें डांटे, पीटे या लाड़-प्यार करे — वह सब कुछ प्यार से ही करती है; यह सब एक ही प्रेममय माँ के दिल से निकलता है। हालाँकि, जब बच्चे, इसे समझने में असफल होकर, अभद्रता से बात करते हैं, विरोध करते हैं और विद्रोह करते हैं, तो वे अपने भीतर से दैवीय कृपा को भगा देते हैं। और उसके बाद, यह स्वाभाविक है कि वे उसी के अनुरूप दैवीय प्रभाव के अधीन हो जाएँ।

— गेरोन्डा, लेकिन क्या दुष्ट माता-पिता भी नहीं होते?

— हाँ, हैं। हालाँकि, ईश्वर उन बच्चों की मदद करता है जिनके माता-पिता ऐसे होते हैं। ईश्वर अन्यायी नहीं है। और जंगली नाशपाती के पेड़ भी अक्सर फलों से लदे होते हैं। माउंट अथोस पर, मेरे कालीवा जाने वाली सड़क के किनारे एक जंगली चेरी का पेड़ है। वह इतना

---

[204] निर्गमन 20:12.

फल से लदा हुआ है कि आप पत्तियाँ भी नहीं देख सकते। उसकी टहनियाँ अपने वजन से झुक जाती हैं। फिर भी, संवर्धित पेड़, छड़िकाव के बावजूद, [अक्सर] बिल्कुल भी फल नहीं देते।

एक पीढ़ीगत अंतर

दुनिया एक पागलखाने में बदल गई है। छोटे बच्चे आधी रात को सोने जाते हैं, जबकि उन्हें सूर्यास्त के तुरंत बाद सो जाना चाहिए। उन्हें ऊंची-ऊंची इमारतों में बंद कर दिया जाता है, कंक्रीट के भीतर कैद, वयस्कों की समय-सारणी के अनुसार जीते हुए। बच्चों को क्या करना चाहिए, और वयस्कों को क्या करना चाहिए? बच्चे मेरे पास आते हैं और कहते हैं, 'हमारे माता-पिता हमें नहीं समझते।' माता-पिता मेरे पास आते हैं और कहते हैं, 'हमारे बच्चे हमें नहीं समझते।' माता-पिता और बच्चों के बीच एक खाई बन गई है, और इसे मिटाने के लिए, माता-पिता को खुद को अपने बच्चों की जगह रखना होगा, और बच्चों को खुद को अपने माता-पिता की जगह रखना होगा। यदि बच्चे अब अपने माता-पिता को सताते नहीं हैं, तो बाद में, जब वे स्वयं वयस्क बनते हैं, तो उनके अपने बच्चे भी उन्हें सताएंगे नहीं। और इसके विपरीत: जो अब अवज्ञाकारी हैं और अपने माता-पिता को सताते हैं, उन्हें बाद में उनके अपने बच्चों द्वारा सताया जाएगा, क्योंकि आध्यात्मिक कानून लागू होंगे।

— लेकिन कुछ बच्चे, गेरोन्डा, कहते हैं कि वे अपने माता-पिता के अत्यधिक प्रेम के कारण भटक गए हैं।

— वे गलत हैं। जब कोई बच्चा निस्वार्थ होता है, तो वह अपने माता-पिता के प्यार से बिगड़ता नहीं है। लेकिन अगर कोई बच्चा अपने माता-पिता के प्यार का अपने फायदे के लिए फायदा उठाता है, तो वह बिगड़ जाएगा और बर्बाद हो जाएगा। यदि कोई बच्चा अपने माता-पिता के प्यार से बिगड़ जाता है, तो, असल में, वह पहले से ही बिगड़ चुका होता है। उन्हें अपने माता-पिता और उनके प्यार के लिए ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, लेकिन इसके बजाय वे दयालुता से पेश आने पर असंतुष्ट रहते हैं। आखिरकार, कुछ बच्चों के तो माता-पिता ही नहीं होते! और इस पर क्या कहा जा सकता है? जब कोई बच्चा अपने माता-पिता को अपना उपकारी नहीं मानता और उनसे प्रेम नहीं करता — भले ही उसके माता-पिता ईश्वर से डरते हों — तो वह अपने महान उपकारी और सभी लोगों के पिता, ईश्वर से कैसे प्रेम और सम्मान कर सकता है? आखिरकार, कम उम्र में ईश्वर की महान आशीर्वादों को समझना बहुत मुश्किल है।

अध्याय 5.
लोगों के आंतरिक संघर्ष और उनकी बाहरी दिखावट पर

दुखी सांसारिक लोग अपनी आंतरिक अवस्था के अनुसार ही वस्त्र धारण करते हैं

— गेरोना, मेरी एक इच्छा पूरी करो।

— काश तुम पवित्र मूर्ख इसिडोरा की तरह आध्यात्मिक रूप से 'भेषधारक' बन जाओ,[205] ताकि तुम सदाचारी पाखंड प्राप्त कर सको। देखो: दुखी सांसारिक लोग अपने सांसारिक पाखंड का

[205] धन्य इसाडोरा, ऊपरी थेबाइड में नील नदी के तट पर चौथी शताब्दी की शुरुआत में परम पूज्य पाचोमियस महान द्वारा स्थापित टावेनीसियोट कन्वेंट में एक नन के रूप में रहती थीं। मसीह के

जश्न मनाते हैं और अपनी आंतरकि अवस्था के अनुसार कपड़े पहनते हैं। पुराने दनिों में , लोग साल में केवल एक बार भेष धारण करते थे — श्रोवेटाइड के दौरान। आजकल, ज्यादातर लोग हर समय फैंसी ड्रेस में रहते हैं। पुराने ज़माने में , आप लोगों को साल में सरि्फ़ सात दनिों के लिए—श्रोवेटाइड के दौरान—फैंसी ड्रेस में देख सकते थे —लेकनि अब आप उन्हें हर दनि देखते हैं। हर कोई वैसा ही कपड़ा पहनता है जैसा उनके वचिार बताते हैं ! लोग बलि्कुल अजीब हो गए हैं। वे पागल हो गए हैं ! संयमी और वनिम्र लोग बहुत कम हैं —चाहे वे पुरुष हों , महलिाएँ हों या बच्चे। खासकर महलिाएँ —वे तो हद ही कर गई हैं। आज शहर जाते समय मैंने एक ऐसी ही महलिा को देखा , जो एक चौड़े रबिन में लपिटी हुई थी—सच में , जैसे कोई पट्टी बंधी हो—उसने कुछ अवश्विसनीय रूप से ऊँचे बूट और एक बहुत छोटी स्कर्ट पहनी हुई थी। 'यह बहुत फैशनेबल है ,' उन्होंने मुझे समझाया। अन्य महलिाएँ इतनी पतली एड़यिों पर चलती फरिती हैं। अगर वे कसिी उबड़ -खाबड़ जगह पर पैर रख दें , तो उनका ऑर्थोपेडकि सर्जन के पास जाना तय है। और जहाँ तक हेयरस्टाइल की बात है , तो उसका ज़क्रि करना ही ठीक नहीं है ... मैंने एक और 'खूबसूरत ' महलिा देखी —भगवान मुझे माफ करें —वह कसि तरह की इंसान थी! उसका चेहरा जंगली लग रहा था। उसके दाँतों के बीच एक सगिरेट धुएँ के छल्ले उड़ा रही थी! उसकी आँखें लाल-लाल थीं ! कहते हैं कि आजकल लोग यह नयिम बना लेते हैं कि जब बच्चे छोटे हों तो घर पर धूम्रपान नहीं करना है। फरि भी वे बेचारे बच्चे तो पहले से ही धुएँ से दम घुटकर मर चुके होते हैं , जैसे कोई हेरगि ! और कॉफ़ी भी हानकिारक है ; इससे वे ऐसे चेहरे बनाते हैं जो मैंने पहले कभी नहीं देखे। ईश्वर की कृपा समाप्त हो गई है ; उसने लोगों को पूरी तरह से त्याग दयिा है।

मुझे याद है , माउंट सनिाई में अपने समय के दौरान, लोग ऐसे कपड़े पहनकर आते थे कि मेरे शब्द ही खत्म हो जाते थे। मठ में आने वाली महलिा पर्यटकों को देखकर मुझे कतिनी पीड़ा होती थी! वे कतिनी भद्दी लगती थीं ! यह ठीक वैसा ही था जैसे खूबसूरत बाइज़ेंटाइन आइकन को कूड़े के ढेर पर फेंक दयिा गया हो, बस फर्क इतना था कि लोगों ने — ईश्वर के आइकन ने —खुद को उस कूड़े के ढेर पर फेंक दयिा था। एक बार मैंने एक महलिा को फेलोनी जैसा कुछ पहने देखा ,[206] और कहा: "खैर , शुक्र है , कम से कम एक तो कुछ -ना-कुछ सभ्य ढंग से तैयार है। ठीक है , छोड़ो , मुझे क्या फर्क पड़ता है , चाहे वह फेलोनी पहने या खरबूज़ा ; कम से कम वह बाकी लोगों से तो अलग दखिती है। " लेकनि फरि 'फेलोनी वाली महलिा' मेरी तरफ मुड़ी ... मैंने क्या देखा ! उसका सामने वाला हस्सिा पूरी तरह से खुला हुआ था!

लोग कहाँ आ पहुँचे हैं ! मुझे एक दुल्हन की तस्वीर भेजी गई थी, इस नविेदन के साथ कि मैं उसके सुखी वैवाहकि जीवन के लिए प्रार्थना करूँ। उसकी शादी की पोशाक ने शालीनता की सभी अवधारणाओं को चुनौती दी। इस तरह कपड़े पहनना, संस्कार और चर्च के पवत्रि स्थान का अनादर करने के समान है। आध्यात्मकि लोग भी इस पर दोबारा वचिार नहीं करते , तो हम बाकी लोगों से क्या उम्मीद कर सकते हैं ? इसीलिए मैं कहता हूँ कि अगर मठ भी एक रोकने वाली शक्ति नहीं बनते हैं , तो कोई और ब्रेक नहीं मलिेगा। आजकल, लोग बेकाबू हैं ; उन पर कोई रोक-टोक नहीं है।

पहले के दनिों में , जब मसीह के लिए पवत्रि मूर्ख हुआ करते थे , तो दुनिया में बहुत कम पागल लोग थे। तो शायद हमें मसीह के लिए पवत्रि मूर्खों से कहना चाहिए कि वे स्वभाव से पागल लोगों को ठीक करें और मसीह के लिए एक बार फरि से दुनिया में पवत्रि मूर्ख के रूप में प्रकट हों ? और क्या कहने की बात है : आज आप सबसे अवश्विसनीय चीजें देखते और सुनते हैं। एक आदमी ने मुझे बताया कि आजकल के फैशनेबल आलसी अपने कपड़े लेते हैं , जानबूझकर उन्हें जगह-जगह रगड़कर और खुरदरा करके खराब कर लेते हैं , फरि उन्हें काटकर मोटी सुई से उन पर पैबंद लगा देते हैं। यह सुनकर तो मैंने खुद को भी क्रॉस कर लिया। खैर , ठीक है , एक कामकाजी आदमी का ऐसे कपड़े पहनना तो स्वाभावकि है। लेकनि एक आलसी के लिए!.. और फरि उस आदमी ने मुझे कुछ और भी बताया। उसने कहा, "मैं आपको बताता हूँ , गेरोन्डा , इससे भी ज्यादा अजीब बात। मेरी पत्नी एक बार सोग्लसयिा स्क्वायर [207] में हमारे दोस्तों के परविार के

लिए पवत्रि मूर्खता का तपस्यात्मक जीवन जीते हुए , धन्य ने पागलपन और भूत -प्रेत का स्वांग कयिा, और स्वयं को नम्र तथा दीन बनाया। एक मठवासी टोपी के बजाय, उन्होंने अपने सरि पर फटे -पुराने कपड़े लपेटे , नंगे पैर चलीं , और बनिा कसिी शकिायत के नम्रता से दूसरों से अपमान और पटिाई स्वीकार की। धन्य एक की पवत्रिता एक दैवीय दर्शन में तपस्वी अबा पटिरिमि को प्रकट हुई , जनि्होंने बदले में , कन्वेंट की सभी बहनों को उनके बारे में बताया। इसके बाद, मानवीय महमिा से बचना चाहकर, धन्य एक ने गुप्त रूप से कन्वेंट छोड़ दयिा और अपनी मृत्यु के दनि तक गुमनामी में रहीं। पूज्य इसाडोरा की स्मृति 10 मई को मनाई जाती है। देखें संत -चरत्रिावली , मई, दसवाँ दनि।

[206] फेल्न – एक पुरोहति का वस्त्र। – अनुवादक की टप्पिणी।

[207] एथेंस का केंद्रीय चौराहा। – अनुवादक की टप्पिणी।

एक लड़के से मिली। उसने देखा कि उस लड़के की पैंट ठीक उसके पैरों के शुरू होने वाली जगह से फटी हुई थी। 'मेरे प्यारे बेटे ,' मेरी पत्नी ने कहा, 'कम से कम पीछे से हाथ से अपना आप ढक लो...' 'मुझे अकेला छोड़ दो!' उस निकम्मा जवान ने जवाब दिया। 'आजकल यही फैशन है !' बेचारे बच्चे !..

— गेरोना , कुछ लोग संतों की तस्वीरों वाले ब्लाउज या शर्ट पहनते हैं। क्या यह अनुमति है ?

— अगर ब्लाउज या जैकेट पर संतों को दर्शाया गया है , तो उन्हें पहनने दें ; इसमें कोई हर्ज़ नहीं है। उनके लिए शैतान की तस्वीरों की बजाय संतों की तस्वीरें पहनना बेहतर है। लेकिन पैंट पर संतों को चित्रित करना अनुचित है। यह अनादर है। कुछ धार्मिक लोग हैं जो अपने कपड़ों को विभिन्न ईसाई डिज़ाइनों से सजाना पसंद करते हैं। उदाहरण के लिए, जब पैट्रआर्क दिमित्रियोस अमेरिका में थे , तो वहां ब्लाउज और टी-शर्ट बनाए गए थे जिन पर पैट्रआर्क और कॉन्स्टेंटिनोपल में सेंट सोफिया चर्च की छवियां थीं।

— क्या उन्होंने यह भक्ति के लिए किया था?

— खैर , यह यहूदियों ने नहीं किया, बल्कि ईसाइयों ने किया। आखिरकार, ऐसे लोग हैं जो अच्छे काम करते हैं , जैसे कि धूर्तों के साथ-साथ अच्छे डॉक्टर भी होते हैं।

— गेरोन्डा , क्या कपड़ों में इस शिष्टाचार की कमी का कारण भी विदेशों का प्रभाव है ?

— खैर , और कहाँ से आ सकता है ? इसीलिए, मेरे युवा दिनों में , लोग कहा करते थे : 'अरे , ये तो स्म yrna के लोग हैं ...' स्म yrna एक तटीय शहर था और वहाँ बहुत सारे विदेशी आते थे। संत आर्सेनियस पोशाक को लेकर बहुत सख्त थे। फारस की एक युवती की शादी हो गई और उसने स्म yrna से लाया हुआ एक रंगीन दुपट्टा पहना। संत आर्सेनियस ने उसे बार-बार फटकार लगाई, और कहा कि वह उस दुपट्टे को फेंक दे और फारस की सभी महिलाओं की तरह साधारण कपड़े पहने। उस जवान चंचल महिला ने उनकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। एक दिन, संत आर्सेनियस ने उसे फिर से रंगीन दुपट्टे में देखा और सख्त लहजे में कहा: 'मुझे फारस में पश्चिमी बुराइयों की कोई ज़रूरत नहीं है। यह जान लो: अगर तुम होश में नहीं आती, तो जो बच्चे ——तुम्हारे होंगे , वे बपतिस्मा के बाद मर जाएँगे। वे देवदूतों की तरह ईश्वर के पास चले जाएँगे , लेकिन तुम उनमें से किसी पर भी खुशी मनाने का कोई कारण नहीं पाओगी।" लेकिन इसके बाद भी वह होश में नहीं आई, और उसके दो बच्चे मर गए। तब जाकर वह संभली , अपना रंगीन स्कार्फ फेंक दिया, संत आर्सेनियस के पास गई और उनसे क्षमा याचना की।

— गेरोन्डा , क्या साधु बनने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति के लिए आध्यात्मिक जीवन में गहरे रंग के कपड़े पहनना मददगार होता है ?

— हाँ , गहरे रंग के कपड़े बहुत सहायक होते हैं। वे व्यक्ति को संसार से मुक्त होने में मदद करते हैं , जबकि चमकीले रंग के कपड़े व्यक्ति को संसार से चिपके रहने के लिए प्रेरित करते हैं। यदि कोई संन्यासी बनने की योजना बना रहा व्यक्ति कहे , 'जब मैं मठ में जाऊँगा , तब मैं काले वस्त्र पहनूँगा , और तब मैं संन्यास नियम का पालन करूँगा ,' तो वहाँ मठ में भी, वे अपना जीवन... काला बना लेंगे। लेकिन , यदि कोई व्यक्ति संसार में रहते हुए ही, संन्यासियों द्वारा किए जाने वाले कार्यों को आनंदपूर्वक करता है , और उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा करता है , तो उसे संसार में भी आध्यात्मिक आनंद मिलेगा , और बाद में , संन्यास जीवन में , वह एक साथ दो या तीन सीढ़ियाँ लांघते हुए तेजी से प्रगति करेगा।

— गेरोना , कभी-कभी चर्च जाने वाले और साधारण कपड़े पहनने वाले बच्चों को उनके बड़ों से कड़ी आलोचना झेलनी पड़ती है।

— ऐसा विश्वास और दिल से करने पर, वे अपने बड़ों को भी अपनी जगह पर रख देती हैं। मैं एक युवती को जानती थी जो लंबी आस्तीन वाली काली पोशाक पहनती थी। उसमें कितनी श्रद्धा थी! एक बार, एक बहुत फैशन -पसंद बूढ़ी महिला ने उस पर ताना मारना शुरू कर दिया: "एक जवान लड़की होकर, काले रंग के कपड़े और लंबी आस्तीन वाली पोशाक पहनकर घूमने में तुम्हें शर्म नहीं आती?" — "चूंकि आप बड़े लोग हमारे लिए ऐसे उदाहरण नहीं रखते ," लड़की ने जवाब दिया, "तो कम से कम हम युवा लोग तो काले कपड़े ही पहनेंगे। " और इस तरह उसने उस बूढ़ी फैशनिस्टा को उसकी जगह दिखा दी।

बस इसे ही देखिए : एक महिला अपने पति को दफ़नाती है और तुरंत ही चमकीले रंगों के कपड़े पहन लेती है। इस पर क्या कहा जा सकता है ? जबकि मेरी बहन, जो तेईस साल की उम्र में विधवा हो गई थी, ने अपनी मृत्यु के दिन तक अपना काला سابل कभी नहीं उतारा। मेरे लिए, धन्य तो वे विधवाएँ हैं जो इस जीवन में , भले ही उन्होंने अपनी मर्जी के खिलाफ काले कपड़े पहने हों , एक पवित्र , तेजस्वी जीवन जीती हैं और बिना किसी शिकायत के , ईश्वर की महिमा करती हैं। न कि वे शोख कपड़े पहनने वाली शोक-ग्रस्त महिलाएँ जो पापी — 'चकाचौंध ' — जीवन जीती हैं।

आजकल कसिी पुरुष को महलिा से अलग पहचानना असंभव है।

एक बार, उसे परखने के लिए, बच्चों को बुद्धमिान सुलैमान के पास लाया गया—लड़के और लड़कयिाँ बलि्कुल एक जैसे कपड़े पहने हुए —ताकि वह एक को दूसरे से अलग कर सके। सुलैमान बच्चों को एक झरने तक ले गया और उन्हें अपने चेहरे धोने के लिए कहा। बच्चों को नहाते हुए देखकर , उन्होंने उन्हें अलग कर दयिा। लड़कयिों ने सावधानी और संकोच से अपने चेहरे पर पानी छड़िका , जबकि लड़कों ने नडिर होकर अपने चेहरों पर पानी छड़िका और उसे अपनी हथेली से थपथपाया।

आजकल, पुरुष इतने नपुंसक हो गए हैं कि उन्हें महलिाओं से अलग पहचानना अक्सर असंभव हो गया है। पुराने दनिों में , आप पाँच सौ मीटर की दूरी से भी एक पुरुष और महलिा को पहचान सकते थे। आजकल, आप कभी-कभी पास से भी नहीं पहचान पाते हैं। पहचाना नहीं जा सकता: आपके सामने वाला व्यक्ति पुरुष है ? या महलिा? इसीलिए भवष्यिवाणी में कहा गया है कि एक समय आएगा जब पुरुष और महलिा में अंतर करना असंभव हो जाएगा। गुफा -नवािसी संत अर्सेनी ने एक बार लंबे बालों वाले एक युवक से पूछा था: 'तो तुम कौन हो? तुम लड़का हो या लड़की ?' संत स्वयं भी यह नहीं समझ पाए। पहले के दनिों में पवत्रि पहाड़ पर, वे अपने बाल काटते थे। आजकल, लोग जैसे हैं वैसे ही आते हैं ... लेकनि मैं खुद उनके बाल काटता हूँ : उसी कैंची से जसिसे मैं माला बनाते समय ऊन की छँटाई करता हूँ। क्या आप जानते हैं कि मैंने अब तक कतिने काट दिए हैं ! मैं बलदिान की दीवार के पीछे आँगन में उनका बाल काटता हूँ। जब ये लंबे बालों वाले लोग आते हैं , तो मैं उनसे कहता हूँ : 'बस यही तो चाहिए! देखो , मेरे कुछ गंजे परचिति हैं और मैंने उनसे कुछ हेयरपीस चपिकाने का वादा कयिा है। थोड़ा प्यार दखिाओ, मुझे अपने बाल काटने दो! मैं क्या करूँ ? मैंने लोगों से अपना वचन दयिा है। '

— क्या वे मान जाते हैं , गेरोना ?

— यह इस बात पर नरि्भर करता है कि आप उन्हें कैसे समझाते हैं। मैं उनके पास दौड़कर यह चलि्लाते हुए नहीं जाता: 'क्या अपमान है ! तुम्हें शरम नहीं आती! तुम इस पवत्रि स्थान का अपमान कर रहे हो!' — बल्कि मैं कहता हूँ : 'सुनो , लड़को , इस बाल-संवार से तुम अपनी मर्दानगी का अपमान कर रहे हो। अगर आप ऑनर गार्ड के एक गार्ड्समैन को हार्मनी स्क्वायर में एक महलिा का हैंडबैग लेकर मार्च करते हुए देखें , तो आपको कैसा लगेगा ? खैर , बताइए, क्या एक हैंडबैग एक गार्ड्समैन के लिए उपयुक्त है ? चलिए आपके बाल काटते हैं !" और मैं काट देता हूँ। क्या आप जानते हैं कि मैं कतिना बाल इकट्ठा करता हूँ ! कभी-कभी, अगर उनमें से कोई हंगामा करता है और तरह-तरह के 'क्यों ' और 'क्या ' पूछना शुरू कर देता है , तो मैं जवाब देता हूँ : 'यह "क्यों " वाला चक्कर क्या है ? क्या मैं कोई भक्षिु नहीं हूँ ? तो मैं "मुंडन " कर रहा हूँ। आखरि, यह मेरा काम है। ' यह सब इस बात पर नरि्भर करता है कि आप इसे कैसे पेश करते हैं। लड़के हँसते हैं , और मुझे बस यही चाहिए। इसके बाद, मैं उनका सरि मुंडवाता हूँ। नहीं , मैं 'मुंडन ' के दौरान उनका नाम नहीं बदलता। मैंने केवल एक छोटे लड़के का नाम 'इट इज़ ट्रूली मीट' रखा था, क्योंकि जब मैं उसका 'मुंडन ' कर रहा था, तो पास से 'इट इज़ ट्रूली मीट!' के आइकन वाली एक शोभायात्रा गुजर रही थी। और मेरे 'दीक्षा -ग्राहकों ' के माता-पिता कतिने प्रसन्न होते हैं ! क्या आप जानते हैं कि मुझे पिता और माताओं से कतिने आभारी पत्र मलिते हैं ? वाह! ईश्वर मुझे सरि्फ इसी के लिए माफ कर देगा !

आजकल सरि के ऊपर के बाल शेव करवाकर पीछे एक पोनीटेल छोड़ना फैशन बन गया है। "अरे , ईगल्स !" मैं पूछता हूँ , "इन पोनीटेल्स का क्या फायदा है ?" "हम," ईगल्स जवाब देते हैं , "अपनी पोनीटेल्स इसलिए रखते हैं ताकि लोग हम पर ध्यान दें। " — "तुम सब अजीबोगरीब

लोगों का झुंड हो, अजीबोगरीब लोगों का झुंड ," मैं उनसे कहता हूँ , "आजकल लोगों के पास इतनी समस्याएँ हैं कि वे तुम पर ध्यान ही नहीं देंगे , भले ही तुम उन्हें पैसे देकर भी बुला लो!" और कुछ लोग, वे मजबूत -मजबूत लड़के , कान की बालियाँ पहनते हैं। मैंने उनसे कितनी सारी बालियाँ उतार ली हैं !

— और कुछ , गेरोन्डा , सिर्फ एक ही बाली पहनते हैं।

— अराजकतावादी एक ही बाली पहनते हैं। एक बाली अराजकता का प्रतीक है। वे इसे महिलाओं की तरह खुद को सजाने के लिए नहीं पहनते। वे अपने कान में छेद कराते हैं और विरोध के प्रतीक के रूप में बाली पहनते हैं। एक बार, एक पिता अपने बाईस साल के बेटे के साथ मेरे कालीवा में आए—जिसके बाल लंबे थे , दाढ़ी थी और कान में बाली थी। मैंने उससे कहा, 'बाली जवान लड़कों के लिए अनुचित है। ' 'बहुत से लोग आपको गलत समझते हैं। मुझे आपको यह समझाने की ज़रूरत नहीं है , लेकिन लोग यह नहीं जानते कि आप अराजकतावादी हैं , इसलिए वे गलत धारणा बना लेते हैं। ' इसके बाद, उसने कान की बाली उतारकर मुझे दे दी। वह सोने की बनी थी। मैंने कहा, 'इसे ले जाओ, किसी ज़ेवर बनाने वाले के पास, ताकि वह आपके लिए एक क्रॉस बना दे जिसे आप अपनी गर्दन में पहन सको।'

'कुछ लोग, गेरोन्डा , तो अपनी नाक में भी बाली पहनते हैं। '

— इसका मतलब है कि शैतान ने उनकी नाक में छल्ला डाल दिया है। बस वह छल्ला दिखाई नहीं देता। और कुछ लोग अपनी गर्दन के चारों ओर कई पंक्तियों में चौड़ी सोने की चेनें पहनते हैं। मैंने उनमें से एक को खूब डांटा , उससे वह सारी चमक-दमक छीन ली और कहा: 'यह सोना किसी अनाथ को दे दो। या इसे अपनी माँ को दे दो ताकि वह इसे किसी गरीब को दे सकें। ' जब मैंने उसे एक अधिक या कम धार्मिक रूप दे दिया, तो उसने मुझसे पूछा , 'मुझे क्या करना चाहिए?' — 'शुरुआत करो,' मैंने कहा, 'एक साधारण चेन पर एक क्रॉस पहनकर।' ज़रा सोचिए— पुरुष सोने के आभूषण पहन रहे हैं ! वह आपके सामने खड़ा है , सोने से दमकता हुआ , उसकी गर्दन में दो-तीन मोटी सोने की चेनें हैं —राजकुमारी भी ऐसी चीजें नहीं पहनतीं —और वह वहीं खड़ा है , अपनी समस्याओं के बारे में शिकायत कर रहा है ! और यही तो समस्या है ! उसकी समस्याएँ ही वह तपस्या हैं जिसे वह भोग रहा है। कुछ लोगों से मैं ये छोटी-मोटी चीज़ें खुद हटा देता हूँ ; दूसरों से मैं कहता हूँ कि वे खुद ऐसा करें। लोगों ने हर चीज़ का संतुलन खो दिया है। वे पूरी तरह से बेकार हो गए हैं। कुछ लोग अपनी गर्दन में राशि चिह्न पहनते हैं। मैं उनमें से एक से पूछता हूँ , 'यह क्या है ?' 'मैंने पहली बार ऐसा कुछ देखा है। ' 'यह,' वह जवाब देता है , 'एक छोटा जानवर है —मेरा राशि चिन्ह। ' पहले तो मैंने सोचा कि यह परमेश्वर की माता का प्रतीक है। "तो फिर," मैं कहता हूँ , "अगर आप खुद भी ये राशि चिन्ह पहन रहे हैं , तो क्या आप भी चिड़ियाघर के छोटे जानवर हैं ?" ओह, क्या हाल है ... उनका आंतरिक अराजकता बाहर आ रही है। आइए प्रार्थना करें कि ईश्वर युवाओं को ज्ञान दें और थोड़ी सी अच्छाई को बनाए रखें।

लोग सादगी के लिए तरसते हैं

यह अच्छी बात है कि लोग सादगी की लालसा करते हैं। वे तो सादगी को फैशनेबल बना देने तक पहुँच गए हैं , भले ही उनके भीतर उसकी एक झलक भी न हो। कुछ लोग फीके , पुराने कपड़ों में पवित्र पर्वत पर आते हैं , और मैं खुद से पूछता हूँ : 'वे ऐसे कपड़े क्यों पहने हुए हैं ? आखिरकार, वे खेतों में काम तो नहीं कर रहे हैं , है ना?" कोई व्यक्ति साधारण ग्रामीण बोली में बोलता है क्योंकि यह उसके लिए स्वाभाविक है , और आप उस ग्रामीण बोली की सरसराहट

सुनकर प्रसन्न होते हैं। हालांकि, कोई और अभिनय करता है, 'एक किसान की तरह' बोलने की कोशिश करता है, लेकिन उसकी 'किसान जैसी बोली' आपको बीमार कर देती है। और कुछ लोग पवित्र पहाड़ पर टाई पहनकर आ जाते हैं ... आग से निकलकर भट्टी में कूदना ... ऐसा ही एक 'तीर्थयात्री' अथोस में अपने साथ छह या सात टाई ले आया। सुबह, जब वह मुझे मिलने आने की तैयारी कर रहा था, तो उसने एक टाई और सूट पहन लिया—जैसे किसी परेड के लिए तैयार हो रहा हो। किसी ने उससे पूछा, 'तुम वहाँ क्या कर रहे हो?' उसने जवाब दिया, 'मैं फादर पैसियोस से मिलने जा रहा हूँ।' 'तुम इतने औपचारिक कपड़े क्यों पहने हो?' 'ताकि,' उसने जवाब दिया, 'मैं उनका सम्मान कर सकूँ।' ओह, हम किस दौर में आ गए हैं!

लोगों में सादगी बिल्कुल नहीं है। इसीलिए युवा लोग बिना किसी लक्ष्य के भटकने लगे हैं, इधर-उधर भटकते हुए, दुनिया में अपनी जगह नहीं पा पा रहे हैं। और आध्यात्मिक लोग, जो सादगी से नहीं जी सकते, 'गले तक बटन बंद' होकर, युवाओं की कोई मदद नहीं कर सकते। आज के युवाओं के पास आदर्श के लिए कोई नहीं है, और इसलिए वे आवारा जीवन जीने लगते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि ईसाइयों को 'गले तक बँधे हुए', टाई पहने, आत्ममुग्ध और घमंडी लोगों के रूप में देखकर, युवाओं को उन और इस दुनिया के लोगों में कोई अंतर नहीं दिखता, और इसलिए वे विद्रोह कर देते हैं। यदि उन्हें आध्यात्मिक लोगों में सादगी दिखाई देती, तो वे ऐसी स्थिति में नहीं पहुँचते। लेकिन आज के युवा सांसारिक भावना से परिभाषित होते हैं, जबकि ईसाई सांसारिक शिष्टाचार से। 'हम ईसाइयों को इस तरह चलना चाहिए, ऐसा-वैसा काम इस तरह से करना चाहिए, और यह उस तरह से करना चाहिए...' ईसाई इस तरह का व्यवहार दिल से नहीं करते, श्रद्धा से नहीं करते, बल्कि इसलिए करते हैं क्योंकि 'व्यवहार इसी तरह करना चाहिए।' और युवा, यह सब देखकर कहते हैं: 'यह क्या है? गर्दन ढककर चर्च जाना? अरे, चलो यहाँ से निकलते हैं!' वे सब कुछ एक तरफ रख देते हैं और कम कपड़ों में घूमते हैं। वे दूसरे चरम पर पहुँच जाते हैं। समझते हैं? युवा लोग यह सब अपने विरोध के भाव के रूप में करते हैं। युवाओं के आदर्श होते हैं, लेकिन उनके पास अनुकरण के लिए कोई उदाहरण नहीं है। उन पर तरस आता है। इसीलिए किसी को उनके प्रेम की भावना से अपील करने की, अपनी सादगी से उन्हें छूने की आवश्यकता है। युवा लोग तब आक्रोशित हो जाते हैं जब वे देखते हैं कि यहां तक कि आध्यात्मिक लोग, यहां तक कि पादरी भी, सांसारिक तरकीबों का इस्तेमाल करके उन्हें रोकने की कोशिश कर रहे हैं। हालाँकि, जब उन्हें संकोच, साथ ही सादगी और ईमानदारी दिखाई देती है, तो युवा लोग सोचने के लिए ठहर जाते हैं। क्योंकि अगर कोई व्यक्ति ईमानदार है और खुद को पहले नहीं रखता, तो वह सरल और विनम्र होता है। यह सब उस व्यक्ति को स्वयं शांति देता है, लेकिन साथ ही यह दूसरों के लिए भी स्पष्ट होता है। कोई दूसरा महसूस कर सकता है कि आप वास्तव में उनकी परवाह करते हैं या आप पाखंडी हैं। एक पाखंडी ईसाई से एक भिखारी बेहतर है। इसीलिए जो चीज़ ज़रूरी है वह पाखंडी 'प्यार भरी मुस्कान' नहीं, बल्कि स्वाभाविक व्यवहार है; द्वेष और दिखावा नहीं, बल्कि प्रेम और ईमानदारी। मैं एक ऐसे व्यक्ति से अधिक प्रभावित होता हूँ जो आंतरिक रूप से सुव्यवस्थित हो—अर्थात्, जो दूसरों के प्रति सम्मान और सच्चा प्यार रखता हो, और जो स्थापित 'आचरण के पैटर्न' के अनुसार व्यवहार करने के बजाय सरलता से पेश आता हो। अन्यथा, एक व्यक्ति केवल बाहरी दिखावट में अटक जाता है और एक बाहरी व्यक्ति बन जाता है—अर्थात्, बस एक और मसखरा।

एक सच्चे व्यक्ति की सुंदर आत्मा की आंतरिक पवित्रता उनके बाहरी स्वरूप को सजाती है, जबकि ईश्वर के प्रेम की दिव्य मिठास उनके मुखमंडल को भी मधुर बना देती है। आंतरिक आध्यात्मिक सुंदरता एक व्यक्ति को आध्यात्मिक रूप से सजाती और पवित्र करती है, यहाँ

तक कि बाहरी रूप से भी; दिव्य अनुग्रह के माध्यम से, यह उन्हें दूसरों के सामने प्रकट करती है। इसके अलावा, यह अनुग्रह से परिपूर्ण ईश्वर के पुरुष द्वारा पहने गए साधारण कपड़ों को भी सजाता और पवित्र करता है। फादर टिकॉन[208] स्वयं अपनी कासोक (पवित्र चोगा) के टुकड़ों से मोटी सुई से टोपी सिलते थे। ये टोपी छोटी गेंदों की तरह दिखती थीं, लेकिन जब वह उन्हें पहनते थे तो उनमें से महान अनुग्रह की किरणें बिखरती थीं। वरिष्ठ जो भी कपड़े पहनते थे — चाहे वे पुराने हों या ढीले-ढाले —वे बदसूरत नहीं लगते थे, क्योंकि अपनी आंतरिक आध्यात्मिक सुंदरता से वह उन्हें भी सुंदर बना देते थे। एक अवसर पर, एक आगंतुक ने वरिष्ठ की एक तस्वीर खींची, ठीक उसी हालत में जैसे उन्होंने उन्हें पाया — सिर पर स्कुफिया के बजाय एक छोटा बैग और कंधों पर कुछ इस तरह के पजामे डाले हुए, जो उन्होंने पादरी को ठंड लगने के कारण पहनाए थे। और आज भी, जो भी इस तस्वीर को देखते हैं, वे सोचते हैं कि एल्डर ने बिशप का चोगा पहना हुआ था, जबकि वास्तव में यह एक पुरानी, धब्बेदार पजामा की जोड़ी से अधिक कुछ नहीं था! लोगों ने फादर टिकोहन के फटे-पुराने कपड़ों को भी श्रद्धा से देखा और उन्हें आशीर्वाद के रूप में स्वीकार किया। ऐसा धन्य व्यक्ति, जिसने अपने आपको आंतरिक रूप से बदल लिया है और पवित्र हो गया है, बाहरी रूप से भी उन सभी लोगों से कहीं अधिक गरिमा का धनी होता है जो अपनी बाहरी आकृति (यानी, अपने कपड़ों) को लगातार बदलते रहते हैं, जबकि आंतरिक रूप से अपने पुराने स्व और उसके 'प्रागैतिहासिक पापों' को जस का तस बनाए रखते हैं।

'पुरुष स्त्री का वस्त्र न पहने, और न स्त्री पुरुष का वस्त्र पहने'[209]

— गेरोना, मठ में पैंट पहनकर आने वाली महिलाओं के साथ हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए? वे अक्सर कहती हैं कि पैंट न केवल अधिक आरामदायक होती हैं बल्कि छोटी स्कर्ट की तुलना में अधिक विनम्र भी होती हैं।

— आजकल महिलाएँ या तो मिनीस्कर्ट पहनती हैं या पैंट! वे एक या दूसरा चुनती हैं! जबकि पुराना नियम इस मामले में पूरी तरह से स्पष्ट है, और वह भी बहुत विस्तार से! 'एक पुरुष को महिला का वस्त्र नहीं पहनना चाहिए, और न ही एक महिला को पुरुष का वस्त्र।' यह नियम है। लेकिन नियम को एक तरफ रख भी दें, तो भी विपरीत लिंग का वस्त्र पहनना अश्लील है। पतलून पहनने वाली महिलाओं की तुलना में स्कर्ट पहनने वाले पुरुष बहुत कम हैं।

— हालाँकि, खेतों में काम करने वाली महिलाएँ कहती हैं कि काम करते समय वे तभी स्वतंत्र रूप से हिल-डुल सकती हैं जब वे पैंट पहनती हैं।

— ये सब सिर्फ बहाने हैं।

— गेरोन्डा, माताएँ कहती हैं कि लिड़कियाँ पतलून इसलिए पहनती हैं ताकि उन्हें जुकाम न हो।

— क्या वे कुछ और नहीं सोच सकतीं? क्या गर्म टाइट्स नहीं होतीं? खैर, उन्हें गर्म टाइट्स पहन लेने दो ताकि उन्हें ठंड न लगे। किसी भी मुश्किल से निकलने का रास्ता निकाला जा सकता है — बशर्ते इच्छाशक्ति हो।

— जेरोंडा, जब अधिकारी किसी पैंट पहने महिला के साथ मठ में आते हैं तो हमें क्या करना चाहिए?

— उन्हें समझा दो। उनसे पूछो कि क्या वे चाहते हैं कि तुम उनके लिए रियायत करो, स्थापित व्यवस्था को तोड़ दो और मठ में अराजकता फैला दो?

— एक बार, जेरोंडा, पैंट पहने तीस महिला शिक्षक आईं, और हमने उन्हें मठ में प्रवेश करने दिया।

---

[208] एल्डर टिकॉन के बारे में जानकारी के लिए देखें: एल्डर पैसियस। द फादर्स ऑफ माउंट अथोस एंड स्टोरीज़ फ्रॉम माउंट अथोस। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लावरा, 2001। पृ. 13–39।

[209] रूसी अनुवाद में: 'न तो स्त्री पुरुष का वेश धारण करे, और न पुरुष स्त्री का वेश; क्योंकि जो ऐसा करता है, वह यहोवा तेरे परमेश्वर के लिये घृणा का कारण है' (व्यवस्थाविवरण 22:5) – अनुवादक की टिप्पणी।

— वह एक गलती थी; तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। तुम्हें उन्हें बताना चाहिए था: 'माफ़ कीजिए, लेकिन हमारे मठ में एक नियम है : पैंट पहनने वाली महिलाओं को अनुमति नहीं है। ' नहीं तो, वे दूसरे मठों में जाकर कहेंगी कि अमुक मठ ने उन्हें पैंट पहनने की हालत में भी अंदर आने दिया। तुमने , उन्हें असहज करने की इच्छा न रखकर, उनके प्रति उदारता दिखाई, लेकिन वे फिर तुम्हें ही असहज करेंगी। दरवाजे पर पुराने नियम (Old Testament) की किसी प्रासंगिक आयत का एक बोर्ड लगा दो। पचास स्क्रट सिलवाओ और नरमी से , दयालुता से उन्हें उन महिलाओं को पहनाओ जो पैंट या छोटी ड्रेस पहनकर, मठ के नियमों से अनजान, पहली बार आपसे मिलने आ रही हों।

— गेरोना , जब माध्यमिक विद्यालय के छात्र आते हैं और सभी लड़कियाँ पैंट पहने होती हैं तो हमें क्या करना चाहिए?

— उनका नाश्ता -पानी गेट पर ले जाओ।[210] इससे वे सोचने पर मजबूर हो जाएँगी। या, अगर वे पहले से आपको बता दें कि वे आ रही हैं , तो उन्हें फोन पर चेतावनी दो: 'कृपया सुनिश्चित करें कि न तो शिक्षक और न ही छात्र पैंट पहनें। ' इस तरह, वे समझ जाएँगी कि उन्हें मठ का सम्मान करना चाहिए। यह कोई पैरिश चर्च नहीं है। एक पैरिश में , पादरी को महिलाओं को यह सिखाना चाहिए कि उन्हें पैंट क्यों नहीं पहननी चाहिए और ताकि वे खुद को एक दैवीय तरीके से प्रस्तुत करें। और यदि, कभी-कभार, किसी दूसरे पैरिश की महिलाएं पैंट पहनकर उसकी चर्च में आती हैं , तो उसे इससे निपटने का कोई तरीका खोजना चाहिए। चर्च एक माँ है , सौतेली माँ नहीं।

— गेरोना , हालांकि , कई लोग कहते हैं : 'इतनी सख्ती बरतने से , आप लोगों को चर्च से दूर कर रहे हैं। '

— लेकिन अगर पुराने नियम में ईश्वर की आज्ञा है कि महिलाएं पुरुषों के कपड़े न पहनें , तो उन्हें और क्या चाहिए? फिर भी, देखिए , वे तर्क देते हैं : 'एक महिला पैंट क्यों नहीं पहन सकती? नास्तिक क्यों नहीं पैरिश परिषदों में बैठ सकते — आखिरकार, चर्च और लोग एक ही हैं ?' लेकिन इस तरह, चर्च का भाग्य अधर्मी लोगों के फैसलों पर निर्भर हो जाएगा! वे आखिरकार चर्चों को पुस्तकालयों , गोदामों और इसी तरह की चीजों में बदल देंगे , क्योंकि वे हर चीज़ को अपने 'क्यों ' से देखते हैं। और आप इस पर क्या कह सकते हैं ?

मठों को कम कपड़े पहने पर्यटकों को भी बर्दाश्त करने की ज़रूरत नहीं है। यह तर्क देना कि पर्यटकों से एकत्र किया गया पैसा मठ द्वारा गरीबों को कपड़े पहनाने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा, इसका कोई मतलब नहीं है —यह दुष्ट की एक चाल है , जो भिक्षु को ईश्वर की कृपा से अलग करने और उसे एक सांसारिक व्यक्ति बनाने की कोशिश करता है। इसके विपरीत, मसीह के लिए अपनाया गया एक भिक्षु का संसार से सच्चा अलगाव उसे सद्गुणों से समृद्ध करता है।

— गेरोना , क्या आपको स्टोमियन मठ में पर्यटकों के लिए उपयुक्त सूचना -पट्टियाँ लगाने के लिए मजबूर होना पड़ा ?

— हाँ , मैंने कुछ छोटे सूचना बोर्ड लगाए थे। एक, जिस पर 'स्वागत है ' लिखा था, मठ के प्रवेश द्वार पर था। दो और आगे , मठ से बीस मिनट की पैदल दूरी पर, लटकाए गए थे। एक पर लिखा था: 'यदि अनुचित कपड़े पहने हैं — नदी की ओर जाइए', और एक तीर नदी की ओर इशारा कर रहा था। दूसरे पर लिखा था: 'यदि आप सादे कपड़े पहने हैं , तो पवित्र मठ की ओर बढ़ें ,' और उस पर मठ की ओर इशारा करता हुआ एक तीर लगा था। मैंने इसे काफी अच्छी तरह से लिखा है , है ना?

— गेरोन्डा , हमें गर्मियों में क्या करना चाहिए? साल के इस समय, कई महिलाएँ अपनी पीठ खुली रखकर मठ में आती हैं।

— ओह, उनकी पीठ ढकने के लिए उन्हें कुछ शॉल सिल दो। इस तरह उन्हें समझ आएगा कि जिस जगह वे आई हैं , उसका सम्मान करना चाहिए।

सौंदर्य प्रसाधन — ईश्वर की छवि पर दाग

आजकल लोग कितनी बदनामी की हद तक पहुँच गए हैं ! आजकल की महिलाएँ तरह-तरह के केमिकल पर्म्स करवाती हैं , और उनके बाल खड़े हो जाते हैं — जैसे उनमें स्टार्च लगा हो। और उनकी जो महक आती है ! उससे तो एलर्जी हो जाए। जब मैं किसी सांसारिक महिला को, सांसारिक ढंग से सजी-धजी और सांसारिक इत्रों की महक आती हुई देखती हूँ , तो मुझे गहरी घृणा महसूस होती है।

---

[210] मेहमाननवाज़ी की परंपरा के अनुरूप , ग्रीस के मठों में आने वाले हर तीर्थयात्री का स्वागत जलपान – लूकोम या कोई अन्य मीठा व्यंजन और एक गिलास ठंडे पानी के साथ किया जाता है। – अनुवादक की टिप्पणी।

एक बार, मुझे बताया गया कि एक महिला कॉस्मेटोलॉजी का अध्ययन करने के लिए जर्मनी गई थी। मैंने पूछा, 'और कॉस्मेटोलॉजी आखिर है क्या?' उन्होंने मुझे समझाया, 'कॉस्मेटोलॉजिस्ट बूढ़ी महिलाओं को जवान बना देते हैं!' तभी मुझे याद आया कि मैंने एक बार एक वृद्ध 'युवती' को देखा था जिसके माथे पर एक क्षैतिज निशान था। 'उसको क्या हुआ है, बेचारी को?' मैंने बाद में उसके एक परिचित से पूछा। 'चिंता की कोई बात नहीं है,' उसने जवाब दिया। 'उसने प्लास्टिक सर्जरी करवाई थी ताकि उसके चेहरे की त्वचा कसी जा सके और उसके झुर्रियाँ गायब हो जाएँ।' और मैंने तो सोचा था कि उस बेचारी बूढ़ी महिला को कोई दुर्घटना हुई थी और उसकी गंभीर सर्जरी हुई थी। लोग आजकल क्या-क्या नहीं करते!

'आजकल, गेरोना, कॉस्मेटिक सर्जरी को पाप नहीं माना जाता।'

— हाँ, मुझे तो यह पहले ही एहसास हो चुका है। मैं हाल ही में एक महिला से मिला जिसे मैं पहले जानता था। वह पहले एक परी की तरह दिखती थी, लेकिन अब, पूरा मेकअप करके, मैं उसे पहचान भी नहीं पाया। "भगवान," मैंने उससे कहा, "ने हर चीज़ को बड़ी बुद्धिमानी से बनाया है, लेकिन जब तुम्हारी बारी आई तो उन्होंने एक बड़ी गलती कर दी।" — "क्यों, फादर?" उसने हैरानी से पूछा। "क्योंकि," मैंने कहा, "उन्होंने तुम्हारी आँखों के नीचे काले घेरे लगाकर तुम्हें 'सँवारने' का काम नहीं किया!" यह उनकी गलती थी! उन्होंने दूसरे लोगों को सुंदर बनाया, लेकिन तुम पर उन्होंने गलत हिसाब लगा दिया! क्या तुम्हें यह खुद नहीं समझ आता, बेचारी? आखिरकार, इस सारे मेकअप से तो तुम अपना चेहरा ही बिगाड़ रही हो! यह ठीक वैसा ही है जैसे किसी बाइज़ेंटाइन प्रतिमा को लेकर उसके कई हिस्सों पर रंग पोत देना, उस पर दाग लगाना, उसे बिगाड़ना। तो, क्या हम ईश्वर की छवि [— स्वयं को] पर रंग पोत देंगे? कल्पना कीजिए कि एक कलाकार ने एक खूबसूरत तस्वीर बनाई है, फिर कोई ऐसा व्यक्ति आता है जिसे पेंटिंग के बारे में कुछ भी नहीं पता, वह एक ब्रश उठाता है और पेंटिंग पर तरह-तरह के भद्दे रंग लगा देता है — दूसरे शब्दों में, कलाकृति को बिगाड़ देता है। आप बिल्कुल यही कर रहे हैं। इस मेकअप का उपयोग करके, आप प्रभावी रूप से ईश्वर से कह रहे हैं: 'हे मेरे ईश्वर, आपने मुझे बुरी तरह बनाया है। मैं आपकी गलती सुधारूँगा।'

मुझे एक और महिला याद है। वह मेरे पास लाल नाखूनों के साथ आई थी — बाज़ के पंख जितने लंबे — और विनती करने लगी: 'मेरा बच्चा बहुत बीमार है। उसके लिए प्रार्थना करें, फादर। मैं भी प्रार्थना करती हूँ, लेकिन ...' — 'तुम कैसी प्रार्थना कर रही हो!' मैंने बीच में टोक दिया। 'अपने इन पंजे जैसे नाखूनों से तुम मसीह को घायल कर रही हो! अगर तुम चाहती हो कि तुम्हारा बच्चा ठीक हो जाए, तो पहले अपने नाखून काटो। अपने बच्चे की सेहत के लिए, कम से कम इतना तो करो: अपने नाखून काटो और उन पर लगा पॉलिश धो दो।' 'क्या मैं इसके बजाय उन पर सफेद नेल पॉलिश लगा सकती हूँ, फादर?' — "मैं तुम्हें बता रहा हूँ: अपने नाखूनों से पॉलिश हटाओ और उन्हें काट लो। अपने बच्चे की सेहत के लिए कम से कम कोई बलिदान तो करो। यह आखिर है क्या, हँ? आखिर, अगर यह ज़रूरी होता, तो ईश्वर तुम्हें पहले ही लाल नाखूनों के साथ बनाता..." — "तो, क्या इसका मतलब है कि मैं उन्हें सफेद नेल वार्निश लगाऊँ, फादर?" हफ्फ़, यह भी क्या चीज़ है। "हाँ," मैंने मन ही मन सोचा, "तुम्हें अपना स्वास्थ्य मिल जाएगा — तुम्हें और तुम्हारे बच्चे दोनों को..." किसी भी चीज़ से बढ़कर, माँ ही बच्चों को 'आध्यात्मिक जुकाम' लगवाती है जब वह खुद ही शीलता का आवरण नहीं पहनती और, उस पर यह भी कि, अपने ही बच्चों से शीलता छीनने या उन्हें उससे वंचित करने की कोशिश करती है।

कोई बहुत आकर्षक नहीं हो सकता है या उसमें कोई वकिलांगता हो सकती है। ईश्वर जानते हैं कि यह वास्तव में उन्हें आध्यात्मिक रूप से मदद करता है।

आखरिकार, ईश्वर को शरीर से ज्यादा आत्मा की परवाह है। हम सभी में अपने -अपने गुण होते हैं , लेकनि कुछ छोटी-मोटी खामयिाँ और कमयिाँ भी होती हैं। ये कोई बड़ा बोझ नहीं , बल्कि छोटे -छोटे बोझ हैं। ये छोटे -छोटे बोझ हमारी आत्माओं के उद्धार में हमारी मदद करते हैं।

भाग चार।
हमारे युग में चर्च पर

"चर्च मसीह का चर्च है , और वह इसका शासन करता है। चर्च एक ऐसा मंदरि नहीं है जसिे धार्मकि लोग पत्थर , रेत और चूने से बनाते हैं , और जसिे बर्बर लोग आग से नष्ट कर देते हैं। चर्च स्वयं मसीह है। "

अध्याय 1.
शकि्षा पर

ग्रीक भाषा

— गेरोना , ग्रीक व्याकरण में वरिाम चह्निों को क्यों समाप्त कर दयिा गया?[211]

— जैसे आजकल लोग कसिी बात को बर्दाश्त नहीं कर सकते और हर कसिी पर टूट पड़ते हैं , वैसे ही अक्षर भी कुछ नहीं सहन कर सकते — न तीखा लहजा (acute accent) और न ही चक्रवाला लहजा (circumflex accent)! अक्षर लोगों जैसे हो गए हैं : वे पूरी रफ्तार से भाग जाते हैं और अपने पीछे एक पूर्ण वरिाम (full stop) भी नहीं छोड़ते।

कुछ लोग कसि तरह की भाषा लखिते हैं ! नए नयिम के एक आधुनकि अनुवाद में मैंने पढ़ा : 'मैंने अपने बेटे को मस्रि से बुलाया। '[212] मेरे प्रयि भाई, यह कैसे सही हो सकता है ! पवत्रि को अपवत्रि से अलग नहीं कयिा जाना चाहए। वे ऐसा लखिते हैं ताकि भाषा को 'मानकीकृत ' कयिा जा सके , इसे एकरूपता में लाया जा सके। लेकनि कौन सा व्यक्ति , सबसे दूर -दराज के गाँव से भी, यह समझने में वफिल रहेगा कि 'मैंने मस्रि से अपने पुत्र को बुलाया ' का क्या अर्थ है ? और एक बार, पवत्रि पर्वत पर, जब भोजनशाला में एक नश्चिति पवत्रि पति के लेख का आधुनकि ग्रीक में अनुवाद पढ़ा जा रहा था, तो मैंने सुना कि शब्दों 'रोटी', 'शराब', 'दव्यि संयोग ' को आधुनकि , सांसारकि छोटे -छोटे शब्दों से बदल दयिा गया था, जो रोजमर्रा की बातचीतों में इस्तेमाल होते हैं। लेकनि ऐसे शब्द [पवत्रि अवधारणाओं को व्यक्त करने के लए]

---

[211] ग्रीक भाषा में , तीन प्रकार के उच्चारण चह्नि होते हैं : तीक्ष्ण (acute), भारी (grave) और परघिातात्मक (circumflex)। 1982 में , ग्रीस में नए वर्तनी के नयिम लागू कए गए, जसिके अनुसार आधुनकि ग्रीक में केवल एक प्रकार का उच्चारण चह्नि ही बरकरार रखा गया। साथ ही, कई अन्य कृत्रमि सरलीकरण भी कए गए, जन्हिोंने आधुनकि ग्रीक भाषा के व्याकरणकि स्तर को काफी कम कर दयिा। पादटप्पिणी 221 भी देखें। – अनुवादक की टप्पिणी।

[212] तुलना करें मत्ती 2:15 से।

उपयुक्त नहीं हैं ! ऐसा कैसे हो सकता है ? कौन सा ग्रीक नहीं जानता कि 'आर्टोस ' और 'इनो' का क्या मतलब है ?[213]

— गेरोना , वे कहते हैं कि वे ग्रीक वर्णमाला को लैटिन वर्णमाला से बदलने की योजना बना रहे हैं।

चिंता मत करो, ऐसा नहीं होगा। वे इससे बच नहीं पाएंगे। सौभाग्य से , ईश्वर दुष्टों और कपटियों से भी अच्छा निकालता है। वरना हम खो जाते। परंपरा और भाषा उस समय भी खत्म नहीं हुईं जब सभी लिखित रिकॉर्ड हाथ से लिखे जाते थे , जब फोटोकॉपीयर या अन्य तकनीकी उपकरण नहीं थे। तो अब वे क्यों खत्म हो जाएँगी , जब इतने सारे तकनीकी उपकरण उपलब्ध हैं ? नहीं , परंपरा और भाषा खत्म नहीं होंगी — चाहे वे उन्हें नष्ट करने की कितनी भी कोशिश कर लें। रूस से आए ग्रीक प्रवासियों को देखिए — उन्होंने अपनी परंपराओं को कैसे संरक्षित रखा है ! वे पोंटिक भाषा जानते थे , और उससे उन्हें मदद मिली। इस तरह, उन्होंने अपनी परंपराओं को संरक्षित रखा है। लेकिन वे आजादी पाने के लिए रूस से चले गए, भले ही रूस में भी उन्हें कुछ हद तक आजादी मिली हुई थी। अगर वे नहीं गए होते , तो वे पिंजरे से छूटे हुए और कमरे में आज़ादी से उड़ने के लिए छोड़े गए एक पक्षी की तरह जीते। क्या वह पक्षी कमरे में उदास नहीं होता? बस कल्पना कीजिए कि अतीत में उन दुर्भाग्यशाली पोंटियनों के लिए यह कैसा रहा होगा!

ऐसे भी लोग हैं जो एक नई भाषा बनाना चाहते हैं। हालाँकि, ग्रीक भाषा अपनी 'भाषा' पवित्र पेंटेकोस्ट पर आग की जीभों से प्राप्त करती है। [214] कोई अन्य भाषा हमारे विश्वास के सिद्धांतों को व्यक्त नहीं कर सकती। और इस प्रकार , ईश्वर की कृपा से , पुराने नियम का सत्तर लोगों द्वारा ग्रीक में अनुवाद किया गया, और सुसमाचार भी ग्रीक में लिखा गया। यदि कोई, प्राचीन ग्रीक को जाने बिना, मतवादी धर्मशास्त्र में संलग्न होता है , तो वे भूल में पड़ सकते हैं। और फिर भी हमने स्कूल के पाठ्यक्रम से प्राचीन ग्रीक को हटा दिया है ! जर्मन लोग हमें प्राचीन ग्रीक सिखाने के लिए हमारी विश्वविद्यालयों में आने लगेंगे। फिर, शुरू में मज़ाक का विषय बनने के बाद, हमारे बुद्धिजीवी प्राचीन ग्रीक के महत्व को समझेंगे और कहेंगे : 'देखो —चर्च ने प्राचीन ग्रीक को संरक्षित करना व्यर्थ नहीं समझा!'

वे हमारे ऑर्थोडॉक्स लोगों को नष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं। क्या आप समझते हैं कि इसका क्या मतलब है ? आज एक ऑर्थोडॉक्स लोगों का होना एक बड़ी बात है। हमारे पास कभी दर्शनशास्त्र था। सेंट कैथरीन ने दर्शनशास्त्र का सहारा लेकर दार्शनिकों को चुप करा दिया।[215] दार्शनिकों ने ईसाई धर्म के लिए मार्ग प्रशस्त किया। सुसमाचार ग्रीक में लिखा गया था और पूरे विश्व में फैला। फिर , ग्रीकों ने स्लाव लोगों को शिक्षित किया। हेलेस का अस्तित्व ही कुछ लोगों के लिए एक बड़ी काँट है। ये लोग कहते हैं , "यह हमें नुकसान पहुँचा रहा है। इसे नष्ट किया जाना चाहिए।"

शिक्षा से संबंधित समस्याएँ

— गेरोना , आप अक्सर कहते हैं कि आजकल हर कोई सब कुछ तोड़ने -फोड़ने की कोशिश कर रहा है। क्या इसमें शिक्षा प्रणाली भी शामिल है ?

— हाँ। क्या आप नहीं देख सकते कि क्या हो रहा है ? क्या ये वास्तव में स्कूल हैं ? क्या जो वे आज बच्चों को सिखा रहे हैं वह हमारी भाषा है ? क्या यह हमारा इतिहास है ? और जहाँ तक धर्मशास्त्र का सवाल है , क्या कोई सोचेगा कि वहाँ हालात बेहतर हैं ? धर्मशास्त्र में डिग्री वाले एक नास्तिक को ईश्वर का विधान सिखाने की अनुमति है।

फिर भी कोई यह नहीं देखता कि वह बच्चों को क्या सिखा रहा है — ईश्वर का विधान या ईश्वर lessness। जिम्मेदार लोग कहते हैं , 'हम उसे बर्खास्त नहीं कर सकते। ' लेकिन अगर कोई भाषाविद् गणित पढ़ाना चाहता, तो क्या वे उसे ऐसा करने देते ?

धर्मशास्त्र संकाय का एक और स्नातक लोगों को पवित्र Communion (होली कम्युनियन) प्राप्त करने की अनुमति देने से इनकार कर देता है , ताकि उन्हें एड्स न हो जाए। यह 'धर्मशास्त्री ' उन लोगों में से एक है जो धर्मशास्त्र संकाय में किसी आह्वान के कारण नहीं , बल्कि 'कंप्यूटर आवंटन द्वारा ' नामांकित हुए थे। ऐसी जानकारी ईश्वर की जानकारी नहीं है। 'पवित्र विज्ञानों का एक पुत्र पैदा हुआ है ,' — जैसा कि पुराने दिनों में कहा जाता था,

---

[213] Ἄρτος (प्राचीन ग्रीक) – रोटी, οἶνος (प्राचीन ग्रीक) – अंगूर की शराब – अनुवादक की टिप्पणी।

[214] तुलना करें प्रेरितों के काम 2:3 से।

[215] देखें द लाइफ़ एंड मार्टिरडम ऑफ़ सेंट कैथरीन द ग्रेट मार्टायर। लाइव्स ऑफ़ द सेंट्स , 24 नवंबर।

क्योंकि उस समय शिक्षा एक पवित्र प्रयास था। लेकिन अब आप एक धर्मशास्त्र के प्रोफेसर को देखते हैं जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता, जो अपने छात्रों के सामने पैगंबरों का अपमान करता है, फिर भी उसे शिक्षण से नहीं हटाया जाता। लेकिन, महोदय, आपने धर्मशास्त्र संकाय में क्या भूल गए हैं? आप किस तरह के धर्मशास्त्री तैयार करेंगे?

और प्रोटेस्टेंटों और कैथोलिकों का हम पर क्या प्रभाव पड़ा है? ईश्वर-विहीन भावना ने कैथोलिक धर्म में कितनी गहराई तक प्रवेश कर लिया है! धीरे-धीरे, कैथोलिक संत و को तुच्छ साबित करने की कोशिश कर रहे हैं। वे कहते हैं, 'संत कैथरीन कोई महान संत नहीं थीं: उनके पिता, खैर, सिर्फ एक छोटे राजकुमार थे।' संत निकोलस एक तुच्छ संत थे। महान शहीद संत जॉर्ज एक मिथक हैं; महादूत माइकल कभी मौजूद नहीं थे—वह केवल ईश्वर का एक अवतार थे। यही बात महादूत गब्रियल पर भी लागू होती है।" इसके बाद, वे कहेंगे कि मसीह ईश्वर नहीं हैं, कि वह केवल एक महान शिक्षक थे। फिर वे इतनी हद तक चले जाएँगे कि ईश्वर को एक निश्चित शक्ति कहेंगे, और फिर घोषणा करेंगे कि ईश्वर ही प्रकृति है। इतने सारे स्पष्ट अलौकिक घटनाएँ, इतने सारे नबी और भविष्यवाणियाँ, इतने सारे जीवित चमत्कार हैं, लेकिन इन सब के बावजूद, कुछ रूढ़िवादी ईसाई ऐसी बकवास पर विश्वास करने की हद तक चले जाते हैं।

एक बार, एक युवक इटली में अपनी पढ़ाई के लिए आशीर्वाद लेने मेरे पास आया। वह वहाँ धर्मविधि का अध्ययन करने और एक शोध-प्रबंध लिखने की योजना बना रहा था। मैंने उससे पूछा, "क्या तुम्हारा दिमाग ठीक है?" "तुम अपना शोध-प्रबंध लिखने के लिए जेसुइट्स के पास जाने की योजना बना रहे हो, और फिर भी आशीर्वाद के लिए मेरे पास आए हो? उन्हें तो यह भी नहीं पता कि उनके अपने ही लोगों के बीच क्या हो रहा है! आखिरकार, वहाँ पढ़ाने का काम यूनिएट्स, जेसुइट्स और भगवान जाने किसे और करते हैं!" जब हमारे युवा विदेश में पढ़ाई करने की बात आती है, तो हमें हर मामले में सतर्क रहना चाहिए। क्योंकि यह होता है: हमारे छात्र इंग्लैंड, फ्रांस और अन्य पश्चिमी देशों में पढ़ने जाते हैं, यूरोपीय 'जीवाणुओं' से संक्रमित हो जाते हैं, और फिर कोई न कोई शोध-प्रबंध लिखते हैं। उदाहरण के लिए, वे पश्चिमी यूरोपीय भाषाओं में अनुवादित ग्रीक पादरियों का अध्ययन करते हैं। लेकिन पश्चिमी अनुवादकों ने—या तो इसलिए कि वे मूल का सही अर्थ व्यक्त करने में असमर्थ हैं, या दुर्भावना से—पवित्र पादरियों की रचनाओं में अपनी ही गलत राय जोड़ दी है। और इस प्रकार हमारे ऑर्थोडॉक्स विद्वान, विदेशी भाषाएँ सीखने के बाद, पश्चिम में इन विदेशी 'जीवाणुओं' को पकड़ लेते हैं और उन्हें यहाँ वापस ले आते हैं। और फिर वे दूसरों को इन 'बीमारियों' से संक्रमित करते हैं। बेशक, यदि कोई व्यक्ति चौकस हो, तो वह सोने को नकली से आसानी से अलग कर सकता है।

—गेरोन्डा, कुछ चर्च जाने वाले युवा, यहाँ ग्रीस में विश्वविद्यालय में जगह पाने में असफल हो जाने पर, पढ़ाई के लिए विदेश जाते हैं और अपना विश्वास खो देते हैं।

—खैर, मैं इस बारे में अपने कुछ परिचितों से बात करूँगा। मैं उनसे ग्रीस में कुछ और विश्वविद्यालय खोलने के लिए कहूँगा, ताकि हमारे युवाओं को विदेश न जाना पड़े। उन्हें यहीं पढ़ने दें। वरना, बच्चे भटक जाते हैं, यह उनके माता-पिता पर एक वित्तीय बोझ है, और बहुत सारा पैसा किसी विदेशी की जेब में चला जाता है।

जो युवा लोग पढ़ाई के लिए विदेश जाते हैं, मैं उनसे हमेशा यही कहता हूँ: 'जाओ, अगर यही तुम्हारी इच्छा है। लेकिन सावधान रहना कि अपना विश्वास न खोना। विदेश में रहते हुए ज्ञान के अलावा कुछ और हासिल मत करना। और सबसे महत्वपूर्ण बात: बाद में अपने देश लौटना न भूलना। हेलास (ग्रीस) तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है।

उसकी मदद करना आपका कर्तव्य है। आपकी जगह यहाँ है — अपने देशवासियों के साथ, ताकि उन्हें किसी डॉक्टर या विज्ञान के किसी क्षेत्र में विशेषज्ञ की तलाश में विदेश जाने के लिए मजबूर न होना पड़े। ध्यान रखें कि आपका दिल ठंडा न हो जाए। यूरोपीय लोग ठंडे दिल के होते हैं। और अमेरिका में भी — वहाँ आप भौतिक रूप से अमीर तो बन सकते हैं, लेकिन आध्यात्मिक रूप से बर्बाद हो सकते हैं। "

— जेरोंडा, शिक्षकों की हड़ताल से क्या नुकसान होता है! बच्चे पूरे महीने स्कूल नहीं जाते और बस सड़कों पर मंडराते रहते हैं।

— मैं शिक्षकों से कहता हूँ कि वे कभी हड़ताल न करें, सिवाय उन मामलों के जहाँ यह आवश्यक हो, उदाहरण के लिए, ईश्वर के कानून को समाप्त करने की योजनाओं के खिलाफ विरोध करने के लिए, पाठों से पहले प्रार्थना को समाप्त करने के लिए,[216] ग्रीक ध्वज से क्रॉस को हटाने के लिए, या इसी तरह का कुछ करने के लिए। ऐसे मामलों में, शिक्षकों को विरोध करना चाहिए। लेकिन अन्य मामलों में नहीं; अन्यथा, बच्चों ने ऐसा क्या किया है कि उन्हें बिना पाठ के छोड़ दिया जाए?

— तो, गेरोन्डा, क्या वर्तमान शिक्षा प्रणाली बहुत नुकसान पहुँचाएगी?

— अब इस व्यवस्था से कई बच्चों की आत्माएँ विकलांग हो जाएँगी, लेकिन दयालु ईश्वर उन्हें कानून की कठोरता से नहीं आंकेंगे। वह इस बात पर विचार करेंगे कि यदि वे इस बुरे प्रभाव के अधीन न आते, यदि उन्हें यह हानि न पहुँचती, तो वे किस स्थिति में होते। हालाँकि, हमें भी इन दुर्भाग्यपूर्ण बच्चों के लिए पूरी लगन से प्रार्थना करनी चाहिए, कि ईश्वर हस्तक्षेप करें और उनकी मदद करें, ताकि वे आध्यात्मिक रूप से आहत न हों, बल्कि मजबूत आध्यात्मिक स्वास्थ्य प्राप्त करें और सद्गुण अर्जित करें।

विकास का सिद्धांत

आजकल स्कूलों में बच्चों को कितनी बकवास पढ़ाई जाती है! डार्विन का सिद्धांत और इसी तरह की बकवास... जो लोग बच्चों को यह सब बकवास सिखाते हैं, वे खुद इसमें विश्वास नहीं करते। फिर भी वे बच्चों के दिमाग में इसे भर देते हैं ताकि उनमें इस जहर को घोल सकें और उन्हें चर्च से दूर ले जा सकें। एक बार, एक ऐसे 'वैज्ञानिक' ने मुझे अपनी परी कथाएँ सुनानी शुरू कीं: 'मान लीजिए कि पृथ्वी में विभिन्न तत्व और सूक्ष्मजीव मौजूद थे, जिनका उपयोग ईश्वर ने मानव को बनाने के लिए किया...' — 'तो,' मैंने कहा, 'अगर वह सब कुछ मौजूद नहीं होता, तो ईश्वर मानव को नहीं बना पाता?' बस सोचिए कि यह कितना उलझा हुआ मामला है!" — "लेकिन मान लीजिए," उसने अपनी दलील जारी रखी, "कि उसने एक बंदर को लिया और उसे पूर्णता तक पहुँचाया?" — "ठीक है, — मैंने जवाब दिया, — क्या ईश्वर अपनी परिपूर्ण रचना — मनुष्य — को सीधे, बिना बंदर के नहीं बना सकते थे? आखिरकार, उन्होंने सृष्टि के एक पूरे दिन को मनुष्य की रचना के लिए समर्पित किया था! या क्या उन्हें पहले आवश्यक घटकों को इकट्ठा करना पड़ा? यशायाह की भविष्यवाणी में मनुष्य की रचना के बारे में पढ़ें, जिसे हम ग्रेट थर्सडे को चर्च में मैटिन्स पर सुनते हैं।[217] आज का विज्ञान भी बंदरों के बारे में इन सभी कल्पनाओं को खारिज करता है। मनुष्यों के चंद्रमा पर उड़ान भरने को कितने साल हो गए? हाँ? और फिर भी, अपने 'विकास' के इन सभी वर्षों में, बंदर एक बार भी आइस-स्केटिंग करने में सफल नहीं हुए। मैं तो बंदर द्वारा साइकिल का आविष्कार करने और उस पर सवारी करने की बात तो छोड़िए। क्या आपने कभी किसी बंदर को स्केट्स पर देखा है? यह एक अलग बात है अगर

---

[216] ग्रीक स्कूलों में, कक्षाओं में पाठों की शुरुआत और अंत में एक ऑर्थोडॉक्स प्रार्थना ज़ोर से पढ़ी जाती है। स्कूल सप्ताह की शुरुआत में, सभी छात्रों की उपस्थिति में स्कूल के खेल के मैदान में ग्रीक राष्ट्रीय ध्वज को गंभीरता से फहराया जाता है, और सप्ताह के अंत में इसे उतार दिया जाता है। – अनुवादक की टिप्पणी।

[217] "या क्या तूने पृथ्वी की मिट्टी से एक जीवित प्राणी को आकार दिया, और इस बोलने वाले प्राणी को पृथ्वी पर स्थापित किया?" (अय्यूब 38:14)

आप, एक इंसान , कसी बंदर को लें , उसे आइस रकि ले जाएं और, प्रशकि्षण के माध्यम से , उसे स्केट करना सखिाएं। " — "हाँ ," मेरे बातचीत के साथी ने चुप नहीं रह सका, "लेकनि अगर हम नम्निलखिति धारणा को आगे रखें , जो है ..." — "कोई धारणा मत बनाओ," मैंने कहा। "बस चुप रहो। यही सबसे सुरक्षति दांव होगा।"

एक वशि्ववद्यिालय के प्रोफेसर वकिासवाद का वही सद्धिांत पढ़ाया करते थे। एक बार मैंने उनसे कहा: 'अगर आप एक बीन की देखभाल करें , तो वह धीरे -धीरे एक बेहतर बीन बन जाएगी। एक बैंगन , अगर उसकी देखभाल की जाए, तो वह एक बेहतर बैंगन बन जाएगा। एक बंदर , अगर आप उसे खलिाएं और उसकी देखभाल करें , तो वह एक बेहतर बंदर बन जाएगा। वह इंसान नहीं बन सकता। अगर एक काले व्यक्ति को ठंडे देशों में रहना हो और वह धूप से बचे , तो उसकी त्वचा का रंग थोड़ा बदल जाएगा। लेकनि वह काला होना बंद नहीं करेगा। " और अगर हम यह भी मान लें कि मसीह एक इंसान से , हमारे परमेश्वर की परम पवत्रि माता से पैदा हुए थे ! तो इसका क्या मतलब है : वकिासवाद के सद्धिांत के अनुसार , क्या यह मान लयिा जाता है कि मसीह के पूर्वज एक बंदर थे ? क्या पापपूर्ण अपमान है ! लेकनि इस सद्धिांत के समर्थकों को यह एहसास नहीं है कि वे पापपूर्ण अपमान कर रहे हैं। वे एक पत्थर फेंकते हैं और इस बात की परवाह कएि बनिा कि वह पत्थर कतिने सरिों को चकनाचूर कर देगा , घमंड करते हैं : 'मैंने पत्थर दूसरों से ज्यादा दूर फेंका। ' आज वे ठीक यही कर रहे हैं —उनकी प्रशंसा कर रहे हैं जो पत्थर दूसरों से ज्यादा दूर फेंकते हैं। लेकनि ऐसे लोग इस बात पर ज़रा भी ध्यान नहीं देते कि जिसि पर यह गरिेगा , उन लोगों में कतिने सरि चकनाचूर हो जाएँगे।

— गेरोन्डा , कुछ लोगों का मानना है कि ऐसे सद्धिांत मार्क्सवादयिों को चर्च के करीब लाने में मदद कर सकते हैं।

— शुरुआत में , मार्क्सवादी चर्च के करीब आ सकते हैं , लेकनि फरि 'वे पार्टी अनुशासन के अनुसार इसकी कतारों में शामलि हो जाएंगे। ' और फरि वे तय करेंगे कि कब चर्च जाना है और कब नहीं , कब एक काम करना है और कब दूसरा। वे सब कुछ नयिंत्रति करना शुरू कर देंगे , और अंत में वे कहेंगे : 'आपको कसिने कहा कि ईश्वर है ? ईश्वर नहीं है। तुम्हें पुरोहति धोखा दे रहे हैं। ' इस तरह मार्क्सवादी अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए वकिासवाद के सद्धिांत के समर्थकों का उपयोग करते हैं। और उन लोगों को इसका एहसास भी नहीं होता। जो मार्क्सवादी सद्भावना रखते हैं , वे वकिासवाद के सद्धिांत के बनिा भी चर्च आते हैं ; वे पश्चाताप करते हैं और पाप-स्वीकार करते हैं। लेकनि जो दुर्भावनापूर्ण हैं , वे वैसे भी अपनी आदतें नहीं बदलेंगे।

बच्चों को चर्च से दूर ले जाया जा रहा है

जब मैं छोटा था, तो चर्च जाना मुझे कतिना मददगार लगा! प्राथमकि वद्यिालय में , हमारे पास एक बहुत अच्छे शकि्षक थे। उन्होंने हमें पारंपरकि ग्रीक गीत और चर्च के भजन सखिाकर हमारी भी मदद की। रवविार को, हम चर्च में 'ग्रेट डॉक्सोलॉजी ', 'देवी माँ के मध्यस्थता द्वारा ...', 'हे पवत्रि ईश्वर ', और 'करिुपकि भजन' गाते थे।

— और क्या लड़कयिाँ भी गाती थीं ?

— हाँ , सभी बच्चे एक साथ गाते थे। चर्च स्कूल के बगल में हुआ करता था, और हम चर्च के आँगन में खेला करते थे। पर्व के दनिों में , शकि्षक हमें पाठ के दौरान भी चर्च ले जाया करते थे। शकि्षक एक पाठ छोड़ देना ज्यादा पसंद करते थे ताकि बच्चे प्रार्थना सभा में प्रार्थना कर सकें। यही तरीका था जसिसे बच्चे सीखते थे , पवत्रि होते थे , और 'मेमने ' बन

जाते थे। हमारे एक शिक्षक यहूदी थे, लेकिन उन्होंने हमें ईश्वर का विधान नहीं सिखाया; एक दूसरे शिक्षक हमें ईश्वर का विधान सिखाने आए। हालाँकि, यहूदी होने के बावजूद, यह शिक्षक हमें चर्च ले जाता था। और फिर सभी बच्चे सेवा के दौरान नम्रता और चुपचाप खड़े रहते थे।

और अब, आज, बच्चों को चर्च से दूर ले जाया जा रहा है, और मैं देख सकता हूँ कि वे कितने कड़वे हो गए हैं। आखिरकार, चर्च में वे शांत, दयालु बच्चे बन जाते हैं, क्योंकि चर्च में एक बच्चा ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करता है और पवित्र हो जाता है। अब बच्चों को चर्च जाने की अनुमति नहीं है, ताकि वे 'आध्यात्मिक प्रभाव' में न आएं, फिर भी, एक ही समय में उन्हें हर तरह की बकवास से नहीं बचाया जाता है। और न केवल उन्हें बचाया नहीं जाता है, बल्कि उन्हें हर तरह की बकवास भी सिखाई जाती है। निश्चित रूप से यह समझ से परे नहीं है कि अगर बच्चे सचमुच 'आध्यात्मिक प्रभाव' में आ जाते, तो वे अंततः बुरा व्यवहार करना बंद कर देते और अब जो विक्षिप्त प्राणी हैं, उसके बजाय समझदार, मेहनती छात्र बन जाते। और जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं, चर्च का हिस्सा होने वाले बच्चे अपने देश के विवेकी नागरिक बन जाते हैं। वे, बुरी संगत में नहीं पड़ेंगे या नशे में नहीं फँसेंगे, और न ही वे निकम्मा बनेंगे। क्या उपरोक्त सब यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त नहीं है कि वे बड़े होकर सभ्य इंसान बनें? क्या वे लोग जो उन्हें चर्च से दूर ले जा रहे हैं, वास्तव में इसे भी नकार सकते हैं? क्या उन्हें सच में परवाह नहीं है?

लेकिन आज उनका उद्देश्य बच्चों को चर्च से दूर ले जाना है। बच्चों को जहर दिया जा रहा है, विभिन्न सिद्धांतों से संक्रमित किया जा रहा है, और उनके विश्वास को कमजोर किया जा रहा है। उन्हें अच्छा काम करने से रोका जा रहा है, ताकि उन्हें बेकार बना दिया जा सके। उन्हें कम उम्र से ही नष्ट किया जा रहा है। और स्वाभाविक रूप से, बच्चे नन्हे मेमनों से छोटे बकरों में बदल रहे हैं। फिर वे अपने करतबों से अपने माता-पिता, शिक्षकों और उन लोगों को आतंकित करना शुरू कर देते हैं, जिनके इशारे पर वे ऐसा व्यवहार कर रहे होते हैं। बच्चे सब कुछ उलट-पुलट कर देते हैं — वे प्रदर्शन करते हैं, स्कूलों पर कब्जा कर लेते हैं, और कक्षाओं में जाने से इनकार कर देते हैं। लेकिन अंततः, जो बच्चे बुराई की ओर धकेलते हैं, वे भी होश में आ जाएँगे — जब उनके द्वारा बिगाड़े गए बच्चे अपने दुष्ट शिक्षकों का गला काटने तक पहुँच जाते हैं।

बच्चों पर बहुत अधिक... का बोझ डाला जा रहा है

मैं देखता हूँ कि यह असामान्य नहीं है कि केवल माध्यमिक विद्यालय छोड़ने वाले ही नहीं, बल्कि विश्वविद्यालय के स्नातक भी बकवास लिखते हैं और वर्तनी की गलतियाँ करते हैं। हमारे जमाने में, प्राथमिक स्कूल पूरा करने के बाद, हम ऐसी गलतियाँ नहीं करते थे। आजकल, केवल भाषाशास्त्र और कानून की फैकल्टी के छात्र ही कमोबेश साक्षर हैं।[218] अन्य फैकल्टी में, वे बिना गलतियों के लिखना भी नहीं जानते। जबकि पुराने दिनों में, आठ साल का स्कूल लगभग...

— जैसे कोई विश्वविद्यालय, गेरोन्डा!

— वास्तव में, अगर बच्चों ने प्राथमिक विद्यालय में इतना ज्ञान प्राप्त कर लिया होता, तो आठ साल के स्कूल की क्या ज़रूरत थी! लेकिन आजकल, बच्चों पर पूरी तरह से बकवास का

---

[218] आधुनिक ग्रीक में, दो भाषाई शैलियाँ हैं: डिमोतिकि (शाब्दिक रूप से 'लोगों की' भाषा) और काथरेवूसा ('शुद्ध' भाषा)। व्याकरण और शब्दावली के मामले में, काथरेवूसा प्राचीन ग्रीक के काफी करीब है, जिससे ऐतिहासिक रूप से दोनों शैलियाँ विकसित हुईं। 1974 तक, ग्रीक विश्वविद्यालयों में शिक्षण साहित्यिक भाषा - काथरेवूसा में किया जाता था। आजकल, ग्रीस के अधिकांश उच्च शिक्षा संस्थानों में, शिक्षण डिमोतिकी में किया जाता है, जो मूल रूप से एक बोलचाल की शैली थी। वर्तनी के कृत्रिम सरलीकरण (देखें पादटिप्पणी 214), आधुनिक ग्रीक में विदेशी शब्दावली के बड़े पैमाने पर प्रवाह, और इसी तरह की अन्य बातों को मिलाकर देखा जाए, तो शिक्षा की भाषा के रूप में काथरेवूसा के उन्मूलन ने आधुनिक ग्रीकों के शैक्षिक मानकों में एक महत्वपूर्ण गिरावट ला दी है। – अनुवादक की टिप्पणी

बोझ लाद दिया जाता है और वे उससे डूब जाते हैं। उन्हें अकादमिक विषयों से बहुत ज़्यादा भर दिया जाता है, जबकि तराज़ू का दूसरा पलड़ा—आध्यात्मिक पक्ष—खाली रह जाता है। स्कूलों में, बच्चों को सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से ईश्वर का भय सिखाया जाना चाहिए। छोटे बच्चे अंग्रेज़ी, फ्रेंच, जर्मन सीखते हैं—लेकिन वे प्राचीन ग्रीक नहीं सीखते। वे संगीत और हर तरह की दूसरी चीज़ें, यह-वह... पढ़ते हैं। लेकिन उन्हें सबसे पहले और सबसे ज़रूरी क्या सीखना चाहिए? आजकल वे केवल अक्षर और अंक सीखते हैं, जबकि अपने देश के बारे में जो उन्हें जानना चाहिए—सबसे महत्वपूर्ण बात—वह नहीं सिखाई जाती। न तो देशभक्ति के गीत, न ही इस तरह की कोई चीज़।

किसी भी आधुनिक बच्चे को रोककर पूछें: 'आपका गाँव किस क्षेत्र में है? वहाँ कितने लोग रहते हैं?' वे आपको जवाब नहीं दे पाएंगे। वे सोचेंगे, 'मैं बस स्टेशन जाऊँगा, बस में चढ़ूँगा, और वह मुझे मेरे गाँव ले जाएगी। जहाँ मेरा गाँव है, वह तो कंडक्टर को पता होगा। मैं उसे बता दूँगा कि मुझे फलाँ-फलाँ गाँव जाना है, अपना टिकट खरीद लूँगा, और बस मुझे वहाँ ले जाएगी।" प्राथमिक विद्यालय में, हम दुनिया का पूरा नक्शा अपनी हथेली की तरह जानते थे। प्राथमिक स्कूल के एक छात्र से यह उम्मीद की जाती थी कि वह पाँच लाख से अधिक की आबादी वाले हर देश के शहरों के नाम रटकर जानता हो। इसके अलावा, हमें यह भी याद रखना होता था कि उन देशों में कौन-सी नदियाँ सबसे लंबी हैं, कौन-सी सबसे चौड़ी हैं, कौन-सी दूसरे नंबर पर हैं, दुनिया के सबसे ऊँचे पहाड़ों के नाम, और भी बहुत कुछ। और जहाँ तक ग्रीस की बात है, तो उसका ज़िक्र करना तो दूर की बात है! लेकिन आजकल! मैंने न केवल छोटे बच्चों बल्कि वयस्कों—छात्रों—को भी देखा है जो उस शहर की आबादी नहीं जानते जहाँ वे पढ़ रहे हैं। मैंने एक छात्र से पूछा कि ग्रीस का सबसे ऊँचा पहाड़ कौन सा है। वह जवाब नहीं दे सका। सबसे बड़ी नदी कौन सी है? खामोशी। सबसे छोटी कौन सी है? खामोशी। एक छात्र—और उसे अपने ही देश के बारे में कुछ भी नहीं पता था! और फिर, जब हमारे 'दोस्त', हमारे 'दयालु पड़ोसी', आकर कहते हैं, 'यह तुम्हारा देश नहीं है, यह हमारा है,' तो वह जवाब देगा, 'हाँ, आप सही हैं, बिल्कुल ऐसा ही है।' क्या आप इसे समझते हैं? हम सीधे उसी की ओर बढ़ रहे हैं। हालाँकि, अगर आप आज बच्चों से फुटबॉल या टेलीविजन के बारे में पूछें, तो आप देखेंगे कि वे हर छोटी-छोटी बात तक जानते हैं।

दूसरी ओर, अल्बानिया - उत्तरी एपिरस - से आए बच्चे पढ़ और लिख सकते हैं। आप उनसे पूछें, 'आपने पढ़ना-लिखना आखिर सीखा कहाँ?' - और वे जवाब देंगे, 'जेल में।' इन बेचारों ने जेलों को स्कूलों में बदल दिया है। जबकि हमारे ग्रीक बच्चों ने स्कूलों को जेलों में बदल दिया है। उन्होंने स्कूलों पर कब्ज़ा कर लिया है और खुद को अंदर से बंद कर लिया है। आज के बच्चे, विशेष रूप से किशोर, पागलपन की हद तक पहुँच गए हैं—खासकर माध्यमिक और उच्च माध्यमिक के वर्षों में। विश्वविद्यालय में, युवा अधिक परिपक्व होते हैं, और इसके अलावा, वे जब चाहें व्याख्यानों में जाते हैं।

लेकिन शिक्षा प्रणाली के संबंध में आवश्यक उपाय करने के बजाय, वे बस इसे और अधिक बिगाड़ते जा रहे हैं। और यह आध्यात्मिक पहलू ही है जिसे दिन-ब-दिन विकृत किया जा रहा है। प्राथमिक विद्यालय की एक पठन संकलन से इस प्रार्थना को ही सुन लीजिए: 'हे कुंवारी मरियम, आपकी संतान दुनिया में सबसे सुंदर है!' ओह, हम किस हाल में आ गए हैं! पहले स्कूल में बच्चों को जो सिखाया जाता था और अब जो सिखाया जाता है:

मेरी नन्ही बकरी,
अपना सिर मत ठोकना, छोटी बकरी।

अपने छोटे बच्चों को खलिाओ,
तुम छोटे शैतानी चूसने वाले ...
... ताकि वे दूध दें
तुम्हारी छोटी पोतयिों के लिए,
वे छोटे सींग वाले ,
छोटे शैतानी बच्चे। [219]

क्या यह कल्पना भी की जा सकती है कि छोटे बच्चों को ऐसी घृणति गंदगी सखिाई जाए! लेकनि वे जानबूझकर ऐसा करते हैं — बच्चों को शैतान की आदत डालने के लिए, ताकि सैटनस्टिों के लिए अपना काम करना आसान हो जाए। ईश्वर अपना हाथ बढ़ाए , क्योंकि आज बच्चे बेहतर बनने के लिए आवश्यक सहायता नहीं पा रहे हैं , बल्कि वे भूत -प्रेत की चपेट में आ रहे हैं।

बच्चे इस तरह से ज्ञान प्राप्त करते हैं कि वे बलि्कुल भी अपने दमिाग का इस्तेमाल करना नहीं सीखते। इसीलिए वे अपने दमिाग का इस्तेमाल नहीं करते। लेकनि जब दमिाग का इस्तेमाल नहीं कयिा जाता है , तो वह धुंधली कोहरे से घरि जाता है। उदाहरण के लिए, आवष्किारकों को ही लें — उन्होंने अपने दमिाग का इस्तेमाल कयिा। कसिी समस्या का सामना करने पर, उन्होंने उसे हल करने के बारे में सोचा। लेकनि आज, ज्यादातर लोग सरि्फ़ यह देखते हैं कि नरि्देशों में क्या लखिा है। लोग इसी स्तर पर बने रहते हैं : सरि्फ़ आँकड़े और नंबर , और कुछ भी नहीं। 'यह पेंच नंबर एक है , यह बोल्ट नंबर दो है '... और अगर कोई पेंच कसिी छेद में फटि नहीं होता है और मशीन काम नहीं करती है , तो वे तुरंत एक इंजीनयिर को बुला लेते हैं। उन्हें यह एहसास नहीं होता कि उन्हें एक छोटी फाइल लेकर छेद को थोड़ा सा घसिना होगा, और स्क्रू फटि हो जाएगा। और दूसरी ओर, अगर छेद बहुत बड़ा है , तो आपको थोड़ी इंसुलेटगि टेप लेकर उसे स्क्रू के चारों ओर लपेटना होगा, और फरि वह खड़खड़ाएगा नहीं। नहीं , थोड़ी सी भी समस्या आते ही, सीधे यही होता है : 'चलो इंजीनयिर को बुलाते हैं। ' आप इस पर क्या कह सकते हैं ? टेलीवजिन और अन्य आधुनकि तकनीकी उपकरणों ने लोगों को बनिा दमिाग वाले स्वचालति यंत्रों में बदल दयिा है। यहां तक कि बुद्धमिान लोग भी कैसेट टेप की तरह हो जाते हैं [वे बस वही बात दोहराते हैं जो उन पर रकिॉर्ड की गई होती है]। दूसरे शब्दों में , मैं यह ज़ोर देना चाहता हूँ कि एक व्यक्ति को अपने दमिाग का इस्तेमाल करना चाहिए। यही पूरी नींव है। आखरिकार, अपने दमिाग का इस्तेमाल कयि बनिा, वे आज कुछ सीख सकते हैं , लेकनि कल वे उसे कसिी और चीज़ के साथ मलिा देंगे। इसलिए, उद्देश्य मानव मस्तष्कि के लिए स्वयं वचिार उत्पन्न करना और अपने आप समाधान खोजना है। एक मस्तष्कि जो अपने आप कुछ भी उत्पन्न नहीं करता है , वह एक अवकिसति मस्तष्कि है।

शकि्षक का पेशा पवत्रि है

— गेरोन्डा , कभी-कभी छात्र नहीं बल्कि उनके अपने सहकर्मी ही स्कूलों में शकि्षकों के लिए सबसे बड़ी कठनिाइयाँ पैदा करते हैं।

— आज के युग में , कसिी व्यक्ति को अपने सहकर्मयिों के बीच खुद को ठीक से चलाने के लिए बहुत ववेक और प्रबुद्धता की आवश्यकता होती है। प्रत्येक व्यक्तगित मामले

---

[219] हम अपने पाठकों से क्षमा चाहते हैं कि हमने अनुवाद में एल्डर द्वारा उद्धृत छंद को अपरविर्तति छोड़ा – भले ही वह अत्यंत घृणति हो। हालाँकि , इस मुद्दे का आध्यात्मकि सार इसकी भयानक सौंदर्यकि आड़ से कहीं अधकि भयावह है। उद्धृत अंश प्राथमकि वद्यिालय के दूसरे वर्ष के लिए ग्रीक शकि्षा मंत्रालय द्वारा आधकिारकि तौर पर अनुशंसति एक मातृभाषा पाठ्यपुस्तक से लयिा गया है ; इसलिए यह स्पष्ट है कि ग्रीस के बच्चे भी अपने रूसी समकक्षों की तरह ही एक लक्षति आध्यात्मकि युद्ध का सामना कर रहे हैं। परणिामस्वरूप , इस अध्याय में धन्य एल्डर पैसयिोस द्वारा प्रस्तावति आध्यात्मकि रक्षा के तरीकों को रूसी माता-पति और शकि्षक भी अपना सकते हैं। – अनुवादक की टप्पिणी

में बहुत समझदारी और दिव्य प्रबुद्धता की आवश्यकता होती है। कभी-कभी दूसरों को यह दिखाना भी आवश्यक नहीं होता कि आप एक आस्तिक हैं, बल्कि चुपचाप अपने आप को आचरण में लाना और अपने सहकर्मियों से विश्वास के बारे में शब्दों से कम, बल्कि अपने सच्चे ऑर्थोडॉक्स जीवन के उदाहरण के माध्यम से बात करना अधिक उचित होता है। इस तरह, एक व्यक्ति दूसरों को परेशान किए बिना उनकी मदद करेगा। यह विशेष रूप से एक शैक्षिक माहौल में सच है : वहाँ, कुछ समस्याएँ ट्यूमर की तरह होती हैं — कभी-कभी सौम्य, और कभी-कभी घातक। जब हम तर्क के आधार पर किसी समस्या से निपटते हैं, तो हम भलाई करने के बजाय बहुत अधिक नुकसान पहुँचाते हैं। यदि ट्यूमर घातक है, तो सर्जिकल हस्तक्षेप के बाद मेटास्टेसिस शुरू हो जाएगा। इसलिए, ऐसे ट्यूमर को सावधानीपूर्वक cauterise करना बेहतर है।

— गेरोन्डा, जो शिक्षक कुछ अच्छा करना चाहते हैं, उनके लिए यह हमेशा आसान नहीं होता, क्योंकि उनके विकल्प सीमित और प्रतिबंधित होते हैं।

— अगर कोई व्यक्ति चाहे, तो वह हमेशा कुछ अच्छा करने का रास्ता ढूंढ ही लेगा। जो लोग चाहते थे, वे तो नास्तिक शासनों के अधीन भी ऐसे अवसर ढूंढ ही लेते थे। तो फिर वे यहाँ ऐसा एक अवसर क्यों नहीं ढूंढ पा रहे हैं ? एक बार एक ग्रीक व्यक्ति बुल्गारिया गया था (जब वह अभी भी एक नास्तिक शासन के अधीन था) और उसने एक स्कूल के पास बच्चों को क्रॉस बाटना शुरू कर दिया। हालाँकि, पास में खड़े एक कम्युनिस्ट ने उसे देख लिया। शिक्षक ने, यह देखकर कि यह कम्युनिस्ट उन्हें देख रहा है, बच्चों से क्रॉस छीनने लगीं और उन्हें लेने के लिए डाँटने लगीं। लेकिन जब वह नास्तिक चला गया, तो शिक्षिका ने खुद बच्चों को क्रॉस बाँटे। क्या आप देख सकते हैं कि उस शिक्षिका ने कानून और ईश्वर दोनों के साथ संघर्ष से कैसे बचा? और एशिया माइनर में ग्रीक शिक्षकों का क्या ? उन्होंने उन कठिन वर्षों के दौरान लोगों को कितना कुछ दिया! और यह सब इसलिए क्योंकि वे दिल से काम करते थे, अपने उद्देश्य के प्रति जुनूनी थे, धर्मनिष्ठ थे, और उन्होंने खुद को बलिदान कर दिया। और कापाडोसिया के संत आर्सेनियस ने फारस में कितनी बुद्धिमानी से अपना आचरण किया![220] स्कूल के लिए एक कमरा तैयार करने के बाद, मेज लगाने के बजाय, उन्होंने फर्श पर ऊनी बकरी और भेड़ की खालें बिछा दीं। इन खालों पर घुटने टेककर, बच्चे पाठ सुनते थे। इतनी बुद्धिमानी से काम करके, संत अर्सेनियस ने तुर्कों का संदेह नहीं जगाया। यहाँ तक कि जब उन्होंने बच्चों को पाठ के दौरान पकड़ लिया, तो तुर्कों ने सोचा कि वे प्रार्थना कर रहे हैं। और जब संत अर्सेनियस अपने छात्रों को आराम करने के लिए ग्रामीण इलाकों में ले जाना चाहते थे, तो वे उन्हें काम करने के बहाने अपने भूखंड पर ले जाते थे, जो एक बगीचे जैसा था — और कहते थे : "अगर कोई तुर्क दिखे, तो काम करना शुरू कर देना, कुछ काम करना। पेड़ों की टहनियाँ तोड़ देना ताकि उसे लगे कि तुम बगीचे की सफ़ाई कर रहे हो।" और इसलिए बेचारे बच्चे बस यही करते थे। क्योंकि अगर तुर्कों को यह पता चल जाता कि संत बच्चों को ग्रामीण इलाकों में घुमाने ले गए थे, तो उन्हें बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ता। एक असली गुप्त स्कूल ! और जब तुर्क चला जाता, तो बच्चे फिर से खेलने लगते। और गर्मियों में, छुट्टियों के दौरान, संत आर्सेनियस बच्चों को अपने यहाँ इकट्ठा करते थे — ताकि उनमें पढ़ाई की आदत न छूट जाए और जो उन्होंने सिखाया था वह वे भूल न जाएँ।

— गेरोन्डा, सेंट आर्सेनियस अपनी कक्षाओं के दौरान तुर्की में क्यों लिखते थे, लेकिन ग्रीक अक्षरों का उपयोग करके ?

ताकि बच्चे तुर्की भाषा भी जान सकें और तुर्कों के बीच रह सकें। और इसके अलावा, अगर तुर्कों ने संत को बच्चों को पढ़ना सिखाते हुए पकड़ लिया होता और ग्रीक अक्षर देख लिए होते, लेकिन फिर उन्हें तुर्की में पढ़ते हुए सुन लिया होता, तो वे आश्वस्त हो जाते। इस तरह बच्चों ने सीखा, और तुर्कों को कोई चिंता नहीं हुई। जो कुछ भी संत आर्सेनियस की पहचान था — ऑर्थोडॉक्सी के प्रति उनका अडिग रुख और उनकी भक्ति — वह उन्होंने अपने शिष्यों को सौंपा।

यही कारण है कि मैं कहता हूँ कि अगर कोई व्यक्ति चाहे, तो वह बच्चों के लिए अच्छा कर सकता है — चाहे वह कहीं भी हो। एक बार, मुझे उत्तरी एपिरस के बारे में एक अद्भुत किताब मिली, जो उस क्षेत्र की यात्रा कर चुके एक शिक्षक द्वारा लिखी गई थी। ऐसे एक शिक्षक का मूल्य पाँच सौ पुरुषों के बराबर होता है ! उन्होंने अल्बानियाई विचारकों से कितनी कुशलता से निपटा! उन्होंने उन्हें पूरी तरह से कुचल दिया। बहुत बढ़िया !

एक सच्चा शिक्षक एक महान चीज़ है, खासकर आजकल। बच्चे खाली कैसेट टेप की तरह होते हैं। उन पर या तो अश्लील गाने रिकॉर्ड किए जा सकते हैं या अद्भुत बाइज़ेंटाइन भजन। शिक्षकों का कार्य पवित्र है। शिक्षक पर एक बड़ी ज़िम्मेदारी होती है, और अगर वे चौकस रहें, तो उन्हें ईश्वर से एक बड़ा इनाम मिल सकता है। बच्चों में ईश्वर

---

[220] देखें माउंट अथोस के एल्डर पैसियोस। कैपाडोसिया के पूजनीय आर्सेनियस। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लाव्रा, 1997। पृ. 30, 33–34।

का भय सिखाने का प्रयास करना उनका कर्तव्य है। शिक्षकों को बच्चों को ईश्वर और मातृभूमि का कुछ ज्ञान देने के तरीके खोजने चाहिए। वे बीज बोएं। क्या वे उसे अंकुरित होते नहीं देखते ? कोई बात नहीं। कोई भी चीज़ बिना कोई निशान छोड़े नहीं जाती: समय आएगा और बीज अंकुरित होगा।

और उन्हें हमेशा बच्चों के साथ दया, सहनशीलता और प्रेम से पेश आना चाहिए। उन्हें बच्चों में प्रेम की भावना जगाने का प्रयास करना चाहिए। एक बच्चे को प्यार और स्नेह की चाहत होती है। कई बच्चे घर पर इससे पूरी तरह वंचित रहते हैं। अगर शिक्षक बच्चों से प्यार करेंगे , तो बच्चे भी उनसे प्यार करेंगे। और फिर शिक्षकों के लिए अपना काम करना आसान हो जाएगा। हमारे शिक्षक , जब हम बदमाशी करते थे , तो हमें छड़ी मार सकते थे। लेकिन वह बच्चों से प्यार करते थे , और बच्चे भी उनसे प्यार करते थे। इस व्यक्ति के अपने कोई बच्चे नहीं थे , और वह बच्चों से बहुत प्यार करते थे।

इसलिए, वे माता-पिता जो कई बच्चों के होने से बड़े परिवारों के पिता और माता बनते हैं , प्रशंसा के पात्र हैं ; लेकिन उससे भी अधिक प्रशंसा उन सच्चे शिक्षकों की है जो बच्चों की एक बड़ी संख्या को पुनर्जीवित करते हैं और इस अर्थ में 'कई लोगों के पिता और माता' बन जाते हैं। वे समाज को पुनर्जीवित लोगों की एक नई पीढ़ी देते हैं , और इस तरह समाज एक बेहतर जगह बन जाता है।

अध्याय 2.
पुरोहित वर्ग और चर्च पर

— गेरोना , आप पादरी क्यों नहीं बने ?

— हमारा उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना है। पुरोहित्य [इसे अपनाने वाले व्यक्ति के लिए] मोक्ष का साधन नहीं है।

— क्या तुम्हें कभी पादरी बनने का मौका नहीं मिला?

— मुझे कई बार इसके लिए दबाव में लाया गया। जब मैं एक सामुदायिक मठ में रहता था, तो मुझ पर पवित्र संन्यास ग्रहण करने और महान स्कीमा लेने दोनों का दबाव था। लेकिन उद्देश्य भीतर से ही एक भिक्षु बनना है। यही बात मुझे वास्तव में चिंतित करती थी — मेरे विचारों में और कुछ भी नहीं था। जब मैं एक नौजवान था, और अभी भी एक सामान्य व्यक्ति था, तब मैंने कुछ चमत्कारिक घटनाएँ अनुभव कीं और इसलिए, मठ में प्रवेश करते समय मैंने कहा: 'मेरे लिए केवल एक मठवासी जीवन जीना ही काफी है। ' मैंने मुख्य रूप से इसी पर ध्यान केंद्रित किया, और मैं इस बात से चिंतित नहीं था कि मुझे महान स्कीमा में कब दीक्षा दी जाएगी या मैं पादरी बनूँगा या नहीं। और हाल ही में , एक आदमी पनागुडा की कोठरी में आया, जहाँ मैं रहता हूँ , और उसने बहुत ज़ोर देकर कहा कि मुझे पुरोहित बनाया जाए। वह इस मामले में इक्यूमेनिकल पैट्रिआर्केट तक भी गया, और जब कॉन्स्टेंटिनोपल का एक्सार्केट पवित्र पर्वत पर आया, तो वह उन्हीं से भी यही सवाल करने गया। लेकिन बिशपों ने उसे जवाब दिया: "इस बारे में स्वयं फादर पैसियोस से कहो। हम नहीं चाहते कि कोई ऐसी स्थिति बने जहाँ हम उनके अभिषेक के बारे में कोई निर्णय लें , और वह हमसे भाग जाएँ। " तो वह मेरे पास आए। जब मैंने यह सुना , तो मैंने उन पर चिल्ला भी दिया। फिर उन्होंने मुझसे कहा: 'कम से कम पादरी तो बन जाइए, ताकि आप अपने पास आने वाले लोगों पर पाप-मोचन की प्रार्थना पढ़ सकें। आखिरकार, वे आपको न केवल अपनी कठिनाइयों के बारे में बताते हैं , बल्कि अपने पापों के बारे में भी बताते हैं। क्या तुमने मुझसे उन लोगों द्वारा अपनी आध्यात्मिक समस्याओं के बारे में अलग-अलग आध्यात्मिक व्यक्तियों को अलग-अलग बातें बताने से होने वाली उलझन के बारे में शिकायत नहीं की थी? और क्या ऐसा नहीं होता कि तुम उन्हें अपने कन्फेशनर या बिशप को कुछ भरोसे से बताने के लिए कहते हो, लेकिन वे केवल आधी कहानी ही बताते हैं ? इसीलिए तुम्हें स्वयं एक आध्यात्मिक पिता बनना चाहिए: उनके पापों को सुनो और उन्हें पापमोचन

की प्रार्थना पढ़कर सुनाओ , ताकि उनके पाप क्षमा हो जाएँ और उनकी आध्यात्मिक समस्याएँ भी सुलझ जाएँ। " उन्होंने , बेचारे , यह सब अच्छी मंशा से कहा, लेकिन जो वे सुझा रहे थे वह मेरे लिए नहीं था।

— तो, गेरोन्डा , उस व्यक्ति को क्या करना चाहिए जो महसूस करता है कि वह पुरोहित पद के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं है , लेकिन दूसरे उसे इसके लिए प्रेरित कर रहे हैं ?

— उसे उन्हें वही बताना चाहिए जो उसके दिल में है। किसी को भी या तो पादरी बनने के लिए या महान संस्कार (great schema) में जबरदस्ती नहीं की जा सकती। हालाँकि , यदि कोई व्यक्ति आज्ञाकारिता और विनम्रता से जो कुछ भी उसे दिया जाता है , उसे स्वीकार करता है , और यदि वह उसमें थोड़ी भक्ति और थोड़ा प्यार लगाता है , तो ईश्वर सब कुछ ठीक कर देंगे। इसके अलावा, लोगों के पास स्वयं एक अचूक मानदंड होता है : वे उन लोगों को पहचान सकते हैं जो ईश्वर के प्रति प्रेम और उनकी कलीसिया की सेवा के लिए पुरोहित बने हैं। आखिरकार, ऐसे भी हैं जो कीर्ति की लालसा से पुरोहित बनना चाहते हैं। यदि ऐसे पादरी किसी कठिनाई में पड़ते हैं , तो वे कष्ट सहेंगे , क्योंकि मसीह उनकी सहायता के लिए नहीं आएँगे — जब तक कि वे स्वयं को नम्र न करें और पश्चाताप न करें। हालाँकि , यदि कोई व्यक्ति किसी भी सांसारिक लक्ष्य का पीछा किए बिना पादरी बनना चाहता है , तो खतरे के समय मसीह उसकी मदद करेंगे। लेकिन सामान्य तौर पर, [आध्यात्मिक] नियम के अनुसार , आपको पुरोहित बनने के लिए बुलाया जाना चाहिए; दूसरों को इसकी इच्छा होनी चाहिए, और चर्च को इसकी इच्छा होनी चाहिए। तब मसीह आपकी रक्षा करेंगे , और यदि आप खुद को किसी कठिन स्थिति में पाते हैं , तो अन्य लोग आपकी रक्षा के लिए आएँगे , और मसीह स्वयं भी आपकी मदद करेंगे।

बेशक , यह दुर्लभ है , और बहुत कम लोग किसी सांसारिक कारण से पादरी बनते हैं। मैं तो ऐसे लोगों की बात भी नहीं कर रहा हूँ। अधिकांश लोग अच्छे इरादों से पादरी बनते हैं। लेकिन फिर शैतान अपना काम शुरू कर देता है , और आप देखते हैं कि कैसे एक पादरी में महिमा का प्रेम , उच्च पद प्राप्त करने की तीव्र इच्छा विकसित हो जाती है , और वह बाकी सब कुछ भूल जाता है। कुछ तो इतने आगे तक चले जाते हैं कि वे चर्च के रेक्टर नियुक्त होने , बिशप चुने जाने , या किसी धार्मिक पद पर तैनात होने के लिए लोगों , संबंधों और मध्यस्थों का उपयोग करते हैं ...वे मसीह के लिए शुरू करते हैं , लेकिन सोने के क्रॉस के लिए समाप्त करते हैं ... सोने के क्रॉस , सोने के मुकुट , हीरे जड़े छाती के क्रॉस ... जो वास्तव में आवश्यक है , उसके अलावा कुछ भी। अगर हम सावधान न रहें तो शैतान हमें कैसे धोखा देता है !...

— गेरोना , ईश्वर एक पुरोहित से क्या चाहते हैं , और लोग उससे क्या चाहते हैं ?

— ईश्वर जो चाहता है वह बहुत बड़ी बात है ; तुम्हारे लिए इस पर विचार न करना ही बेहतर है। जहाँ तक लोगों की बात है ... पुराने दिनों में , पादरी अपने कार्यों में परिश्रम करते थे , सदाचारी और पवित्र थे , और लोग उनका सम्मान करते थे। लेकिन आज, लोग एक पादरी से दो चीजें चाहते हैं : कि वह लालच से मुक्त हो और प्रेम से पूर्ण हो। अगर लोगों को एक पादरी में ये दो गुण मिलते हैं , तो वे उन्हें एक संत मानते हैं और जितनी जल्दी हो सके चर्च दौड़ पड़ते हैं। और चूँकि वे चर्च दौड़ते हैं , इसलिए वे बच जाते हैं। फिर ईश्वर , अपनी दया में , उस पादरी को भी बचा लेते हैं। लेकिन जो भी हो, एक पादरी में महान पवित्रता होनी चाहिए।

शैतान एक भिक्षु को असंतोष और बड़बड़ाहट के माध्यम से कमजोर करने की कोशिश करता है , ताकि उसे निष्क्रिय कर सके और उसकी प्रार्थना से सारी आध्यात्मिक शक्ति छीन सके। एक भिक्षु में पवित्र आत्मा की कृपा होने के लिए, उसका एक सच्चा भिक्षु होना आवश्यक है। तभी उसके पास ईश्वर द्वारा प्रदत्त अधिकार होता है और वह अपनी प्रार्थना

के माध्यम से लोगों की सबसे प्रभावी ढंग से मदद करता है। लेकिन एक पुरोहित, भले ही वह आध्यात्मिक रूप से उन्नत अवस्था में न हो, फिर भी लोगों की मदद करता है — उसे प्रदान किए गए पुरोहितत्व के अधिकार के माध्यम से। वह संस्कारों का अनुष्ठान करके, प्रार्थना सभाओं और स्मृति सभाओं का संचालन करके, और अन्य पुरोहितीय कर्तव्यों को पूरा करके उनकी मदद करता है। भले ही कोई पादरी किसी व्यक्ति की हत्या कर दे, जब तक उसे पदच्युत नहीं किया जाता, उसके द्वारा प्रशासित संस्कार वैध ही रहेंगे। हालाँकि, यदि कोई पादरी उच्च आध्यात्मिक अवस्था में है, तो वह एक सच्चा पादरी है और दूसरों की अधिक मदद करता है।

जब मैं उन पादरियों को जवाब देता हूँ जो मुझसे पूछते हैं कि वे अपने पैरिशवासियों की कैसे मदद कर सकते हैं, और वास्तव में, किसी भी ऐसे व्यक्ति के साथ बातचीत में जो किसी भी प्रकार की पादरी संबंधी जिम्मेदारी वहन करता है, मैं निम्नलिखित पर जोर देता हूँ: मनुष्य को स्वयं पर काम करने का प्रयास करना चाहिए। एक को अपनी निर्धारित प्रार्थना दिनचर्या पूरी करनी चाहिए, लेकिन केवल उसी तक खुद को सीमित नहीं रखना चाहिए; एक को 'मानदंड से परे' आध्यात्मिक रूप से परिश्रम करना चाहिए ताकि हमेशा कुछ आध्यात्मिक भंडार रहे। अपने ऊपर आध्यात्मिक कार्य, एक ही समय में, हमारे पड़ोसी के लाभ के लिए एक शांत कार्य है, क्योंकि एक अच्छा उदाहरण अपने आप बोलता है। और फिर लोग उस अच्छाई का अनुकरण करते हैं जो वे देखते हैं और सही मार्ग पर आ जाते हैं। जब हमें दूसरों के लिए [आध्यात्मिक रूप से] 'निःशुल्क' काम करना पड़ता है, तो 'आध्यात्मिक ब्याज' पर जीने के लिए आवश्यक आध्यात्मिक धन जमा किए बिना, हम सबसे दयनीय और दयनीयतम लोग होंगे। इसलिए, हमें आत्म-सुधार को समय की बर्बादी नहीं मानना चाहिए—चाहे यह कार्य किसी भी रूप में हो: संक्षिप्त, लंबा या निरंतर —जो जीवन भर चले। क्योंकि इस रहस्यमय प्रयास में लोगों की आत्माओं में परमेश्वर के वचन की एक रहस्यमय घोषणा को पहुँचाने की शक्ति है। ईश्वर की कृपा प्राप्त व्यक्ति दूसरों को दिव्य कृपा प्रदान करता है और उन लोगों को परिवर्तित करता है जो सांसारिक हैं। उन्हें उनके जुनून की दासता से मुक्त करके, वह उन्हें ईश्वर के करीब लाता है, और वे उद्धार पाते हैं।

एक पुरोहित एक बड़ी ज़िम्मेदारी वहन करता है

एक पादरी को कभी भी दूसरों के लिए अपने घर का दरवाज़ा बंद नहीं करना चाहिए। एक पादरी पर बड़ी ज़िम्मेदारी होती है। कुछ निराशा के कगार पर पहुँच गए हैं, कुछ बीमार हैं और मदद के ज़रूरतमंद हैं, कुछ अपने अंतिम दिनों में हैं ... कुछ लोगों को पादरी को स्वीकार करना चाहिए, और दूसरों से उसे स्वयं मिलना चाहिए। एक पादरी इनकार नहीं कर सकता। लोगों की आत्माएँ खतरे में हैं, और उसे उनकी मदद करनी चाहिए। यदि वह इन आत्माओं की मदद नहीं करता है और ईश्वर उन्हें असमय ले लेते हैं, तो इसकी ज़िम्मेदारी कौन लेगा? क्या यह पुरोहित नहीं है? एक भिक्षु के रूप में, मैं अपना दरवाज़ा बंद करके चला जा सकता हूँ। मैं मानव दृष्टि से ओझल हो सकता हूँ और प्रार्थना के माध्यम से अनदेखे तरीके से दुनिया की मदद कर सकता हूँ। क्योंकि मानव समस्याओं के उलझे जाल को सुलझाना मेरा काम नहीं है। मेरा काम दुनिया के लिए प्रार्थना करना है। मैं विशेष रूप से इसलिए पादरी या आध्यात्मिक निर्देशक नहीं बना कि मैं लोगों की किसी अलग तरीके से, एक मठवासी तरीके से मदद करूँ।

अगर मैं सांसारिक दुनिया में एक पादरी होता, तो मैं अपने घर के दरवाज़े कभी बंद नहीं कर पाता। मुझे हमेशा लोगों के बीच अंतर किए बिना, सभी को उनकी ज़रूरत की चीज़ें देनी पड़तीं। पहले, मैं अपने पैरिशवासियों की देखभाल करता, और कोई भी अतिरिक्त [समय, ऊर्जा,

संसाधन] मैं दूसरों को दे देता —जो मुझसे मदद मांगते। मैं न केवल वशि्वासयिों , बल्कि अवशि्वासयिों और नास्तकिों , यहाँ तक कि चिर्च के दुश्मनों के लिए भी चतिति रहूँगा। या अगर मैं एक आध्यात्मकि पति होता और कोई व्यक्ति मुझसे दूसरे व्यक्ति के बारे में शकिायत करता, तो मैं उनके रशि्ते को सुलझाने के लिए दूसरे व्यक्ति को भी अपने पास बुलाता। मैं यह जानने के लिए लोगों को फोन करता कि जो कोई पहले कसिी प्रलोभन का सामना कर चुका था, वह कैसा चल रहा है , या जसिने कोई कठनिाई झेली थी, वह उससे कैसे नपिट रहा है। क्या मैं इन सब के बीच एक शांत , मौन जीवन जी सकता था?

एक पादरी को मार्गदर्शन करना चाहिए ताकि श्रद्धालु उसका अनुसरण कर सकें। यह बलि्कुल एक झुंड की तरह है : अगुआ भेड़ पहले चलती है , और झुंड के बाकी भेड़ उसके पीछे -पीछे चलती हैं। आगे वाला भेड़ अपना सींग दाईं ओर मोड़ता है , और सभी भेड़ें दाईं ओर मुड़ जाती हैं। सभी भेड़ें झुंड के मुखयिा —अपने नेता —का अनुसरण करती हैं। इसीलिए भेड़ें झुंड से भटकती नहीं हैं —एक भेड़ दूसरी का अनुसरण करती है। आगे वाला भेड़ दशिा नरि्धारति करता है ; भेड़ें उसका अनुसरण करती हैं।

— गेरोन्डा , अगर एक चरवाहा एक वशिेष भेड़ —एक अच्छी , आज्ञाकारी —को दूसरे की तुलना में अधकि प्यार करे —जो बहुत अधकि माँग करने वाली हो; क्या यह उचति है ?

— देखो : मान लो तुम एक चरवाहा हो। तुम्हारे झुंड में बहुत सारे मेमने हैं। कुछ शांतपिूर्वक घास चर रहे हैं और खुशी से बकबक कर रहे हैं , जबकि अन्य — कमजोर या बीमार — एक तरफ समिट कर खड़े हैं। आप कसिकी ज्यादा देखभाल करेंगे ? नश्चिति रूप से कमज़ोर वालों की? और अगर कोई सयिार कुछ मेमनों पर हमला कर दे और वे दयनीय आवाज़ में बकबक करने लगें , तो आप कसिकी मदद के लिए दौड़ेंगे ? जो खुशी -खुशी और शांति से चर रहे हैं और बकबक कर रहे हैं , या वे जो दलि दहला देने वाली आवाज़ में रो रहे हैं , शकिारी से बचाने की भीख माँग रहे हैं ? एक चरवाहा एक घायल मेमने के लिए अधकि दर्द महसूस करता है , और वह तब तक उसकी वशिेष देखभाल करता है जब तक वह ठीक नहीं हो जाता। चमत्कार करने वालों और दुश्मन —शैतान —द्वारा घायल कए गए, दोनों के लिए हमारे दलिों में एक ही स्थान होना चाहिए। हमें मन ही मन दूसरे वालों को तुच्छ नहीं समझना चाहिए। जो लोग कभी पापी जीवन जीते थे लेकनि अब अपनी वासनाओं को काटने का प्रयास कर रहे हैं , उनके लिए मुझे उन लोगों की तुलना में अधकि प्रेम और अधकि दुख होता है जो वासनाओं से पीड़ति नहीं हैं। मैं पहले वालों के बारे में लगातार सोचता हूँ। यदि किसी व्यक्ति में आंतरकि प्रेम होता है , तो उसका पड़ोसी भी इसके बारे में जान जाता है , क्योंकि यह प्रेम संपूर्ण बाहरी व्यक्तित्व को भी मधुर बना देता है —यह उन्हें दैवीय अनुग्रह के द्वारा अधकि सुंदर बना देता है , जसिे छपिाया नहीं जा सकता, क्योंकि यह प्रकट हो जाता है।

पादरयिों के लिए, चाहे वे पुरोहति हों या बशिप, मूसा को भी याद रखना अच्छा होगा, और यह भी कि उन्होंने दो मलियिन (बीस लाख) की संख्या वाले एक भटकते हुए लोगों के साथ कैसे संघर्ष कयिा। उन्होंने अपने लोगों के लिए कतिनी प्रेमपूर्वक प्रार्थना की, और मरुभूमि में भटकने के उन लंबे वर्षों के दौरान उन्होंने उनके साथ कतिनी पीड़ा साझा की, जब तक कि उन्होंने उन्हें प्रतज्ञिात देश में नहीं पहुंचा दयिा। इन सब बातों को ध्यान में रखकर, ईसाई पादरी अक्षय शक्ति प्राप्त करेंगे और कभी भी अपनी पीड़ाओं की शकिायत नहीं करेंगे — जो मूसा द्वारा सहन की गई पीड़ाओं की तुलना में तुच्छ हैं।

पादरी वर्ग का धर्मनरिपेक्षीकरण

— गेरोना , क्या एक सेक्सटन को हमेशा कासोक पहनना ही चाहिए, गर्मियों में , गर्मी में भी? जब गर्मी होती है तो मैं अपने कासोक में पसीने से भीग जाता हूँ।

— अरे वाह... आजकल यही तो है मठवाद!... क्या कहा जाए... माउंट अथोस के पूजनीय अथानासियस ने , अपने तपस्या के दौरान, मोटे चोगा और एक भारी, बहुत भारी क्रॉस पहना करते थे , और हम... अब हम कहाँ आ पहुँचे हैं ! ऑस्ट्रेलिया में , मैंने एक चर्च में शॉर्ट्स पहने एक सेक्सटन को देखा। मैंने उससे कहा, 'लोग ऐसे कपड़े समुद्र तट पर जाने और समुद्र में तैरने के लिए पहनते हैं। ' उसने जवाब दिया, 'लेकिन मेरे लिए, इस तरह ज़्यादा आरामदायक है। '

वे इसी से शुरू करते हैं , धीरे -धीरे आगे बढ़ते हैं , और फिर अंत में कहते हैं : 'आओ अपनी कासोक उतार दें ताकि धूप हम पर न पड़े। ' क्या चोगा रास्ते में आ रहा है ? उसे उतार दो! क्या सिर पर पहना कपड़ा या प्रेरितों का स्तोल रास्ते में आ रहा है , या तुम पसीना बहा रहे हो? हे भगवान, उन्हें भी उतार दो! हाँ , हाँ , हम उसी ओर जा रहे हैं। मेरे भाई, लेकिन अगर गर्मी हो, तो हर भिक्षु को अपने बारे में सोचना चाहिए। उसे अपनी चोगा के नीचे कम कपड़े पहन लेने दो।

— गेरोना , क्या एक भिक्षु के लिए अपनी कासोक उतारकर सिर्फ़ मंटल पहनना उचित है ?

— और क्या हम पादरियों से कहें कि वे अपनी कासोक उतार दें और सिर्फ़ अपनी पतलून में रह जाएँ ? मैं इस पर क्या कह सकता हूँ ... मंटल एक भिक्षु का परिधान है। एक भिक्षु जब लघु या महा स्कीमा ग्रहण करता है तो उसे यह परिधान पहनाया जाता है। मुंडन के दौरान, मुंडन हो रहे व्यक्ति के प्रायोजक को मंटल पहनाया जाता है। नए मुंडन किए गए भिक्षु को कासोक पहनाने के बाद, संरक्षक स्वयं से मंटल उतारकर उसे पहना देता है। जब मैं अलेक्जेंड्रिया में था, तो मैं इस बात से चकित था कि कुछ स्थानीय महिलाएं सिर से पांव तक काले कपड़े पहने हुए थीं। यह उनकी परंपरा है। और वह भी इतनी गर्मी में ! और हम क्या करें —क्या हम अपने पूर्वजों से मिली कासोक को सहन नहीं कर सकते ?

— गेरोन्डा , कुछ लोग सोचते हैं : 'क्या कासक वास्तव में किसी व्यक्ति को पादरी बना देता है ?'

— खैर , उदाहरण के लिए, दो जैतून के पेड़ों को देखिए — एक पत्तों वाला, दूसरा बिना पत्तों वाला। आप दोनों में से किसे पसंद करते हैं ? पत्तों वाला या बिना पत्तों वाला? होली क्रॉस स्केटे में रहते हुए , मैंने एक बार आँगन में उग रहे एक जैतून के पेड़ की छाल उसके तने से उतार दी और लिखा: "पेड़ों ने अपना आभूषण उतार दिया है — देखते हैं कि वे कितना फल देते हैं !", और उसके बगल में : "एक बिना कासाक वाला पादरी — निश्चित रूप से एक अनैतिक ।" उस समय, पादरियों द्वारा कासाक पहनने को समाप्त करने के बारे में एक जीवंत बहस चल रही थी, और कुछ लोग इस काम के लिए मेरी आशीर्वाद पाने की उम्मीद में आए थे !

— गेरोना , एक आदमी हमारे मठ में पैंट पहने एक ऑर्थोडॉक्स पादरी को ले आया। क्या हमें उसका आशीर्वाद लेना चाहिए था?

— आप किस आशीर्वाद की बात कर रहे हैं ! जिसने भी इस पादरी को आपके पास लाया, आपको उससे कहना चाहिए था: "हम क्षमा चाहते हैं , लेकिन मठ में हमारा नियम है कि हम पादरियों को उनकी पोशाक प्रदान करते हैं। एक पैंट पहने पादरी महिला मठ में कैसे आ सकता है ? यह अनुचित है। " अगर न तो उसे आपके पास लाने वाले व्यक्ति को और न ही खुद पादरी को कोई शर्म महसूस हो रही है , तो आपको उसे कस्साक देने में शर्म क्यों महसूस होनी चाहिए? एक बार, हवाई अड्डे पर, मैं एक युवा आर्चमैंड्राइट से मिला जो धर्मनरिपेक्ष कपड़ों में विदेश

जा रहा था। "मैं फादर अमुक हूँ ," उस आर्चमिांड्राइट ने मेरा परचिय लयिा। "अच्छा , आपकी कासोक कहाँ है ?" मैंने उससे पूछा और स्वाभावकि रूप से , उसका आशीर्वाद नहीं लयिा।

— और कुछ , गेरोना , दावा करते हैं कअिधकि आधुनकि होकर, पुरोहति वर्ग अधकि लाभदायक होगा।

'जब पैट्रआिर्क दमित्रिी अमेरकिा में थे , तब उन्होंने होली क्रॉस थयिोलॉजकिल स्कूल का दौरा कयिा, तो कुछ धर्मनष्ठि अमेरकिी छात्रों ने उनके पास आकर कहा: "परम पावन, हमारे युग में पुरोहतिों को और अधकि आधुनकि बनना चाहएि!"" और पैट्रआिर्क ने उनसे उत्तर दयिा: 'एटोलीया के संत कोस्मास कहते हैं कजिब पुरोहति सामान्य व्यक्तिि बन जाते हैं , तो सामान्य व्यक्तिि राक्षस बन जाते हैं !' क्या उन्होंने उन्हें एक अच्छा उत्तर नहीं दयिा? उन्होंने उनके लएि एक शानदार कमरा तैयार कयिा था, जसिमें एक भव्य बस्तिर और शानदार साज-सज्जा थी, लेकनि जब उन्होंने यह सब देखा , तो उन्होंने कहा: 'तुम मुझे कहाँ ठहराओगे ? इस कमरे में ? तुम्हें मेरे लएि इसके बजाय एक तह वाला बस्तिर लाना चाहएि। सांसारकि बनकर, एक पादरी शैतान का उम्मीदवार बन जाता है। '

— गेरोना , क्या हमें साधारण धार्मकि वस्त्र सलिने चाहएि? शायद बहुत ज्यादा कढ़ाई वाले वस्त्र पुरोहतिों के लएि फायदेमंद नहीं हैं ?

— यह आपके लएि प्रशंसनीय होगा यदि आप अपने ग्राहकों से कहें : 'ये साधारण वेस्टमेंट्स हैं जो हम बनाते हैं। हम वसि्तृत कढ़ाई वाले वेस्टमेंट्स भी बना सकते थे , लेकनि हम नहीं बनाते , क्योंकि हमें चति है कहिम लोगों को भटका रहे होंगे। ' और इसके अलावा, अवशि्वासी भी उनका उपयोग करते हैं। हमने सुना है कलिोग कह रहे हैं : 'हम रोटी का भी खर्च नहीं उठा सकते , फरि भी पुरोहतिों के पास वेस्टमेंट्स का ढेर है। ' यदि आप साधारण कढ़ाई वाले वेस्टमेंट्स बनाएँगे , तो सम्मानति पुरोहति उनसे आपके पास से ही खरीदेंगे। जहाँ तक सांसारकि सोच वाले पुरोहतिों की बात है , अगर वे आपसे जटलि कढ़ाई से सजे वेस्टमेंट्स खरीदते हैं , तो वे खुद उनमें जोकरों की तरह दखिेंगे , और वे आपका नाम खराब करेंगे। हालाँकि, पवत्रि वेदी के लएि वेस्टमेंट्स और पवत्रि पात्रों के आवरण को बेहतर कढ़ाई से सजाया जा सकता है। और सुरप्लसि , स्टचिरयिा और फेलोनयिा के नचिले हस्सिों पर क्रॉस या संतों की छवयिों की कढ़ाई न करें। वस्त्रों के इन हस्सिों में कुछ सरल, गैर - पवत्रि प्रतीक दखिाएँ। अन्यथा , पादरी सीधे संतों और क्रॉस पर बैठ जाएँगे ... यह श्रद्धा की कमी है।

"इस अपराध के संबंध में मेरे वरिुद्ध अभयिोग कौन लगाएगा?"

— गेरोन्डा , यदि कोई पुरोहति कसिी घातक पाप में पड़ जाता है , तो क्या वह वह दविय अनुग्रह खो देता है जो उसके पास है ?

— नहीं , यह कैसे खो सकती है ? दविय अनुग्रह खोया नहीं जा सकता, लेकनि यह पीछे हट सकता है। सेवा से नलिंबति एक पादरी पुरोहति पद से वंचति नहीं हो जाता है , लेकनि उसके द्वारा संपन्न कएि गए संस्कार अमान्य होते हैं। ऐसे पादरी में अब उन्हें संपन्न करने की शक्तिि नहीं रहती। सबसे आवश्यक चीज़ अनुग्रह है। हालाँकि, यदि निलिंबन हटा दयिा जाता है , तो उसके द्वारा संपन्न कएि गए संस्कार मान्य होते हैं।

पुरोहति बनने के लएि जनिके पास कैननकिल बाधाएँ हैं , उनके संबंध में बहुत ववकि की आवश्यकता होती है। यह सुनश्चिति करने के लएि वशिेष सावधानी बरतनी चाहएि कि अनुचति कठोरता से वशि्वासी प्रलोभन में न पड़ें ; और यह कि पुरोहति का परविार चतिाजनक वचिारों से

पीड़ति न होने लगे। उसे ववेकपूर्ण ढंग से धर्मवधि का अनुष्ठान करने से पीछे हटना चाहिए, ताकि भलाई करने के बजाय, इससे वश्विासयिों को हानि न पहुँचे। क्योंकि ईश्वर और पुरोहति दोनों ही कैननकिल अड़चनों से अवगत हैं , और यदि वह अपनी पुरोहतीय सेवा को अचानक, एक ही झटके में बंद कर दे , तो वश्विासी और उसका परविार दोनों ही संदेहों से पीड़ति होने लगेंगे , और हानि और भी अधकि होगी।

कभी-कभी मैं देखता हूँ कि कैसे ईश्वर कुछ शारीरकि बीमारयिों —जैसे नाक से खून आना, पेट की बीमारयिाँ या इस तरह की अन्य समस्याएँ —को उन भक्तपिूर्ण पुरोहतिों पर आने देते हैं जन्हिें कैननकिल अड़चनें होती हैं। ये पुरोहति इस बात से प्रसन्न होते हैं कि मामला इस तरह से सुलझ रहा है कि उन्हें धर्मवधि का अनुष्ठान बंद करना ही पड़ रहा है। कभी-कभी कोई पुरोहति जो कुछ कैननकिल अड़चनों का सामना कर रहा होता है , मेरी कोठरी में आता है , और मैं देख सकता हूँ कि उस बेचारे को पुरोहति पद छोड़ देना चाहिए। लेकनि कभी-कभी ऐसा होता है कि इस मामले में उसके बशिप की राय अलग होती है। क्या कहा जा सकता है ? बस इतना ही बचा है कि प्रार्थना की जाए कि ईश्वर हस्तक्षेप करें। मुझे एक वशिेष मामला याद है। मैंने एक पादरी को पादरी पद छोड़ने की सलाह दी और उसे इस कदम के लिए तैयार कयिा। लेकनि जब उसने अपने आध्यात्मकि पति और अपने बशिप से इस बारे में बात की, तो वे सहमत नहीं हुए। इसलिए उसने एक कैननकिल बाधा होने के बावजूद पादरी पद पर काम करना जारी रखा। कुछ ही समय बाद, वह एक कार की चपेट में आ गया। कार सड़क से उतरकर फुटपाथ पर आ गई जहाँ वह चल रहा था और उसे कुचल दयिा, जिससे उसकी मौत हो गई। "जीवति परमेश्वर के हाथों में पड़ना एक भयानक बात है *!"*[221]

हमारी ऑर्थोडॉक्स चर्च में एक भी दोष नहीं है। एकमात्र दोष जो चर्च की प्रतष्ठिा को धूमलि करता है , वह हम स्वयं हैं , जब हम—पदानुक्रम के प्रमुख से लेकर एक साधारण वश्विासी तक—चर्च का प्रतनिधित्वि वैसे नहीं कर पाते जैसे हमें करना चाहिए। चुने हुए लोगों की संख्या कम हो सकती है , लेकनि इससे चति की कोई बात नहीं होनी चाहिए। चर्च मसीह की चर्च है , और वह इसका शासन करते हैं। चर्च कोई ऐसा मंदरि नहीं है जिसे धार्मकि लोग पत्थर , रेत और चूने से बनाते हैं , और जिसे बर्बर लोग आग से नष्ट कर देते हैं। चर्च स्वयं मसीह हैं — 'और जो इस पत्थर पर गरिेगा वह चकनाचूर हो जाएगा, और जिस पर यह गरिेगा वह कुचल दयिा जाएगा।'[222]

आज, मसीह जो हो रहा है उसे सहन कर रहे हैं। वह सहन करते हैं , और लोगों के लिए दैवीय अनुग्रह कार्य कर रहा है। हम एक तूफान से गुज़र रहे हैं , लेकनि स्थति स्पष्ट हो जाएगी। जो अब हो रहा है वह स्थायी नहीं रहेगा। क्या आपको याद है कि सुसमाचार में क्या लखिा है : 'मैं धधकती हुई बत्ती को बुझाऊँगा नहीं , और न ही मैं दबी हुई सरकण्डे को तोड़ूँगा। '[223] मसीह ने यह इसलिए कहा ताकि न्याय के दनि हमारे पास कोई बहाना न रहे। आप जानते हैं , जब दीपक के कुंड में तेल खत्म हो जाता है और बत्ती में केवल थोड़ा सा तेल बच जाता है , तो दीपक जल्द ही बुझ जाएगा, भले ही उसकी लौ 'झलिमलिाती' हो—कभी तेज़ी से जलती हो, तो कभी मुश्कलि से दखिाई देती हो। ऐसा दीपक उस व्यक्ति के समान है जो मृत्युशय्या पर पड़ा हो, जिसमें जीवन की अंतमि झलकयिाँ दखिाई दे रही हों। हालाँकि , मसीह इस दीपक को बुझाना नहीं चाहते , क्योंकि

---

[221] इब्रानयिों 10:31।

[222] मत्ती 21:44।

[223] तुलना करें यशायाह 42:3 और मत्ती 12:20 से।

तब बुझा हुआ दीपक कहेगा : 'मैं जलता रहता, लेकिन आपने मुझ पर फूँक मारी और मेरी लौ बुझा दी!' और फूँक मारने के लिए वहाँ था ही क्या ? आखिरकार, तुम्हारे दीये में तेल ही नहीं था! और न ही मसीह एक टूटी हुई सरकंडा को छूना चाहता है , क्योंकि तब, पूरी तरह से टूट जाने पर, वह सरकंडा विरोध करेगा : 'तुमने ही मुझे छुआ , और इसीलिए मैं टूट गया!' लेकिन चूँकि तुम पहले से ही आधे टूटे हुए थे , मुश्किल से टिके हुए थे और अपने आप ही टूटने की कगार पर थे , तो फिर तुम मसीह पर यह आरोप क्यों लगाते हो कि उन्होंने तुम्हें छुआ और तुम्हें तोड़ा ?

सुसमाचार के अनुसार जीवन न जी पाने के कारण, हम—भिक्षु , और वास्तव में पादरी भी—धर्महीनता फैलाते हैं। लोगों को हमारे सद्गुणों की, न कि हमारे दुर्गुणों की, आवश्यकता है। और जो उदाहरण भिक्षु गृहस्थों के लिए प्रस्तुत करते हैं , वह विशेष , अत्यंत महत्वपूर्ण है। गृहस्थ अपने पापों को सही ठहराने के लिए बहाना ढूंढते हैं , इसलिए सतर्कता आवश्यक है। इस पर विचार करें : हम मसीह के शब्दों , 'पाप के विषय में मुझ पर कौन दोष लगा सकता है ?'[224] — को दोहरा नहीं सकते , लेकिन हम कह सकते हैं , 'प्रलोभन के विषय में मुझ पर कौन दोष लगा सकता है ?' मसीह ने पाप के विषय में ये शब्द इसलिए बोले क्योंकि वह पूर्ण परमेश्वर और पूर्ण मनुष्य थे। लेकिन हम केवल मनुष्य हैं। हममें अपनी कमियाँ हैं , और हम ठोकर खाते हैं — बस ऐसा ही होता है। लेकिन हमें किसी और को भटकाने का कारण नहीं बनना चाहिए।

एक जनरल ने मुझे बताया कि अगर उन्होंने अपनी माँ से अपना विश्वास विरासत में नहीं पाया होता, तो उस समय की घटनाओं के कारण साइप्रस में रहते हुए वे अपना विश्वास खो देते।[225] हमें शांतिपूर्ण तुर्की आबादी के साथ मानवीय व्यवहार करने का आदेश दिया गया था, लेकिन इस जनरल ने अपने कानों से एक पादरी को टेलीफोन पर चिल्लाते हुए सुना : "तुर्कों का कत्लेआम करो!" — बस यूँ ही, बिना किसी कारण के। और फरासियोई, जो एशिया माइनर से ग्रीस आ गए थे , उन संप्रदायों के बहकावे में आ गए जो उन वर्षों में यहाँ फैलने लगे थे , क्योंकि उन्होंने अनादरपूर्ण बिशप और पुरोहित देखे। चर्च में एक अलग ही दर्जे के लोगों को देखकर —जो आध्यात्मिक जीवन नहीं जीते थे —एशिया माइनर के शरणार्थी भटक गए, क्योंकि अपने देश में उन्होंने एक अलग तरह के पुरोहितों को जाना था। और तुरंत , जैसे कि इशारा हुआ हो, विधर्मी 'सुसमाचार प्रचारक ' प्रकट हो गए, जो यह दावा कर रहे थे कि वे कथित तौर पर अपने जीवन में सुसमाचार को लागू कर रहे थे , और दुर्भाग्यपूर्ण शरणार्थी संप्रदायवाद की ओर भटक गए।

लेकिन यदि एक बिशप, एक पादरी या एक भिक्षु दोषी है , तो मसीह दोषी नहीं हैं। हालांकि , लोग मामलों में इतनी गहराई से नहीं देखते। 'क्या वह मसीह का प्रतिनिधि नहीं है ?' वे कहते हैं। हाँ , लेकिन सवाल यह है : क्या यह प्रतिनिधि उस व्यक्ति को सांत्वना देता है , जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है ? या क्या लोग इस बात पर विचार नहीं करते कि आने वाले जीवन में मसीह के ऐसे प्रतिनिधि का क्या इंतज़ार कर रहा है ? परिणामस्वरूप , कुछ लोग, पुरोहित वर्ग के जीवन में हुई कुछ अवांछनीय घटनाओं से भटक कर, यहाँ तक कि अपना विश्वास भी खो देते हैं। ये दुर्भाग्यपूर्ण आत्माएँ यह महसूस करने में विफल रहती हैं कि यदि कोई विशेष पुलिसकर्मी दोषी है , तो उसके लोगों को दोषी नहीं ठहराया जा सकता, और यदि कोई विशेष पुरोहित दोषी है , तो चर्च को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। हालाँकि , जो लोग भटक गए हैं लेकिन अच्छे स्वभाव के हैं , वे इसे समझने में सक्षम हैं यदि उन्हें समझाया जाए। ऐसे लोगों के लिए भी

---

[224] देखें यूहन्ना 8:46।

[225] 20 जुलाई 1974 को, तुर्की सैनिकों ने साइप्रस पर आक्रमण किया और इसके उत्तरी हिस्से पर कब्ज़ा कर लिया। – अनुवादक की टिप्पणी।

शमूलयित की परस्थितियाँ होती हैं , क्योंकि हो सकता है कि उन्हें बुराई की ओर ले जाया गया हो, और कुछ ऐसी बातें हैं जन्हिें वे बस समझ ही नहीं सकते।

— गेरोन्डा , चर्च के भीतर हो रहे इतने सारे प्रलोभनों के संबंध में कोई भी खुले तौर पर अपनी स्थिति क्यों नहीं बताता है ?

— चर्च में जो हो रहा है , उसके संबंध में , हर मुद्दे पर खुले तौर पर अपनी स्थिति व्यक्त करना संभव नहीं है। कोई व्यक्ति बस जो हो रहा है उसे सहन कर सकता है , और इस बात को तब तक बर्दाश्त कर सकता है जब तक ईश्वर यह न दखिा दें कि क्या करने की आवश्यकता है। जो हो रहा है उसे सहन करना एक बात है , लेकनि इसकी मंजूरी देना —जबकि इसे मंजूरी नहीं दी जानी चाहिए—यह एक बलि्कुल अलग मामला है। जहाँ कुछ कहना आवश्यक हो, वह सम्मान और साहस के साथ कयिा जाना चाहिए — गुस्से में जहर उगलने या मामले को सार्वजनकि तमाशा बनाने के बनिा। जो आवश्यक है , वह संबंधति व्यक्ति से नजिी तौर पर कहा जाना चाहिए। प्रेम के कारण, दुख के साथ बात करनी चाहिए, ताकि वे कुछ मामलों पर अधकि ध्यान दें सकें। जो कोई कसिी के सामने सच फेंकता है , न ही जो उसे पूरी दुनयिा में ढंढिोरा पीटता है , वही सच्चा और स्पष्टवादी होता है , बल्कि वह होता है जसिके पास प्रेम है और जो सत्य के अनुसार जीता है , और जो आवश्यक घड़ी पर, तर्क के साथ, वह कहता है जो कहा जाना चाहिए और जब कहा जाना चाहिए।

जो बनिा वविेक के दूसरों की नंदिा करते हैं , वे आध्यात्मकि अंधकार की स्थिति में होते हैं और, दुर्भाग्य से , लोगों को जैसे खंभों या लकड़ी के लट्ठों को देखते हैं। ये वचिारहीन लोग दूसरों को, जो पहले से ही पीड़ति और कष्ट में हैं , नर्दियता से चोट पहुँचाते हैं। फरि भी ये भ्रमति 'क्यूबज्मि के स्वामी ' इस बात में आनंद लेते हैं कि उनकी नंदिा की कुल्हाड़ी के नीचे से चकिने , समकोणीय मानवीय ठूंठ उभरते हैं। केवल एक ऐसे व्यक्ति के लिए, जसि पर कोई वरष्ठि राक्षस सवार हो, लोगों को सार्वजनकि रूप से प्रदर्शति करने और उनके अतीत को उजागर करने का कोई औचत्यि बनता है , ताकि कमजोर आत्माओं को अशांत कयिा जा सके। बेशक , यह बाद वाला नयिम केवल उन लोगों पर लागू होता है जनि पर राक्षस का ऐसा अधकिार होता है। यह स्पष्ट है कि '' (अशुद्ध आत्मा) सार्वजनकि रूप से लोगों के गुणों को नहीं , बल्कि उनकी कमजोरयिों को उजागर करती है। इसके वपिरीत, जो लोग अपनी वासनाओं से मुक्त हो गए हैं , वे कसिी भी द्वेष को नहीं पालते और इसलिए बुराई का जवाब अच्छाई से देते हैं। जब वे कहीं कोई गंदगी देखते हैं जसिे हटाया नहीं जा सकता, तो ऐसे लोग उसे कसिी चीज़ से ढक देते हैं ताकि किसी और को उससे घृणा न हो। लेकनि जो लोग दूसरों के पापों की गंदगी और कचरा उखाड़ते हैं , वे मुर्गयिों की तरह हैं जो गंदगी में चोंच मारती हैं , खैर , आप जानते ही हैं कि क्या ...

वर्तमान में [226] शैतान कलंकति करने , बदनाम करने और अपमानति करने का बहुत काम कर रहा है। वह भयानक भ्रम पैदा कर रहा है , लेकनि अंत में वह फँस जाएगा। साल बीतेंगे , और धर्मी लोग चमकेंगे। वे प्रमुख रूप से दखिाई देंगे , भले ही उनका सद्गुण मामूली हो, क्योंकि तब तक दुनयिा में घोर अंधकार छा जाएगा और लोग उनकी ओर मुड़ेंगे। जहाँ तक उन लोगों का सवाल है जो अब दूसरों को गुमराह कर रहे हैं , अगर वे उन समयों को देखने के लिए जीवति रहे , तो उन्हें शर्मदिगी उठानी पड़ेगी।

[226] 1974 में दयिा गया।

चर्च के मुद्दों के प्रति सही दृष्टिकोण

—गेरोन्डा, जब चर्च में जटिल समस्याएं उत्पन्न होती हैं, तो उनका समाधान करने का सही तरीका क्या है?

—चरमपंथ से बचना चाहिए। चरमपंथ का सहारा लेकर समस्याएं हल नहीं होतीं। पुराने दिनों में, एक किराना दुकानदार दानेदार चीनी, दलिया या इसी तरह की किसी चीज़ को मापने के लिए एक चम्मच लेता था, और उन्हें तराजू में थोड़ा-थोड़ा करके डालता था। इस तरह, वह सटीकता हासिल करता था, और तराजू संतुलित हो जाता था। वह तराजू पर बड़ी मात्रा में सामान नहीं फेंकता था या उन्हें अचानक, अचानक तरीके से एक साथ नहीं हटाता था। दोनों चरमपंथों ने हमेशा से मातृ-चर्च को पीड़ा दी है। और जो इन चरमपंथों से चिपके रहते हैं, वे भी पीड़ित होते हैं, क्योंकि हर चरमपंथ आमतौर पर अपनी तीखी धार से दर्दनाक रूप से चुभता है। ऐसा है मानो, एक तरफ, एक भूत-प्रेतग्रस्त व्यक्ति—एक आध्यात्मिक रूप से नर्विलज्ज व्यक्ति जो हर चीज़ से घृणा करता है—अपने चरमपंथ से चिपका हो, जबकि दूसरी तरफ एक पागल, जिसकी मूर्खतापूर्ण ईर्ष्या संकीर्णता के साथ मिलकर, अपने चरमपंथ पर अड़ा हो। दूसरे शब्दों में, एक आध्यात्मिक रूप से नर्विलज्ज व्यक्ति कभी भी मूर्खतापूर्ण ईर्ष्या से ग्रस्त एक कट्टरपंथी के साथ समझौता नहीं करेगा। ये लोग एक-दूसरे को चट कर जाएँगे और एक-दूसरे को चोट पहुँचाएँगे, क्योंकि दोनों ही दैवीय अनुग्रह से रहित हैं। और फिर—ईश्वर न करे!—दोनों ही चरमपंथ एक-दूसरे पर बिना रुके वार करते रहेंगे और एक-दूसरे को घायल करते रहेंगे, जिसका कोई अंत नहीं होगा। लेकिन जो लोग दोनों चरमपंथों के किनारों को एक-दूसरे की ओर मोड़ने में सक्षम हैं—ताकि वे एक हो सकें—और इस प्रकार मानसिक एकता प्राप्त कर सुलह कर सकें—उन्हें मसीह द्वारा दो अक्षय मुकुटों से विभूषित किया जाएगा।

हमें सावधान रहना चाहिए कि हम चर्च के भीतर समस्याएँ पैदा न करें या छोटी-मोटी मानवीय कमजोरियों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश न करें, कहीं ऐसा न हो कि हम अधिक नुकसान पहुँचाएँ और दुष्ट को आनंद मनाने का कारण दे दें। कोई भी व्यक्ति जो, कुछ छोटी-सी अव्यवस्था देखकर, बहुत अधिक उत्तेजित हो जाता है और, क्रोध में, उसे सुधारने के लिए दौड़ पड़ता है, वह एक मूर्ख सेवक के समान है जो, यह देखकर कि एक मोमबत्ती टपक रही है, उसे ठीक करने के लिए पूरी गति से दौड़ता है, और इस प्रक्रिया में उपासकों को गिरा देता है, मोमबत्ती के दीवानों को उलट देता है और सेवा के दौरान सबसे बड़ा अव्यवस्था पैदा कर देता है। दुर्भाग्य से, हमारे समय में, मातृ-चर्च कई लोगों से परेशान है: कुछ—शिक्षित—ने अपने मन से तो धर्मसिद्धान्तों को पकड़ रखा है, लेकिन पवित्र पिताओं की आत्मा से नहीं। अन्य—अशिक्षित—ने भी इसी तरह डोग्मा को अपने दाँतों से पकड़ रखा है। इसीलिए वे कुछ धार्मिक मुद्दों पर चर्चा करते समय अपने दाँत पीसते हैं, और इस तरह चर्च को हमारे ऑर्थोडॉक्स के दुश्मनों से भी अधिक नुकसान पहुँचता है। किसी नदी के लिए यह अच्छा है कि वह न तो बहुत तेज़ बहे, क्योंकि तब पानी पेड़ों, पत्थरों और लोगों को बहा ले जाता है; और न ही बहुत उथली हो, क्योंकि तब वह एक ठहरे हुए, मच्छरों से भरे दलदल में बदल जाती है।

और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो सामान्य भलाई से नहीं, बल्कि एक-दूसरे की आलोचना करने से चिंतित रहते हैं। ऐसा व्यक्ति स्वयं से अधिक दूसरों पर ध्यान देता है। वह यह देखने के लिए इंतजार करता है कि उसका विरोधी क्या कहेगा या लिखेगा, ताकि वह उस पर एक निर्दयी प्रहार कर सके; जबकि, यदि उसे स्वयं वही बात कहनी या लिखनी होती, तो वह भी अपने तर्कों को पवित्र शास्त्रों और पवित्र पिताओं के लेखों से कई उद्धरणों के साथ सुदृढ़ करता। ऐसे व्यक्ति द्वारा किया गया पाप बहुत बड़ा होता है क्योंकि, एक ओर, वह अपने पड़ोसी के प्रति

अन्याय करता है , और दूसरी ओर, वह उसे वशि्वासयिों की आँखों के सामने कुचल देता है। इसके अलावा, ऐसा व्यक्ति अक्सर कमजोर आत्माओं को भटका देता है और इस प्रकार उनमें अवशि्वास बोता है। कुछ लोग, अपनी दुर्भावना को सही ठहराने के लिए, स्वयं को दोष देने के बजाय दूसरों की नंदिा करते हैं और, सुसमाचार के शब्दों 'चर्च का नेतृत्व ' (227) की गलत व्याख्या करके , कुछ आंतरकि चर्च मुद्दों को पूरी दुनयिा के सामने शर्मंदिगी का कारण बनाते हैं , और हर कोने से उन बातों का ढंढिोरा पीटते हैं जनिके बारे में बात भी नहीं करनी चाहिए। ये लोग अपने छोटे से चर्च —अपने परविार या मठवासी समुदाय —से शुरुआत करें और अगर वह उनके अनुकूल है , तो फरि वे मातृ -चर्च को कलंकति करने के लिए आगे बढ़ें। मुझे लगता है कि अच्छे बच्चे अपनी माँ पर कभी किसी बात का आरोप नहीं लगाते।

चर्च को हर तरह के लोगों की आवश्यकता है। हर कोई—नरम स्वभाव वाले और सख्त मजिाज वाले दोनों —चर्च में अपनी सेवा का योगदान देते हैं। मानव शरीर को वभिन्नि प्रकार के भोजन की आवश्यकता होती है —मीठा और खट्टा दोनों ; यहां तक कि डैंडेलयिन के कड़वे पत्ते भी आवश्यक हैं। आखरिकार, हर भोजन में अपने अद्वतिीय पोषक तत्व और वटिामनि होते हैं। इसी तरह, कलीसयिा के शरीर को हर स्वभाव के लोगों की आवश्यकता है। एक व्यक्ति दूसरे के चरत्रि को पूरा करता है। हम में से प्रत्येक को न केवल अपने पड़ोसी के आध्यात्मकि स्वभाव की वचित्रिताओं को सहन करने के लिए बाध्य होना चाहिए, बल्कि उन कमजोरयिों को भी जो उनमें एक इंसान के रूप में मौजूद हैं। दुर्भाग्य से , कुछ लोग दूसरों से अनुचति अपेक्षाएँ रखते हैं। वे चाहते हैं कि हर कोई उनके जैसे ही आध्यात्मकि स्वभाव का हो, और जब कोई दूसरा व्यक्ति उनसे अलग होता है —उदाहरण के लिए, अधकि सहनशील या चड़िचड़ि स्वभाव का होना—तो वे तुरंत यह नष्किर्ष नकिाल लेते हैं कि वह एक अनआध्यात्मकि व्यक्ति है।

उच्च पद और मानवीय महमिा पर

मैं हैरान हूँ कि कुछ लोग मानव महमिा को ईश्वर की महमिा से अधकि महत्व देते हैं , जो हमारे लिए तब इंतज़ार कर रही है जब हम 'मानवीय महमिा से मुंह मोड़ लें '। भले ही हम पूरी दुनयिा में सर्वोच्च पद प्राप्त कर लें , और भले ही पूरी दुनयिा हमें प्रशंसा की बौछार कर दे , इससे हमें क्या लाभ होगा? क्या संसार की प्रशंसा हमें स्वर्ग तक उठाएगी, या हमें नरक की खाई की ओर धकेल देगी ? और मसीह ने क्या कहा? 'मैं मनुष्यों से महमिा नहीं स्वीकार करता।'[228] अगर मैं एक साधारण भक्षिु होने के बजाय एक हायरोमोंक , एक बशिप या एक पैट्रआर्क बन जाता, तो मुझे इससे क्या लाभ होता? क्या एक उच्च पद मुझे बचाने में मदद करेगा ? या यह कमजोर पैसयिस पर भारी बोझ बनकर उसे नरक की यातनाओं में धकेल देगा ? यदि इस जीवन के बाद कोई जीवन नहीं होता, तो उच्च पद की पागलपन भरी दौड़ किसी तरह से सही ठहराई जा सकती थी। हालाँकि , जो अपनी आत्मा के उद्धार की खोज करता है , वह 'सभी चीजों को शून्य मानता है ' (229) और उच्च पद के लिए प्रयास नहीं करता।

मोसेस को ईश्वर द्वारा इस्राएल के लोगों को मुक्त करने के लिए भेजा गया था। फरि भी, इसके बावजूद , उन्हें प्रतज्ञिात देश में प्रवेश करने के योग्य नहीं माना गया, क्योंकि उन्होंने अपने लोगों की ओर से ईश्वर के वरिुद्ध शकिायत की थी। मोसेस उनके नरिंतर

---

227 मत्ती 18:17।

228 प्रेरतिों के काम 5:41.

229 Phil. 3:8.

शकियत और बड़बड़ाहट के बीच रहते थे , और एक दनि उन्होंने स्वयं भी शकियत की। "ये लोग," उसने कहा, "मुझसे पानी की मांग कर रहे हैं। मैं उनके लिए पानी कहाँ से लाऊँ ?"[230] ऐसा कैसे ? आखरिकार, हाल ही में आपने चट्टान पर चोट की थी, पानी नकिाला था और उन्हें पलिाया था! क्या वह इतना मुश्कलि था? लेकनि मूसा , अपने लोगों के वभिन्नि प्रशासनकि मामलों और समस्याओं में पूरी तरह से डूब जाने के कारण, यह भूल गए कि उन्होंने पहले चट्टान से कतिना पानी नकिाला था। उसे अपनी गलती का एहसास नहीं हुआ और उसने ईश्वर से क्षमा नहीं माँगी। अगर उसने क्षमा माँगी होती, तो ईश्वर उसे क्षमा कर देता। वादा कए गए देश में प्रवेश न कर पाना ईश्वर की ओर से एक मामूली दंड था, उसकी शकियतों के लिए एक प्रायश्चति। बेशक , ईश्वर ने मूसा को स्वर्ग ले जाया। उन्होंने प्रभु के रूपांतरण के समय, उन्हें भवष्यिवक्ता एलयिा के साथ, माउंट टाबोर भेजकर उनका सम्मान कयिा। पवत्रि शास्त्र की ये सभी घटनाएँ हमें यह समझने में मदद करती हैं कि एक ईसाई को स्वर्ग तक ले जाने वाले मार्ग में , उसे सौंपा गया उच्च पद—और उससे जुड़ी जम्मिेदारी —कतिनी बड़ी बाधा हो सकती है।

और कुछ लोगों को केवल आंतरकि रूप से आनंदति होना चाहए और उसे बाहरी रूप से प्रकट करना चाहए, क्योंकि ईश्वर ने ऐसा प्रबंध कयिा है कि उन पर कोई भी जम्मिेदारी नहीं है। लेकनि इसके बजाय, ऐसे लोग इसके वपिरीत, जम्मिेदारी और उच्च पद के लिए प्रयास करते हैं ; और जब उन्हें ऐसा पद नहीं दयिा जाता है , तो वे पीड़ा से ग्रस्त हो जाते हैं और अपनी आत्मा को नष्ट कर देते हैं , और साथ ही अपने शरीर को भी, जो प्रेरति पौलुस के अनुसार , परमेश्वर का मंदरि है। [231] जबकि मसीह उनके लिए स्वर्गीय महमिा तैयार कर रहे हैं , वे मानवीय महमिा के द्वारा स्वर्ग में प्रवेश करना चाहते हैं।

हालाँकि , कोई मुझसे पूछ सकता है : 'तो फरि कुछ लोगों को पहले लोगों द्वारा महमिामंडति क्यों कयिा जाता है , और केवल बाद में परमेश्वर द्वारा ?' लेकनि सार में , यदि कोई व्यक्ति मानवीय महमिा की तलाश करता है , तो परमेश्वर उन्हें महमिामंडति नहीं करेगा। एक व्यक्ति को कभी भी अपने लिए जम्मिेदारी नहीं मांगनी चाहए। और यदि जिम्मिेदारी से मुक्त कयिा जाता है , तो उन्हें प्रसन्न होना चाहए। क्योंकि [आध्यात्मकि] नयिमों के अनुसार , जो जम्मिेदारी व्यक्ति वहन करता है , वह उनके लिए बोझ होनी चाहए। यदि कोई व्यक्ति जम्मिेदारी से मुक्त होने पर प्रसन्न नहीं होता, तो इसका अर्थ है कि उसके भीतर अहंकार छपिा हुआ है। आइए हम इस तरह महमिा प्राप्त करने के लिए कभी भी उच्च पद, उपाधि या पदवी के लिए प्रयास न करें , क्योंकि ऐसी आकांक्षाएँ एक गहरी बीमारी का संकेत हैं। यह दर्शाता है कि, अपनी इस बीमारी में , हम उस वनिम्रता के मार्ग से अलग रास्ते पर चल रहे हैं जसि पर पवत्रि पति चले थे और जसिके माध्यम से उन्होंने स्वर्ग प्राप्त कयिा था।

हमारे पास कई संत हैं जन्हिोंने जम्मिेदारी के वभिन्नि रूपों से परहेज़ कयिा: मठाधीश का पद, पुरोहतित्व और बशिप का पद। उनमें से कुछ ने अपने ही हाथ काट लिए, कुछ ने अपनी नाक, कुछ ने अपने कान, और कुछ ने अपनी जीभ—ताकि उन्हें शारीरकि अक्षमता हो जाए और वे पुरोहति नयिुक्ति से बच सकें। ऐसे संत थे जनिकी झोपड़यिों की छतें पीछे से उठा दी गईं ताकि उन्हें ऊपर से ही अभषिेक कयिा जा सके ; ऐसे संत भी थे , जैसे संत एम्फलिोचयिस , जन्हिें दूर से ही अभषिेक कयिा गया। ये पुरुष शक्षिति थे ; उनमें पवत्रिता थी। लेकनि ,

---

[230] गनिती 20:10 देखें।

[231] देखें 1 कुरन्थियिों 3:16।

आत्मा की महान गरमिा और जमि्मेदारी के भारी बोझ को समझते हुए , जो कसिी व्यक्त ि की मुक्त ि में एक बड़ी बाधा बन जाता है , उन्होंने इस जमि्मेदारी से परहेज कयिा। जसि रास्ते को इन लोगों ने खोजा, उसने उन्हें आध्यात्मकि रूप से मदद की।

और पवत्रि पर्वत पर, कुछ लोग पुरोहति पद को आध्यात्मकि जीवन में एक बाधा मानते हैं। आखरिकार, अपने अन्य कर्तव्यों के अलावा, पवत्रि -भक्षिुओं को बशिप से मलिने के लिए अन्य मठों की यात्रा करनी पड़ती है ; उन्हें पर्व के दनिों में भेजा जाता है ... बेशक , ये आध्यात्मकि पर्व हैं , लेकनि वे फरि भी बहुत कम आंतरकि शांत ि प्रदान करते हैं। एक सामुदायकि मठ में रहते हुए , मैं एक हाइरोडीकन को जानता था। वह हाइरोडीकन के पद पर रहते हुए ही बूढ़ा हो गया और उसकी मृत्यु हो गई। जब वह एक युवा भक्षिु था, तब मठ में कोई डीकन नहीं था, इसलिए उसे अभषिक्ति कयिा गया। बाद में , भाइयों का एक छोटा समूह मठ में शामलि हुआ। उन्हें डीकन और पादरी के रूप में अभषिक्ति कयिा गया, जबकि वह डीकन, जसिे उनसे पहले अभषिक्ति कयिा गया था, दूसरों को रास्ता देता रहा और उसी पद पर बना रहा। जब उसे हायरोमोंक बनने के लिए कहा गया, तो उसने जवाब दयिा: "मठ को वर्तमान में ऐसी कोई आवश्यकता नहीं है। भगवान का शुक्र है , मुझसे छोटे भाई हैं। " तब उन्हें मठ के कार्यालय में एक कर्तव्य सौंपा गया। जब शक्षिति नवसखिए मठ में आए, तो उन्होंने कार्यालय के अपने कर्तव्यों से मुक्त कए जाने का अनुरोध कयिा और एक अलग कार्यभार संभाला। और जब मठ कठनि समय से गुज़र रहा था, तो उस भक्तपिूर्ण उच्च -श्रेणी के डकिन ने एक सदाचारी उच्च -श्रेणी के पुरोहति से मठाध्यक्ष चुने जाने के लिए सहमत होने का अनुरोध कयिा। "आपने खुद ज़मि्मेदारी से क्यों पलायन कयिा?" हायरोमोंक ने उससे पूछा। "क्या आपने यह बोझ मुझ पर डालने का फैसला कयिा? चलए ऐसा करते हैं : आप आध्यात्मकि परषिद के सदस्य बन जाइए, और फरि मैं मठाधीश बन जाऊँगा। " इस प्रकार एक मठाधीश बना, और दूसरा आध्यात्मकि परषिद में शामलि हो गया। लेकनि एक बार जब सब कुछ व्यवस्थति हो गया और मठ सुचारू रूप से चलने लगा, तो हमारे डकिन ने पवत्रि सनिड को भी छोड़ दयिा। यह डकिन मेरी बहुत मदद करता था। उसमें ईश्वर की बहुत कृपा थी। जब भी पवत्रि पर्वत की पवत्रि कनिोत में कठनि मुद्दों पर चर्चा होती थी, तो उसे अपनी प्रबुद्ध राय देने के लिए वहाँ आमंत्रति कयिा जाता था।

— गेरोना , तो फरि वह क्या कारण है कि आध्यात्मकि लोग, धन से प्रेम न करते हुए भी, प्रसदि्धि के लिए प्रयास करते हैं ? ऐसा लगता है कि प्राचीन यूनानयिों के शब्द सच हैं : 'कई लोगों ने धन से घृणा की है , लेकनि कसिी ने भी प्रसदि्धि से घृणा नहीं की?'[232]

— इसका कारण यह है कि उनके सरि इतने खाली हैं कि आप उनमें से एक गेंद घुमा सकते हैं। यही ठीक-ठीक खोखली, व्यर्थ महमिा है। 'कई लोग धन से नफरत करने लगे हैं ...' शब्द चीजों के सांसारकि दृष्टकिोण को दर्शाते हैं। आध्यात्मकि जीवन में इसकी कोई जगह नहीं है। ये प्राचीन यूनानयिों के शब्द हैं , जो सच्चे ईश्वर को नहीं जानते थे। आध्यात्मकि जीवन में , महमिा का गायब हो जाना चाहए। क्या कसिी मनुष्य ने कभी उस अपमान से बड़ा अपमान सहा है जो मसीह ने सहा? चर्च के आदपिति ने अपमान की खोज की, और ईश्वर ने उन्हें सम्मान से पुरस्कृत कयिा। लेकनि जो लोग अपने लिए सम्मान की खोज करते हैं , वे अभी भी सांसारकि खेल के मैदान में हैं — यानी, स्टेडयिम में। वे एक फुटबॉल मैच में जयकार करते हैं : 'स्पार्टक की महमिा!' लेकनि सुसमाचार में बताई गई महमिा में प्रेम और नम्रता है। मसीह कहते हैं , 'अपने पुत्र की महमिा करो,' 'और आपका पुत्र आपकी महमिा करेगा ... यह अनंत जीवन है , कि वे आपको, एकमात्र सच्चे परमेश्वर को जान लें। "[233] दूसरे शब्दों में , मसीह ने परमपति से प्रार्थना की कि लोग अपने उद्धारकर्ता को जान सकें और इस प्रकार उद्धार पा सकें। फरि भी आज, अधकिांश लोग जहाँ भी हो सके महमिा प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। बाईं ओर महमिा, दाईं ओर महमिा, और फरि वे एक ही समय में अपनी दाहनिी और बाईं दोनों टाँगों से लंगड़ाते हैं। यही वह है जसिके बारे में मसीह ने कहा था: "एक दूसरे से महमिा प्राप्त करना," [234] "धोखा देना और धोखा खाना।"[235] ऐसी महमिा मुझे बीमार कर देती है ; मैं ऐसे माहौल में एक भी दनि नहीं जी सकता।

---

[232] क्लेओबुलस का एक कथन – रोड्स के लंडिोस का तानाशाह – सात प्राचीन ऋषयिों में से एक (6वीं शताब्दी ईसा पूर्व)। – अनुवादक की टप्पिणी।

[233] यूहन्ना 17:1 आदि।

[234] यूहन्ना 5:44.

[235] 2 तीमुथयिुस 3:13.

दूसरों की जम्मिेदारी आध्यात्मकि जीवन में एक बड़ी बाधा है। जो लोग आध्यात्मकि अभ्यास में संलग्न होना चाहते हैं , वे जम्मिेदारी से बचते हैं। आमतौर पर, जो लोग उच्च पद और अधकिार के लएि प्रयास करते हैं , उनका अंत बुरा होता है। व्यक्तगित उद्देश्य और स्वार्थभाव धीरे -धीरे प्रवेश कर जाते हैं , और फरि नेता आपस में टकराने और झगड़ने लगते हैं। आखरिकार, इन दोनों नेताओं में स्वार्थभाव मौजूद है। हालाँकि , जो प्रेम से परश्रिम करते हैं , वे खुद पर कोई ढील नहीं देते और हर कर्म से अपना 'स्व ' हटा देते हैं ; वे दूसरों की बहुत प्रभावी ढंग से मदद करते हैं , क्योंकि केवल तभी मदद की ज़रूरतमंद आत्माओं को सांत्वना मलिती है , और केवल तभी दूसरों की मदद करने वालों की आत्माओं को इस जीवन और आने वाले जीवन दोनों में आंतरकि शांति मलिती है।

पहले के दनिों में , पवत्रि पतिा रेगस्तिान में चले जाते थे और, तपस्या के प्रयासों के माध्यम से , अपने भावों को नयिंत्रति करते थे। अपनी कोई योजना या परयिोजना बनाए बनि, उन्होंने खुद को ईश्वर के हाथों में सौंप दयिा और उच्च पद व अधकिार से दूर रहे — भले ही उन्होंने कुछ हद तक पवत्रिता प्राप्त कर ली हो। इसका अपवाद तब था जब मातृ चर्च को आवश्यकता होती थी। तब उन्होंने ईश्वर की इच्छा का पालन कयिा, और उनके पवत्रि जीवन के माध्यम से ईश्वर के नाम का गौरव बढ़ा। दूसरे शब्दों में , पहले , मरुस्थल में रहकर, पौष्टकि आध्यात्मकि भोजन से स्वयं को पोषति करके और अपने आध्यात्मकि पतिरों की सतर्क , पतिृसुलभ देखभाल में रहकर, पवत्रि पतिाओं ने दृढ़ आध्यात्मकि स्वास्थ्य प्राप्त कयिा; और केवल उसके बाद ही वे स्वयं आध्यात्मकि मार्गदर्शक बने।

चर्च का शासन कैसे होता है

ऑर्थोडॉक्स चर्च ने हमेशा अपने जीवन को परषिदों के माध्यम से संगठति कयिा है। यही ऑर्थोडॉक्स भावना है : चर्च के भीतर, पवत्रि संप्रदाय का शासन होना चाहए, जबकि मठों में , बुजुर्गों की परषिद का शासन होना चाहए। चर्च के प्रमुख और संप्रदाय को मलिकर नर्णिय लेने चाहए। कसिी मठ के मठाधीश या मठाधीशनी को मठ की आध्यात्मकि परषिद के साथ मलिकर नर्णिय लेने चाहए। चर्च के प्रायमेट समानों में प्रथम हैं। पैट्रआर्क कोई पोप नहीं हैं ; वह अन्य पदानुक्रमों के समान ही [पुजारी वर्ग में] पद रखते हैं। अब, पोप—हाँ —वह एक अलग दर्जे का व्यक्ति है। व ह एक ऊँचे सहिासन पर बैठता है , जबकि बाकी लोग उसके पैर चूमते हैं। लेकनि पैट्रआर्क पोप नहीं है ; वह अन्य धर्मगुरुओं के साथ बैठता है और उनके कार्यों का समन्वय करता है। और एक मठ का मठाधीश या मठनी, आध्यात्मकि परषिद के अन्य सदस्यों के संबंध में , भी बराबरी में पहला होता है।

स्थानीय चर्च का प्रधान या कसिी मठ का मठाधीश अपनी मनमर्जी नहीं कर सकता। ईश्वर एक बशिप या बुजुर्गों की परषिद के कसिी सदस्य को एक मामले में , और दूसरे को कसिी अन्य मामले में ज्ञान प्रदान करता है। आखरिकार, इस बात पर वचिार करें कि चारों सुसमाचार प्रचारक एक-दूसरे के पूरक हैं। पवत्रि धर्मसभा या मठ की आध्यात्मकि परषिद में जब कसिी मामले पर चर्चा होती है तो भी ऐसा ही होता है : प्रत्येक व्यक्ति अपनी राय रखता है , और यदि कसिी की राय दूसरों से भन्नि होती है , तो इसे परषिद के कार्यवृत्त में दर्ज कयिा जाता है। क्योंकि यदि कोई नर्णिय लयिा जाता है जो सुसमाचार की आज्ञाओं का खंडन करता है और कोई उस नर्णिय से असहमत है , तो, जब तक वे यह ज़दि नहीं करते कि उनकी राय परषिद के कार्यवृत्त में दर्ज की जाए, यह धारणा बनेगी कि वे गलत बात से सहमत हो गए हैं। यदि पवत्रि सनिड या एक आध्यात्मकि परषिद का कोई सदस्य कसिी गलत राय से असहमत है , लेकनि अपनी राय

को कार्यवृत्त में दर्ज कराए बिना सामान्य निर्णय पर हस्ताक्षर कर देता है , तो वह गलत कर रहा है और वह जिम्मेदार है। इस मामले में , वह दोषी है। जबकि, यदि वह अपनी राय व्यक्त करता है , भले ही बहुमत उससे असहमत हो, तो वह परमेश्वर के सामने पाप नहीं करता। यदि स्थानीय चर्च में सिनिड या मठों में आध्यात्मिक परिषद सही ढंग से कार्य नहीं करती है , तो, जबकि हम शब्दों में ऑर्थोडॉक्स भावना की बात करते हैं , व्यवहार में हमारे पास एक पोपवादी भावना है। ऑर्थोडॉक्स भावना यह है : हर किसी को अपनी राय व्यक्त और दर्ज करनी चाहिए, न कि डर या अपने सम्मान को बनाए रखने की इच्छा से चुप रहना चाहिए—ताकि चर्च के प्रमुख या किसी मठ के मठाधीश के साथ अच्छे संबंध बनाए रखे जा सकें।

लेकिन वे पुरोहित भी जो कम उम्र में ही चर्च के भीतर कुछ नेतृत्व पदों पर रहते हैं , वे स्वयं के साथ अन्याय कर रहे हैं। वे अपनी क्षमता को व्यर्थ में बर्बाद कर रहे हैं — भले ही उनमें अपने पद के लिए आवश्यक गुण मौजूद हों।

वे दमन महसूस करते हैं और प्रशासन तथा कागजी कार्रवाई की जंजाल में फँस जाते हैं , और उन्हें कोई आध्यात्मिक लाभ नहीं मिलता, भले ही उनमें इसके लिए आवश्यक पूर्वापेक्षाएँ मौजूद हों। यदि उन्होंने स्वयं को व्यर्थ में बर्बाद न किया होता, बल्कि इसके बजाय अपने आध्यात्मिक विकास पर काम करने के लिए खुद को समर्पित किया होता, तो उनमें से कुछ बाद में चर्च के लिए एक महान आध्यात्मिक संपत्ति बन जाते। अपने साथ जुड़ने में विफल रहने से —यानी, शब्द के सर्वोत्तम अर्थ में , अपने ऊपर काम करने में विफल रहने से —एक व्यक्ति उस व्यापारी की तरह हो जाता है जो खरीदने और बेचने में इतना व्यस्त रहता है , कि वह अपने कर्ज की मात्रा से अनजान रहता है। और अंत में , ऐसा व्यापारी कर्जदारों की जेल में डाल दिया जाता है।

यह सुनकर मुझे बहुत दुख होता है कि युवा पुरोहित अधिकार के पदों पर काबिज हैं। काश उन्होंने नेतृत्व का बोझ उठाने में थोड़ी और देर कर दी होती, तो बाद में दूसरों को उनका सहयोग बहुत लाभदायक होता। हालाँकि , बहुत बार ऐसा होता है कि पैरिश के पादरी अनुभवी पादरी नहीं होते , जो अपने अनुयायियों के साथ आध्यात्मिक कार्य करने में सक्षम हों , बल्कि युवा पादरी होते हैं। इससे दोहरा बुरा परिणाम निकलता है। पहला बुरा परिणाम यह है कि युवा पादरी, पहले अपने ऊपर आध्यात्मिक कार्य किए बिना, दूसरों की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले लेते हैं। अभी तक आध्यात्मिक संपदा अर्जित न कर पाने के कारण, वे एक ऐसी स्थिति में होते हैं जो उन्हें इस आध्यात्मिक संपदा को दूसरों तक पहुँचाने के लिए बाध्य करती है। दूसरी बुराई यह है कि चर्च के भीतर जिम्मेदारी के पदों पर न होने के कारण, पुरोहित वर्ग के वरिष्ठ सदस्य अपने कीमती अनुभव और दिव्य ज्ञान को दूसरों के साथ साझा नहीं कर पाते हैं।

दिव्य लिटिर्जी

— गेरोना , जब दैवीय लिटिर्जी का अनुष्ठान किया जाता है , तो क्या हमेशा संप्रदायिक उपस्थिति होने चाहिए?

— हाँ। क्योंकि दिव्य लिटिर्जी का मुख्य उद्देश्य ईसाइयों के लिए — कम से कम उन कुछ लोगों के लिए जो इसके लिए तैयार हैं — पवित्र कम्युनियन प्राप्त करना है। दिव्य लिटिर्जी की सभी प्रार्थनाएँ " " — यानी उन श्रद्धालुओं के लिए हैं जिन्हें पवित्र कम्युनियन प्राप्त करना है। इसलिए, लिटिर्जी में कम से कम एक कम्युनियन प्राप्त करने वाला उपस्थित होना चाहिए। बेशक , कभी-कभी ऐसा होता है कि दिव्य लिटिर्जी में प्रार्थना करने

वालों में से कोई भी कम्युनियन प्राप्त करने के लिए तैयार नहीं होता है। यह एक अलग मामला है , लेकिन फिर भी यह अच्छा है यदि कम से कम कोई कम्युनियन प्राप्त करे — शायद कोई छोटा बच्चा , या कोई शिशु। जब एक भी संप्रदायिक उपस्थिति नहीं होता है , तो दैवीय धर्मविधि केवल पुरोहित द्वारा पवित्र संस्कार ग्रहण करने और विश्वासियों के नामों का स्मरण करने के लिए संपन्न की जाती है। लेकिन यह नियम के बजाय अपवाद होना चाहिए।

हर दैवीय अनुष्ठान में , नए नियम की घटनाएँ पुनः जीई जाती हैं। पवित्र वेदी बेथलहम है ; पवित्र सिंहासन प्रभु का परम पवित्र सेपल्चर है ; सिंहासन के पीछे का क्रूस पवित्र गोलगोथा है। दैवीय अनुष्ठान और मसीह की उपस्थिति के माध्यम से , संपूर्ण सृष्टि पवित्र हो जाती है। दिव्य लिटर्जी संसार को धारण करती है ! ईश्वर ने हमें जो कुछ दिया है , वह कितना विस्मयकारी है ! हम इसके अयोग्य हैं। ऐसे पुरोहित हैं जो हर दिव्य लिटर्जी में इस विस्मयकारी संस्कार का अनुभव करते हैं। एक पुरोहित ने मुझे बताया कि कैसे एक बहुत ही साधारण और दयालु पुरोहित ने एक बार उनसे विश्वासपूर्वक कहा था: "मेरे लिए पवित्र उपहार ग्रहण करना बहुत कठिन है। मैं अपने 'लज्जास्पद ' आँसू रोक नहीं पाता। वे सीधे पवित्र प्याले में गिर जाते हैं , और मैं इससे बहुत दुखी हूँ। " और वह कैसे रोया! मेरे परिचित ने उससे कहा, "मसीह से प्रार्थना करो कि वे मुझे भी उन 'लज्जास्पद ' आँसुओं में से कुछ दें। "

— गेरोना , जब पुरोहित प्रवेश प्रार्थनाएँ कर रहे होते हैं तो आप स्तासिडिया (स्टेप) क्यों छोड़ देते हैं ?

— मैं स्तासिस (stasis) इसलिए छोड़ता हूँ क्योंकि , जब पुरोहित प्रार्थना कर रहे होते हैं , तो ईश्वर उन पर दिव्य अनुग्रह प्रदान करते हैं ताकि उन्हें उनकी कमजोरियों से मुक्ति मिले और उन्हें दिव्य रहस्य का अनुष्ठान करने की शक्ति मिले। साथ ही, श्रद्धालुओं को भी दिव्य अनुग्रह प्राप्त करने के लिए श्रद्धापूर्वक प्रार्थना करनी चाहिए।

ईश्वरीय अनुष्ठान प्रोस्कोमिडिया से शुरू होता है। ईश्वर कितनी दिव्य योजना से कभी-कभी चीजों को इस तरह व्यवस्थित करते हैं कि हम भी समझ सकें कि ईश्वरीय रहस्य क्या हैं और उनका अनुभव कर सकें ! जब मैं वेदी का सेवक था, तो मेरे साथ एक अद्भुत घटना घटी। एक बार, जब प्रोस्कोमिडिया का अनुष्ठान कर रहे पुरोहित ने शब्द बोले : "जैसे मेमने को वध के लिए ले जाया जाता है ,'मैंने पवित्र डिस्कोस पर मेमने को कांपते हुए सुना। और जब पुरोहित ने शब्द बोले : 'मेमना बलिदान किया जाता है , परमेश्वर का पुत्र ...,'[236] मैंने पवित्र वेदी से एक मेमने की बां -बां की आवाज़ सुनी। वह कितना भयानक था! इसीलिए मैं पुरोहितों से कहता हूँ कि प्रोस्कोमिडिया से पहले मेम्ने को बाहर निकालकर चीरना नहीं चाहिए, बल्कि केवल तब ही उसे पवित्र डिस्कोस पर इन शब्दों के साथ रखना चाहिए: 'ईश्वर का मेम्ना बलिदान हो रहा है 'और 'जैसे मेम्ना वध के लिए ले जाया जाता है। 'जब ये शब्द बोले जा रहे हों — और एक क्षण भी पहले नहीं —तभी पुरोहित को पवित्र भाला लेकर प्रॉस्फोरा को काटना चाहिए। दूसरे शब्दों में , जब 'ईश्वर का मेमना बलिदान हो रहा है ' शब्द बोले जाते हैं , तभी वेदी पर मेमने का 'वध' होना चाहिए।

जब, प्रॉस्कोमेडिया के दौरान, पुरोहित घंटी बजाते हैं [237] और आप चुपचाप नामों का स्मरण करते हैं , तो आपका हृदय हर उस आत्मा के दुख में सहभागी होना चाहिए जिसका आप स्मरण करते हैं , चाहे वे जीवित हों या दिवंगत। सभी मानव आवश्यकताओं को सामान्य रूप से और, विशेष रूप से , उस व्यक्ति की आवश्यकताओं को अपने मन में लाएँ जिसके लिए आप प्रार्थना कर रहे हैं , और पूछें : 'हे प्रभु , याद करो... मरियम, निकोलस... हे मेरे ईश्वर , आप जानते हैं कि उन्हें किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उनकी सहायता करें। " उन नामों को याद करें जो आपको कई दिव्य लिटर्जी में स्मरण के लिए दिए गए हैं — कुछ में तीन, कुछ में पाँच। शेष नामों को द्वितीयक प्राथमिकता के रूप में याद रखें। अन्यथा , इसका क्या

---

[236] ग्रीक संस्कार संबंधी पुस्तक के अनुसार। – अनुवादक की टिप्पणी।

[237] माउंट अथोस की परंपरा के अनुसार , तीसरे घंटे की प्रार्थना के बाद, प्रोस्कोमिडिया मनाने वाला पुरोहित वेदी पर रखी एक छोटी घंटी बजाता है , और सेवा बाधित हो जाती है। भिक्षु अपने स्तासिडिया से बाहर निकलते हैं और मौन रूप से जीवितों और दिवंगतों के नामों का स्मरण करते हैं। इस समय, पुरोहित 'हे प्रभु , स्मरण करो' कहते हुए कण निकालता है। फिर रुकी हुई सेवा जारी रहती है। देखें द होली माउंटेन रूल ऑफ़ चर्च ऑर्डर। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लावरा, 2002। पृ . 33। – अनुवादक की टिप्पणी।

मतलब है — आप कुछ लोगों का लगातार स्मरण करते हैं , जबकि अन्य , जिन्हें प्रार्थनापूर्ण मदद की आवश्यकता है , उनका बिल्कुल भी स्मरण नहीं किया जाता है ? मैं इस को नहीं समझता। प्रोस्कोमेडिया के दौरान कैथोलिकों , यहोवा के साक्षियों और अन्य विधर्मी लोगों के नामों का स्मरण नहीं किया जाना चाहिए। ना तो उनके लिए कोई हिस्सा निकालना चाहिए और न ही कोई स्मरणोत्सव मनाना चाहिए। हालाँकि , हम उनके स्वास्थ्य और ज्ञानोदय के लिए प्रार्थना कर सकते हैं , और यहाँ तक कि प्रार्थनापूर्ण कैनन भी गा सकते हैं।

— गेरोन्डा , कुछ पादरी कहते हैं कि वे बहुत बार लिटर्जी नहीं मनाना चाहते , ताकि वे इसकी आदत में न पड़ जाएँ।

— एक पादरी को ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिए। यह गलत है। यह ऐसा है जैसे वह कह रहा हो: 'मैं अपने रिश्तेदारों से बहुत बार नहीं मिलता, ताकि जब मैं आऊँ तो वे मेरा और गर्मजोशी से स्वागत करें। ' हालाँकि , दिव्य लिटर्जी के लिए तैयारी करनी चाहिए। पवित्र कम्युनियन उन लोगों को चंगा करती है और पवित्र करती है जो विश्वास में प्रयास करते हैं। लेकिन यह उन लोगों की मदद कैसे कर सकती है जो प्रयास नहीं करते ? यदि कोई व्यक्ति स्वयं को नहीं बदलता है तो मसीह क्या बदल सकते हैं ? एक बार, माउंट अथोस पर, परम पूज्य अथानासियस की गुफा में , एक वृद्ध दो नवोदितों के साथ रहते थे , जिनमें से एक पवित्र -भिक्षु और दूसरा पवित्र -डीकन था। एक दिन, नवोदित लिटर्जी मनाने के लिए एक छोटे से चर्च में गए। पुजारी को डीकन से बहुत ईर्ष्या थी, क्योंकि डीकन हर मामले में उससे अधिक बुद्धिमान और सक्षम था। हालाँकि , डीकन ने अपनी स्वार्थपरता से इस ईर्ष्या को और बढ़ाया। इसलिए, दिखावे के लिए, पुजारी ने दिव्य लिटर्जी का अनुष्ठान करने की तैयारी की: उसने पवित्र कम्युनियन के नियम पढ़े और आवश्यक सब कुछ किया। लेकिन , दुर्भाग्य से , वह सबसे महत्वपूर्ण काम करने में विफल रहा था — उसने आंतरिक रूप से लिटर्जी की तैयारी नहीं की थी। यानी, उसे अपने दिल से ईर्ष्या और जलन को दूर करने के लिए विनम्रता से पाप-स्वीकार करने की जरूरत थी। क्योंकि भले ही हम साफ कपड़े पहनें और अपने बाल धो लें , ये भावनाएँ हमें नहीं छोड़तीं। इस प्रकार , उस हायरोमोंक ने केवल बाहरी रूप से ही लिटर्जी के समारोह की तैयारी की थी; वह पवित्र स्थल में प्रवेश किया, जहाँ पवित्र बलि चढ़ाई जाती है , और प्रोस्कोमिडिया शुरू करने ही वाला था। लेकिन अचानक गरज की एक भयंकर गड़गड़ाहट हुई , और उसने देखा कि पवित्र डिस्कोस वेदी से उठकर गायब हो गया।[238] वे लिटर्जी का समारोह नहीं कर सके। मुझे ऐसा लगता है कि यदि परमप्रभु ने इस प्रकार हस्तक्षेप न किया होता, और पुरोहित , अयोग्य आध्यात्मिक स्थिति में होते हुए , दिव्य लिटर्जी का अनुष्ठान करने आगे बढ़ जाता, तो उस पर एक भयंकर विपत्ति आ पड़ती।

— गेरोना , यदि दिव्य लिटर्जी के दौरान कुछ अप्रत्याशित होता है , तो क्या इसे बीच में रोका जा सकता है ?

— एक बार जब दिव्य लिटर्जी शुरू हो जाती है , तो पुजारी इसे बीच में नहीं रोक सकता — चाहे कुछ भी हो जाए। भले ही युद्ध छिड़ जाए, उसे लिटर्जी पूरी करनी ही होगी। उसे लिटर्जी पूरी करनी ही होगी, भले ही दुश्मन चर्च के पास आ जाएं। ऐसे मामले में वह अधिकतम इतना कर सकता है कि इसे यथासंभव जल्दी समाप्त करने का प्रयास करे। लेकिन ईश्वर में विश्वास रखना चाहिए और डरना नहीं चाहिए।

परम ईश्वर के एक सेवक में महान सावधानी, पवित्रता और अडिग सत्यनिष्ठा होनी चाहिए।[239] पुरोहित स्वर्गदूतों से भी ऊँचे हैं। दिव्य यूखरिस्त की संस्कार -उत्सव के दौरान, पवित्र स्वर्गदूत अपना मुख ढँक लेते हैं जबकि पुरोहित इस संस्कार का अनुष्ठान करते हैं।

अध्याय 3.
छुट्टियों और गैर -कार्यदिवसों पर

आओ, हम विश्वासी , इस आध्यात्मिक उत्सव का उत्सव मनाएँ। [240]

अपने महान प्रेम और महान आनंद के माध्यम से , जो वह अपने सभी पर्वों के दौरान विश्वासियों की आत्माओं पर बरसाता है , हमें आध्यात्मिक ऊँचाइयों तक उठाकर, मसीह

---

[238] देखें एल्डर पैसियोस। द फादर्स ऑफ स्व्यातोगोर्स्क एंड स्टोरीज़ ऑफ स्व्यातोगोर्स्क। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लाव्रा , 2001। पृ . 102–104।

[239] यहाँ 'अडिग' शब्द ग्रीक शब्द 'ἀκρίβεια' का अनुवाद है (शाब्दिक रूप से : सटीकता, कठोरता)। ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्र में , अक्रिविया (akrivía) का अर्थ पवित्र कैनन (और, अधिक सामान्य रूप से , चर्च की परंपरा) के प्रति एक सख्त दृष्टिकोण के पैट्रिस्टिक सिद्धांत से है , जिसके द्वारा उनके शाब्दिक और सटीक अनुप्रयोग को आवश्यक माना जाता है। – अनुवादक की टिप्पणी।

वास्तव में हमें पुनर्जीवित करता है और हमें जीवन प्रदान करता है। बशर्ते कि हम स्वयं इन उत्सवों में भाग लें और उनमें एक आध्यात्मिक उत्सव बनने की अनुमति देने की आध्यात्मिक प्रवृत्ति रखें। तब हम आध्यात्मिक रूप से भोज करते हैं और संतों द्वारा लाई गई स्वर्गीय मदिरा से आध्यात्मिक रूप से मदहोश हो जाते हैं, जिसे वे हमें पीने के लिए देते हैं।

— गेरोना, कोई व्यक्ति किसी पर्व का आध्यात्मिक रूप से अनुभव कैसे कर सकता है?

— एक पर्व का अनुभव करने के लिए, किसी को अपना मन स्वयं पवित्र दिनों में डुबोना चाहिए, न कि उन कार्यों में जो हमें उन पवित्र दिनों के लिए करने होते हैं। किसी को प्रत्येक पवित्र दिन की घटनाओं पर मनन करना चाहिए—चाहे वह क्रिसमस हो, थिओफनी हो, ईस्टर हो या कोई अन्य पर्व हो—और ईसा की प्रार्थना का जाप करना चाहिए, ईश्वर की महिमा करते हुए। इस प्रकार, हम हर पर्व को बड़ी श्रद्धा के साथ मनाएंगे। सांसारिक लोग क्रिसमस का अर्थ रोस्ट पोर्क से, ईस्टर का अर्थ रोस्ट लैम्ब से, और श्रोवेटाइड का अर्थ कन्फेट्टी से समझने की कोशिश करते हैं। हालाँकि, सच्चे संन्यासी दैनिक रूप से दैवीय घटनाओं का अनुभव करते हैं और निरंतर आनंदित होते हैं। वे हर हफ्ते इस तरह जीते हैं जैसे कि यह पवित्र सप्ताह हो। हर बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार वे महा बुधवार, महा गुरुवार और महा शुक्रवार का अनुभव करते हैं — यानी, मसीह का दुख-संताप। और हर रविवार वे ईस्टर — मसीह के पुनरुत्थान का अनुभव करते हैं। क्या मसीह के दुख-संकट को याद करने के लिए पवित्र सप्ताह का इंतजार करना वास्तव में आवश्यक है? या, सांसारिक लोगों की तरह, हमें यह समझने के लिए कि 'मसीह जी उठे हैं' का क्या मतलब है, एक भुने हुए मेमने के साथ ईस्टर का इंतजार करना होगा? मसीह ने क्या कहा? 'तैयार रहो' (*241*), न कि 'आओ अब तैयारी शुरू करें।' जिस क्षण मसीह 'तैयार रहो' शब्द कहते हैं, हर व्यक्ति — और विशेष रूप से एक भिक्षु — को हर समय तैयार रहना चाहिए। उसे लगातार दिव्य घटनाओं का अन्वेषण और अनुभव करना चाहिए। प्रत्येक पर्व के आयोजनों का अन्वेषण करके, एक व्यक्ति स्वाभाविक रूप से होश में आएगा और श्रद्धा के साथ प्रार्थना करेगा। इसके अलावा, हमारा मन मनाए जा रहे आयोजनों में डूबा होना चाहिए, और हमें श्रद्धा के साथ गाए जा रहे स्टिचेरा और ट्रोपारिया का अनुसरण करना चाहिए। जब किसी व्यक्ति का मन दिव्य अर्थों पर टिका रहता है, तो वे पवित्र आयोजनों का अनुभव करते हैं और इस प्रकार परिवर्तित हो जाते हैं। यदि, इस अवस्था में, हम उदाहरण के लिए किसी विशेष संत पर मनन करते हैं — जिनका हम विशेष रूप से सम्मान करते हैं या जिनकी स्मृति हम मना रहे हैं — तो हमारा मन थोड़ा और आगे बढ़ता है: यह स्वर्ग तक पहुँच जाता है। जब हम संतों के बारे में सोचते हैं, तो संत भी हमारे बारे में सोचते हैं और हमारी मदद करते हैं। इस प्रकार, एक व्यक्ति संतों के साथ दोस्ती बनाता है, और ऐसी दोस्ती किसी भी अन्य से अधिक विश्वसनीय होती है। फिर, अकेले रहते हुए, एक व्यक्ति एक ही समय में सभी के साथ रह सकता है — संतों के साथ, स्वर्गदूतों के साथ, और पूरी दुनिया के साथ। अकेला होना — और फिर भी इस सभी मैत्रीपूर्ण मेलजोल का मूर्त रूप में अनुभव करना! संतों की उपस्थिति जीवंत है। सभी संत ईश्वर की संतान हैं, और हम ईश्वर के दीन-हीन बच्चे हैं, और वे हमारी मदद करते हैं।

---

[240] सबसे पवित्र थियोटोकोस की प्रस्तुति (21 नवंबर) के लिए दूसरे कैनन की छठी ओड देखें।

[241] मत्ती 24:44 देखें।

इस सहायता को प्राप्त करने के लिए, हमें हमेशा उन संतों का श्रद्धापूर्वक स्मरण करना चाहिए जिन्होंने मसीह के प्रेम के लिए अपना रक्त , पसीना या आँसू बहाए। और हमें सिनाक्सारियन से पाठ सुनना चाहिए: "आज के दिन हम संत ... का स्मरण करते हैं ..." — हमें खड़े हो जाना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे सैनिक तब सलामी मुद्रा में खड़े हो जाते हैं जब उनके वीरतापूर्वक शहीद हुए साथियों के नाम पढ़े जाते हैं : "महीने के अमुक दिन, अमुक सैनिक ने अमुक मोर्चे पर बहादुरी से प्राण गंवाए। "

इस उत्सव के अवसर का सच्चा अनुभव करने के लिए, किसी को पर्व के दिन काम नहीं करना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति गुड फ्राइडे पर कुछ महसूस करना और उसका अनुभव करना चाहता है , तो उस दिन उसे केवल प्रार्थना में ही व्यस्त रहना चाहिए। धर्मनिरपेक्ष दुनिया में , दुर्भाग्यशाली सांसारिक लोग पवित्र सप्ताह के दौरान काम और घरेलू कार्यों में व्यस्त रहते हैं , और गुड फ्राइडे पर वे एक-दूसरे पर ईस्टर की शुभकामनाओं की बौछार करने लगते हैं : 'बहुत -बहुत शुभकामनाएँ !', 'स्वस्थ रहें !', 'भगवान आपको एक दुल्हन भेजें !...' यह सही नहीं है ! गुड फ्राइडे पर, मैं खुद को अपनी कोठरी में बंद कर लेता हूँ। स्वर्गदूतों की शैली में मुंडन कराने के बाद, एक नव-मुंडित भिक्षु को एक सप्ताह तक मौन में रहना चाहिए। ये मौन दिन उसकी बहुत मदद करते हैं , क्योंकि दिव्य अनुग्रह उसकी आत्मा को पोषण देता है , और भिक्षु यह समझ पाता है कि उसके साथ क्या हुआ है। उत्सव के दिनों में मौन भी बहुत लाभदायक होता है। उत्सव के दिनों में , हमें थोड़ा आराम करने , श्रद्धांजलि अर्पित करने और प्रार्थना करने का अनुकूल अवसर मिलता है। इस प्रकार , हमारे मन में एक अच्छा विचार आ सकता है ; हम अपने भीतर गहराई से झाँक सकते हैं ; हम यीशु की प्रार्थना के लिए कुछ समय समर्पित कर सकते हैं ; और इन सबके माध्यम से , हम मनाए जा रहे पर्व के दिव्य महत्व का कुछ ठोस अनुभव करेंगे।

"धर्मी के लिए थोड़ा भी उत्तम है ..."

दुर्भाग्य से , आज हम अपनी स्वतंत्रता का उपयोग भलाई के लिए, पवित्रता की खोज के लिए नहीं , बल्कि सांसारिक व्यर्थता के लिए करते हैं। पहले के दिनों में , पूरा सप्ताह कामकाजी सप्ताह होता था, और रविवार आराम का दिन होता था। अब शनिवार को भी आराम का दिन बना दिया गया है। हालाँकि , क्या लोग अब अधिक आध्यात्मिक रूप से जीते हैं , या वे अधिक पाप करते हैं ? यदि लोग अपना समय आध्यात्मिक कार्यों के लिए उपयोग करते , तो सब कुछ अलग होता—वे अधिक केंद्रित होते। लेकिन हम, दुर्भाग्यपूर्ण लोग, आध्यात्मिकता का एक हिस्सा चुराना चाहते हैं , मसीह का एक हिस्सा हड़पना चाहते हैं। यदि सामान्य लोगों को एक अतिरिक्त दिन काम करने की आवश्यकता होती है , तो वे आपस में रविवार को ऐसा करने के लिए सहमत हो जाते हैं। वे 'रविवार के कार्यदिवस ' के लिए एक खाली रविवार, या 'शनिवार के कार्यदिवस ' के लिए किसी सार्वजनिक अवकाश की तलाश करते हैं , और फिर उन पर ईश्वर का प्रकोप पड़ता है। तो फिर, संत उनकी मदद कैसे कर सकते हैं ? क्या रविवार या कोई पर्व का दिन काम के लिए होता है ? और अगर सांसारिक लोग किसी भी तरह से हम भिक्षुओं की मदद करना चाहते हैं , तो वे रविवार को काम करके नहीं , बल्कि किसी अन्य प्रकार की सहायता करके करें।

हम ईश्वर को हमारा मार्गदर्शन करने की अनुमति नहीं देते। और जो कुछ भी ईश्वर में विश्वास के बिना किया जाता है , उसका ईश्वर से कोई संबंध नहीं होता। इसलिए, हमारे काम में ईश्वर का आशीर्वाद नहीं होता, और परिणामस्वरूप , उसका अच्छा परिणाम नहीं निकलता। और फिर हम कहते हैं : 'यह शैतान की गलती है। ' यह शैतान की गलती नहीं है ; बल्कि , हम स्वयं ईश्वर को

हमारी मदद करने की अनुमति नहीं देते। चर्च के नियमों के अनुसार जिन दिनों हमें काम नहीं करना चाहिए, उन दिनों काम करके हम शैतान को अपने ऊपर शक्ति दे देते हैं , और वह शुरू से ही हमारे काम में बाधा डालता है। भजन संहिता कहती है , 'धर्मियों के लिए थोड़ा सा भी बहुत से पापियों की संपत्ति से बेहतर है ,'[242] । यही आशीर्वाद लाता है ; बाकी सब तुच्छ और बकवास है। हालाँकि , मनुष्य में विश्वास , प्रेम और श्रद्धा होनी चाहिए; उसे सब कुछ आत्मविश्वास के साथ ईश्वर पर सौंप देना चाहिए। अन्यथा , त्योहारों के दिनों में भी आप आधे मन से काम करेंगे , और अन्य दिनों में अपना समय व्यर्थ में बर्बाद करेंगे।

और देखो – ईश्वर कभी भी उन लोगों को नहीं छोड़ता जो उससे वफादार रहते हैं। मैंने कभी रविवार या सार्वजनिक छुट्टियों पर काम नहीं किया, और ईश्वर ने मुझे कभी नहीं छोड़ा ; उसने मेरे श्रम को आशीर्वाद दिया। मुझे एक बार याद है जब गेहूं की कटाई के लिए हमारे गाँव में कंबाइन हार्वेस्टर आए थे। उन्होंने मेरे पिताजी से कहा कि वे हमारे खेत से शुरुआत करेंगे और फिर आगे बढ़ेंगे। वह रविवार का दिन था। 'अब हम क्या करेंगे ?' मेरे पिताजी ने मुझसे पूछा। 'कंबाइन हार्वेस्टर आ गए हैं। ' 'मैं ,' मैंने कहा, 'रविवार को काम नहीं करूँगा। हम सोमवार तक इंतजार करेंगे। ' 'लेकिन अगर हम यह मौका गँवा देते हैं ,' मेरे पिता ने मुझसे फिर कहा, 'तो बाद में घोड़ों से फसल काटने में हमें बहुत मुश्किल होगी।' 'कोई बात नहीं ,' मैंने कहा, 'अगर जरूरत पड़ी तो मैं क्रिसमस के दिन तक काटता रहूँगा। ' मैं चर्च गया जैसे कि कंबाइन हार्वेस्टर आए ही न हों। लेकिन वे फसल काटने के लिए निकल पड़े। खैर , वे तो रास्ते में ही खराब हो गए! फिर कंबाइन ऑपरेटर मेरे पिताजी के पास वापस गए और कहा: 'माफ़ कीजिए, हमारी कंबाइन खराब हो गई है। हम अब मरम्मत के लिए यानिना जा रहे हैं , और जैसे ही हम सोमवार को वापस आएँगे , हम तुरंत आपके यहाँ से काम शुरू कर देंगे। ' और इस तरह उन्होंने कटाई को रविवार से सोमवार तक के लिए टाल दिया। मैंने अपनी आँखों से ऐसे कई उदाहरण देखे हैं। अगर हम भिक्षु त्योहारों के दिनों को जैसा होना चाहिए वैसा नहीं मानते , तो सामान्य लोगों के लिए क्या बचता है ?

मठों में कितनी भावना हुआ करती थी! मुझे याद है कि कैसे , धर्मनिरपेक्ष दुनिया में , लोग नए कैलेंडर के अनुसार पवित्र क्रॉस के उत्थान का पर्व मनाने के बाद, अंगूर पवित्र पर्वत पर लाते थे। हालाँकि , उनकी नावें कभी-कभी अथोस के तट पर ठीक उसी दिन पहुँच जाती थीं जिस दिन हम पुराने कैलेंडर के अनुसार उत्थान का पर्व मना रहे होते थे। यदि ऐसा होता, तो भिक्षु त्योहार के दिन अंगूर उतारने कभी नहीं जाते थे। वे उन्हें वापस भेज देते या अंगूर से लदे बार्ज को घाट पर ही छोड़ देते। यदि त्योहार के दिन तेल या लकड़ी पहुँचाई जाती, तो भी यही होता। और फिर भी मठ गरीब थे। लेकिन पवित्र पर्वत के भिक्षुओं ने इस प्रकार तर्क दिया: "एक गृहस्थ क्या कहेगा अगर वह पर्व के दिन भिक्षुओं को काम करते हुए देखे ?" भिक्षुओं के लिए, यह पर्व के दिन अंगूर उतारने से बेहतर था कि एक नाव रात भर में तूफान में नष्ट हो जाए, जिससे अंगूर और लकड़ी दोनों नष्ट हो जाएँ , क्योंकि ऐसा करने से वे पर्व का त्याग करते और साथ ही लोगों की आत्माओं को प्रलोभित करते।

और अब... किसी विशेष पर्व की पूर्व संध्या पर, मैं खुद को एक विशेष मठ में पाया। भिक्षु अंगूर उतार रहे थे। बाद में , उन्होंने उन्हें कुचलने के लिए पूरे समुदाय को इकट्ठा किया। उस शाम एक जागरण होना था, लेकिन उसे अगले दिन तक के लिए टाल दिया गया! और फिर भी वह एक बड़ा पर्व का दिन था! वे कहते हैं , 'ज़रूरत के समय, तो कानून को भी अलग रखा जा

---

[242] भजन संहिता 36:16।

सकता है ...' एक दूसरे मठ में , आग लगने के बाद, जलकर राख हुई इमारतों का नरि्माण रविवार को कयिा जा रहा था। खैर , जो होगा देखा जाएगा—वे फरि से जल जाएँगी। और फरि भी गृहस्थ लोग यह देखकर कहते हैं : 'ये सभी पर्व के दनि कम महत्व के हैं। ' हमें पर्व के दनिों में काम न करने के लिए बहुत सावधान रहना चाहिए। यह वशिेष रूप से हम भकि्षुओं पर लागू होता है , क्योंकि पर्व के दनिों में काम करके , हम न केवल स्वयं पाप करते हैं , बल्कि गृहस्थ लोगों के लिए प्रलोभन भी बन जाते हैं। ऐसा करके , हम दोहरा पाप करते हैं। साधारण लोग अपने पापों को सही ठहराने के लिए बहाने ढूंढते हैं। वे स्वयं दनि-रात काम कर सकते हैं , और पर्व के दनिों की परवाह नहीं करते। लेकनि फरि वे कसिी नन या भकि्षु को कसिी बड़ी आवश्यकता के कारण पर्व के दनि काम करते हुए देखते हैं। उसके बाद, शैतान उनसे कहता है : 'देखो , वहाँ तो पुरोहति भी काम कर रहे हैं ! तो आप हाथ पर हाथ धरे क्यों बैठे हैं ?" जब वे रविवार को कसिी नन को कंबल झाड़ते हुए देखते हैं , तो गृहस्थ कहेंगे : 'अगर नन काम कर रही हैं , तो हम भी काम पर क्यों नहीं जा सकते ?' इसीलिए हमें बहुत सावधान रहना चाहिए कि हम दूसरों के लिए ठोकर का कारण न बनें।

— गेरोन्डा , मान लीजिए कि एक पर्व के दनि, उदाहरण के लिए, सबसे पवत्रि थिओटोकोस के मंदरि में प्रवेश के दनि, कोई कारीगर कुछ काम करने के लिए मठ में आ जाए तो क्या होगा?

— सर्वपवत्रि थिओटोकोस की प्रस्तुति का पर्व , और कोई कारीगर मठ में काम करने जा रहा है ?! यह अनुचति है ! उसे काम न करने दें।

— जेरोंडा , यह इसलिए हुआ क्योंकि काम की देखरेख करने वाली बहन ने उसे न आने के लिए कहने का सोचा ही नहीं।

— तो उस बहन पर एक कैननकिल दंड लगाया जाना चाहिए।

— गेरोन्डा , अगर पर्व के दनि, पूरी रात की जाग-पालन के बाद, आँखें थकान से भारी हो रही हों , तो यीशु की प्रार्थना का जाप करते हुए सलिाई करना उचति है ?

— नश्चिति रूप से झुक तो नहीं सकते ? नींद को दूर भगाने के लिए, सुई का काम करने की तुलना में झुकना बेहतर है। [243]

— और वह भी रविवार को? अगर मठ का नयिम पढ़ा जा चुका है , तो क्या फरि भी, उदाहरण के लिए, माला बुनना मना है ?

— उन्हें क्यों बुनना ? उस दनि आप आध्यात्मकि रूप से अपना पोषण क्यों नहीं करते ? दुर्भाग्य से , मठों में भी एक तरह की सांसारकि भावना प्रवेश कर रही है। मुझे पता चला है कि कुछ मठों में , रविवार और प्रमुख पर्वों के दनिों में , दोपहर के ठीक बाद भकि्षु अपने कर्तव्यों का पालन करने चले जाते हैं। ऐसा लगता है मानो उनके बच्चे भूख से मर रहे हों और मठ की नीलामी हो रही हो! इतनी ज़रूरत क्या है !.. अर्खोंडारचिनी , रसोइया — यह एक अलग मामला है। अर्खोंडारचिनी में ,[244] रसोई में , रविवार और पर्व के दनिों में कसिी को अपने कर्तव्य नभिाने ही होते हैं। इन क्षेत्रों को बनिा कर्मचारयिों के नहीं छोड़ा जा सकता।

कभी-कभी, जब मछली मेरी कालीवा में लाई जाती है , तो मैं उसे लाने वाले से कहता हूँ : 'इसे वापस ले जाओ और चले जाओ।' अगर लोग मुझे मछली लाना शुरू कर दें —कुछ जीवति, कुछ मृत —तो इसका क्या नतीजा होगा?

और अगर मछली यहाँ मठ में भोज के लिए लाई जाती है और आपको उसे तैयार करने की झंझट करनी पड़ती है , तो आपको भोज से क्या आनंद मलिेगा ? क्या आपको सेंट ऐन के स्कैट के फादर मीना याद हैं ? एक रविवार की सुबह , एक मछुआरा अपने कालीवा के संरक्षक उत्सव के लिए मछली लाया और कहा: 'यहाँ कुछ ताज़ी मछली है , गेरोना। ' 'एक क्षण रुकिए ,' वृद्ध ने आश्चर्य से कहा, 'लेकनि आज रविवार है ! आपने इसे कब पकड़ा , जो इतना ताज़ा है ?' 'आज सुबह ,' मछुआरे ने उत्तर दयिा। 'इसे फेंक दो!' फादर मीना ने सलाह दी। 'यह एक बहषि्कृत मछली है ! अगर आप खुद देखना चाहते हैं , तो छोटी मछलयिों में से एक बलि्ली को फेंक दें। आप देखेंगे कि वह उसे नहीं खाएगी।" और वास्तव में , जब मछुआरे ने एक मछली बलि्ली को फेंकी , तो बलि्ली उससे घृणा करके मुंह मोड़ गई! हमारे पूर्वजों की संवेदनशीलता ऐसी थी!

लेकनि आजकल, मठों में प्रमुख पर्वों के दनिों में , आप मजदूरों और कारीगरों को देखते हैं ... एक बार, डोर्मशिन के पर्व पर, मठ के पास मजदूरों की एक पूरी टीम चेनसॉ से पेड़ काट रही थी। पहले आसमान में एक भी बादल नहीं था, लेकनि अचानक एक बादल आ गया, आंधी -तूफान आ गया, और लकड़हारों के ठीक बगल में बजिली चमकने लगी। बजिली से जंगल में आग लग गई, और मजदूर इतनी दहशत में वहां से भाग गए कि उन्होंने कसिी को इस बारे में बताया भी नहीं। आग इतनी भयंकर रूप ले चुकी थी कि दमकलकर्मी भी उसे बुझाने से डर रहे थे। खैर , आप क्या सोचेंगे : अगले रविवार

---

[243] माउंट अथोस की परंपरा के अनुसार , केवल रविवार और ब्राइट वीक के दौरान सेल में मठवासी नयिम से प्रणाम छोड़े जाते हैं। अन्य सभी पर्वों के दनिों में , बारह महान पर्वों सहति, सेल में प्रणाम कयिा जाता है। – अनुवादक की टप्पिणी।

[244] आर्कोन्डारकिी – यूनानी मठों में मेहमानों के लिए स्वागत क्षेत्र। – अनुवादक की टप्पिणी।

को, जंगल में एक बार फरि से चेनसॉ की कटकट और घुरघुराहट की आवाज़ें सुनाई देने लगीं ! इस बार, लकड़हारे की दो टीमें पेड़ काटने आई थीं। लेकनि चूँकि हम रविवार और सार्वजनकि छुट्टियों पर पेड़ काट रहे हैं , इसलिए ये आग भी ईश्वर का प्रकोप है। और समस्या यह है कि हमें इसका एहसास नहीं होता। हम पहले ही ईश्वर की सहनशीलता की सीमाओं को पार कर चुके हैं।

अगर ज़रूरत पड़ती है , तो भिक्षु माला जपते हैं —सौ गांठों वाली—और ईश्वर किसी को ज्ञान प्रदान करते हैं , जो फिर भिक्षुओं को एक लाख ड्रैक्मा भेजता है। एक भिक्षु का ध्येय प्रार्थना है। अगर हम भिक्षु भी ईश्वर में विश्वास नहीं करेंगे तो और कौन करेगा ? साधारण लोग? यदि कोई भिक्षु अपना जीवन ईश्वर को सौंप देता है , तो ईश्वर को उसकी सुननी ही पड़ती है। उस सामुदायिक मठ में जहाँ मैं अपने भिक्षु जीवन की शुरुआत में रहता था, मठाध्यक्ष के पास एक सेल सहायक था। उसके कर्तव्यों में मठवासियों की बैठकों के लिए हॉल तैयार करना शामिल था। जब वह बीमार होता या किसी अन्य काम में व्यस्त होता, तो यह कर्तव्य मुझे सौंप दिया जाता था। सेल सहायक कोई विशेष तेज -तर्रार व्यक्ति नहीं था; इसके अलावा, वह दिव्य प्रार्थना सभा में हमेशा अंत तक खड़ा रहता था, फिर भी वह अपना सारा काम कर लेता था। मैं उससे अधिक फुर्तीला था। भाइयों के आने से पहले हॉल तैयार करने के लिए, मैं दिव्य प्रार्थना सभा से जल्दी निकल जाता था, लेकिन मेरे लिए सब कुछ गड़बड़ हो जाता था। एक पल में कॉफ़ी का बर्तन पलट जाता और कॉफ़ी बिखर जाती, अगले ही पल कप गिर जाते , फिर पानी के गिलास मेरे हाथों से छूट जाते ... सब कुछ पूरी तरह से अस्त -व्यस्त हो जाता था! जहाँ तक सेल सहायक का सवाल है , वह दिव्य लिटर्जी के अंत तक चर्च में रहता, फिर वह खुद पर क्रॉस का निशान बनाता और विश्वास करता कि ईश्वर उसकी मदद करेंगे। और यदि उसे [समय पर अपना कर्तव्य निभाने न जाने के लिए] डाँटा जाता, तो वह उसे विनम्रता से स्वीकार कर लेता। इस भिक्षु में विनम्रता थी, और इससे उसे दोहरा लाभ हुआ।

खैर , जो भी हो, बिना किसी हानि के छोड़ी जा सकने वाली तुच्छ बातों से न चिपककर, लोग बहुत लाभ प्राप्त करते हैं और मनाए जा रहे संतों की विशेष प्रशंसा करते हैं। आइए हम यथासंभव सावधान रहें कि हम जो कुछ भी करें , वह हमारे आध्यात्मिक जीवन के हानि के लिए न हो। ताकि हमारे सभी कार्य पवित्र हो जाएँ , और ताकि हमें ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त हो—आध्यात्मिकता को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। आइए हम प्राथमिक ध्यान भौतिक मामलों पर नहीं , बल्कि आध्यात्मिक जीवन पर दें। यदि एक भिक्षु के कार्य और चिंताएँ प्राथमिकता लेती हैं , जबकि प्रार्थना केवल दूसरे स्थान पर आती है , तो उसके लिए कार्य का मूल्य आध्यात्मिक जीवन से अधिक हो जाता है। और इसमें अहंकार और अनादर है। एक ऐसा कार्य जो किया तो जाता है , लेकिन करने से वह उसे करने वाले को आध्यात्मिक रूप से तबाह कर देता है , वह पवित्र नहीं होता। यदि हम आध्यात्मिकता पर प्राथमिक ध्यान देंगे , तो ईश्वर सब कुछ व्यवस्थित कर देंगे। यदि हम भिक्षु उत्सव के दिनों को जैसा होना चाहिए वैसा नहीं मानते , तो गृहस्थों के लिए क्या बचेगा ? यदि हम अपने आध्यात्मिक कर्तव्यों को पूरा नहीं करते , संतों से मदद नहीं मांगते , तो फिर उनसे मदद कौन मांगेगा ? इसलिए, हम होंठों से तो कहते हैं कि हम ईश्वर में विश्वास रखते हैं , लेकिन वास्तव में हमें उन पर कोई भरोसा नहीं है। यदि हम, अपने वस्त्रों में लिपटे भिक्षु , पवित्र संहिताओं का भी सम्मान नहीं करते , बल्कि हर चीज़ को रौंदते और अपमानित करते हैं , तो हमारे जीवन का क्या अर्थ है ?

लोग रविवार और पर्व के दिनों में काम करते हैं , और उन पर विपत्तियाँ बरसती हैं

नियमों के अनुसार , पर्व के दिन या रविवार को संध्या -प्रार्थना से पहले सभी काम बंद हो जाते हैं। यदि संभव हो तो, पिछले दिन थोड़ी देर और काम करना बेहतर है ताकि उत्सव की संध्या -प्रार्थना के दौरान और बाद में काम न करना पड़े। यदि, बहुत ज़रूरत के कारण, कोई रविवार या पर्व के दिन ही शाम के करीब कोई साधारण काम करता है , तो वह एक अलग मामला है। लेकिन इस तरह के हल्के काम को भी उचित विचार के साथ किया जाना चाहिए। बीते दिनों में , खेतों में काम करने वाले किसान भी, वेस्पर्स (संध्या प्रार्थना) के लिए घंटियों की आवाज़ सुनकर , खुद पर क्रॉस का निशान बनाते और काम करना बंद कर देते थे। पड़ोस में अपने घरों के पास सिलाई-कढ़ाई के काम में लगी महिलाएं भी ऐसा ही करती थीं। वे अपनी बेंचों से उठ जाते , क्रॉस का चिह्न बनाते , और अपना बुनाई या अन्य काम अलग रख देते। और ईश्वर ने उन्हें आशीर्वाद दिया। वे स्वस्थ थे और जीवन का आनंद लेते थे। लेकिन अब लोगों ने छुट्टियों को समाप्त कर दिया है , ईश्वर और चर्च से मुंह मोड़ लिया है , फिर भी अंततः वे अपनी कमाई का सारा पैसा डॉक्टरों और अस्पतालों पर उड़ा देते हैं। एक बार, एक पिता मेरे कलिवि में आए और कहा: 'मेरा बच्चा अक्सर बीमार रहता है , और डॉक्टर भी पता नहीं लगा पा रहे हैं कि उसे

क्या हुआ है। ' 'रविवार को काम करना बंद कर दो, और सब कुछ अपने आप ठीक हो जाएगा,' मैंने जवाब दिया। और सचमुच , उसने मेरी बात मानी, और उसका नन्हा बच्चा फिर कभी बीमार नहीं हुआ।

मैं हमेशा आम लोगों को सलाह देता हूँ कि वे रविवार और सार्वजनिक छुट्टियों पर काम करना बंद कर दें ताकि उन पर कोई विपत्ति न आए। कोई भी अपना काम व्यवस्थित कर सकता है। यह सब आध्यात्मिक संवेदनशीलता पर निर्भर करता है। यदि आप में यह संवेदनशीलता है , तो किसी भी स्थिति में एक रास्ता निकाला जा सकता है। और यदि इस समाधान में कुछ मामूली हानि शामिल है , तो इन लोगों को जो आशीर्वाद मिलेगा वह और भी बड़ा होगा। हालाँकि , कई लोग इसे नहीं समझते हैं और रविवार तथा सार्वजनिक छुट्टियों पर दिव्य प्रार्थना सभा में भी शामिल नहीं होते हैं। दिव्य लिटर्जी एक व्यक्ति को पवित्र करती है। यदि कोई ईसाई रविवार को चर्च नहीं जाता है , तो वह पवित्र कैसे होगा?

लेकिन , दुर्भाग्य से , लोग धीरे -धीरे एक ऐसी स्थिति की ओर बढ़ रहे हैं जहाँ न तो पर्व के दिन बचेंगे और न ही परंपरा। आप देख सकते हैं कि कैसे : लोगों को संतों को भूलने के लिए, वे ईसाई नाम भी बदल रहे हैं। वासिलिका को वकि। में बदल दिया जाता है। ज़ो को ज़ोज़ में बदल दिया जाता है , और परिणाम सिर्फ एक जानवर नहीं , बल्कि दो हैं !245 उन्होंने मदर्स डे , 1 मई, 1 अप्रैल ... का आविष्कार किया है। जल्द ही वे कहेंगे : 'आज आर्टिचोक दिवस है , कल सायप्रस दिवस है , परसों परमाणु बम के आविष्कारक या फुटबॉल के आविष्कारक की स्मृति दिवस है ...' लेकिन , चाहे जो हो जाए, ईश्वर हमें नहीं छोड़ता।

अध्याय 4.
ऑर्थोडॉक्स परंपरा पर

"यीशु मसीह कल, आज और हमेशा एक ही हैं "246

— जेरोंडा , अक्सर चर्च के नवीनीकरण की बात सुनी जाती है। मानो चर्च भी बूढ़ी हो रही हो और उसे भी नवीनीकरण की ज़रूरत हो!

— बूढ़ी हो गई? ऐसा कतई नहीं ! जो लोग धर्मपरायण तो नहीं हैं , लेकिन जिनके सिर में थोड़ी सी भी समझ है , वे भी नई, आधुनिक बनावटों से संतुष्ट नहीं होते , बल्कि प्राचीनता की तलाश करते हैं। उदाहरण के लिए, नए रंगी हुए आइकन ऐसे लोगों को ठंडा छोड़ देते हैं — वे एक प्राचीन आइकन की गरिमा को समझते हैं। अगर केवल समझदार लोग भी इस तरह का व्यवहार करते हैं , तो उन लोगों के बारे में क्या कहा जा सकता है जिनके पास सच्ची भक्ति है ! यह तुलना स्पष्ट कर देती है कि चर्च के नवीनीकरण और इस तरह के मामलों की सारी बातें वास्तव में कितनी भ्रामक हैं।

अगर आजकल कोई व्यक्ति किसी तरह से परंपरा को बनाए रखने की कोशिश करता है — जैसे कि उपवास करना, पर्व के दिनों में काम न करना, और धार्मिक रहना — तो कुछ लोग कहते हैं : "क्या वह चाँद से उतर आया है या कुछ ? आखिरकार, ये सब तो अतीत की चीज़ें हैं ! अब ये पुरानी हो चुकी हैं !" और अगर आप उन्हें समझाने की कोशिश करें , तो जवाब में आपको सुनने को मिलेगा : "आपको क्या लगता है , आप किस युग में जी रहे हैं ? यह सब अतीत की बातें हैं !" धीरे -धीरे , चर्च की परंपरा को परी कथाओं की तरह खारिज किया जा रहा है। फिर भी, पवित्र शास्त्र क्या कहता है ? 'यीशु मसीह कल, आज और हमेशा एक ही हैं। ' यदि कोई व्यक्ति परंपरा का पालन नहीं कर सकता, तो कम से कम उसे यह कहना चाहिए: 'हे मेरे प्रभु , मैंने पाप किया है !' तब परमेश्वर उस व्यक्ति पर दया करेगा। लेकिन आज, अपनी कोई कमजोरी होने के कारण, लोग अपने पड़ोसी को भी उसमें शामिल होने के लिए मजबूर करना चाहते हैं , क्योंकि यदि उनके पड़ोसी में यह

---

245 एल्डर ने नव-निर्मित नाम Zωζώ (जो Zωή – 'जीवन' – का बिगड़ा हुआ रूप है और रूसी नाम ज़ोया के अनुरूप है) और शब्द 'ζωο' – 'जानवर' के बीच समान ध्वनि का शब्द -खेल किया है। – अनुवादक की टिप्पणी।

246 इब्रानियों 13:8।

कमजोरी नहीं है , तो वह पापी को उजागर कर देता है। एक दानव-ग्रस्त व्यक्ति को लें और उसे एक आध्यात्मिक वातावरण में रखें। आप देखेंगे —वह इस तरह बेचैन हो जाएगा जैसे सुई - सीख पर बैठा हो, और स्थिर नहीं हो पाएगा। यह सब इसलिए क्योंकि आध्यात्मिक वातावरण उसे बेचैन कर देगा। इसी तरह, पाप में जीने वाले लोग—दूसरों का धार्मिक जीवन उन्हें उजागर कर देता है और उन्हें बेचैन कर देता है। वे अपनी अंतरात्मा को दबाने की कोशिश करते हैं और इसलिए 'अतीत की चीज़ों ' के बारे में ये सारी झूठी बातें फैलाते हैं। वे [शाश्वत] मूल्यों को भी अप्रचलित घोषित कर देते हैं और उनकी जगह पर विलासिता लाना चाहते हैं। दुनिया में एक बड़ा भ्रष्टाचार हो रहा है ! आत्मिक सुंदरता को कुरूपता माना जाता है। अर्थात् , इस संसार के लोगों के लिए, आत्मिक सुंदरता सांसारिक मानकों के अनुसार , अप्रिय प्रतीत होती है। लेकिन किसी भी संन्यासी को ले लो और उसके बाल छोटे काट दो! वह कितना अप्रिय हो जाएगा! फिर भी इस संसार के लोग इस अप्रियता को सुंदरता समझ बैठते हैं।

और देखो : अभी वे चर्च के खिलाफ लड़ रहे हैं , उसे नष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं। ठीक है , मान लीजिए कि ये लोग विश्वास नहीं करते। मान लीजिए कि वे दूसरों को नास्तिक बनने की शिक्षा देते हैं। लेकिन वे उस भलाई को कैसे नहीं पहचान सकते जो चर्च लोगों को देता है ; वे इसके खिलाफ जाने की हिम्मत कैसे करते हैं ? इसमें बहुत द्वेष है। उदाहरण के लिए, वे यह कैसे नहीं पहचान सकते कि चर्च बच्चों की देखभाल करता है , कि वह उन्हें गुंडा बनने के बजाय अच्छे इंसान बनने में मदद करता है ? फिर भी वे बच्चों को बुराई की ओर धकेलते हैं ; वे उन लोगों को खुली छूट देते हैं जो बच्चों को भ्रष्ट करते हैं। लेकिन चर्च युवाओं को क्या सिखाता है ? एक समझदार बच्चा बनना, दूसरों का सम्मान करना, अपनी पवित्रता बनाए रखना, ताकि समाज में एक सच्चे इंसान के रूप में प्रवेश किया जा सके। लेकिन [चर्च के विनाशकों के प्रयासों के बावजूद] सब कुछ अपनी जगह वापस आ जाएगा। रूस में , नास्तिक शासन के तहत भी, एक बुजुर्ग महिला चर्च में आई, एक स्तंभ के पीछे घुटने टेककर प्रार्थना करने लगी। उसी समय, एक और महिला—एक युवा महिला—चर्च में थी। अपनी कम उम्र के बावजूद , वह पहले से ही एक प्रमुख विद्वान थी। घुटनों के बल प्रार्थना कर रही वृद्ध महिला को देखकर , उस युवा महिला ने कहा, 'ये सब बीते जमाने की बातें हैं। ' तब उस वृद्ध महिला ने उत्तर दिया: "यही वह स्तंभ है , जहाँ मैं अभी प्रार्थना कर रही हूँ और रो रही हूँ , जिस पर तुम एक दिन रोने आओगी। क्योंकि तुम्हारा जीवन-मार्ग , मेरी बच्ची , आ गया और चला गया: वह आज यहाँ है , लेकिन कल इस पर खरपतवार उग आएगी। लेकिन ईसाई धर्म —नहीं , उस पर खरपतवार कभी नहीं उगेगी। "

परंपरा का सम्मान

कई पवित्र शहीदों ने , आस्था के सिद्धांतों को जाने बिना, कहा करते थे : 'मैं उस पर विश्वास करता हूँ जिसे पवित्र पिताओं ने स्थापित किया है। ' ऐसा कहकर, एक व्यक्ति मसीह की गवाही देता था और शहीद हो जाता था। दूसरे शब्दों में , एक ईसाई अपने उत्पीड़क को ईसाई धर्म की सच्चाई का प्रमाण नहीं दे सकता था, लेकिन उसे पवित्र पिताओं पर विश्वास था। उसने सोचा, 'मैं पवित्र पिताओं पर भरोसा कैसे न करूँ ?' 'आखिरकार, वे [मुझसे] अधिक बुद्धिमान और अधिक सदाचारी थे , वे संत थे। मैं ऐसी बकवास से कैसे सहमत हो सकता हूँ और पवित्र पिताओं के खिलाफ धर्मनिंदा को सहन कर सकता हूँ ?' हमें परंपरा पर भरोसा करना चाहिए। आज, दुर्भाग्य से , यूरोपीय 'राजनीतिक शुद्धतावाद ' यहाँ भी हावी हो गया है , और लोग खुद को अच्छा दिखाने के लिए उत्सुक हैं। अपनी 'परम कुलीनता ' का प्रदर्शन करने की इच्छा में , वे

अंततः दो-सींग वाले शैतान को प्रणाम कर बैठते हैं। वे कहते हैं , 'एक ही धर्म हो', और सब कुछ एक साथ मिला देते हैं। ऐसे विचारों वाले कई लोग मेरे कालीवा में भी आए हैं। उन्होंने मुझसे कहा, 'हमें —यानी, मसीह में विश्वास रखने वालों को—एक ही धर्म में एकजुट हो जाना चाहिए।' मैंने जवाब दिया, 'यह वैसा ही है जैसे मैं सोने के कुछ कैरेट और उसी सोने से अलग किए गए कुछ तांबे को इकट्ठा करूँ , ताकि उन्हें फिर से मिलाकर एक ही मिश्र धातु बना सकूँ। ' 'लेकिन क्या सोने को फिर से तुच्छ धातुओं के साथ मिलाना समझदारी है ? किसी सुनार से पूछो : "क्या कचरे को सोने के साथ मिलाया जा सकता है ?" आखिरकार, कचरे के सिद्धांत को शुद्ध करने के लिए इतना संघर्ष किया गया था।' पवित्र पिताओं को पता था कि वे क्या कर रहे थे। उन्होंने विधर्मियों के साथ संप्रभुता (communion) को उचित कारणों से मना किया था। लेकिन आज वे न केवल विधर्मियों , बल्कि बौद्धों , अग्नि-पूजकों और शैतानीवादियों के साथ भी संयुक्त प्रार्थनाओं का आह्वान कर रहे हैं। वे कहते हैं , 'ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों को भी इक्यूमेनिकल संयुक्त प्रार्थनाओं और सम्मेलनों में भाग लेना चाहिए। 'यह एक गवाही है !' यह किस तरह की 'गवाही' है ! ये लोग तर्क के माध्यम से सभी समस्याओं का समाधान करते हैं ; वे ऐसी चीजों के लिए औचित्य खोजते हैं जिनके लिए कोई औचित्य नहीं हो सकता। यूरोपीय भावना मानती है कि आध्यात्मिक मामलों का भी कॉमन मार्केट के ठिकानों पर व्यापार किया जा सकता है। "

उन ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों में से कुछ , जो अपनी तुच्छता के लिए जाने जाते हैं , "ऑर्थोडॉक्सी को आगे बढ़ाना " चाहते हैं , 'मशिनरी गतिविधियाँ शुरू करना', गैर -ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों के साथ संयुक्त सम्मेलन आयोजित करना — ताकि जितना हो सके उतना हंगामा मचाया जा सके — और यह सोचना कि इस तरह — विधर्मियों के साथ एक ही मिश्रण में मिलकर — वे 'ऑर्थोडॉक्सी को आगे बढ़ा रहे हैं !' इसके बाद, 'अति-उत्साही ' असली काम में जुट जाते हैं। ये विपरीत चरम पर पहुँच जाते हैं : वे यहाँ तक करते हैं कि नए कैलेंडर का पालन करने वाले स्थानीय चर्चों के संस्कारों का अपमान करते हैं , और इसी तरह, जिससे भक्तिपूर्ण और ऑर्थोडॉक्स -मन वाले आत्माओं को बहुत लुभाते हैं। जहाँ तक गैर -ऑर्थोडॉक्स का सवाल है , वे अपनी ओर से इन सभी संयुक्त सम्मेलनों में भाग लेते हैं , खुद को शिक्षक के रूप में पेश करते हैं , ऑर्थोडॉक्स से जो कुछ भी उन्होंने सुना है , उसमें से अच्छी आध्यात्मिक कच्ची सामग्री का चयन करते हैं , उसे अपनी प्रयोगशाला में संसाधित करते हैं , अपनी पसंद के अनुसार उसे रंगते हैं , उस पर अपना लेबल लगाते हैं और उसे असली वस्तु के रूप में पेश करते हैं। और अजीब आधुनिक लोग, जो ऐसी विचित्रताओं से मोहित हो जाते हैं , आध्यात्मिक रूप से नष्ट हो जाते हैं। फिर भी, जब समय आएगा, तो प्रभु एफ़सिस के मार्क और ग्रेगरी पलामास दोनों को उठाएंगे , जो परीक्षा से घायल हमारे सभी भाइयों को एकत्रित करेंगे —विश्वास के अंगीकार के लिए, परंपरा की पुष्टि के लिए, और हमारी माता चर्च की महान आनंद के लिए।

यदि हम पवित्र पिताओं की शिक्षाओं के अनुसार जीवन जिएँ , तो हम सभी का आध्यात्मिक स्वास्थ्य मज़बूत रहेगा। और अन्य धर्मों के सभी लोग, इस स्वास्थ्य से ईर्ष्या करके , अपने अस्वास्थ्यकर भ्रमों को त्याग देंगे और बिना उपदेश के ही उद्धार पाएँगे। वर्तमान में , हमारी पवित्र पैट्रिस्टिक परंपरा उन्हें प्रभावित नहीं करती है , क्योंकि वे हम में पवित्र पिताओं के उत्तराधिकारी देखना चाहते हैं , हमारे संतों के साथ हमारी सच्ची समानता देखना चाहते हैं। हर ऑर्थोडॉक्स ईसाई का यह कर्तव्य है कि वह अन्य धर्मों के लोगों में एक स्वस्थ चिंता उत्पन्न करे , ताकि वे यह महसूस कर सकें कि वे भ्रांति में हैं और खुद

को झूठी सांत्वना न दें , जिससे वे इस जीवन में ऑर्थोडॉक्सी के समृद्ध आशीर्वादों से , और आने वाले जीवन में — ईश्वर की और भी बड़ी , शाश्वत आशीर्वादों से वंचित न रह जाएँ। कुछ युवा कैथोलिक पुरुष मेरे आश्रम में आते हैं —वे बहुत सद्भावनापूर्ण हैं और ऑर्थोडॉक्सी के बारे में जानने के लिए तैयार हैं। वे पूछते हैं , 'हम चाहते हैं कि आप हमें कुछ बताएं , ताकि हमारी आध्यात्मिक मदद हो सके। ' मैं उन्हें सलाह देता हूँ , 'यह करो, चर्च के इतिहास पर कोई किताब उठाओ। आपको यह दोनों बातें पता चलेंगी कि हम कभी एकजुट थे , और तब से आप कितनी दूर भटक गए हैं। यह आपके लिए बहुत मददगार होगा। ऐसा करें , और अगली बार हम एक गहन चर्चा करेंगे। "

अतीत में , लोग अपने दादाजी की कुछ चीज़ों को संजोकर रखते थे और उन्हें सावधानी से विरासत के रूप में संभालते थे। मैं एक बहुत अच्छे आदमी, एक वकील को जानता था। उसका घर अपनी सादगी के लिए जाना जाता था। इस सादगी ने न केवल उसे बल्कि उसके मेहमानों को भी ताकत बहाल की।

"कुछ साल पहले , पिताजी," वकील ने बताया, "मेरे परिचित मेरे पुराने फर्नीचर के कारण मुझ पर हँसते थे। लेकिन अब वे आते हैं और इसे प्राचीन वस्तुओं के रूप में सराहते हैं ! मुझे इस पुराने फर्नीचर का उपयोग करने में बहुत आनंद आता है। मुझे इसमें आनंद आता है क्योंकि यह मुझे मेरे पिता, मेरी माँ और मेरे दादा-दादी की याद दिलाता है। ये यादें मेरी आत्मा को गर्माहट देती हैं। लेकिन मेरे दोस्त अपने फ्लैटों के लिए तरह-तरह का पुराना कबाड़ इकट्ठा करते हैं , और अपने लिविंग रूम को सेकंड -हैंड दुकानों जैसा बना देते हैं , ताकि वे इन सभी चीजों के बीच खुद को खो सकें और, भले ही थोड़ी देर के लिए, अपनी सांसारिक चिंताओं के बारे में सोचना बंद कर सकें। " अपनी माँ या दादा से मिली एक छोटी सी सोने की सिक्का को एक बड़े खजाने की तरह संजोया जाता था। लेकिन आज, अगर किसी के पास, उदाहरण के लिए, उनके दादा से विरासत में मिला राजा जॉर्ज के समय का एक ग्रीक सोने का सिक्का है , और इस सिक्के का मूल्य रानी विक्टोरिया के समय के एक अंग्रेजी सोने के सिक्के से सौ ड्रैक्मा कम है , तो वे पहले वाले को दूसरे वाले से बदल देंगे। ऐसा व्यक्ति न तो अपनी माँ का सम्मान करता है और न ही अपने पिता का। यह यूरोपीय भावना उभर रही है , और चुपचाप हम सभी को एक सामान्य प्रचंड तूफान में घसीट रही है।

मुझे याद है कि जब मैं पहली बार पवित्र पहाड़ पर पहुँचा , तो मैं एक मठवासी समुदाय के एक वरिष्ठ से मिला। वह पहले से ही एक बूढ़ा आदमी था, जो अपनी महान भक्ति के लिए प्रसिद्ध था। भक्ति के कारण, उसने न केवल 'कमेलावकी ' ([247]), जो 'वरिष्ठों '—उसके पूर्वजों —ने पहनी थीं , उन्हें फेंका नहीं , बल्कि इन कमेलावकी को बनाने के लिए इस्तेमाल होने वाले लकड़ी के साँचे को भी नहीं फेंका। उसने विभिन्न खूबसूरती से बँधी प्राचीन किताबें और पांडुलिपियाँ एक सावधानी से बंद अलमारी में रखी थीं। वह उन्हें धूल से बचाता था। वह इन किताबों का उपयोग नहीं करता था और उन्हें ताले और चाबी के नीचे रखता था। वह कहता था, 'मैं तो ऐसी किताबें पढ़ने का भी योग्य नहीं हूँ। मैंने यहाँ ये साधारण वाली पढ़ीं — 'फादर की किताब' और 'सीढ़ी '।" फिर एक युवा भिक्षु उनके समुदाय में शामिल हुआ (अंत में , वह पवित्र पहाड़ पर नहीं रहा) और उसने वरिष्ठ से ताना मारना शुरू कर दिया: "आप यह सब कबाड़ यहाँ क्यों इकट्ठा कर रहे हैं ?" उसने कामेलावका के पुराने साँचे इकट्ठा किए और उन्हें आग में फेंकना चाहा। 'ये मेरे आध्यात्मिक दादाजी के थे ,' वृद्ध ने रोते हुए उससे कहा, 'इनसे तुम्हें क्या तकलीफ हुई ? आखिर हमारे पास कितने सारे कमरे हैं !' बस इन्हें किसी कोने में रख दो।" श्रद्धा से , इस बूढ़े भिक्षु ने न केवल किताबें , अवशेष और कामेलौकी , बल्कि पुराने ब्लॉक भी रखे थे ! यदि छोटी चीजों का सम्मान है , तो बड़ी चीजों का भी बड़ा सम्मान होगा। यदि छोटी चीजों का सम्मान नहीं है , तो बड़ी चीजों का भी सम्मान नहीं होगा। इस तरह से संत -पितरों ने परंपरा को संरक्षित रखा।

आइए हम मठवासी जीवन में उस चीज़ को संरक्षित करें जिसे अनुभव द्वारा परखा गया है

— गेरोना , यदि कोई बहन एक नया दायित्व लेती है और वहाँ एक निश्चित स्थापित व्यवस्था पाती है , तो क्या वह उस व्यवस्था में कुछ भी बदल सकती है ?

— नहीं , शुरुआत में उसे कुछ भी नहीं बदलना चाहिए, भले ही वह यह कर्तव्य अकेले ही निभा रही हो। जिन परिवर्तनों की आप बात कर रहे हैं , वे नए मठों द्वारा पुराने मठों में आने पर किए गए थे। उन्होंने अपने पूर्वजों के अनुभव का अनादर किया। ऐसे रवैये से अपने कार्य को करने का प्रयास करना—ईश्वरीय सेवाओं और दैनिक दिनचर्या के लिए अपने स्वयं के कार्यक्रम पेश करना और साथ ही प्राचीन मठवासी विधानों को समाप्त करना—यानी, वह पूर्व - मौजूदा व्यवस्था , जिसे अनुभव द्वारा परखा और आजमाया गया था और जिसने मठवासी जीवन में

[247] पुरोहितों और भिक्षुओं द्वारा पहना जाने वाला सिर का आवरण। – अनुवादक की टिप्पणी।

सहायता की थी—इन भिक्षुओं में न केवल परंपरा की कमी है, बल्कि परंपरा के प्रति सम्मान की भी कमी है। बाद में ही उन्हें उन सभी बदलावों का लाभ समझ आएगा जो उन्होंने किए हैं। जिन्होंने मठवासी जीवन में एक निश्चित व्यवस्था या नियम स्थापित किया, वे जानते थे कि वे क्या कर रहे हैं। जो कुछ भी प्राचीन काल से मठवाद में संरक्षित है, उस पर सावधानीपूर्वक विचार किया गया है और अनुभव द्वारा परखा गया है। इस पर विचार करें : आखिरकार, किसी भी कला या शिल्प में, व्यक्ति को मानदंडों का पालन करना ही होता है। मैं पहले एक बढ़ई था और मैं जानता हूँ कि एक मानक मेज़ की ऊँचाई अस्सी, और सीढ़ी के एक पायदान की चौड़ाई सत्ताईस सेंटीमीटर होनी चाहिए। यह सब अनुभव द्वारा परखा गया है, एक नियम के रूप में स्थापित किया गया है, और शिष्य को बस इसे आस्था से स्वीकार करना होता है —उसे यह समझाने की कोई आवश्यकता नहीं है कि ऐसा क्यों है और ऐसा क्यों नहीं है। ये मानक अनुभव से उपजे हैं। शिष्य को गुरु पर भरोसा करना चाहिए और उनके अनुभव का सम्मान करना चाहिए। जो कोई भी शिल्प के नियमों का सम्मान नहीं करता, वह अच्छा काम नहीं कर पाएगा। वह एक ऐसी मेज़ बनाएगा जो बहुत नीची या बहुत ऊँची होगी; उससे गलती होना तय है।

मैंने अपने जीवन में कई कालीवा बदले हैं ; मैं एक सच्चा 'काव्सोकलिविटि ' बन गया हूँ ![248] कभी-कभी, किसी नई जगह पहुँचने पर, मैं बदलाव करता था — अनावश्यक दरवाज़ों पर तख्ते लगाना, अतिरिक्त कीलें निकालना... लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि पहले किए गए हर काम का कोई न कोई मतलब होता है। इसलिए अब, जब मैं किसी नए घर में आता हूँ, तो मैं पहले अपने पूर्ववर्ती द्वारा किए गए किसी भी काम को नहीं बदलता, भले ही इससे मुझे कुछ असुविधा हो। मैं दीवारों से एक भी कील नहीं निकालता। अगर अनुभव की कमी के कारण मैं दीवार में ठोक रखी कीलों को निकाल भी दूँ, तो बाद में, उन्हें किसी दूसरी जगह ठोकने के व्यर्थ प्रयासों के बाद—और इस प्रक्रिया में प्लास्टर को बर्बाद करने के बाद—मुझे फिर भी उन्हें उसी जगह वापस ठोकना ही पड़ेगा जहाँ वे पहले थीं। आखिरकार, मुझसे पहले यहाँ रहने वाले ने व्यावहारिक ज़रूरत के चलते इसे आज़माकर वहीं ठोक दिया था। एक बार दीवार में कील ठोक दी जाए, तो उसकी ज़रूरत वहीं पड़ती है — टी-शर्ट, एक कासोक (पादरी का चोगा) टाँगने के लिए, या किसी और काम के लिए। एक कोठरी में जहाँ मैं कुछ समय रहा, हर कोने में एक मोटी, टेढ़ी छड़ी खड़ी थी। मैं इन लट्ठों को मिलने आने वालों को दे दिया करता था, लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि वे किस काम के लिए थे। उस कोठरी में बहुत सारे साँप थे, और मुझसे पहले वहाँ रहने वाले व्यक्ति ने कोनों में लट्ठें रखी थीं — ताकि ज़रूरत पड़ने पर उसे उन्हें ढूँढ़ने के लिए इधर-उधर भागना न पड़े।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अनुभव से सिद्ध हुए सिद्धांतों पर अडिग रहा जाए। अन्यथा परंपरा खो जाती है और केवल विश्वासघात बचता है। [249] 'परंपरा ' और 'विश्वासघात ' शब्दों की तुलना करें ! वे एक-दूसरे से कितने भिन्न हैं ! क्या परंपरा का विश्वासघात कभी परंपरा में बदल सकता है ? आज कुछ मठ अपनी मनमानी करते हैं और मानते हैं कि यह परंपरा की सीमाओं में आता है। इस प्रकार, परंपरा के संबंध में ये मठ रक्षकों से गद्दारों में बदल जाते हैं। लेकिन अगर आध्यात्मिक संवेदनशीलता नहीं है, तो आध्यात्मिक विवेक कैसे उत्पन्न हो सकता है ? आखिरकार, मठजीवन को एक अलग मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। न तो सैनिकों का एक मार्च करने वाला काफिला, न ही सामाजिक सक्रियता के निशान, और न ही कोई कारखाना या सामूहिक खेत -शैली की उत्पादन लाइन हम संन्यासियों के लिए उपयुक्त है। संन्यासी जीवन के लिए एक संन्यासी मार्ग की आवश्यकता होती है, जो अनुभव द्वारा आजमाया और परखा गया हो, और जिसमें पवित्र पिताओं के मार्ग के चरित्र की छाप हो। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि एक अलग रास्ते को भी 'पितृसत्तात्मक ' कहा जाता है — 'सैद्धांतिक मठवाद' का झूठा रास्ता, जिसे ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि जो लोग इसका अनुसरण करते हैं, उन्होंने पवित्र पिताओं को विस्तार से पढ़ा है, जबकि उनका न तो पिताओं से और न ही सामान्य रूप से मठवाद से कोई आंतरिक संबंध होता है।

आज कुछ नए मठ चैरिटेबल संगठन के रूप में रहते और काम करते हैं। बेशक, उनका कुछ औचित्य है — उन्होंने खमीर नहीं पाया है। लेकिन वे पुराने मठों में मठवाद के बारे में पूछताछ कर सकते थे। जब तुर्की के जुए के बाद, ग्रीस में पहले मठ फिर से जीवंत होने लगे, तो वहाँ कोई 'खमीर' भी नहीं था। बावरिया के प्रशासक [250] मौजूदा मठों

---

[248] ग्रीक शब्द 'काव्सोकलिβίτης' का अर्थ है 'कलविास जलाने वाला'। यह नाम 14वीं सदी के एथोस के संत, परमपूज्य मैक्सिमिस (जिनकी स्मृति 13 जनवरी को मनाई जाती है) को दिया गया था, जिन्होंने एक तपस्वी जीवन जिया, अक्सर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते रहे, अपने लिए छोटे -छोटे कलविास—झोपड़ियाँ —बनाते और फिर उन्हें जला देते थे। – अनुवादक की टिप्पणी।

[249] एल्डर शब्दों के साथ एक खेल करते हैं : παράδοση – परंपरा ; παράβαση – अपराध, उल्लंघन, अवहेलना। इस मामले में, एक अपवाद के रूप में, हम दूसरे शब्द का अनुवाद 'विश्वासघात ' के रूप में करते हैं। – अनुवादक की टिप्पणी।

[250] 1833 में, नाबालिग बावेरियाई राजकुमार ओट्टो को मुक्त ग्रीस का राजा चुना गया। उनके और उनकी संरक्षक परिषद के साथ, बड़ी संख्या में जर्मन ग्रीस आए, जिन्होंने ग्रीक सरकार, सेना और अर्थव्यवस्था में अधिकांश प्रमुख पदों पर कब्जा कर लिया। इस प्रकार ग्रीस में तथाकथित बावेरियाई प्रभुत्व का युग शुरू हुआ, जो कई मायनों में ग्रीकों के लिए

को नष्ट करना चाहते थे और उनकी संपत्ति पर कब्जा करना चाहते थे। मठों को नष्ट करने की अपनी उत्सुकता में, वे इतना आगे बढ़ गए कि उन्होंने एक आदेश जारी कर दिया जिसमें भिक्षुओं को शादी करने के लिए कहा गया! लेकिन, दूसरी ओर, ऑर्थोडॉक्स ग्रीक स्वयं पुरानी मठ परंपरा को खोजने, यह देखने कि वह कैसी थी, और परंपरा में लौटने के लिए अनिच्छुक थे। मठों में गायें और बछड़े देखकर, ग्रीक कहते थे: 'तो यही मठवाद है!' उनके पास गायें और बछड़े भी हैं!" हालाँकि, ये सभी गायें, बछड़े और सूअर के बच्चे मठों में इसलिए थे क्योंकि तुर्की के जुए के तहत, दुर्भाग्यपूर्ण सामान्य लोगों ने अपनी संपत्ति, पशुधन और इसी तरह की चीजों को तुर्कों से बचाने के लिए मठों को सौंप दिया था। बीमार और अपंग लोग मठ की रोटी खाने आते थे। मठ अनाथों और भिखारियों को खिलाते थे; सभी दुर्भाग्यशाली लोग वहाँ इकट्ठा हो जाते थे। उन दिनों कोई धर्मार्थ संगठन नहीं थे, और इसलिए लोगों की मदद करने के लिए भिक्षुओं को पशु-पालन करना पड़ता था। लेकिन बाद में, जब मठों को अब इतने बड़े पैमाने पर धर्मार्थ कार्यों में संलग्न होने की आवश्यकता नहीं रही, तब भी उन्होंने बछड़े, गायें और भेड़ें रखना जारी रखा, और इस सारी पशुपालन को जारी रखा। तब, यह देखकर उस युग के कई आध्यात्मिक व्यक्तियों ने उँगली उठाना शुरू कर दिया: 'बस देखो कि हमारे यहाँ किस तरह का मठवाद है!' — और, अपनी दृष्टि पश्चिम की ओर मोड़कर, उन्होंने मशिनरी कार्य पर जोर देने वाले पश्चिमी-शैली के मठवाद को अपना आदर्श मानना शुरू कर दिया।

उन्होंने हर पश्चिमी चीज़ की नकल करना शुरू कर दिया। वे हमारी अपनी परंपरा की ओर वापस नहीं मुड़े ताकि जो हुआ था उसे देखकर और उस पर विचार करके वे कह सकें: 'ठीक है, ये सभी अवशेष तुर्की शासन के समय के हैं। उस समय, मठों को मठवासी जीवन जीने का उचित अवसर नहीं मिला था। यह बीते दिनों की एक बीमारी है। अब हमें एक बार फिर परंपरा की ओर लौटना चाहिए।' नहीं, वे हमारी परंपरा की ओर नहीं लौटे, बल्कि इसके बजाय पश्चिम में भिक्षुओं की स्थिति की ओर मुड़ गए। उन्होंने वहां से आदर्श लिए, जिन्हें वे यहां लागू करना चाहते थे। वे परंपरा की ओर नहीं लौटे, और यही उनकी गलती थी। आखिरकार, तुर्कों ने भी चर्च की चीज़ों का सम्मान किया, क्योंकि उन्होंने भी कई मौकों पर हमारे संतों द्वारा किए गए चमत्कार देखे थे। और मठों में, तुर्कों ने गर्मजोशी से स्वागत नहीं, बल्कि दैवीय सहायता मांगी।

लोग पुराने तरीकों पर लौटेंगे

समय बीतेगा, और लोग यह सराहना करने लगेंगे कि आज के ईसाई चर्च के सम्मान, आस्था और भव्यता को संरक्षित करते हैं। आप देखेंगे — लोग पुराने तरीकों पर लौटेंगे। आखिरकार, यही बात आइकन पेंटिंग के साथ भी हुई थी। एक समय था जब बाइज़ेंटाइन कला को समझा नहीं जाता था। लोग दीवारों से पुराने भित्ति-चित्रों को कुल्हाड़ियों से खुरच देते थे ताकि वे उन पर पुताई करके उन्हें पुनर्जागरण शैली में फिर से रंग सकें। अब, इतने वर्षों के बाद, बाइज़ेंटाइन कला के महान मूल्य को पहचाना गया है। यहाँ तक कि जिन लोगों में श्रद्धा की कमी है, यहाँ तक कि जो ईश्वर में विश्वास नहीं करते, वे भी धीरे-धीरे पुराने तरीकों की ओर लौट रहे हैं और पश्चिमी शैली के उस पुताई को हटा रहे हैं जिसने प्राचीन, छेनी के निशान वाले भित्ति-चित्रों को छिपा दिया था। इसी तरह, लोग धीरे-धीरे उन्हीं चीज़ों को खोजना शुरू कर देंगे जिन्हें वे आज अनावश्यक समझकर त्याग रहे हैं।

और देखिए कि बाइज़ेंटाइन चर्च के गायन में कैसे सब कुछ अपनी जगह लौट रहा है! आजकल, छोटे बच्चे भी बाइज़ेंटाइन शैली में गाना सीख गए हैं। पहले बाइज़ेंटाइन गायन जानने वाला कोई मिलना मुश्किल था। लेकिन अब छोटे बच्चे भी इसे जानते हैं, और वयस्क, यह देखकर, इस पर विचार कर रहे हैं। और बाइज़ेंटाइन संगीत में कितने सुंदर, मधुर 'अलंकरण' हैं! विशेष रूप से शुद्ध बाइज़ेंटाइन रचनाओं में। कुछ तो कोयल की मधुर कूक की तरह हैं, कुछ आने वाली लहर की कोमल लपेट की तरह, जबकि अन्य धुन को एक विशेष भव्यता प्रदान करते हैं। वे सभी दिव्य अर्थों को व्यक्त करते हैं और उन पर जोर देते हैं। फिर भी, इन

उखाड़े गए तुर्की जुए से भी कठिन था। बवेरियाई प्रभुत्व का अंत 3 सितंबर 1843 को निरंकुश राजशाही के उन्मूलन और ग्रीक संविधान को अपनाने के साथ हुआ। राजा ओट्टो और अधिकांश बवेरियाई लोगों को देश से निकाल दिया गया। – अनुवादक की टिप्पणी।

सुंदर 'अलंकरणों ' को अक्सर सुनने को नहीं मलिता। अधकिांश गायक संगीत रचनाओं को अधूरे , संक्षप्ति और सूत्रबद्ध तरीके से प्रस्तुत करते हैं। गायन में अंतराल और खोखलेपन रह जाते हैं। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे उच्चारण पर ध्यान दिए बनिा गाते हैं। यह मुझे आश्चर्यचकति करता है : नश्चिति रूप से उनके भजन-संग्रहों में आधुनकि व्याकरण की कतिाबों की तरह ही जोर के चह्निों की कमी नहीं होगी? अधकिांश गायक पूरी तरह से सतही और एकरस तरीके से प्रदर्शन करते हैं — मानो कोई रोड रोलर उनके संगीत - पत्रों पर से गुज़र गया हो और ने सब कुछ समतल कर दिया हो। यह सब 'पा-नी-ज़ो ' और 'पा-नी-ज़ो ' है ,[251] लेकनि इसका कोई मतलब ही नहीं बनता। अन्य गायक लयबद्ध अक्षरों पर ज़ोर देते हैं , लेकनि बनिा भावना के और एक तीखे स्वर में। कुछ ऐसे भी हैं जो अक्षरों पर ज़ोर से ज़ोर देते हैं , लेकनि यह सब एक जैसा , अनाड़ी होता है — जैसे वे कीलें ठोक रहे हों। हाँ , यह सच है : वे या तो बलि्कुल भी ज़ोर दिए बनिा गाते हैं , या वे अक्षरों पर ज़ोर तो देते हैं , लेकनि बहुत ज्यादा कठोरता से। ऐसे गायक प्रेरति नहीं करते , आपको बदलते नहीं हैं। लेकनि शुद्ध बाइज़ेंटनि गायन—कतिना मधुर है ! यह शांति लाता है और आत्मा को कोमल बनाता है। उचति चर्च का भजन आंतरकि आध्यात्मकि अवस्था की बाहरी अभव्यिक्ति है। यह दव्यि आनंद है ! अर्थात् , मसीह हृदय को प्रसन्न करते हैं , और एक व्यक्ति , हार्दकि आनंद में , ईश्वर से बात करता है। यदि कोई भजन गाने वाला वास्तव में उस भजन में डूबा हो जो वह गा रहा है , तो— शब्द के सकारात्मक अर्थ में —वह स्वयं और जो लोग उसे सुनते हैं , दोनों ही परविर्तति हो जाते हैं। कई साल पहले , एक वृद्ध कंठकार , जो धर्मनरिपेक्ष दुनयिा से पवत्रि पर्वत पर आए थे , हैरान रह गए। पवत्रि पर्वत के भक्षिु पुराने अंदाज में गाते थे। उन्हें उनके साथ गाने के लिए कहा गया, लेकनि उन्होंने 'सजावटों ' के बनिा गाया, क्योंकि वह उन्हें नहीं जानते थे। हालाँकि , पवत्रि पर्वत के भक्षिुओं ने उन्हें परंपरा के अनुसार सीखा था। बाद में ही इस कंठकार , और कुछ अन्य लोगों ने , हैरानी से अपना सरि खुजलाना शुरू कयिा। उनमें चति की एक स्वस्थ भावना जागृत हुई ; उन्होंने खोजबीन करना, साहत्यि पढ़ना , और परंपरा के अनुसार गाने वाले पुराने कंठकारों को सुनना शुरू कर दिया। इस तरह, धर्मनरिपेक्ष दुनयिा के इन कंठकारों ने भी 'सजावटों ' के साथ गाना शुरू कर दिया।

आखरिकार, जब तुर्क एशयिा माइनर में आए तो उन्होंने अपना संगीत भी बज़िान्टयिम से ही लयिा था। इसीलिए तुर्की लोक गीत श्रोताओं के दलिों को छू लेते हैं। लोगों में एक कहावत भी है : 'तुर्की में गाओ, फ्रेंच में बोलो, लेकनि ग्रीक में लखिो।' ऐसा नहीं है कि सभी तुर्कों की आवाज़ अच्छी होती है , नहीं। लेकनि वे तुर्क भी जनिकी आवाज़ अच्छी नहीं है , वे भी दलि और भावना के साथ गाते हैं। और कुछ ग्रीक , यह जाने बनिा कि तुर्की लोक गीतों की उत्पत्ति बाइज़ेन्टयिम से हुई है , यह दावा करते हैं कि, वे कहते हैं , हमने तुर्कों से बाइज़ेंटाइन गायन उधार लयिा! लेकनि जब तुर्क एशयिा की गहराइयों से बाइज़ेन्टयिम आए, तो उनके पास न तो संगीत था और न ही गायन! उस समय उनके पास बलि्कुल कुछ भी नहीं था। उन्होंने अपनी धुनें बाइज़ेंटाइन धार्मकि अनुष्ठान की परंपरा से लीं।

— गेरोन्डा , कैथोलकि यूरोपीय सामंजस्य का पक्ष क्यों लेते हैं ?

— क्यों ? वे कहते हैं कि उस तरह का संगीत लोगों तक अधकि आसानी से पहुँचता है। क्या आपको फ्रांस में वे कैथोलकि नन याद हैं जन्हिोंने एक आइकन के साथ आधुनकि नृत्य करते हुए 'क्राइस्ट इज़ राइज़न ' गाया था? वे ईस्टर का जश्न मना रही थीं ! और मदर सुपीरयिर

[251] बाइज़ेंटाइन संगीत का लप्यिंतरण।

खुद आइकन को थामे हुए थीं ! उन्होंने सब कुछ बदल दिया, एक चीज़ की जगह दूसरी चीज़ रख दी — और देखो यह सब कहाँ आकर खत्म हुआ ! एक बार मैंने एक भिक्षु को एक स्तुतिगान (डॉक्सोलॉजी) गाते हुए सुना। उसकी धुन मुझे काफी अजीब लगी। मैंने सोचा, 'यह आखिर क्या गा रहा है ?' बाद में मैंने उससे पूछा , 'आप किसकी स्तुति -गीत गा रहे थे ?' उसने जवाब दिया, 'पेलोपोनेस के पीटर की, *[252] *,' 'बस मैंने इसमें थोड़ा सा बदलाव किया है। ' 'आपने पेलोपोनेस के पीटर की स्तुति -गीत में बदलाव किया?!' "अच्छा , क्यों नहीं ," उसने कहा, "क्या मुझे ऐसा करने का अधिकार नहीं है ?" — "अगर आप चाहें , तो अपना भजन खुद लिख सकते हैं , लेकिन किसी और की रचना को बिगाड़ना नहीं चाहिए!" बस ऐसे ही — वह किसी और के भजन की धुन बदल गया, और फिर, निस्संदेह , अपनी रचना का नाम 'स्वआितोगोर्स्क ' रखता। बहुत सावधान रहना चाहिए। पहले से रचे गए को बदलना नहीं चाहिए। अगर कोई चाहे , तो वह अपना कुछ नया बना सकता है और उसे अपना नाम दे सकता है। किसी व्यक्ति को ऐसा करने का अधिकार है। लेकिन किसी पुरानी चीज़ को लेकर उसे बदल देना — यह अनादर है। यह ठीक वैसा ही है जैसे कोई आइकन चित्रकला की समझ न रखने वाला व्यक्ति किसी प्राचीन आइकन को बदलना चाहे। अगर वे ऐसा ही चाहते हैं , तो वे अपना आइकन चित्रित करें , लेकिन उन्हें किसी और के आइकन को नष्ट नहीं करना चाहिए।

आस्था के बिना, दुनिया टिक नहीं सकती

धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों ने माना कि आस्था समाज के लिए हानिकारक थी और उन्होंने इसे समाप्त करने की कोशिश की। अब उन्हें धीरे -धीरे एहसास हो रहा है कि अगर किसी व्यक्ति के पास आस्था नहीं है , तो उसके पास कोई संयम नहीं होता और ऊँचे पद पर पहुँचकर वह एक जानवर बन जाता है ; वे यह महसूस करते हैं कि कोई व्यक्ति आदर्शों के बिना दृढ़ नहीं रह सकता। एक बार, एक पत्रकार ने एक वृद्ध कम्युनिस्ट राजनेता से पूछा : 'विफलता से बचने और सफल होने के लिए आज के राजनेताओं को किन बातों पर ध्यान देना चाहिए?' 'हम इसलिए असफल हुए क्योंकि हम चर्च के खिलाफ गए थे ,' वृद्ध कम्युनिस्ट ने जवाब दिया। दूसरे शब्दों में , अविश्वासी कम्युनिस्टों , जिनके न तो भौतिक हित हैं और न ही आध्यात्मिक आकांक्षाएं , ने यह महसूस किया कि वे ईश्वर के खिलाफ नहीं लड़ सकते। अब, सर्बिया के कुछ क्षेत्रों में ,[253] ने चर्च बनाना शुरू कर दिया है। यूगोस्लाविया के अधिकारियों ने देखा है कि, सांख्यिकीय रूप से कहें तो, जहाँ चर्च है , वहाँ मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित लोगों की संख्या कम है , अपराध कम हैं और इसी तरह अन्य बातें भी हैं। ये लोग ईश्वर में विश्वास नहीं करते , लेकिन लोगों को स्किज़ोफ्रेनिया की गोलियों से भरने से बचने के लिए, वे उनके लिए चर्च बना रहे हैं। सेउशोस्कु , एक 'निर्मल सैनिक '[254] होने के बावजूद , जिसने ईसाई धर्म को 'जनता की अफीम' कहा और इस तरह की अन्य धर्मनिंदा की, उसने एक ही समय में यह भी कहा कि ईसाई अच्छे लोग थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि जो लोग विश्वास करते थे , उन पर 'नियंत्रण ' था और वे अशांति पैदा नहीं करते थे। बाकी, अविश्वासियों ने सब कुछ खंडहर में बदल दिया। और रूस से कितने संत हम पर प्रकाश डालते हैं ! अब साम्यवाद पर युद्ध की घोषणा कर दी गई है। लेकिन ऐसे भी हैं जो हर बात का बहाना ढूंढने की कोशिश करते हैं। ये लोग कहते हैं , 'लेनिन और मार्क्स , मसीह से सहमत थे , लेकिन उन्होंने उनके आत्मा को नहीं समझा और इसलिए अपराध किए।' वे ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि ईसाइयों ने अपनी आवाज़ उठाई है , यह घोषणा करते हुए कि वे अपनी प्राचीन परंपरा , अपने धर्म में लौटना चाहते हैं। और इसलिए, लोगों को अपने पूर्व नियंत्रण में रखने में असमर्थ होकर, कम्युनिस्ट भी उनसे अपील कर

---

[252] पेलोपोनेस के पीटर (मृत्यु 1777) – उत्तर -बाइज़ेंटाइन काल के बाइज़ेंटाइन चर्च संगीत के एक उत्कृष्ट संगीतकार। – अनुवादक की टिप्पणी।

[253] जून 1985 में प्रस्तुत।

[254] शब्द -खेल : रोमानियाई कम्युनिस्ट पार्टी के राजनेता और महासचिव निकोले चाउशेस्कु (1918–1989) का उपनाम, जब ग्रीक में लिप्यंतरित किया जाता है , तो यह वाक्यांश 'τσαούσης του αίσχους' का समानार्थी है , जिसका शाब्दिक अर्थ है 'शर्महीन कोर्पोरल '। – अनुवादक की टिप्पणी

रहे हैं : 'आओ हम अपनी प्राचीन परंपरा पर लौटें !' मानो कम्युनिस्टों ने क्रांति के दौरान और बाद में वे सभी अत्याचार केवल इसलिए किए थे क्योंकि वे मसीह की भावना को समझने में असफल रहे थे !

वह समय आएगा जब न केवल विश्वासी , बल्कि अविश्वासी भी यह महसूस करेंगे कि विश्वास के बिना दुनिया टिक नहीं सकती। तब वे लोगों को काबू में रखने के लिए उन्हें किसी न किसी चीज़ में विश्वास करने के लिए मजबूर करेंगे। साल बीतते जाएँगे , और एक समय आएगा जब, यदि आप किसी भी दिन प्रार्थना करने में विफल रहते हैं , तो आपको जेल में डाल दिया जाएगा। लोगों को शासक को यह रिपोर्ट करनी होगी कि उन्होंने प्रार्थना की है या नहीं !... इस तरह सब कुछ अपने आप ठीक हो जाएगा।

हमें एक अच्छी परंपरा पीछे छोड़नी चाहिए

— गेरोन्डा , ऐसा क्यों है कि कुछ क्षेत्रों , गांवों और बस्तियों में अच्छे लोग पैदा होते हैं ?

— यह इसलिए है क्योंकि पहले वहाँ रहने वाले लोग अच्छे थे। उन्होंने अच्छे वंशज छोड़े , और अब अच्छी परंपरा जारी है। क्या आपको शायद लगा कि वहाँ की मिट्टी बस अच्छे लोगों के लिए इतनी उपजाऊ है ? नहीं , यह मिट्टी का मामला नहीं है। यदि किसी निश्चित स्थान पर कोई परंपरा है — चाहे वह अच्छी हो या बुरी — तो वह जारी रहती है। एपिरस में , अल्बानियाई सीमा के पास, एक गाँव था जिसके निवासी वेस्पर्स और दिव्य लिटिर्जी के लिए चर्च जाते थे — जब भी इसका आयोजन होता था। वे मतिन्स (Matins) में भी शामिल होते थे। ये लोग — इसे कैसे कहूँ — इस जीवन में ही स्वर्ग में रहते थे , और, अगले जीवन में जाने पर, वे भी स्वर्ग में जाएँगे। उन्होंने स्वयं और आने वाली पीढ़ी दोनों की मदद की, क्योंकि उन्होंने एक सदाचारी विरासत स्थापित की। जब वंशज एक सदाचारी परंपरा को अपनाते हैं , तो वह सदाचारी परंपरा जारी रहती है। कुछ ही दूरी पर एक और गाँव था। वहाँ हर कोई चोरी करता था। उस गाँव से केवल एक ही पुजारी कभी आया, लेकिन उसने भी चर्च से प्रतिमाएँ चुरा लीं ! बात यह नहीं है कि उस गाँव की मिट्टी खराब थी, बल्कि यह है कि वहाँ के लोगों की आदतें खराब थीं। इसलिए वे अपने बाद बुरे वंशज छोड़ गए, और यह बुरी परंपरा जारी है। इस चोरों वाले गाँव में एक अच्छी परंपरा लाने के लिए बहुत प्रयास की आवश्यकता है। और देखिए : यदि कोई निर्दयी व्यक्ति किसी निश्चित स्थान पर रहता है , तो अन्य निवासी यह साबित करने की कोशिश करते हैं कि वह उस क्षेत्र का मूल निवासी नहीं है , और उसके वंश की जड़ों में गहराई तक खोदते हैं। लेकिन जब किसी पवित्र व्यक्ति की बात आती है , तो हर कोई उन्हें अपना रिश्तेदार होने का दावा करने के लिए दौड़ पड़ता है। उदाहरण के लिए, एटोलीया के संत कोस्मास को ही लें — हालांकि वह मूल रूप से मध्य ग्रीस के थे — उन्हें एपिरस के संतों में शामिल किया गया क्योंकि उनके पिता ने अपनी वंशावली का पता एपिरस के एक गाँव तक लगाया था। और इस प्रकार , चाहे -अनचाहे , संत कोस्मास एक एपिरोट बन गए।

मेरा एक परिचित, जो एक परिवार का मुखिया था, बात करते समय घबराहट में अपनी तर्जनी उंगली लगातार हिलाता रहता था। फिर उसके बच्चे भी कहानी सुनाते समय अपनी छोटी-छोटी उंगलियाँ हिलाते थे। आखिरकार, बच्चे अपने पिता की सभी आदतें सीख जाते हैं ; वे उन्हें बिल्कुल वैसे ही नकल करते हैं। लेकिन उद्देश्य केवल अच्छी बातें अपनाना होता है। अन्यथा , बुराई लंबे समय तक जड़ जमा लेती है। मुझे याद है कि कैसे एक युवक एक मठ समुदाय में नवसिखिया के रूप में शामिल हुआ , लेकिन उसे वहाँ पसंद नहीं आया। "रुको , मेरे

बच्चे ," उसके गुरु ने उससे कहा, "मत जाओ; सब कुछ बदल जाएगा।" "यह कैसे बदलेगा , गेरोन्डा ?" नवसखिया ने आपत्ति जताई। 'आखरिकार, फलाने -ढलिाने बड़े का शष्यि भी बलि्कुल अपने गुरु जैसा ही होता है। फ़ादर अमुक के नवसखिुआ भी अपने गुरु की हूबहू नकल होते हैं। आखरि कैसे कुछ बदल सकता है ?" यदि किसी मठ या मठ समुदाय में कोई गहरी बुराई जड़ जमाए हुए है , और नवसखिुआ , सच्ची चिंता दखिाने में असफल रहते हुए , बस जो वे देखते हैं उसकी 'नकल' करते हैं , तो वह नकारात्मक स्थिति पुरानी हो जाती है। हालाँकि , यदि निवोदति सच्ची चिंता दखिाते हैं , तो नकारात्मक स्थिति को सकारात्मक में बदला जा सकता है। इस तरह, अच्छाई और बुराई अनंत हो सकती हैं।

मैं एक बात समझ गया हूँ : हमारे पास जो कुछ भी है —चाहे वह पवित्र पिताओं की परंपराएँ हों या नयिम में नरि्धारति बातें —वह [पहले जो मौजूद था उसकी तुलना में] महज़ एक तुच्छ अंश मात्र है। दूसरे शब्दों में , इसे उस अंगूर के बाग में फसल काटने के बाद बचे कुछ गुच्छों से तुलना की जा सकती है। इसलिए हमें थोड़ी सी खमीर को संरक्षति रखने का ध्यान रखना चाहिए। यह हमारा ईसाई कर्तव्य है। हमारे पास एक अस्वास्थ्यकर वरिासत छोड़ने का कोई अधकिार नहीं है।

[255]कुछ साल पहले , जेनेवा में 'पूर्व -परषिदीय बैठक ' के लिए कई धर्मशास्त्री , वशि्ववद्यिालय के प्रोफेसर और अन्य प्रमुख हस्तयिाँ एकत्रति हुईं। उन्होंने क्रसिमस और संत पीटर के उपवासों को समाप्त करने , और ग्रेट लेंट को कुछ हफ्तों से छोटा करने का नरि्णय लयिा — क्योंकि लोग वैसे भी उपवास नहीं करते हैं। हमारे प्रोफेसरों ने भी इस बैठक में भाग लयिा। जब वे वहाँ से लौटे , मुझसे मलिने आए और मुझे इस बारे में सब कुछ बताने लगे , तो मुझे इतना आक्रोश आया कि मैंने उन पर चलि्ला भी दयिा। मैंने कहा, 'क्या आपको एहसास है कि आप क्या कर रहे हैं ?' 'अगर कोई बीमार है , तो वह लेंट के दौरान मांस खाने के लिए उचति है — सामान्य नयिम उन पर लागू नहीं होते हैं। यदि किसी ने बीमारी के कारण नहीं बल्कि [आध्यात्मकि] कमजोरी के कारण लेंट के दौरान उपवास-वरिोधी भोजन खा लयिा है , तो उसे कहना चाहिए: 'हे मेरे ईश्वर , मुझे क्षमा करें ', उसे स्वयं को नम्र करना चाहिए और कहना चाहिए: 'मैंने पाप कयिा है। ' मसीह ऐसे व्यक्ति की नदिा नहीं करेंगे। हालाँकि , यदि कोई व्यक्ति स्वस्थ है , तो उसे उपवास करना चाहिए। जहाँ तक उदासीन लोगों का सवाल है , वे वैसे भी जो चाहें खाते हैं , और उन्हें किसी बात की परवाह नहीं है। सब कुछ बस वैसे ही चलता रहता है जैसे हमेशा से चला आ रहा है। वास्तव में , बहुमत उपवास नहीं करता, क्योंकि उनके पास ऐसा करने का कोई वैध कारण नहीं है। और हम, इस बहुमत को खुश करने की इच्छा से , उपवास को पूरी तरह से समाप्त करना चाहते हैं ? लेकनि हमें कैसे पता कि अगली पीढ़ी कैसी होगी? क्या होगा अगर वे मौजूदा पीढ़ी से बेहतर नकिलें , और बनिा किसी समझौते के चर्च की शकि्षाओं का पालन करने में सक्षम हों ? तो फरि, किस अधकिार से हम यह सब समाप्त कर देंगे ? आखरिकार, यह सब बहुत सरल है ! कैथोलकिों में , पवित्र कम्युनयिन से पहले का उपवास केवल एक घंटे का होता है। क्या हम उसी भावना के आगे झुक जाएँ ? क्या हमें अपनी ही कमजोरयिों और खामयिों को आशीर्वाद देना चाहिए? लेकनि अपनी कमजोरयिों के नाम पर, हमारे पास ईसाई धर्म को अपनी ही शर्तों पर ढालने का कोई अधकिार नहीं है। भले ही केवल कुछ ही लोग स्थापति अनुष्ठान का पालन कर सकते हों , उन कुछ लोगों की खातरि इसे संरक्षति कयिा जाना चाहिए। यदि कोई बीमार व्यक्ति अजनबयिों के बीच हो, तो उसे इस तरह मांस खाना चाहिए कि दूसरे उसे न देखें और न ही

[255] 1992 में प्रस्तुत

प्रलोभन में पड़ें। वह अपने लिए कुछ खट्टी क्रीम खरीद ले और उसे अपने कमरे में खाए।" — "यह पाखंड है ," उन प्रोफेसरों में से एक, , ने मुझसे जवाब दिया। "तो फिर, अधिक ईमानदार होने के लिए, आप चौक में क्यों नहीं जाते और वहाँ पाप क्यों नहीं करते ?" — मैंने जवाब में उनसे पूछा। शैतान यह सब उन्हें किस रूप में प्रस्तुत करता है ! हम अपनी खुद की 'ऑर्थोडॉक्सी ' बनाते हैं और, इस 'ऑर्थोडॉक्सी ' की भावना में , पवित्र पिताओं और सुसमाचार की व्याख्या करते हैं। हमारे युग में , जब इतने सारे शिक्षित ईसाई हैं , तो ऑर्थोडॉक्सी को उज्ज्वल रूप से चमकना चाहिए! बस सेंट निकोडेमस द हेजियोराइट [256] को देखें — उन्होंने कितना कुछ हासिल किया! उन्होंने कितने शब्द लिखे , कितनी किताबें ! उन्होंने सभी संतों के जीवन संकलित किए! रेवरेंड को हर पुस्तकालय की हर अल्पविराम तक जानकारी थी, जबकि उनके पास न तो फोटोकॉपी मशीन थी और न ही कंप्यूटर।

एक व्यक्ति को, यथासंभव , एक सच्चा ईसाई बनना चाहिए। तब उसमें आध्यात्मिकता की भावना होगी; तब वह ऑर्थोडॉक्सी और मातृभूमि के लिए अधिक या कम पीड़ा महसूस करेगा , और उनके प्रति अपने पुत्रवत कर्तव्य को महसूस करेगा। इस अवस्था में , किसी घटना के बारे में जानने पर, एक ईसाई चिंता दिखाता है , परेशान होता है और प्रार्थना करता है। हालाँकि , एक ऐसा ईसाई जिसे लगातार उकसाने की ज़रूरत पड़ती है – 'अब इसमें दिलचस्पी लो, और फिर उसमें ' – वह एक चौकोर पहिये की तरह है जिसे आगे बढ़ने के लिए लगातार धकेलना भी पड़ता है। लक्ष्य यह है कि प्रेरणा व्यक्ति के भीतर से ही आए। तब वे एक गोल पहिये की तरह सुचारू रूप से आगे बढ़ेंगे। यदि कोई व्यक्ति एक सच्चा ईसाई बन जाता है , यदि प्रेरणा उनके भीतर से आती है , तो ईश्वर उन्हें उन बातों से भी अधिक और व्यापक बातें प्रकट करेंगे जो केवल [अखबार] पढ़ने वाला कोई व्यक्ति जानता है। ऐसा व्यक्ति न केवल यह सीखता है कि क्या लिखा गया है , बल्कि यह भी कि क्या लिखा जाने वाला है। क्या आप इसे समझते हैं ? दिव्य ज्ञान एक व्यक्ति के पास आता है , और उसके सभी कार्य प्रबुद्ध हो जाते हैं।

हमारे पास अपने समय में उस महान विरासत को बर्बाद करने का कोई अधिकार नहीं है जो मसीह ने हमें दी है। हमें परमेश्वर को हिसाब देना होगा। हम, छोटे से ग्रीक लोगों ने , मसीहा पर विश्वास किया है ; हमें पूरी दुनिया को ज्ञान देने का आशीर्वाद मिला है। मसीह के संसार में आने से सौ साल पहले , पुराना नियम ग्रीक में अनुवादित किया गया था। और प्रारंभिक ईसाइयों ने क्या सहा? उन्होंने लगातार अपने जीवन को जोखिम में डाला। और आज कितनी उदासीनता है ! कोई आज उदासीन कैसे रह सकता है , जब हम लोगों को बिना किसी जोखिम के , बिना किसी तकलीफ के ज्ञान दे सकते हैं ? क्या आप जानते हैं कि हमारे पूर्वजों ने उस दुनिया के लिए क्या सहा, जिसमें हम अब रहते हैं ? क्या आप जानते हैं कि कितने लोगों ने अपना बलिदान दिया? अगर उन्होंने वह बलिदान नहीं दिया होता, तो आज हमारे पास कुछ भी नहीं होता। और इसलिए मैं एक तुलना करता हूँ : उस समय, अपनी जान जोखिम में डालकर, उन्होंने अपने विश्वास को बनाए रखा — जबकि आज, किसी भी दबाव का सामना किए बिना, लोग हर चीज़ को बराबर मान लेते हैं ! जिन लोगों ने कभी अपनी राष्ट्रीय स्वतंत्रता नहीं खोई, वे नहीं समझते कि इसका क्या मतलब है। 'भगवान न करे कि कोई बर्बर आकर हमारा अपमान करे !' — मैं इन लोगों से कहता हूँ , और जवाब में मुझे सुनाई देता है : 'तो इससे हमें क्या नुकसान होगा?' बस इस पर ध्यान दीजिए! तुम शापित हो जाओ, तुम बेकार लोगों ! आजकल लोग ऐसे ही होते हैं। उन्हें पैसे और गाड़ियाँ दो, और वे आस्था , सम्मान या स्वतंत्रता की परवाह नहीं करेंगे।

हम यूनानियों का अपना ऑर्थोडॉक्स धर्म मसीह और हमारे चर्च के पवित्र शहीदों और संतों को समर्पित है। और हम अपनी स्वतंत्रता अपने देश के उन नायकों के ऋणी हैं जिन्होंने हमारे लिए अपना खून बहाया। हमें इस पवित्र विरासत का सम्मान करना चाहिए। हमें इसे संरक्षित करना चाहिए, न कि अपने समय में इसे बर्बाद करना चाहिए। यह एक बड़ी त्रासदी होगी अगर ऐसे लोग नष्ट हो जाएँ ! और अब हम देखते हैं कि कैसे ईश्वर व्यक्तिगत रूप से लोगों को बुला रहे हैं , ठीक वैसे ही जैसे युद्ध शुरू होने से पहले सैनिकों को बुलाया जाता है। ईश्वर ऐसा इसलिए कर रहे हैं ताकि कुछ संरक्षित रह सके , ताकि उनकी रचना बच सके। ईश्वर हमें नहीं छोड़ेंगे ; हालाँकि , हमें भी अपनी ओर से जो हो

---

[256] पवित्र पर्वत के आदरणीय निकोदेमस का जन्म 1749 में हुआ था। वह अपने समय के सबसे विद्वान लोगों में से एक थे। उन्होंने विज्ञान के प्रति असाधारण योग्यता को ऑर्थोडॉक्स धर्म की निर्दोष शुद्धता के साथ जोड़ा। 1775 से , वह अथोस के पवित्र पर्वत पर एक भिक्षु के रूप में रहे। यहीं उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं , जो ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्र और तपस्या का स्वर्णिम खज़ाना हैं। आदरणीय निकोदेमस की प्रत्यक्ष भागीदारी से , *डोब्रोतोलीउबिए *, *एवरजिएटिनोस* और अन्य पैट्रिस्टिक कृतियों का संपादन किया गया और प्रकाशन के लिए तैयार किया गया। 1 जुलाई 1809 को प्रभु में उनका निधन हो गया। आदरणीय निकोडेमस की अधिकांश कृतियों का अभी तक रूसी में अनुवाद नहीं हुआ है। – अनुवादक की टिप्पणी।

सके , उसे करना चाहिए , मानवीय तरीके से। और जो काम मानवीय साधनों से नहीं हो सकता, उसके लिए हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि ईश्वर अपनी सहायता प्रदान करें।